معاشرے میں رائج من گھڑت اور خلاف شرع اعتقادات ورسومات کی اصلاح اور نوجوانوں کو معاشرے میں رائج من گھڑت اور خلاف شرع اعتقادات ورسومات کی اصلاح اور نوجوانوں کو اقامتِ دین کے پہلوؤں سے روشناس کروانے کے لیے ایک مخلصانہ کوشش اقامتِ دین کے پہلوؤں سے روشناس کروانے کے لیے ایک مخلصانہ کوشش



معاشرے میں رائج من گھڑت اور خلافی شرع اعتقادات ور سومات کی اصلاح اور نوجو انوں کو اقامتِ دین کے پہلوؤں سے روشاس کروائے کے لیے ایک مخلصانہ کو شش



ترتیب و تحریر فیروز ساجه قادری

الملاحم اسلامك انستيتيوث

(جسله حقوق محفوظ بير)

نام كتاب : اصلاح عقائد و رسوم

ترتیب و تحریر : فیروز ساجد قادری

نظر ثانی : علامه محمد اولیس رضوی (گوجر انواله)

: علامه ظهور احمد صديقي (لاهور)

سفحات : 340

اشاعت : 2021

قيت : 350

طنكاية : الملاح اسلامك انستيتيوك (03234095802)

فيروز ساجد قادرى

03154908032

03234095802

Ferozsajid24@gmail.com

بنده پرور دگارم امت احمد نبی دوست دارچبار یارم تالع اولاد علی ند بهب حنفیه دارم ملت حضرت خلیل خاکهائے غوث اعظم زیرسایه برولی

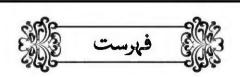
ترجمہ : میں اللہ پرورد گار کا بندہ ہوں ، احمد نبی مُگافِیْنِ کا امتی ہوں ، چاریار کو اپنادوست رکھتا ہوں ، اور پید دوستی علی کی اولاد تک جاتی ہے۔ میر المذہب حنفی ہے جو ملت حضرت خلیل کی ہے۔ غوثِ اعظم کے قدموں کی خاک ہوں ، ہر ولی کے زیر سابیہ ہوں۔



محسافظ ناموسس دين مصطفى مَثَّالِيَّةِمُ مظهر حبالال ونساروقِ اعظهم

امیر المجاہدین فنافی خاتم النبیین حضرت علامہ خادم حسین رضوی علیدالرحمہ کے نام جنہوں نے زندگی میں دین مصطفیٰ منافیۃ کے لیے عملی جدوجہد کی فکر وجذبہ دیا۔

میرے شیخ طریقت حضرتِ عطار دام خلد اور میرے شفق والدین کے نام اور اُن تمام عزیز وا قرباء اور اساتذہ کے نام جوعلم دین کے حصول اور اس کتاب کی اشاعت میں ہر طرح سے میری حوصلہ افزائی فرماتے رہے۔



| صفحہ نمبر | عــنوانا | نمبرشار |
|-----------|------------------------------------|---------|
| 19 | تقريظ | 1 |
| 21 | تقديم | 2 |
| 24 | بدعت کی حقیقت | 3 |
| 27 | (۱) مہینوں کے متعلق رسم ورواج | 4 |
| 28 | 🖈 محرم الحرام کے متعلق اصلاح | 5 |
| 28 | مجلس میں جانا، ماتم سننا | 6 |
| 28 | بدمذ جهول کی نیاز | 7 |
| 29 | محرم الحرام اور سوگ | 8 |
| 30 | واقعه كربلاكاغم | 9 |
| 31 | محرم الحرام اور قربانی کا گوشت | 10 |
| 32 | 🖈 صفر المظفر کے متعلق اصلاح | 11 |
| 32 | بدشگونی کے کہتے ہیں | 12 |
| 32 | ماهِ صفر کو منحوس جاننا | 13 |
| 33 | ماهِ صفر اور شادی | 14 |
| 34 | اصل نحوست گناہوں کی ہے | 15 |
| 35 | سورج اور چاند گر ہن ہے جڑے تو ہمات | 16 |
| 36 | وہی ہو تاہے جو منظور خدا ہو تاہے | 17 |
| 37 | آخری بدھ | 18 |

24 | اولاد کی وفات پر صبر واجر

25 کسی کی وفات پر کیاسوچ ہونی چاہیے الاول کے متعلق اصلاح

30 | افعال ميلاداور اصلاح

31 محفل ميلاد شريف اور نعت خواني

كهانا كحلاناه صدقه وخيرات كرنا

كيك كافنا

37 بالنفي مين احتياط تيجيج 38 بيازيال بنانا كعبه وكنيد خضراء كاماؤل بنانا 39

26

27

32

33

34

35

36

ماه میلاد شریف

28 سبئےمیلادمنایا

29 خوشي يرعقلي دليل

جلوس تكالنا

حجنذ بركانا

يراغال كرنا

51

صفحهنمبر

37

39

39

41

42

43

44

46

46

48

50

51

53

54

54

56

56

57

57

58

| صفحه نمبر | عسنوانات | نمبر شار |
|-----------|---------------------------------------|----------|
| 58 | کچھ مزید خرابیوں کی اصلاح | 40 |
| 61 | كياعيدين صرف دوبين؟ | 41 |
| 62 | افعال میلاد سے متعلق تھم شرعی | 42 |
| 64 | 🖈 من گھزت روایات | 43 |
| 64 | رہیج الاول شریف ہے متعلق جھوٹی روایت | 44 |
| 64 | بوڑھی عورت سے متعلق جھوٹی روایت | 45 |
| 65 | خلق عظیم | 46 |
| 66 | چند مزید من گھڑت روایات | 47 |
| 68 | ضعيف اور من گھڑت احاديث ميں فرق تيجيے | 48 |
| 72 | (۲) شادی کی رسومات کے متعلق اصلاح | 49 |
| 73 | سنت لکاح | 50 |
| 74 | رشتوں کا انتخاب اور پیند کی شادی | 51 |
| 74 | بروں کے فیصلوں کو فوقیت دیجیے | 52 |
| 75 | والدين بچوں کی خوش کاخيال رنگيس | 53 |
| 78 | نكاح كى اجازت ياد كالت نكاح كى | 54 |
| 78 | غاندان كا ^{امت} غاب | 55 |
| 80 | 🖈 شادی کی مر وجه رسمول میں خرابیاں | 56 |
| 80 | گانے باہے کی خرمت | 57 |
| 81 | امراف کی خدمت | 58 |
| 81 | ب حیائی کی ندمت | 59 |
| 83 | غير محرم كو چپونا | 60 |

| صفحہ نمبر | عسنوانات | تمبرشار |
|-----------|---|---------|
| 84 | عورت كازينت اختيار كرنا | 61 |
| 85 | عورت اور پر دے کی مقدار | 62 |
| 86 | عورت اور پر دے کی مقدار ﴿ شادی کی رسومات سے متعلق حکم شرعی | 63 |
| 86 | منگنی کی رسم | 64 |
| 86 | ją. | 65 |
| 88 | مائيول كى رسم | 66 |
| 88 | تیل مہندی کی رسم | 67 |
| 89 | گاندباندهنا | 68 |
| 89 | دو ليح كاسر بالا | 69 |
| 89 | واگ پھر ائی | 70 |
| 89 | نیوتا (اسلای) | 71 |
| 90 | بإرات روكنا | 72 |
| 90 | R. T | 73 |
| 91 | فون کال پر تکاح کا مسئلہ | 74 |
| 92 | رسم دودھ پلائی | 75 |
| 92 | قرآن کوسرپرر کھنااور چاول پھینکنا | 76 |
| 92 | حكوذا بثفائى | 77 |
| 93 | ويمه | 78 |
| 93 | ایک معاشر تی برائی | 79 |
| 95 | بركت والا تكاح | 80 |
| 95 | بچ کی بیدائش (رسم چله، چله) | 81 |

| صفحه نمبر 96 | عسنوانات. | تمبرشار 82 |
|-----------------|---|---------------|
| | ويتم | |
| 96 | طعن و تشنیع | 83 |
| 98 | 🖈 خوشگوار از دواجی زندگی | 84 |
| 98 | میاں ہوی کے حقوق کا بیان | 85 |
| 99 | بیوی پر شوہر کے حقوق | 86 |
| 99 | شوہر کے حقوق کی تاکیدواہمیت | 87 |
| 101 | شوہر پر بیوی کے حقوق | 88 |
| 101 | ہوی کے حقوق کی تاکیدواہمیت | 89 |
| 104 | پیارے آ قاملی فلیم کاازواج مطہر ات سے حسن سلوک | 90 |
| 108 | خاتونِ جنت كو نفيحت | 91 |
| 109 | خاتونِ جنت کی حیاتِ مبار که | 92 |
| 110 | فقراء کی فضیلت | 93 |
| 112 | طلاق | 94 |
| 112 | تنين طلا قول كامسئله | 95 |
| 116 | طلاق دینے کا احسن طریقه | 96 |
| 117 | حلاله کماہے؟ | 97 |
| 118 | (۳) نو تگی کی ر سومات کے متعلق اصلاح | 98 |
| 119 | میت کی تد فین میں دیر کرنااور میت کو فریزر میں رکھنا | 99 |
| 120 | عورت کے جنازے کوشوہر اور غیر محرم کا کندھادینا | 100 |
| 121 | قبر کا پخته کرنا ، قبر پر نام کی شختی لگانا | 101 |
| 121 | قبر کا پخته کرنا ، قبر پر نام کی شختی لگانا قبر پر چراغ ادر اگریتی جلانا | 102 |

| صفحه نمبر | عــنواناـــــ | نمبرشار |
|-----------|---|---------|
| 122 | ايصالِ ثواب | 103 |
| 123 | میت والے گھرسے کھانا | 104 |
| 126 | کسی کی وفات پر سوگ | 105 |
| 127 | زوجه کی عدت سے متعلق وضاحت | 106 |
| 127 | عورت کی عدت ہے متعلق من گھڑت یا تیں | 107 |
| 128 | عدت والى عورت كأكھرے باہر جانا | 108 |
| 129 | (4) مز ارات کے متعلق رسم ورواج اور اصلاح | 109 |
| 130 | حاضر ی مز اراتِ اولیاء | 110 |
| 130 | ع س | 111 |
| 132 | آداب حاضری قبور | 112 |
| 132 | مز ارات پر چا در ڈالنے ، سجدہ وطواف کرنے ، بوسہ ویئے سے | 113 |
| | متعلق حکم شرعی | |
| 133 | عور توں کا مز ارات پر جانا | 114 |
| 135 | منت ماننا (نذرونیاز) | 115 |
| 136 | وسيله واستمداد اور راو اعتدال | 116 |
| 138 | کیاچیزشرک ہے اور کیاچیزشرک نہیں | 117 |
| 140 | خانقاہوں اور آستانوں سے متعلق اصلاح | 118 |
| 142 | (۵) پیری مریدی کے متعلق اصلاح | 119 |
| 143 | بیعت ہونا (پیری مریدی) | 120 |
| 143 | بیعت کے دنیاوی واُخروی فوائد | 121 |
| 144 | بیعت کس نیت سے ہوا جائے | 122 |
| | | |

| صفحہ نمبر | عــنوانات | تمبرشار |
|-----------|---|---------|
| 146 | بيعت كي شر ائط | 123 |
| 147 | جعلی پیر | 124 |
| 147 | شريعت وطريقت | 125 |
| 148 | شریعت کی تعریف | 126 |
| 148 | تضوف وطريقت كاحقيقي مفهوم | 127 |
| 148 | شریعت وطریقت کے متعلق بزر گانِ امت کے اقوال | 128 |
| 150 | شریعت کادر جه برا ہے یا طریقت کا | 129 |
| 151 | عورت کا اپنے غیر محرم پیرسے پر دہ | 130 |
| 151 | پیر کی تصویر گھر ش لگانا | 131 |
| 153 | (۲) متفرق ابحاث | 132 |
| 154 | 🖈 روحانی علاج | 133 |
| 154 | نظر لگنا | 134 |
| 154 | نظراتارنا (ٹو کلے کرنا) | 135 |
| 155 | أحاديث ميس نظر كاعلاج | 136 |
| 155 | وم كروانا | 137 |
| 156 | تعويذ كينا | 138 |
| 158 | 🖈 عظمت ِ اصحاب ر سول مَلَا فَيْتِرُمُ | 139 |
| 161 | حق جاريار | 140 |
| 162 | الل بيت ميس كون كون شامل بين؟ | 141 |
| | | |
| | | |

| صفحه نمبر | عــنوانات | نمبرشار |
|-----------|---|---------|
| 164 | مشاجراتِ صحابہ سے متعلق ہم پر کمالازم ہے؟ | 142 |
| 166 | بيمه پاليسي (Insurance Policy) | 143 |
| 166 | انشورنس کرواناکیباہے؟ | 144 |
| 166 | لا نَف انشور نس كاطريقه كار | 145 |
| 166 | انشورنس پاکیسی میں ملنے والی اضافی رقم سود کیسے ؟ | 146 |
| 168 | انشورنس پالیسی ظلم کیسے ؟ | 147 |
| 168 | انشورنس پالیسی جواکییے ؟ | 148 |
| 169 | سودی رقم کا کیا کرناچاہیے؟ | 149 |
| 170 | يينك فنحس أدبوزت | 150 |
| 171 | ⇔یسے کی قدر (Time Value of Money) | 151 |
| 171 | سود کاایک حیلیہ | 152 |
| 171 | شریعت کا اصول | 153 |
| 173 | اصولِ شرعی کی حکمت | 154 |
| 174 | مئله كاحل | 155 |
| 174 | احادیث میں پیشگوئی | 156 |
| 175 | صدقه (قرض) اور کار وبار میں فرق کیجیے | 157 |
| 176 | بیرون ملک مقیم شخص کو قرض دیے سے متعلق ایک مسله | 158 |
| 178 | 🖈 قسطول پر څرید و فروخت | 159 |
| 179 | GP Fund / DSP Fund ☆ | 160 |
| 181 | ☆ زكوة كا حكم | 161 |
| 184 | 🖈 بېنول كاجائىدادىي حصه | 162 |
| | | |

| صفحه نمبر | عــنوانات | نمبرشار |
|-----------|---|---------|
| 185 | وراثت کی جگه جمیز دینا | 163 |
| 185 | بېزوں كالپناحصه معاف كرنا | 164 |
| 187 | (۷) چند مزید ابحاث | 165 |
| 187 | 🖈 عور توں مر دوں کامشابہت اختیار کرنا | 166 |
| 188 | تكليف ده مذاق | 167 |
| 189 | ز بورات اور مر دو عورت | 168 |
| 190 | جسم گدوانا | 169 |
| 192 | (Sex Education) تعليم بإلغال (| 170 |
| 193 | والدين كى ذمه وارى | 171 |
| 193 | بیٹی کی تربیت | 172 |
| 194 | بینے کی تربیت | 173 |
| 195 | مسائل النساء ميں ہے تھے | 174 |
| 196 | مسائل النساء میں ہے ایک سوال (من گھڑت باتیں) | 175 |
| 197 | 🖈 حرم شریف اور سیلفی | 176 |
| 200 | (۸) کفریه کلمات کی پیچان سے متعلق مختفر اور جامع رسالہ د لہ د گلمات کی پیچان | 177 |
| 204 | (بولیں مسگر سوچ کر) | 470 |
| 201 | ا بمان کی دولت | 178 |
| 204 | 🖈 چندایم اصطلاحات | 179 |
| 204 | ایمان کے کہتے ہیں؟ | 180 |
| 204 | كفرك كهتي بين؟ | 181 |
| 204 | ضروریات دین کے کہتے ہیں؟ | 182 |
| | | |

| صفحہ نمبر | عــنوانا | تمبرشار |
|-----------|--|---------|
| 204 | ضروریاتِ فرہبِ اللِ سنت کے کہتے ہیں؟ | 183 |
| 205 | مرتد کے کہتے ہیں؟ | 184 |
| 205 | کلماتِ کفر کی اقسام | 185 |
| 205 | التزام كفراوراس كانحكم | 186 |
| 206 | لزوم كفراوراس كالمحكم | 187 |
| 206 | 🖈 چنداصولی یا تیں | 188 |
| 206 | کا فر کو کا فر کہنا ضروری ہے | 189 |
| 207 | قطعی کا فرکے کفر میں شک کرنے والا بھی کا فر ہو جاتا ہے | 190 |
| 207 | تول يافعل كالفرهونا | 191 |
| 208 | بے خیالی میں کفر بک دینا | 192 |
| 208 | کیاعام آدی تھم کفرلگا سکتاہے | 193 |
| 209 | بغیر علم کے فتویٰ دینا یاغلط مسئلہ بتانا | 194 |
| 210 | ☆ کفریهکلمات | 195 |
| 210 | وات البي عزوجل كے بارے ميں | 196 |
| 212 | قر آن مجید کی توہین کے بارے میں | 197 |
| 213 | نی کی گستاخی کے بارے میں | 198 |
| 214 | فرشتوں کی توہین کے بارے میں | 199 |
| 215 | جنات کے بارے میں | 200 |
| 215 | قیامت کے بارے میں | 201 |
| 215 | شریعت کی توبین کے بارے میں | 202 |
| 219 | غیر مسلموں وغیرہ کے بارے میں | 203 |
| | | |

| صفحہ نمبر | عــنوانا | نمبرشار |
|-----------|--|---------|
| 220 | گانوں کے کفریہ اشعار کے بارے میں | 204 |
| 220 | ایمان کی بر باوی | 205 |
| 222 | زبان کی حفاظت کے بارے میں فرمان عبرت نشان | 206 |
| 222 | كفر پر مجبور كئے جانے كے بارے میں | 207 |
| 223 | تجديدا يمان كالمريقه | 208 |
| 223 | احتياطی تجدیدایمان کب کریں | 209 |
| 224 | تجدید نکاح کا طریقه | 210 |
| 225 | وعائے مغفرت | 211 |
| 225 | مسلمان کے لیے دعائے مغفرت کرٹاکیسا؟ | 212 |
| 226 | كافركے ليے دعائے مغفرت كرناكيسا؟ | 213 |
| 228 | عقبده و حکم | 214 |
| 229 | (٩) تحفظ ناموسِ رسالت | 215 |
| 230 | عقیدہ ختم نبوت کی حساسیت | 216 |
| 232 | قادیانیوں اور دیگر غیر مسلم اقلیتوں میں کیافرق ہے؟ | 217 |
| 233 | دندیق کے کہتے ہیں؟ | 218 |
| 234 | قرآن وحديث ادر عقيده ختم نبوت | 219 |
| 235 | ختم نبوت سے متعلق احادیث نبوی منگافیز م | 220 |
| 236 | نزول عیسیٰ علیه السلام / امام مهدی / وجال | 221 |
| 238 | قرب قیامت کے واقعات پر حدیثِ ثبوی | 222 |
| 242 | (۱۰) قانونِ ناموسِ رسالت | 223 |
| 242 | 295 C | 224 |
| | | |

| صفحه نمبر | عــنوانات | نمبرشار |
|-----------|--|---------|
| 245 | خلق عظیم اور 295 C | 225 |
| 250 | مذموم (برا) غصه كونسائے ؟ | 226 |
| 250 | وین کے لیے خصہ کرنا | 227 |
| 252 | رسول الله سَكَائِلَيْمُ كالبِيغِ وشَمنون كومعاف فرمانا | 228 |
| 253 | حضور مناه بين کي چاہت | 229 |
| 256 | گتاخ رسول کوماورائے عدالت قتل کرنا | 230 |
| 258 | انسانی جان کی حرمت / عبرت حاصل سیجیے | 231 |
| 260 | (۱۱) اقامتِ دين | 232 |
| 262 | کمل ضابطہ حیات (Complete Code of Life) | 233 |
| 263 | حكومت رسول الله كي (مَنْكَ عَلَيْمٌ) | 234 |
| 265 | سودی نظام اور پاکستان | 235 |
| 268 | نظریات (Western ideologies) | 236 |
| 268 | سيكولرازم (Secularism) | 237 |
| 269 | لبرل ازم (Liberalism) | 238 |
| 269 | وہریت (Atheism) | 239 |
| 270 | الحادى فتني | 240 |
| 276 | فتندار تدادے بچنے کے لیے اقدامات | 241 |
| 277 | تواتر اجماع اورجمهور كايشه | 242 |
| 279 | جديد منا فقين كى علامات | 243 |
| 286 | امت محدید کے علماء کی ڈیوٹی اور لبرل حضر ات کی بغاوت | 244 |
| 286 | امر بالمعر وف اور نهي عن الهنكر | 245 |
| | | |

| صفحه نمبر | عــنوانات | نمبرشار |
|-----------|---|---------|
| 291 | فتوں فرقوں کے وقت امت کیا کرے؟ | 246 |
| 295 | الل سنت وجماعت کے پیشواء | 247 |
| 298 | مذاهب اربعه پر بدند هبول كاايك اعتراض | 248 |
| 300 | آئمه اربعه كااختلاف | 249 |
| 302 | (۱۲) والدين اور تربيت اولا د | 250 |
| 305 | (۱۳) اسلام اور فلسفه جیهاد | 251 |
| 307 | پیارے آ قامناً فیٹر کا محبوب ترین عمل | 252 |
| 307 | جہاد کی فرضیت کیوں ہوئی | 253 |
| 309 | مستشرقين كے اعتراض كاجواب | 254 |
| 309 | اسلامي جهاد كاضابطه | 255 |
| 310 | ان سے بڑھ کر دہشت گرد کون | 256 |
| 311 | اللي اسلام كاجتكى ريكارة | 257 |
| 316 | جذبه جہاد ناپید کرنے والے عوامل | 258 |
| 319 | مسلمانوں کی ذلت کی دجہ | 259 |
| 322 | جہاد کے فضائل وتر غیب پر چند فرامین مصطفیٰ مُناہِیْمِ | 260 |
| 323 | اسلام اخلاق سے پھیلا یا تکوار ہے؟ | 261 |
| 325 | اخلاق کی در مت تشریح | 262 |
| 328 | ایک اہم مکتہ | 263 |
| 330 | ر سول الله مَنْكَ تَنْتُنْعِ كَي مِيرِ اتْ تَفامِين | 264 |
| 332 | مصور پاکستان ڈاکٹر محمہ اقبال | 265 |
| 332 | میرے دین کے لیے کیا کیا؟ | 266 |
| | | |

| صفحہ نمبر | عسنوانات | تمبرشار |
|-----------|-------------|---------|
| 334 | حرني امخر | 267 |
| 336 | ماخذ ومراجع | 268 |

አጵ ል ል ል

تقسير يظ جليل

حضوت محقق عصر مفسر قرآن مفتى ضياء احمد قادرى رضوى

الحمدللة رب العالمين والصلوة والسلام على سيد الانبياء والمرسلين اما بعد

اعمال درست اور شریعت کے مطابق ہونے کے ساتھ ساتھ عقائد اور نظریات کا درست اور اہل سنت وجماعت کے مطابق ہونا بھی اہم اور ضروری ہے، اس لیے کہ غلط عقیدہ جو کفر تک لے جائے اس کے ساتھ کو اقوں سے عوام جائے اس کے ساتھ تو ابھے اعمال بھی معتبر نہیں، نیز اس زمانے میں مختلف طریقوں سے عوام کے نظریات اور عقائد پر حملہ کیا جارہاہے، ایسی صورت حال میں مناسب انداز سے جوانوں کو نظریاتی بے راہ روی سے بچانالازم ہے۔ ایک عام مسلمان عقائد کے حوالے سے اتناعلم دکھنے کا نظریاتی ہے داہ روی سے بچانالازم ہے۔ ایک عام مسلمان عقائد کے حوالے سے اتناعلم دکھنے کا مکلف ہے جس قدر عقائد ایمان صحیح ہونے اور آخرت کی کامیائی کے لیے ضروری ہیں، عقائد کی جزئیات کاعلم اور ان میں گہری علمی بحث کرنا ہے علاء کاکام ہے، عام افر او اس کے مکلف بھی نہیں، جزئیات کاعلم اور ان میں گہرے مباحث بیان کرنے سے اصلاح کے بچائے ذہنی انتشار بڑھ سکتاہے، اور آخری اور مبلغ ہے اور آخری اور مبلغ ہے اور آخری انتشار کار دکرنے اور حوام کو اس سے بچانے کے اہل علمائے دین ہیں، ہروائی اور مبلغ ہے اور مکنی کر مسکتا۔

اس لیے ہمارے علماء کے لئے بھی لازم ہے کہ اسلام کے بنیادی عقیدے توحید ورسالت اور آخرت کی تعلیم دینے کے ساتھ ضروری عقائد کی اصلاح کی بات کی جائے اور عقائد کی جزئیات کو عامة الناس میں نہ بیان کیا جائے، پچھلے پچھ عرصہ سے ہم دیکھ دہے ہیں کہ کس طرح عامة الناس کو ان مسائل میں الجھادیا گیا ہے جن کا تعلق قطعی طور پر غلبہ وین کے ساتھ نہیں۔ شعائر اسلام کو قائم رکھنے کا وقت ہے اور اسلام کے غلبہ کے لئے رات دن جدوجہد کرنے کا

وقت ہے اور ہمارے مفتیان کرام ایسے مسائل پر دست وگریبان ہو گئے ہیں جن مسائل کو اگر بالتحقیق و یکھائے توشعار اسلام کے قیام کے مقابل اٹکا درجہ وہ نہیں نظر آئے گاجو سمجھ رہے ہیں اور اس پر رات ون مناظروں کے چیلنج دے رہے ہیں۔ اور ادھر دین دشمن لبرل و سیکولر دین متین کی جڑیں ہلائے جارہے ہیں۔

ماشاء اللہ ہے كتاب مستطاب و كيے كر بہت خوشى ہوئى كہ محرّم جناب محر فير وز ساجد قادرى صاحب حقط اللہ جورات دن غلبہ دين كے لئے كام كرنے والے نوجو ان بيں ، جو لكھنے كے ساتھ ساتھ ہولئے كے فن سے آگاہ بيں ، ان كى تحرير ہو يا ان كى مجلس اس بيں ايك بى بات پڑھنے اور سفتے بيں آتى ہے اوروہ ہے غلبہ دين كى بات ۔ اور بحد اللہ اس كتاب شريف بيس جہاں نام نهاو فہ ہى لوگوں كے غلط افكار و نظريات كا رو ہے تو وہاں لبرل و سيولر طبقہ كے باطل نظريات كا موہ ہو تو وہاں لبرل و سيولر طبقہ كے باطل نظريات كا بھى خوب رو كيا كيا ہے اور آپ كا به كام بھى اسى سلطى كى ايك كڑى ہے اور بيد انتجائى شاندار كام ہے اور اس كام كى بہت زيادہ ضرورت تھى ، آپ نے محت شاقہ اور عرق ريزى كے ساتھ اس كتاب كو ترتيب ديا ہے ، اب ہم پر بھى لازم ہے كہ اسے علماء ومشائخ تك ريزى كے ساتھ اس كتاب كو ترتيب ديا ہے ، اب ہم پر بھى لازم ہے كہ اسے علماء ومشائخ تك ريزى كے ساتھ اس كتاب كو ترتيب ديا ہے ، اب ہم پر بھى لازم ہے كہ اسے علماء ومشائخ تك اس كتاب كو ترتيب ديا ہے ، اب ہم پر بھى لازم ہے كہ اسے علماء ومشائخ تك اس كتاب كو لئنى پاك اور بلند بارگاہ بيس شرف قبول عطا فرمائے اور اسے حضور تاجدار ختم شوت مثالی نام است كے لئے ذر بعہ ہدايت بنائے۔

نقیر ضیاءاحمد قادری رضوی عفی عنه (خلیفه مجاز بریلی شریف)

مقيم جامع مسجد غوشيه نديم ثاؤن ملتان چونگی ملتان روژلامور

يستم الله الرَّخين الرَّحيث

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعُلَمِينَ وَالصَّلْوَةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّيدِ الْعُرْسَلِينَ

وعلى أله وصحبه أجمعين

تقتبديم

ہمارا معاشرہ دورِ حاضر میں جہال بہت سے غلط سلط اعتقادات ، تو بھات اور ناجائز رسم و رواج میں منہک، بے عملی بلکہ بد عملی کا شکار ہے وہیں گفار و مشر کین اور طحد و بے دین طبقہ اسلام اور اہل اسلام کے خلاف بر سر پرکار ہے۔ حق وباطل کی بد جنگ خیر و تلوار اور قلم و قرطاس سے لے کر سوشل میڈیا تک ہر محاذ پر بوری شدت سے جادی ہے۔ سیکولر نظریات اور الحادی فننے ہمارے گھروں کے دروازے کھکھٹا چھے ہیں اور مسلسل ہمارے توجوانوں کو اپنے بھنور میں لے رہے ہیں۔ آج عالم اسلام قتوں کی آماجگاہ بن کررہ گیا ہے۔ اسلام کالبادہ اور ھے ذہبی جہرو چی اور پورپ سے درآ مدشدہ دانشوروں کی نت نئی تحقیقات نے آج مسلمانوں کو اسلامی عقائد در سوم سے بد عن کر دیا ہے اور مسلمانوں کی جمیعت کے احکام کو توڑ کرر کھ دیا ہے۔ و نیا بھر میں ہماری ہیتی و ذلت کا بڑا سبب سے ہے کہ ہم نے خالتی کا نتات سے روگر دائی کرر کھی ہے اور میں ہماری ہیتی و ذلت کا بڑا سبب سے ہے کہ ہم نے خالتی کا نتات سے روگر دائی کرر کھی ہے اور اس چیکتے ہوئے دین اسلام کی تعلیمات سے رُخ موڑ لیا ہے۔

گنوادی ہمنے جو اسلاف سے میر اٹ پائی تھی ثریا سے زمیں پر آسال نے ہم کو دے مارا (ملامہ اقبال) ایسے میں ضرورت اس امر کی ہے کہ اہلِ اسلام اپنی ترجیحات کو بدلیں اور ان فکری یافتاروں کو روکئے کے لیے اپنی تمام تر توجہ اسی جانب مبذول کریں اور باہمی اختلافات کو ترک کرے دین متین کے غلبہ کے لیے کوشش کریں۔

یہ کتاب اس فکر و جذبہ کے تحت تحریر کی گئی ہے۔ اس عاجزنے اپنے سکول و کالج اور
یونیورسٹی میں انجینیرنگ کے دوران نوجوانوں کے ذہنوں میں پیدا ہونے والے مسلک حقہ
الل سنت وجماعت کے متعلق اعتراضات وشبہات کوزائل کرنے کی مخلصانہ کوشش کی ہے۔

کتاب کے اول جھے میں اسلامی عقائد ورسوم اور ان کے متعلق بے اعتد الیوں گی آسان فہم اند از میں اصلاح کی گئی ہے اور ان سے متعلق تھم شر گی بیان کیا گیا ہے (اس میں صرف اُن ناجائز اُمور کا ذکر کیا گیا ہے جن میں عوام عمومی طور پر مشغول ہیں)۔ اس میں مہینوں وعبادات، شادی بیاہ و دینی تقریبات ، مز ارات و پیری مریدی ، انشور نس ، ٹائم ویلیو آف منی ، وغیر ہ جیسے موضوعات شامل ہیں اور آخر میں کفریہ کلمات کی پیچان سے متعلق مختصر و جامع رسالہ مجی شامل کیا گیا ہے۔

کتاب کے دوسرے جھے میں نوجوانوں کو اقامتِ دین کے پہلوؤں سے روشاس کروائے اور جدید فتوں کے آگے بند باند ھئے سے متعلق ابحاث شامل ہیں۔اس ہیں اُن عقائد و معمولات کا ذکر کیا گیا ہے جن پر اجماع اُمت ہے لیکن فی زمانہ باطل نفس پرست دین کا لبادہ اُوڑھے لوگوں کی چرب زبانیوں اور سوشل میڈیا کی وجہ سے ،عوام میں غلط عقائد زور پکڑ رہے ہیں اور ممارے نوجوان ان غلط عقائد کی گہری کھائی میں گر رہے ہیں۔اس میں سیکولرازم ، لبرل ازم ، اہمارے نوجوان ان غلط عقائد کی گہری کھائی میں گر رہے ہیں۔اس میں سیکولرازم ، لبرل ازم ، اہمارے نوجوان میں فاط عقائد کی گہری کھائی میں گر رہے ہیں۔اس میں سیکولرازم ، لبرل ازم ، اہمارے نوجوان می فتوں وغیرہ کا تعارف، قرب قیامت کے فتے اور اِن سے بیچنے کے لیے فرامین مصطفیٰ می فائین کی متعلق جاد کا ذکر کیا گیا ہے اور اس کے متعلق چند نبوت و ناموسِ رسالت اور اسلام کے فلفہ جہاد کا ذکر کیا گیا ہے اور اس کے متعلق چند اعتراضات کے جوابات دینے کی کوشش کی گئی ہے۔

مالک کا نتات عزوجل کی بارگاہ میں دعا ہے کہ آمتِ مسلمہ کو ان فتنوں سے محفوظ فرمائے اور اس وطن عزیز کو نظام مصطفیٰ منگائی کا گہوارا بنائے۔ اللہ کریم جل شانہ ہمیں دین کی غیرت اور احساس ذمہ داری کی دولت سے سر فراڑ فرمائے، ہمیں شریعت مطہرہ پر احسن طریقہ سے چلنے کی توفیق عطا فرمائے، اس کتاب کو اہل اسلام کے لیے مفید ثابت کرے اور اس گنہگار کے لیے مغیر ثابت کرے اور اس گنہگار کے لیے مغیر ثابت کرے اور اس گنہگار کے لیے مغیر شابت کرے اور اس گنہگار کے لیے مغیر شابت کرے اور اس گنہگار کے لیے مغیر شاب کو اہل اسلام کے لیے مغیر شابت کرے اور اس گنہگار کے لیے مغتر سے کا ذریعہ بنائے۔

فقط فير وزساجد قادريعف عنه





مخلف ممالک میں رہنے والے لوگ اسٹے عطرے اعتبارے مخلف مسم کے رسم وروان سے مسلك بي، بعض او قات وقت كے ساتھ ساتھ ان يس نئ نئى رسومات مجى روان پاتى بير-ان تمام نی اور پر انی رسومات کے جائزیا تا جائز ہونے کا مدار شریعت کے اصولوں کے مواقق یا مخالف ہونے پر ہے۔ جیسے اپنی عقل سے کسی چیز کو جائز قرار دے دینادرست خیس ای طرح ہر نی رسم وطریقے کو ناجائز قرار بھی نہیں دیاجا سکا۔ بھیٹیت مسلمان جارے لیے کسی کام کے جائزیا ناجائز مونے كا مدار قرآن واحاديث ميں بيان كيے محتے اصولوں يرب، جويرانے ياسے رسم و رواج قر آن و صدیث کی تعلیمات کے خلاف ہوں وہ ناجائز ہیں اور جو اسکے خلاف نہ ہوں وہ جائز ہیں اورجس کی اصل شرع سے ثابت ہو وہ مستحب ہیں۔اب معاشرے بیں رائج من محرت اعتقادات اور ناجائزر سوم کی نشاند بی کرتے ہیں۔اللہ عزوجل سے دعاہے کہ جمیں زندگی کے ہر معاملہ میں شریعت مطہرہ پر عمل کرنے کی توفیق عطافرمائے۔

بدعت کی تعریف:

" شرعی اعتبارے بدعت ہر اس کام کو کہتے ہیں جو نیامو پہلے (قرون اولی میں)نہ ہو"۔ اگروہ نیا کام احکام شریعہ کے خلاف ہو توبد حت سیئر (بری بدعت) ہے اور اگر قر آن و حدیث سے کر اتا نہ ہو تو بدعت مباحد اور بدعت حند (اچھی بدعت) کے قبیل

بدند ہب مسلمانوں کے اُن معمولات کو جن کی اصل قرآن و احادیث سے ثابت ہے انیں "بدعت" کہتے ہیں اور شرعاً منوع ہوتے پر دلیل دینے کے بجائے یہ کہد کر رد کر ویت بیل کداس خاص بیت (طریق) کے ساتھ اس کا ثبوت قرون اللا (دور نبوی، دور صحاب ، دورِ تابعین) میں نہیں تھااور یہ کہتے ہیں کہ "ہر بدعت گر ابی ہے"۔ الکا صرف یہ کہہ کر کسی چیز کوبد عت سیر (بری بدعت) قرار دینا کئی وجو بات سے فلط ہے۔ یادر کھیں قرآن وحدیث میں ہے کوئی بھی مسئلہ اخذ کرنے کے لیے تمام دلائل پر بیک وقت نظر رکھنا ضروری ہے۔ آج مسلمانوں کے عقائد خراب کرنے اور فرقہ واریت کو جوا دینے میں سب سے زیادہ کر داران چھے ہوئے ساز شیوں کا ہے، جنہوں نے صرف اپنی من پسند کی باتیں لوگوں کے سامنے بیان کی جیں اور اپنے اندرونی عقائد پر ضرب لگانے والے دلائل کو چھپادیا ہے، اے عزیز! حدیث پر ناراض ہونا اور حدیث چیں کرنے والے کو قصور دار سجھنا آپکو زیب نہیں دیتا ۔اب اصل صورت حال ملاحظہ سیجھنا

زیب جیس دیتا ۔ اب اسل صورتِ حال ملاحظہ بیجی:

﴿ اَلَٰ اَلَٰ اَ قَرُونَ وَزَمَانَہ کُو حاکم بِنَانَا (لِیتی بیہ کہنا کہ کوئی کام فلاں زمائے میں تھا تو جائز اور فلاں زمانے میں تھا تو جائز اور فلاں زمانے میں نہ تھا تو ناجائز ہے) جہالت اور اپنی طرف سے شریعت گھڑنا ہے۔ شریعت میں اصل حکم اباحت (اجازت) کا ہے۔ ہمیں تو صاحب شریعت سرور کا نئات مُثَاثِیْنِمُ نے بیہ حکم دیاہے کہ جو چیز اللہ تعالی نے حلال کی ہے وہ حلال اور جو چیز حرام فرمائی ہے وہ حرام ہے۔ اور جس کے بارے میں سکوت کیاوہ کام بھی کرسکتے ہیں۔ ترفری وابن ماجہ نے سیدنا سلیمان فارسی سے روایت بارے میں سکوت کیاوہ کام بھی کرسکتے ہیں۔ ترفری وابن ماجہ نے سیدنا سلیمان فارسی سے روایت کیاہے۔ حضور مُثَاثِیْنِمُ فرماتے ہیں:

" حلال وہ ہے جو خدانے اپنی کتاب میں حلال فرمایا اور حرام وہ ہے جو خدانے اپنی کتاب میں حلال فرمایا اور حرام وہ ہے جو خدانے اپنی کتاب میں حلال فرمایا اور حرام وہ ہے جو خدانے اپنی کتاب میں حرام کیا اور جس کے بارے میں سکوت ہے وہ معافی شدہ چیز وں میں سے ہے" (ا) جہ شانعیا : ہرنے کام کو بدعت سینہ (بری بدعت) کہنا بھی جہالت ہے۔ ہمیں تو صاحب شریعت سی اللہ تا ہے اور کیا تو اس کو اپنے ایجاد کر بعت سی اللہ تھی اے میں کو اپنے ایجاد کرنے کا تو اب بھی ملے گا اور جو اس طریقے پر عمل کریں گے ان کا اجر بھی اسے ملے گا اور عمل کرنے والوں کے اجر میں کی نہیں ہوگی۔ اور جس نے اسلام میں براطریقہ رائے کیا اس کا گناہ اس کے ذمہ ہو گا اور ان لوگوں کا گناہ بھی اسے ملے گا جنہوں نے اس کے بحد اس پر عمل کیا اور ان کا عمل کرنے والوں کے گناہ میں کوئی کی نہ ہوگی " (2)

^{1 (}ترمذى، كتاب الباس، بأب مأجاء في لبس الفراء، ج1، ص835، حديث 1781 فريد بك ستأل، الأهور) 2 (صحيح مسلم، كتاب العلم بأب من سن سنته حسنته، ج3، ص478، حديث 6741، فريد بك ستأل، الأهور)

اس حدیث بیں بدعت ِحسنہ اور بدعت ِسیئہ کی تقتیم موجودہے جوبے لگام فتوکٰ بازی میں مانع ہے۔اس لیے الل سنت کے نزویک بدعت کی دوقشمیں ہیں۔ بدعت ِحسنہ (اچھی بدعت) اور بدعت ِسیئہ (برگ بدعت)۔

افتراء ہے۔ بدعت (ہرنے کام کو) کو بدعت سیئر (بری بدعت) میں مخصر کرنا شریعت پر افتراء ہے۔ سیدنا فاروقِ اعظم دھی الله تعالی عند تراوی کی جماعت کے متعلق فرماتے ہیں:
" سے اچھی بدعت ہے "۔ (1)

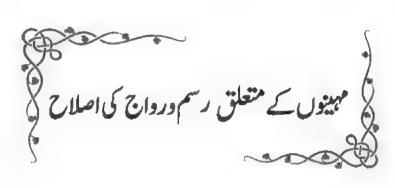
اور سیدناعبد الله ابن مسعود دخی الله تعالی عند فرماتے ہیں: " جے مومنین اچھاسمجھیں وہ (کام) اللہ کے ہاں بھی اچھا ہے۔ " ⁽²⁾

ثابت ہوا ہر نیاکام اگر موافق اصولِ شرعی ہے تو بدعتِ حسنہ (اچھی بدعت)ہے اور حدیث باب ہوا ہر نیاکام اگر موافق اصولِ شرعی ہے تو بدعتِ حسنہ (اچھی بدعت)ہے اور اگر حدیث پاک رمّن سَنَّ شنّة تحسّدَة) کے عموم میں داخل ہو کر محمود و مغبول (جائز)ہوگا اور اگر مخالف اصولِ شرعی ہو تو خدموم اور مر دود (ناجائز) ہوگا۔ فی زمانہ سپیکر پر اذان دینا، موہائل پر قرآن پڑھنا، سوشل میڈیا کے ذریعے علم دین کی اشاعت اور بہت سے دنیاوی اُمور کے جائز ہو تا اس اصولِ شرعی کے تحت ہے۔ (3)

بدعت کی حقیقت واضح ہونے کے بعد اب نئے دیر انے رسم ورواح اور ان میں کی جانے والی ہے اعتد الیوں سے متعلق ابحاث ملاحظہ سیجیے۔

 ⁽صفيح البغارى، كتاب صلوة التراويج باب فضل من قامر مضان، ج1، ص800 حديث 2010 قريد بك سئال الأهور)
 (المعجد الأوسط، باب الزاي من اسعة زكريا، ج2، ص798 مديث 3602 يرو گريسو بكس الأهور)

^{3 (}مأخوذ قرآن وحديث اور عقائد اهلسنت، ص 85 مكتبه امام اهلسنت، لاهور)





محرم الحرام میں بہت صحیح العقیدہ حضرات بھی نادانی میں بدخہ ہوں کے سے شعار اپنائے ہوئے ہوتے ہیں۔ ان تاجائز رسوم سے متعلق المام الل سنت المام الحر رضا خان علیہ الرحمہ نے احکام شریعت میں بچھ سوالات کے جوابات ارشاد فرمائے ہیں، ہم نے ذیل میں اُنہیں ترتیب دیا ہے ادراس کے متعلق گتب احادیث سے چند فرامین مصطفیٰ سَکَافِیکُرُ اَفْل کیے ہیں، ذیل میں ملاحظہ ہول۔

مجلس مين جانا ، ماتم سُننا:

ر سول الله مَا اللهُ مَا مَا مُعْمِرُهُ اللهُ مَا مُعْمِرُهُ مُعْمِرُهُ مُعْمِرُهُ مُعْمِرُهُ مَا مُعْمِرُهُ مُعْمِرُهُ مَا مُعْمِرُهُ مُعْمِمِ مُعْمِمُ مُعْمُمُ مُعْمُمُ مُعْمِمُ مُعْمُمُ مُعْمِمُ مُعْمُمُ مُعْمِمُ مُعْمِمُ مُعُمُمُ مُعُمُمُم

بدمذ ميول کي نياز:

روافض کی نیاز (انگر) کی چیزندلی جائے ، اِنگی نیاز عمومانجاست سے خالی فید میں ہوتی، آج کل سوشل میڈیا پر بھی اس بات کی تعدیق کرتی ہیں۔

^{1 (}حيول)

 ⁽ صحيح البتداري، كتاب الميدان وباب ليس مدامن هن الهيوب . ج 1. ص 554 . حديد 1294 . فريزيلت ستال الأهور)
 (ساب اف داؤد ، كتاب الميدان وباب فالدع . ج 2. ص 470 مديد 2721 . فيدا القرآن فيمل كيفاز الأهور)

حدیث پاک میں آ قاکر یم منگافین نے بدند ہوں کے ساتھ کھانا کھانے اور ایکے ساتھ میل جول رکھنے سے منع فرمایا ہے۔ چنانچہ فرمان مصطفیٰ مَنَافِین ہے:

رسے سے سے سرہ پہنے ہے۔ پہنا پہ سرہ ان سے ہوائی ہے۔
"آخری زمانہ ہیں ایک قوم آئے گی جو میرے محابہ کو گالیاں دے گی، ان سے بغض رکھے گی، ان کے ساتھ کھانانہ کھاؤ، ان کے ساتھ پانی نہ پیو، ان کے پاس نہ بیٹھو، ان سے رشتہ نہ کرو، وہ بمار پرٹیں تو عیادت نہ کرو، مر جائیں تو ان کی میت کے پاس نہ جاؤ، ان کی نماز جنازہ نہ پڑھو (لینی ان کے ساتھ نماز پڑھو" (1)

محرم الحرام اور سوگ:

" شریعت مطهره پس کسی بھی مسلمان کی وفات پر تین دن سے زیادہ سوگ جائز نہیں ، محرم الحرام بیں سوگ کی نیت سے کالے کپڑے بہتا حرام بیں سوگ کی نیت سے کالے کپڑے بہتا حرام ہے۔ کپڑے نہ بدل کر، صفائی نہ کر کے ، جوتی نہ بہت کر اظہارِ غم کرناسوگ ہے ، اور تین ون سے زیادہ سوگ حرام ہے "- حضرتِ زینب بنت ام سلمہ دخی الله تعالی عنها بیان کرتی ہیں: رسول الله مَلَّ اللّٰیَّ عَلَیْمِ اللّٰهِ عَلَیْ اللّٰہِ عَلَیْ اللّٰہِ ال

"جوعورت بھی اللہ تعالیٰ اور بروزِ آخرت پریقین رکھتی ہواس کے لیے تین دن سے زیادہ سوگ کرناجائز نہیں، البتہ خاوند (کی وفات) پرچار ماہ دس دن سوگ کرے " (2)

مفتی احمہ یار خان تعیمی رحمة الله علیه اس حدیث پاک کی شرح میں فرماتے ہیں: "اس حدیث سے اُن نادان سنیوں کو عبرت لینی چاہیے جو محرم میں دس دن تک کو شتے پیٹتے ہیں، چار پائی پر خبیں سوتے، اچھالباس نہیں پہنتے ہیں، کالے کپڑے پہنتے ہیں بیہ سب حرام ہے اور روافض کی پیر دی ہے۔ حضرات اہل بیت اطہار نے (بیکام) بھی نہ کیے "۔(3)

محرم الحرام میں سیاہ رنگ کے کپڑے پہننا بد فد ہوں سے مشابہت ہے، حدیث پاک میں اس متعلق سخت وعید ہے، لہذا اس سے بچٹالازم ہے ۔حضرتِ ابن عمر دھی الله تعلق عند سے روایت

^{1 (}كاز العبال كتأب القضائل، بأب فى فضائل الصحابه. ج 6 حصه 11. ص 257-منيث 32528/32542داد الاشاعت، كراچى) 2 (صحيح مسلم ، كتأب الطلاق ، بأب وجوب الإحداد فى عدة . ج 2 ، ص 295 ، حديث، 3710 . فريد بائت مثال ، لاهور)

^{3 (}مراة البناجيح شرح مشكوة، كتاب الدكاح، بأب العنة، ج 5. ص 165، حسن پهليشرز، لاهور)

ہے کہ رسول پاک مَنْ اللَّهُ عَلَيْمُ فِي ارشاد فرمايا:

" جس نے کسی قوم سے مشایہت اختیار کی تو وہ اُن میں سے ہو گا (لیتنی و نیاو آخرت میں وہ انہیں میں سے سمجھاجائے گا) "-(1)

واقعهء كربلا كاغم:

واقعہء کرب وبلاپر ہمارے دل عمکین ضرور ہیں، لیکن ہم (الل سنت) محرم وپوراسال ہی شریعت کے پابندر ہے ہوئے ماتم کے بجائے اُن عظیم ہستیوں کا ذکر خیر کرتے ہیں، اُنکے لیے ایصالِ تواب کا اجتمام کرتے ہیں ،اُن لو گوں کی جرائت دیہادری اور اس عظیم قربانی کی داستانیں بیان کرتے ہیں۔

اعلى حضرت امام ابلسنت امام احدر ضاخان رحمة الله عليه فرمات بين:

" وہ کونسا سُنی ہو گا جے واقعہ کر بلا کا غم نہیں یا اُس کی یاد سے اُس کا دل محزون (غم زدہ) اور آ تکھ پُرنم نہیں، ہاں مصائب میں ہم کو صبر کا تھکم دیا گیاہے، جزع فزع کو شریعت منع فرماتی ہے اور جے واقعی دل میں غم نہ ہو اُسے جھوٹا اظہار غم ریا (ریاکاری)ہے اور قصداً غم پروری خلاف رضاہے، جے اس (واقعہ کربلا) کاغم نہ ہواہے بے غم نہ رہناچاہیے بلکہ اس غم نہ ہوئے کاغم (ہونا) چاہیے کہ اس کی محبت نا تھ ہے اور جس کی محبت نا قص اس کا ایمان نا قص "_(⁽²⁾

محرم الحرام میں بہت ہے د نیا دار قتم کے خطباء واقعہ کربلاسے متعلق من گھڑت روایات سناتے ہیں، جن کو سننے سے بچناچاہیے۔ واقعہ کر ہلاسے متعلق پڑھنے کے لیے مستقد کُتب(برادرِ اعلیٰ حضرت مولاناحسن رضاعلیه الرحمه کی کتاب" آئینه قیامت"اور صدر الافاضل سید محمد تعیم الدين مراد آبادي عليه الرحمه كى كتاب "سواخ كربلا") كامطالعه كيجيه_

^{1 (}سان افي داؤد، كتاب اللياس بأب في ليس الشهرة. ج3. ص165، حديث 3512 صياء القرآن يبني كيشاز الأهور) 2 (قتأوي رضويه ، ج.24 ، ص 487 ، رضا فاؤد ليشي ، ((هور)

محرم الحرام اور قربانی کا گوشت:

محرم الحرام قریب آتے ہی کچھ لوگ یہ کہتے سنائی

حرم الحرام حریب الے الى اسے بہلے بہلے قربانی کا گوشت ختم کرلیں، محرم الحرام بیاسکے بعد قربانی کا گوشت محرم الحرام سے بہلے بہلے قربانی کا گوشت ختم کرلیں، محرم الحرام بیاسکے بعد قربانی کا گوشت محرم سے بہلے بہلے ختم کرنا شرعاً ضروری نہیں ابتدائے اسلام میں تین دن سے زیادہ رکھنے کی ممانعت تھی جو بعد میں منسوخ ہوگئ ۔ لہذا قربانی کرنے والا یا جے وہ دے جب تک چاہیں (گوشت) استعال کرسکتے ہیں۔ محرم میں قربانی کا گوشت کھانے کو گناہ کہنا انگل سے بغیر شخفیق مسئلہ بتانا ہے جو بلاشیہ ناجائز وگناہ ہے اس کیے کہنے والے پر توبہ واجب ہے۔ (1)



مفرالمظفرك متعلق اصلاح



اہِ مغرے متعلق زمانہ جاہایت ہی ہے کہ باتمی (بد فکونیاں) آج مجی ہمارے معاشرے میں رائج ہیں ، بہت سے لوگ ان غلاسلط اختقادات پر آج مجی بقین رکھتے ہیں۔ ان باطل نظریات کی اصلاح سے متعلق ہم تفصیلاً کیستے ہیں۔

بدهگونی کے کہتے ہیں؟

" تمنی مجنی هخص، چیز، دن یا مهینه و خیره کو منحوس جان کر اینا کام

مو توف کردینا (بعنی نہ کرنا) بدھنگونی کہلاتاہے "۔

ماه صفر كو منحوس جاننا:

منحوست کے وہمی تصورات کے شکارلوگ ماہِ صفر کو مصیبتوں اور

آفتوں کے اُٹرنے کا مہینہ سیجھے ہیں خصوصاً اس کی ابتدائی تیرہ تاریخیں جنہیں " تیرہ تیزی" کہا جاتا ہے بہت منحوس تصور کی جاتی ہیں۔ وہمی لوگوں کا بید ذہن بناہو تاہے کہ صفر کے مہینے میں نیا کاروبار شروع نہیں کرناچاہیے نقصان کا خطرہ ہے ، سفر کرنے سے بچناچاہیے ایکسیڈنٹ کا اندیشہ ہے ، شادیاں نہ کریں ، بچیوں کی رفصتی نہ کریں گھر برباد ہونے کا امکان ہے۔ اس طرح فوت شدہ کو جن بر تنوں سے حسل دیاجائے آنہیں گھر میں رکھنے ، شیشہ ٹوٹ جانے ، آگے سے کالی بلی شدہ کو جن بر تنوں سے حسل دیاجائے آنہیں گھر میں رکھنے ، شیشہ ٹوٹ جانے ، آگے سے کالی بلی

مر ر جات و من برا مان رست بن اور ب المان باطل بیں۔اس منتم کے تمام خیالات بے بنیاد ہیں۔

ہمارے پیارے آ قاحضور جانِ جاناں مُنَّا لِلَّهُ اِلْمُ الْمُنْفَعِرِ عَلَى الْمُنْفَرِكَ بارے میں وہمی خیالات کو باطل قرار دیے ہوئے فرمایا:

" لَاصَفَرَ " لِعِني مغربي لِحدثبين _(1)

^{1 (}صبح البغاري كتأب الطب، بأب الهزامر ع 3، ص 302 حديث 3707. فريد بالتسدّال الأهور)

بدشگونی لیناعالمی بیاری ہے، مختلف ممالک میں رہنے والے مختلف لوگ مختلف چیزوں سے
الی الی بدشگونیاں لیتے ہیں کہ انسان من کر حیران رہ جاتا ہے، اسلام نے اس فتم کے تمام
اعتقادات کاروکیا ہے۔ چنانچہ حدیث پاک میں ہے، آقا کریم منگا فینی نے ارشاد فرمایا:
"جس نے بدشگونی لی اور جس کے لیے بدشگونی لی گئی وہ ہم میں سے نہیں ہے "۔(1)
اور ایک حدیث پاک میں فرمایا: " اَلْحِیماَفَةُ وَالطِّیرَةُ وَالطَّرَقُ مِنَ الْحِبْتِ "
" لیمن اچھا یا بُراشگون لینے کے لیے پر ندہ اُڑانا، بدشگونی لینااور ظرق (یعنی کنکر بھینک کر یا
دیت میں کیر کھینچ کر فال ثکالنا) شیطانی کاموں میں سے ہے "(ایک حدیث پاک میں بدشگونی کو
شرک سے تعیر کیا گیاہے)۔(2)

ان احادیث میں اُن لوگوں کے لیے عبرت ہے جو اس قسم کے باطل نظریات کو مانے والے اور اِن کو پھیلائے والے ہیں۔

ماهِ صفر اور شادی:

اسلام بین کوئی دن مہینہ یا کوئی دفت منحوس نہیں۔سال کے تمام دنوں بین سال کے تمام دنوں بین سال کے تمام دنوں بین نکاح کرنا بلاشبہ جائز ہے، ماہِ صفر میں بھی نکاح جائز ہے۔ بعض لوگ صفر کے مہینے بین اس اعتقاد کی بناپر شادی نہیں کرتے کہ اس مہینے بین بلائیں وغیرہ الرتی ہیں اور یہ منحوس مہینہ ہے۔
یہ اعتقاد محص باطل دمر دود ہے جس کی کوئی اصل نہیں بلکہ زمانہ جا ہلیت میں لوگ اسے منحوس سیجھتے تنے تو سر کار منگل فیکڑ نے اس کو منحوس جانے سے منع فرماویا۔(3)

کوئی وقت برکت والا اور عظمت و فضیلت والا تو ہو سکتاہے جیسے ماور مضان، رہے الاول، جمعة المبارک وغیر ہ مگر کوئی مہینہ یاون منحوس نہیں ہو سکتا۔ مداۃ المہناجیہ میں ہے: "اسلام میں کوئی ون یا کوئی ساعت منحوس نہیں ہاں بعض ون بابر کت ہیں "۔

 ⁽مستنبزار، الجز التأسع، حديث عران بن حصاين، ص52، حديث 3578، مكتب العلوم و الحكم، المدينة المدورة)
 (سان الإحداؤد، كتأب الطب، بأب في الخطوز جر الطير، ج 3، ص127، حديث 3408، ضيأء القرآن پهلي كيشاز، (لاهور)
 (محتصر فتاوئ اهل بسلت. ج 1، ص 141، مكتم المدينة، كراچى)

اصل نحوست گناہوں کی ہے:

تفسيرروح البيان ميں ہے:" صفروغيره كسى مهينے يا مخصوص

سیرروں ابیان یں ہے۔ مسرو بیرہ کی ہے یا سوں وقت کو مفوس سیجھنا درست نہیں، تمام او قات اللہ عزوجل کے بنائے ہوئے ہیں اور ان میں انسانوں کے اعمال واقع ہوتے ہیں۔ جس وقت میں بندؤ مومن اللہ عزوجل کی اطاعت وبندگی مشغول ہو وہ وقت مبارک ہے اور جس وقت میں اللہ عزوجل کی نافر مانی کرے وہ وقت اس کے لئے منحوس ہے۔ در حقیقت اصل نمحوست تو گنا ہوں میں ہے ۔ (1)

بعض لوگ اپنے کسی کام میں ناکا می کو کسی شخص کی نحوست قرار دیتے ہیں۔ایسے لوگوں کو اپنی اصلاح کرنی چاہیے کہ کسی شخص کو منحوس قرار دینے میں اس کی سخت دل آزاری ہے اور اس سے تُہمت دھر نے کا گناہ بھی ہو تاہے اور یہ دونوں جہنم میں لے جانے والے کام ہیں۔سلطانِ دو جہان مُنَّا اللّٰهُ کُمُ کَا گناہ بھی ہو تاہے اور یہ دونوں جہنم میں لے جانے والے کام ہیں۔سلطانِ دو جہان مُنَّا اللّٰهُ کَا فرمانِ عبرت نشان ہے: "جس نے (بلاوجہ شرعی) کسی مسلمان کو ایڈاء دی اُس نے اللّٰه عروجل کو ایڈاء دی اور اللّٰه تعالیٰ فرسول مَنَّالِیْنِیْمُ کو ایڈاء دیے والوں کے بارے میں ارشادِ باری تعالیٰ ہے:

اہم ترین وضاحت :

۔ نہ چاہتے ہوئے بھی بعض او قات انسان کے دل میں بُرے شگون کا خیال آئی جاتا ہے اس لئے کسی فخض کے دل میں بدشگونی کا خیال آئے ہی اسے گنہکار قرار نہیں دیا جائے گا۔ایسے شخص کو چاہیے کہ اللہ عزوجل کی ذات پر تؤکل کرکے اپنا کام مکمل کرے اور شگونِ بدکودل میں جگہ نہ دیے۔

^{1 (}تفسيرروح البيأن،428/3 بيروت)

^{2 (}المعجم الأوسط، بأب من اسمعه سعيد، ج 2، ص 803 ، حديث 3607 ، يرو كريسو بكس ، الأهور)

^{3 (}الإحراب/آيت57)

سورج اور چاند گر بن کے بارے میں لوگ اِفراط و تفریط کا شکار نظر آتے

ہیں۔ کہیں توسورج گر بمن کا (مخصوص شیشوں کے ذریعے) نظارہ کرنے کے لئے پارٹیال منعقد پر سیار

كى جاتى بين اور كہيں كر بن كے بارے ميں مخلف تصورات وتوبمات يائے جاتے بين ،مثلاً:

گر ہن اس وقت لگتاہے جب سورج کو بلائیں اور خو فناک جانور نگل لیتے ہیں۔ گر ہن کے وقت

حاملہ خواتین کو کمرے کے اندررہے اور کیڑااور سبزی وغیرہ ندکا شنے کی ہدایت کی جاتی ہے تاکہ

ان کے پیچ کسی پیدائش نقص کے بغیر پیدا ہوں، گر ہن کے وقت حاملہ خواتین کو سلائی کڑھائی

ہے بھی منع کماجاتا ہے کیونکہ یہ خیال کیاجاتا ہے کہ اس سے بچے کے جسم پر غلا اثر پڑ سکتا ہے۔

بعض معاشر وں میں جس دن گر بن لگتاہے اکثر لوگ کھانا پکانے سے گریز کرتے ہیں کیونکہ ان کا خیال ہے کہ گر بن کے وقت خطرناک جراثیم پیدا ہوتے ہیں ، کئی مشرقی ملکوں میں علم ٹجوم

کے اہرین سورج گر بہن سے مسلک پیشن گوئیاں کرتے ہیں جن میں سی تیابی یا نقصان کی نشان

وبی کی جاتی ہے یا کسی کی پیدائش یا وفات سے اسے مسلک کیاجاتا ہے۔ الفرض مشرق و

مغرب، ترتی پذیراور ترقی یافته د نیامیں ہر جگہ سورج اور چاند کر بن کے انسان پر معفر اثرات کے

حوالے سے خدشات پائے جاتے ہیں۔ یہ تمام اعتقادات غلط، من گھڑت، بے بنیاد ہیں۔ (1)

الله عزوجل کے پیارے حبیب، حبیب لیبیب، طبیبوں کے طبیب منگالٹیکٹم نے ان توہمات کو محتم کیا۔ آقا کریم منگالٹیکٹم نے اشاد فرمایا: "سورج اور چاند الله عزوجل کی نشانیوں میں سے دو

نشانیاں ہیں، انہیں گر ہن کسی کی موت اور زندگی کی وجہ سے نہیں لگئا۔ پس جب تم اسے دیکھو تو الله عزوجل کو پکارو، اس کی بڑائی بیان کرو، نماز پڑھواور صدقہ دو"۔ (2)

ہمیں کیا کرنا چاہیے:

جب سورج یاچاند کو گہن گئے تومسلمانوں کو چاہئے کہ وہ اس نظار ہے

ے مخطوط ہونے (ڈاکٹروں کا کہناہے کہ گرئمن کے وقت سورج کوبراہ راست دیکھنے سے آنکھ کی

^{1 (}ماغوديدشگوني . ص73، مكتبة المديده كراچي)

^{2 (}معيح البغاري، كتاب الكسوف، بأب الصدقة في الكسوف، ج1. ص470، حديث 1944، قريد بك سفال، الأهور)

بیٹائی بھی جاسکتی ہے) اور تو ہمات کا شکار ہوئے کے بجائے ہار گاو البی میں حاضری دیں اور گڑ گڑا کر اپنے گناہوں کی معافی طلب کریں ،اس یوم قیامت کو یاد کریں جب سورج اور چاند بے نور ہو جائیں گے اور ستارے توڑ دیئے جائیں گے اور پہاڑ لیسٹ دیئے جائیں گے۔(1)

وہی ہو تاہے جو منظورِ خدا ہو تاہے:

بدشگونی ایک ہلاکت خیز باطنی بیاری ہے۔ انسان کو

چاہیے بد شکونی کو دل میں جگہ نہ وے اور ہر کام میں اللہ پر بھر وسہ کرے جب بھی کوئی تقصان پنچے تووہ یہ ذہن بنالے کہ بیہ میری تقذیر میں لکھا تھا۔ جیسا کہ ارشادِ باری تعالیٰ ہے:

قُلُ لَّنُ يُصِيْبَنَآ إِلَّا مَّا كَتَبَ اللهُ لَنَا *هُوَ مَوْلَىنَا *وَ عَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكِّلِ الْمُؤْمِنُونَ (²⁾

ترجمہ کنزالعرفان "تم فرماؤ: ہمیں وہی پہنچ گاجو اللہ نے ہمارے لیے لکھ دیا، وہ ہمارا مدر گارہے اور مسلمانوں کواللہ ہی پر بھروسہ کرناچاہیے"

ہادراس کی زندگی، رِزق اور مصیبتوں کو لکھ دیاہے"۔(4)

لہذاایک مسلمان ہونے کی حیثیت سے ہمارااس بات پر یقین کامل ہوناچاہئے کہ رنج ہویا خوشی! آرام ہو یا تکلیف! اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہے اور جو مشکلات، مصیبتیں، تنگیاں اور بماریاں ہمارے نصیب میں نہیں تکھیں گئیں وہ ہمیں نہیں پہنچ سکتیں۔

^{1 (}بدشكوني، ص81، مكتبة المدينه، كراجي)

^{2 (}التوبه،آيبتا5)

^{3 (}ترمذي، كتاب صفح القيامة ، بأب يغاوت وقطع رحمي، ج2، ص172، حديث 408، فريديات سنال، لاهور)

^{4 (}ترمدى، كتاب القدر ، بأب ماجاء لاعدوى، ج2، ص23، حديث 14 فريد بك ستال ، لاهور)

آخري بدھ:

صدرُ الشريعة مقتى محمد امجد على اعظمى دحية الله عليه لكصة إلى:

"ماہ صفر کا آخر چہار شنبہ (بدھ) مندوستان میں بہت منایا جاتا ہے، لوگ اپنے کاروبار بند

کر دیتے ہیں، سیر و تفری و شکار کو جاتے ہیں، نوریاں پکتی ہیں اور نہاتے دھوتے خوشیاں مناتے

ہیں اور کہتے یہ ہیں کہ حضورِ اقد س منافیتی نے اس روز عنسل صحت فرمایا تھا اور ہیر دنِ مدینہ طیبہ
سیر کے لیے تشریف لے گئے تھے۔ یہ سب با تیں بے اصل ہیں بلکہ ان دنوں میں حضور
اکرم منافیتی کا مرض شدت کے ساتھ تھا، وہ با تیں خلافِ واقع ہیں۔ اور بعض لوگ یہ کہتے ہیں

کہ اس روز بلائیں آتی ہیں اور طرح طرح کی با تیں بیان کی جاتی ہیں سب بے ثبوت ہیں "۔(1)

سٹارز کی حقیقت :

علم ہیئت کا ماہرین، قدیم ہونائی فلنی اہل نجوم اور دور حاضر میں خود کو پڑھا کھا ہجھنے والوں کی بہت بڑی تعداو ستاروں کے اثرات کی قائل ہے۔ یہ لوگ انسانوں کے تام، سارت ٹی بیدائش سے سیارے تکا لئے اور ان سیاروں کی تاثیر کو سعادت مندی اور منحوس ہونے سے تعییر کرتے ہیں۔ کی لوگ شادی اور کاروبار جیسے اہم فیصلے ستاروں کی نقل و حرکت کے مطابق کرتے ہیں۔ اور اس کے متعلق اخباروں میں کالم بھی شائع ہوتے ہیں۔ (اس طرح کچھ لوگ کا ہنوں، ٹجو میوں سے جاکر قسمت کا حال معلوم کرتے ہیں)۔ یہ سب الکل پچو یا تیں ہیں ظن و حمیوں سے جاکر قسمت کا حال معلوم کرتے ہیں)۔ یہ سب الکل پچو یا تیں ہیں نظل و حقارت کی علاوہ پچھ بھی نہیں۔ اسلام میں ایسے باطل نظریات کی قطعاً مخبائش نہیں ہے۔ نظل م کا نکات کی عمل باگ دوڑ اللہ تعالی کے دست قدرت میں ہے، وہی مالک و مختارہے، اس کی مشیت کے بغیر ایک پید نہیں بات اور جو ستاروں کی تاثیر (بالذات) کے قائل ہیں لیتی یقین رکھتے ہیں ان پر علم کفر ہے۔ (2)

صیح بخاری ومسلم کی حدیث پاک میں ہے: حضور پُرنور خلافیڈ کم نے بارش کے بعد صبح کی نماز میں صحابہ کرام دھی الله تعلا عنهم اجمعین کی امامت فرمائی، پھر ارشاد فرمایا: کیا تم جانتے ہو کہ

^{1 (}بهار شريعت ، حصه 16. ص659 ، مكتبة المديعه، كراجي)

^{2 (}ماخوذرسمورواج كى شرعى حيفيت، ص 500 / شرح صيح مسلم. ج1. ص 527 ، فريد بك ستال ، الاهور)

تمہارے رب نے رات کمیا فرمایا ؟ رب تعالیٰ نے ارشاد فرمایا ہے: میرے بندوں میں سے پچھ نے مؤمن رہتے ہوئے صبح کی، پچھ نے کا فررہتے ہوئے۔ جو مؤمن ہے اس نے کہا: ہمیں اللہ پاک کے فضل ورحت سے بارش عطاہوئی۔ یہ مجھ پر ایمان رکھتاہے اور ستاروں (کی تا ثیر) سے گفر وا ٹکار کر تاہے جبکہ کا فرنے کہا: ہمیں تاروں کی اِس اِس چال سے بارش ملی۔ یہ مجھ سے گفر کر تاہے اور ستاروں (کی تا ثیر) پر ایمان رکھتاہے۔ (۱) (2)

ساروں کا تعلق انسان کی قسمت سے نہیں صبح بخاری کی حدیث پاک بیں ہے:

" حضرت قاده رض الله تعالى عنه في فرما يا (الله عزوجل كا ارشاد ہے) اور بلاشبہ ہم نے قریب کے آسانوں کو چراغوں سے مزین فرمایا۔ بہ ستارے تین فائدے کے لیے پیدا کیے گئے ہیں۔ آسان کی زینت کے لیے اور شیطانوں کو سنگسار کرنے کے لیے اور علامتیں ہیں جن سے بیں۔ آسان کی زینت کے لیے اور علاوہ اور کوئی تاویل کی اس نے غلطی کی اور علم سے اپنا حصہ ضائع کرویا اور اس کا تکلف کیا جس کا اسے علم نہیں "۔(3)

لہٰذا مسلمان کو چاہیۓ کہ قطعان سٹارز پریقین ندر کھیں اور نہ ہی کوئی الی تحریر پڑھیں جس میں کھھاہو کہ آپ کا بیہ ہفتہ کیسے گزرے گا، تا کہ ذہن میں کسی قشم کی کوئی بدھگونی جنم نہ لے۔

> کریں نہ ننگ خیالاتِ بر مجھی، کردے شعور و فکر کو پاکیزگ عطا یا رب (کلام عطار)

^{1 (}صحيح اليغارى، كتاب الإفان ماب يستقبل الإمام الناس افا سلم.ج 1. ص406. صيده 846. فويديك مسئال الأهور) 2 (صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان كفر من قال مطرنا بالتوء، ج1 ، ص108 مديدة 202. فويد بالتستال الأهور) 3 (صحيح البغارى، كتاب بدا الخلق، باب في التجوم، ج2 ، ص233، فويد بك ستال الأهور)

پياري بيثيال

بیٹا پیدا ہویا بیٹی ، انسان کو اللہ تعالیٰ کا شکر بھالانا چاہیے کہ بیٹا اللہ عزوجل کی نعمت اور بیٹی رحمت ہے اور دونوں ہی ماں باپ کے بیار اور شفقت کے مستخل ہیں۔ عمو مادیکھا گیاہے کہ عزیز وا قربا کی طرف سے جس خوشی کا إظهار لڑکے کی ولاوت پر ہوتا ہے ، محلے بھر میں مشائیاں با نٹی جاتی ہیں ، مبارک سلامت کا شور کے جاتا ہے لڑکی کی ولاوت پر اس کا دسواں حصہ بھی نہیں ہوتا۔ و نیاوی طور پر لڑکیوں سے والدین اور خاند ان کو بظاہر کوئی فائدہ حاصل نہیں ہوتا بلکہ ان کی شادی کے کثیر اخراجات کا بھار باپ کے کندھوں پر آن پڑتا ہے شایدائی لئے بعض ناوان بیٹیوں کی ولادت ہوئے پر ناک چڑھات کا بھار باپ کے کندھوں پر آن پڑتا ہے شایدائی لئے بعض ناوان بیٹیوں کی ولادت ہوئے پر ناک چڑھات واپ باپ ناپندیدگی کا اظہار کرتے) ہیں اور پکی کی امی کو طرح طرح کے طعنے ویئے جاتے ہیں ، طلاق کی دھمکیاں دی جاتی ہیں بلکہ ایک سے زائد بیٹیاں ہونے کی صورت میں اس دھمکی کو عملی تعبیر بھی دے دی جاتی ہیں بلکہ ایک سے زائد بیٹیاں ہونے کی میٹیوں کو بی منوس قرار دے دیاجاتا ہے ، اس وہم کی بھی شرعا کوئی حیثیت نہیں۔

اعلی حضرت امام احمد رضاخان علیہ الرحمہ سے اس کے متعلق سوال پوچھا گیا تو آپ نے ارشاد فرمایا: " بیٹیوں کی پیدائش کو برا جاننا محض باطِل اور زنانے اَوہام اور ہندوانہ خیالاتِ شیطانیہ ہیں ان کی پیروی حرام ہے "۔(1)

بیٹیوں کی پرورش کے فضائل:

بیٹیوں کی پیدائش پر ول چھوٹا کرنے والے دوستوں کو

چاہیے ذراسو چیں کہ اللہ تعالی نے اپنے حبیب مَا اللّٰمِیْمُ کو ہر شے افضل واعلیٰ عطا قرمائی اور اپنے پیارے حبیب مَاللّٰمِیْمُ کو الله رب العزت نے چار بیٹیاں عطا فرمائیں تو محلا بیٹیوں کی پیدائش کیسے

برى موسكتى ؟ امام غزالى رحمة الله عليد فرماتي إلى :

" بیٹی بیٹے سے زیادہ باعث بر کت ہے، اور اسکی پر ورش میں اجر و ثواب زیادہ ہے "۔ (1)
اللہ عزوجل نے جن لوگوں کو بیٹیوں سے نوازاہے، انہیں چاہیے کہ وہ ذیل میں فرامین مصطفیٰ مَالِیْتُوْمُ کو باربار پڑھیں جن میں بیٹی کی پر ورش پر مختلف بشار توں سے نوازا گیاہے۔ چنا خچہ حضور پاک، صاحب لولاک، سیاح افلاک مَالِیْتُومُ نے ارشاد فرمایا :

- (1) "بیٹیوں کو بُرامت کہو، میں بھی بیٹیوں والا ہوں _بے شک بیٹیاں تو بہت محبت کرنے والیاں، عمکسار اور بہت زیادہ مہربان ہوتی ہیں"۔(2)
- یں اور حضور جانِ جاناں مَنَّا الْمِنْ الْمِنْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله الله الله ا نه دے اور نه بی بُراجانے اور نه بیٹے کو بیٹی پر فضیلت دے تو الله عزوجل اس شخص کوجنت میں داخل فرمائے گا"۔(3)
- (3) اور نبی رحمت مَنَّافِیَمُ نے ارشاد فرمایا "جس کی تین پیٹیاں ہوں، وہ ان کا خیال رکھے، ان کو اچھی رہائٹ کو اچھی رہائٹ کو اچھی رہائٹ دے، ان کی کفالت کرے تواس کے لئے جنت واجب ہوجاتی ہے۔ "عرض کی گئی: "اور دو ہوں تو؟" فرمایا: "اور دو ہوں تب بھی۔ "عرض کی گئی: "اگر ایک ہو تو؟ "فرمایا: "اگر ایک ہو تو بھی "۔ (4)
- ا مرا بیں ہونوں ۔ اسلام الشخیر کے ارشاد فرمایا: "جس شخص پریپٹیوں کی پرورش کا بار پڑجائے اور وہ (4) اور بیارے آقا مَگائِلِیم کے ارشاد فرمایا: "جس کے لئے جہنم سے روک بن جائیں گی "۔(⁵⁾ (5) اور حضور خاتم النبیین مَگائِلِیم نے ارشاد فرمایا: "جس کی تین بیٹیاں یا تین بہنیں ہوں یا دو بیٹیاں یا دو بہنیں ہول وہ ان سے اچھاسلوک کرے اور ان کے بارے میں اللہ تعالیٰ سے ڈرے تو اس کے لیے جنت ہے "۔(⁶⁾

^{1 (}كيميائےسعادت، باب المعبلات، ص238، شياء القرآن پملى كيشاز، لاهور)

^{2 (}مسلدالفردوسللديلمي ج2 ص 415 حديث 7556 دار الفكر ، بيروت)

^{3 (}البستند الشلحاكم، كتأب البروالصلة ج5، ص 824، حنيث 7348. شيير برادر ز، الأهور)

^{4 (}المعجم الأوسط بأب البيم، ج4، ص347، حديث 6199، يرو گريسو بكس، لاهون)

^{5 (}صميحمسلند، كتاب البروالصلة بأبقضل الاحسان الى البنات، ج3، ص447 منيية 6636. فريد بك ستال يلاهور)

^{6 (}ترمذي. كتأب الير والسلت بأب ماجاء في الدفقه ج1. ص900 حديث 1977 فريد بك سفال الأهور)

بیارے آ قامنا فیلم کی بیٹیوں پر شفقت:

(1) پیارے آقا کریم منافیق کی صاحبزادیوں پر انتہائی شفقت فرماتے۔ حضرت سید تنافاطمہ دفن الله تعالی صنعا جب اپنے والمدِ بزر گوار ، مدینے کے تاجدار منافیق کی خدمت اقد س میں حاضر ہو تیں تو آپ منافیق کی صرے ہو جاتے ، ان کی طرف متوجہ ہو جاتے ، پھر ان کا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لے لیتے ، اس یوسہ دیتے پھر ان کو اپنے بیٹنے کی جگہ پر بٹھاتے۔ اس طرح جب آپ منافیق منافیق منافیق کی حکمہ یہ بٹھاتے۔ اس طرح جب آپ منافیق منافیق منافیق کو دیکھ کر منافیق منافیق کو دیکھ کر منافیق کے اس تشریف لے جاتے تو وہ آپ منافیق کو دیکھ کر کھٹری ہو جاتیں ، آپ کا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لے لیتیں پھر اس کو چُومتیں اور آپ منافیق کو این حکمہ یہ بٹھ میں ۔ لیتیں پھر اس کو چُومتیں اور آپ منافیق کو این حکمہ بر بٹھا تیں۔ (1)

(2) حضرت سید تناعائشہ صدیقہ دھی الله تعالی عنها فرماتی ہیں کہ نجاشی بادشاہ نے رسولِ اکرم ، نُورِ مُجِهم مَنْ اللّٰیُخِ کی خدمت میں کچھ زپورات بطورِ تحفہ بھیج جن میں ایک حبثی (کالے) تَکلینے والی انگوشمی بھی تھی۔ نبی کریم مَنْ اللّٰیُخِ نے اس انگوشمی کو چھڑی یا آنگشت ِ مبار کہ سے مَس کیا (یعنی خُچوا) اور اپنی ٹواسی امامہ کو بلایا جو شہز ادک رسول حضرتِ سید تُنازینب دھی الله تعالی عنها کی بیٹی تھیں اور فرمایا: " اے چھوٹی چی ا اسے تم پین لو"۔ (2)

(3) حضرت سيدنا ابو قما ده ده ده الله تعالى عند روايت كرتے بيں كه الله عزوجل كے محبوب، وانائے غُيوب مكافية مارے پاس تشريف لائے تو آپ (لين نواس) امامه بنت ابوالعاص ده الله تعالى عند كو آپ مَّالَيْتُهُمُ نماز پِرُهائے لگے توركوع ميں جاتے وقت انہيں اتارو بين اور جب كھڑے ہوتے تھے۔ پھر آپ مَنَّالَيْتُهُمُ نماز پِرُهائے لگے توركوع ميں جاتے وقت انہيں اتارو بين اور جب كھڑے ہوتے توانہيں اٹھالينے۔ (3)

 ⁽سان) إن داؤد، كتاب الإدب. بأب مأجاء في القيام. ج3. ص604، حديث 4540 شياء القرآن إبلى كيشاز، الأهور)

^{2 (}سان افيداؤد، كتاب الخاتم بال ماجاء في فعب اللساء ج3. ص231 صيد 3697 وفياء القرآن يعلى كيشار الاهور)

^{3 (}حميح البغاري: كتأب الإدب بأب رحة الولد، ج3.ص 393، حديث 5996. فريد بالتسلُّ أن الأهور)

بے اولادی :

ترجہ كزالعرفان: "آسانوں اور زمين كى سلطنت الله اى كے ليے ہے۔ وہ جو چاہے پيدا كرے حجے چاہے بيٹيال عطافر مائے اور جسے چاہے بيٹے دے۔ يا انہيں بيٹے اور بيٹياں دونوں ملا دے اور جسے چاہے بانچھ كر دے، بيٹنگ وہ علم والا، قدرت والا ہے۔"

ان آیات سے معلوم ہوا کہ کسی کے ہاں صرف بیٹے پیدا کرنے، کسی کے ہاں صرف بیٹے پیدا کرنے، کسی کے ہاں صرف بیٹیاں پیدا کرنے کا اختیار اور قدرت صرف اللہ تعالیٰ کے پاس ہے، کسی عورت کے بس میں بیات نہیں کہ وہ اپنے ہاں بیٹا یا بیٹی جو چاہے پیدا کرلے، اور جب بیات روش دن سے بھی زیادہ واضح ہے تو بیٹی پیدا ہونے پر عورت کو مشق ستم بنانا، اسے طرح طرح کی اذبین وینا، بات بہ طعنوں کے نشر چھونا، آئے دن ذلیل کرتے رہنا، صرف بیٹیاں پیدا ہوئے پر اسے منحوس سجھنا اور طلاق دے دینا، قتل کی دھمکیاں دینا بلکہ بعض او قات قتل ہی کر ڈالنا، بیر اس مجبور اور بے بس کے ساتھ کہاں کا انساف دیا اس طرز عمل کو اپنایا ہوا ہے جو دراصل کفار کا طریقہ تھا۔ جیسا کہ ارشاد باری تعالیٰ ہے:

وَ إِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْأُنْثَى ظَلَّ وَجُهُهُ مُسُودًّا وَّ هُوَ كَظِيْمٌ ۚ يَتَوَالَى مِنَ الْقَوْمِ مِنَ سُوَّةٍ مَا بُشِّرَ بِهِ آيُمُسِكُهُ عَلَى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِالَّا سَاّءَ مَا يَخْمُنُونَ (1) يَخْمُنُونَ (1)

ترجمہ کنزالعرفان: "اور جب ان میں کسی کو پٹی ہونے کی خوشخبری دی جاتی ہے تو دن بھر اس کا منہ کالار ہتاہے اور وہ غصے سے بھر اہو تاہے۔ اس بشارت کی بر ائی کے سبب لوگوں سے چھپا پھر تاہے۔ کمیا اسے ذات کے ساتھ رکھے گا یا اسے مٹی میں دبادے گا؟ خبر دار! یہ کتنا بر ا فیصلہ کردہے ہیں "

افسوس! اسلام نے عورت کو جس آگ سے نکالا آن کے لوگ اسے پھر سے ای بیس جھونک رہے ہیں۔ اسلام نے کوارے کو جس آگ سے نکالا آن کے لوگ اسے پھر سے ای بیس جھونک رہے ہیں۔ اسلام نے کفار کے چھینے ہوئے جو حق عورت کو دائت ور سوائی کی چکی سے نکال کر معاشرے بیں جو عزت اور مقام عطا کیا، آن کے مسلمان دوبارہ اسے ای چکی بیس پینے کے معاشرے بیں جو عزت اور مقام عطا کیا، آن کے مسلمان دوبارہ اسے ای چکی بیس پینے کے لئے دھیل رہے ہیں اور شاید انہی بد عملیوں کا بتیجہ ہے کہ آن اسلام کے وشمن عورت کے حقوق کی آڑ بیں مسلمانوں کے اس کروار کو دنیا کے سامنے پیش کر کے دین اسلام چیسے امن کے علم دار مذہب کوئی دہشت گر دمذہب ثابت کرنے پر شلے ہوئے ہیں اللہ تعالی مسلمانوں کو بدایت عطافر بائے، آبین۔ (2)

اولاد کی و قات پر صبر واجر:

جن والدین کی اولا دوفات پاجائے انہیں چاہیے کہ وہ اس دنیاوی

نعت کے چھن جانے پر صبر کریں اور اخر وی اجر و لُواب کے مستحق بنیں۔اولا و کی وفات پر صبر و اجر سے متعلق تین فرامین مصطفیٰ مَوَالَیْنِیُم ملاحظہ ہوں :

(1) رسول الله مَثَاثِلَيْمُ نِي إِرشاد فرمايا: "جس نے تين بچے آگے بھيج ديے جوانجي بالغ نہ ہے تو

دہ بچے اس کے لیے جہم سے مضبوط پردہ (ڈھال) بو نگے۔ حضرت ابودر دض الله عند نے عرض

^{1 (}النحل، آيت 58-59)

^{2 (}تفسيرصر الاالجنان، تحت الرايته الهوري 5049مكتبته المنينه كراجي)

کیا: (یارسول الله مَنْ اللَّهُ مَنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ مَنْ اللّهُ عَلَيْمٌ) میں نے دو آگے بیمجے ہیں۔ فرمایا: "تو دو "۔ حضرت الی بن کعب " دو بیا الله مَنْ اللّه عَنْ الله مَنْ اللّه مَنْ الله عَنْ الله مَنْ الله عَنْ الله مَنْ الله عَنْ الله مَنْ الله عَنْ الله الله عَنْ الله الله عَنْ الله الله عَنْ ا

سی کی وفات پر کیاسوچ ہونی چاہیے:

کے ضائع ہونے پراجر و لواب کی امیدر تھتی ہو"_⁽³⁾

جِتة الاسلام المام محمر بن محمر بن محمر غز الى رحبة الله عليه قرمات بين:

" جس شخص کا بچید یا قریبی رشتہ دار فوت ہوجائے تو دہ یہ خیال کرے کہ ہم دونوں اپنے شہر کی جانب سفر کر رہے تھے لیکن میر ابچہ مجھ سے پہلے اپنے وطن اور رہائش گاہ پر پہنی گیاہے اور سفر کرتے ہوئے بچے کا جلدی پہنچنا اس کے لئے زیادہ رنج وغم کا باعث بھی نہیں بڈا ہے اس لئے کہ اس نے سفر اسے یقین ہو تاہے کہ عنقریب میں بھی اس سے جاملوں گا، فرق صرف اتناہے کہ اس نے سفر جلدی طے کر لیا اور میں نے تاخیر سے طے کیا۔ موت کا معاملہ بھی ایسابی ہے کیونکہ موت کا

^{1 (}سان ابن ماجه، كتأب الجنائز بأب ماجاء في ثواب ب 1. ص 500 مديد 1594 مياء القرآن يبلي كيشنز الاهور) 2 (سان اين ماجه، كتأب الجنائز بأب ماجاء فيدن اصيب ج1. ص 500 مديد 1596 مبياء القرآن يبلي كيشاز الاهور)

^{3 (}سان اين ماجه. كتاب الجنائز باب ماجاء فيس اصيب ج1. ص501. حديث 1597. خياء القرآن پيل كيشان الاهور)

معنی ہے دطن کی طرف جلد پہنچنا حتٰی کہ بعد والا بھی آملے توجب دہ اس طرح سے سوچے گا اور بالخصوص اولا و کی موت پر ملنے والے تواب پر غور کرے گا کہ جس سے ہر مصیبت زوہ کو تسلی حاصل ہو جاتی ہے تواس کی پریشانی کم ہو جائے گی "۔(1)

**



جس سہانی گھڑی چکا طبیبہ کا چاند اُس دل افروزِ ساعت پہلا کھوں سلام

ماوميلاد شريف:

ثُلُ بِفَشْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهِ فَبِلْ اللَّهَ فَلْيَفْرَحُوا 'هُوَ خَيْرٌ مِنَّا يَجْمَعُونَ (٩)

¹ والبواهب أللدتير ياب كرولادسشريف جد ص عد قرينيادستال الاهور)

^{2 (}مذارج العبوب، بأب ذكر ولادمه فريف. ج2.ص32 شيأ مالقر ان يمل كيفاد الأهور)

^{3 (}فعاذي رهويه ملعصاً. ج26. ص411-14مرها فاؤد أرهون الأهور)

^{4 (}يوٽس،آينعة)

ترجمه کنزالعرفان :" تم فرماؤ : الله کے فضل اور اس کی رحمت پر ہی خوشی منانی چاہیے ، میہ اس سے بہترہے جووہ جمع کرتے ہیں "۔

﴿ وَاذْ كُرُوْا لِغُبَّةُ اللَّهِ عَلَيْكُمُ (1)

" اے ایمان والو!اپنے اوپر اللہ کا احسان یاد کرو " ترجمه كنزالعرفان:

اللهِ ﴿ وَالْمُكُرُوا نِعْمَتَ اللهِ (⁽²⁾

" اور الله کی نعمت کا شکر اوا کر " ترجمه كنزالعرفان:

﴿ وَ اَمَّا بِيغَمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثُ (3)

ترجمه كنزالعرفان: " اورائيغ رب كى نعمت كاخوب چرچا كرو "

ان آیات مبار کہ سے واضح ہوا کہ اللہ عزوجل نے جمیں تعت ملنے، فضل واحسان ہونے کے موقع پر شکر، چرچا (خوشی) کرنے کا تھم ارشاد فرمایا ہے۔ اور رسول مَا اللّٰهِ کَمُ اَل و نیامیں

تشریف آوری الله عزوجل کا خاص الخاص فضل واحسان ، اورسب سے بڑھ کے رحمت و نعمت

ہے۔ کمیا کوئی مسلمان اس کے بر عکس سوچ سکتا؟ حاشا ہر گزنہیں۔ کیونکہ ارشاویاری تعالیٰ ہے:

ارسَلُنْكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَلِيثِينَ (a) الْمُومَا آرْسَلُنْكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَلِيثِينَ

ترجمه كنزالعرفان: "اور ہم نے تنہیں نہ بھیجا مگر رحمت سارے جہانوں کے لئے "

آپ مَالَ اللَّهُ وَكُولَ مَا اللَّهُ عَرُوجِل بهت برا فضل برب تعالى فرما تاب : المُوَمِينِينَ بِأَنَّ لَهُمْ يِّنَ اللهِ فَضَلًا كَبِيرًا (5)

ترجمه کنزالعرفان: "اور ایمان والوں کوخوشنجری دبیر و کیدان کے لیے اللہ کابڑا فضل ہے"

^{1 (}المأثنة،آيت7)

^{2 (}النغل،آيت114)

^{3 (}الضي آيت11)

^{4 (}الإنبياء،آيت107)

^{5 (}الأحزاب،آيت47)

21ر سے الاول (میلاد المصطفیٰ مَنَالِیْکُومِ) پر ہونے والے افعال گھر و محلے سجانا، صدقہ و خیر ات کرنا، جلوس وغیرہ نکالنایہ تمام کام جائز و مستحب ہیں اور اِنکے ورست ہونے پر کثیر دلائل علمائے اہلسنت کی گتب میں موجود ہیں ، جو اہل محبت کے لیے کائی وشائی ہیں ۔ محکرین میلاد کا غلائے اہلسنت کی گتب میں موجود ہیں ، جو اہل محبت کے لیے کائی وشائی ہیں ۔ محکرین میلاد کا فرہی وسیاسی ریلیاں نکالنا، سیاسی پارٹی کے حیشندے لگانا، سیرت کا نفر نسیس کرنا، شادی کے موقع پر لائینگ کرنا، سالگرہ پر کیک کائی جو پوراسال مین جائز ہو تاہے وہ ماور تھ الاول آتے ہی آت کی میں کرنا ناجائز وبدعت سینہ گئے لگتا ہے۔ اللہ عزوجل انہیں عظافرہ اے اور مسلمانوں کوان کے غلط فتووں سے بچائے۔

سب في ميلادِ مصطفىٰ مَنَا النَّهُ مِناما:

(1) پیارے آ قا سَلَ الْفَیْوَ الدن ولادت کی خوشی میں خود میلاد مناتے سے رحمت عالم سَلَ الْفَیْوَ مِی مِی خود میلاد مناتے سے رحمت عالم سَلَ الْفَیْوَ مِی مِی کوروزه رکھنے کے بارے میں سوال کیا آ جو اہارشاد فرمایا: "یہ دن میری ولادت کادن ہے اور ای دن مجھ پر قر آن نازل کیا گیا"۔(1) جو اہارشاد فرمایا: "یہ دن میری ولادت کا دن ہے اور ای دن محصوفی مَالَّتُنْفِعَ کا ذکر اپنی اُمتوں میں کرتے رہے ، ابن عساکر نے سیدناعبداللہ بن عباس دعی الله تعالى عنها سے روایت کیا ہے فرماتے ہیں: میشہ اللہ تعالی نبی مَالِّفَیْقُ کے بارے میں آدم اور ان کے بعد سب انبیاء سے ہیگوئی فرماتار ہااور قدیم سے سب احتیں حضور کی تشریف آوری پر خوشیاں مناتیں اور آپ مَالِّفِیْمُ کے توسل وسیلہ) سے ایک اللہ تعالی نے حضور مَالِّلْفِیْمُ کے توسل وسیلہ) سے ایک اللہ تعالی نے حضور مَالِّلْفِیْمُ کے توسل و بہترین امت و بہترین امن اللہ تعالی نے حضور مَالِّلْفِیْمُ کے توسل و بہترین شہریس ظاہر فرمایا "۔(2)

(3) صحالي رسول كاتب وحي حضرت امير معاويه دهي الله تعالى عنه بيان فرماتے ہيں:

"رسول الله مَلَاللَّهُ عَلَيْهُمُ صَحاب كرام كى ايك محفل مين تشريف لائے اور صحاب كرام دضى الله عنده

^{1 (}صحيح مسلم، كتاب الصيام، بأب استحباب صيام، ج1، ص822 حديث 2742، قريد بالتستال، لاهور) 2 (الخصائص الكبرى، بأب محصوصيت باخارالبيقاق، ج1، ص55، مكتبه اعلى صعرت، لاهور)

یہاں اس لیے بیٹے ہیں (یہ محفل سجانے کا مقصد بیہ ہے) کہ ہمیں جو اللہ تعالی نے دین اسلام کی وولت عطافر مائی اور آپ مظافی کم بھیج کر ہم پر احسان فرما یا اس پر اسکا ذکر کریں اور اسکا شکر اوا کریں۔ رسول اللہ مکا لیڈی آئے کہ ہم پر احسان فرما یا اس پر سحاب) ہم صرف اس لیے بیٹے ہو؟۔ صحابہ نے عرض کی: اللہ کی قسم ہم صرف اس لیے بیٹے ہیں کہ دین اسلام کی دولت اور آپی آمد کی نعمت پر اللہ کا شکر اوا کریں۔ رسول اللہ نے ارشاد فرما یا: "اے میرے صحابہ ہیں تم سے قسم اس لیے جبین کہ دین اسلام کی جو سے ہم پر شک ہے ، بلکہ (معاملہ بیہ ہے) میرے یاس جبر کیل سے قسم اس لیے جبین کے دہا کہ جسے تم پر شک ہے ، بلکہ (معاملہ بیہ ہے) میرے یاس جبر کیل علیہ السلام آئے اور جسے خبر دی کہ تمہارے اس عمل پر اللہ تعالی فر شتوں پر فخر فرما دہا ہے "۔(1) اللہ! اللہ! اللہ! صحابہ کرام کے جس عمل (ذکر ولا دہت مصطفیٰ) پر رب تعالیٰ خود فر شتوں پر فخر فرمائے وہ ہم کیوں نہ کریں۔

(4) محافظ ناموسِ رسالت شیخ الحدیث والتقبیر علامہ خادم حسین رضوی دحدة الله علیه صحابہ کرام دفی الله تعالی عنهم اجمعین کے میلاد منانے پر بڑی بیاری بات ارشاد فرماتے ہیں کہ: "تم ہم پر صرف سرکار کی آ مد سرح با (حضور سَلَافِیْکُمُ تشریف لے آئے) کہنے پر اعترض کرتے ہو؟ آمہ میں چیزیں (تیرک) تقبیم کرنے پر اعتراض کرتے ہو؟ تم جانے ہو صحابہ کرام نے کیسے میلاد منایا؟ صحابہ نے تو اپنے جان و مال رسول الله سَلَافِیْکُم پر فِداکر کے ،وقت کی (دوم وایران) کے قلعوں اور محلات کے ،وقت کی (دوم وایران) کے قلعوں اور محلات کے دروازوں کو کھنکھناکریمی نعره لگایا کہ! تکلوباہر اب حضور آگئے (سرکارکی آ مدم حیا)"۔

ای طرح کُتب سیرت میں روایات موجو دہیں کہ ولادتِ مصطفیٰ مَکَالْیُرُیْمُ کی خوشی میں فرشتوں، جانور ول، چرند پرند حتیٰ کہ اس کا مُنات کی ہر ہر چیز نے خوشی و مسرت کا اظہار کیا، کہ وہ نبی جن کورب تعالیٰ نے دونوں جہانوں کے لیےرحمت بنایاوہ اس دنیا میں جلوہ گرہوگئے۔ لہذا ہم بھی اس لیے خوشی کا اظہار کرتے ہیں اور اللہ تعالیٰ کی اس نعمت کا چرچاکرتے ہیں۔

^{1 (}سان نسال، كتاب آداب القضاة بأب كيف يستحلف الحاكم ج3. ص544 منية 5330 هياء القرآن يبل كيشتر الأهور)

حشر تک ڈالیس کے ہم پیدائش مولی منگالٹیڈنم کی ڈھوم مشل فارِس محبد کے قلع گراتے جائیں گے خاک ہو جائیں عدد چل کر مگر ہم تو رضا ذمیں جب تک ڈم ہے ذکر اُن کاسناتے جائیں گے

خوشی پر عقلی ولیل :

الله عزوجل نے مسلمانوں کو نعمت ، رحمت ، فضل کے ملنے پر خوشی کرنے کا تھم ارشاد فرمایا ہے (جیسے اوپر آیات بیس بیان ہوا)۔ اللہ عزوجل نے یہ تھم مطلقا دیا ہے ، یعنی اس کے ساتھ کوئی قید ندر کھی کہ تم نے کسی خاص (مخصوص) طریقے سے خوشی منانی ہے بلکہ مطلقا فرما کر اجازت دے وی کہ جس طرح چاہو ہر جائز طریقہ سے شریعت کے دائرہ بیس رہتے ہوئے وی مناو۔ یہ مطلقا تھم فرمانا اس لیے بھی ہے کہ ہر خطہ ، ہر ملک ، ہر قوم میں خوشی مناف منانے کا انداز جداگانہ ہو تا ہے۔ اگر کسی کو مقید کر دیا جائے ، کہ تم نے فلال فلال طریقہ سے بی خوشی مان ہو تا ہے۔ اگر کسی کو مقید کر دیا جائے ، کہ تم نے فلال فلال طریقہ سے بی خوشی مان ہو تا ہے۔ اگر کسی کو مقید کر دیا جائے ، کہ تم نے فلال فلال طریقہ سے بی خوشی مان کے لیے باعث مسرت نہ دہے گی بلکہ بعض او قات باعث الگ ہوتی اذبیت بن جائے گا کیونکہ ہر انسان کی کسی چیز کو پہند کرنے سے متعلق طبی حالت الگ ہوتی سے۔ لہٰذا ہر جائز طریقہ سے خوشی کا اظہار کر ناور سبت ہے۔

ہاں دورِ حاضر میں ان افعال میلا د کے ساتھ بہت سی خرافات کی آمیز ش جاہل عوام کی طرف سے شامل کر دی گئی ہے، جس سے اہل سنت کا کوئی تعلق نہیں۔ہم یہاں ذیل میں افعالِ میلا دیر مختصر دلائل اور ان میں ہونے والی خرافات کا متعلق لکھتے ہیں تاکہ اس کے متعلق لوگوں کی اصلاح کی جاسکے۔

افعسال مسيلاد ادراصسلاح

محفل ميلادشريف اورنعت خواني:

یوم ولادت مصطفی منافیتی پر مسلمان محفل میلاد مصطفی منافیتی پر مسلمان محفل میلاد مصطفی منافیتی کاشکرادا کرتے ہوئے محفل میلاد پر ذکر الهی کیاجاتا ہے ، تعتین پر حی جاتی ہیں ، آ قاکریم منافیتی کی فضائل و مناقب بیان میلاد پر ذکر الهی کیاجاتا ہے ، تعتین پر حی جاتی ہیں ، آ قاکریم منافیتی کی فضائل و مناقب بیان کے جاتے ہیں۔ یہ تمام آمور باعث تواب اور ہمارے ایمان کا نقاضہ ہے۔

مرکار منافیتی کی نعت پاک بیان کرنا سنت الہیہ ہے اور خود آپ منافیتی کی سنت مبار کہ بھی مرکار منافیتی کی نعت بیان کرنا سنت مائیت دخی الله تعالی عند نعت خوانی کے ذریعے رسول الله منافیتی کے فضائل و کمالات بیان کرتے اور آ قاکریم منافیتی کے دشمنوں کو اپنے اشعار کے ذریعے جواب دیا کرتے میں حضرت حسان بن ثابت کے کثیر اشعار موجو و بیں۔ چنانچہ حدیث پاک میں ہے ، رسول الله منافیتی معرت حسان بن ثابت کے کئیر اشعار موجو و بیں۔ چنانچہ حدیث پاک میں ہے ، رسول الله منافیتی معرت حسان بن ثابت کے کئیر اشعار موجو و بیں۔ چنانچہ حدیث پاک میں ہے ، رسول الله منافیتی کی طرف سے (میرے و منمنوں کو) و بیات الله کے دسول منافیتی کی طرف سے (میرے و منمنوں کو) و بیاب دو، اے الله دور آلقد س (حضرت جریل) کے ذریعے حسان کی مدور ما" (۱)

اصلاح:

ہرسول آکرم مُنَّالَیْمُ سے ہماری محبت کا اظہار تعلیم نبوی مُنَّالِیْمُ کے مطابق ہوناچاہیے، محفل میلاد کے تمام اُمور علائے اہلسنت کی گرانی میں ہوناضروری ہیں۔ محفل میلاد شریف میں من محفرت روایات کا ذکر کرنا، مساجد کے اندر تصویریں آ دیزاں کرنا، بعض مقامات پر ثعت خواثوں اور پیشہ ور مقررین کامیلاد کے نام پر کاروبار، گانوں کی طرز پر نعت خوانی، موسیقی کے آلات اور دف وف ڈھول کا استعال ہیے تمام اُمور ایسے ہیں جنگی روک تھام ضروری ہے۔ (دف کے ساتھ نعت

^{1 (}محيح مسلم, كتاب قضائل الصحابه بأب قضائل حسان، ج3، ص359 حديث 6336 قريد بك ستال الاهور)

پڑھناجمہوراہل سنت کے نزدیک جائز نہیں)۔ نعت خوانوں کے ساتھ لڑکوں کی ٹیم وغیرہ کااللہ تعالیٰ کے اسم گرامی (اللہ اللہ) کواس طرح بگاڑ بگاڑ کر پڑھنا کہ ڈھول کی آواز پیدا ہو، اس طرح بگاڑ بگاڑ کر پڑھنا کہ ڈھول کی آواز پیدا ہو ساقتڈ سٹم کی گونج (echo) اس طریقے سے کھولنا کہ آلاتِ موسیقی جیسا ردھم پیدا ہو جائے ناجائز ہے اور ڈھول ہی کے متر ادف ہے۔

جائے ناجائز ہے اور ڈھول ہی کے متر ادف ہے۔

ہلانعت خوانوں اور واعظین کویہ بات بھی یاور کھنی چاہیے کہ وہ اپنے قول و فعل سے عوام کو شخر کرنے کا سبب نہ بنیں۔ مثلاً لوگوں سے زبر دستی ہاتھ اٹھواتا ، اور ہلانے کا کہنا وغیرہ۔ اسی طرح عوام کے سامنے اہل سنت کے عقائد و نظریات کے بجائے اپنی فہم و ذوق سے اشعاد کی من گھڑت تشریحات کرنا بھی سختی سے منع ہے۔ اکثر محافل میں نعت خوان حضرات بخشش کے پروانے تقیم کر رہے ہوتے ہیں، شفاعت نبوی منافیتی کو اس تناظر میں بیان کرنا کہ عوام یے پروانے تقیم کر رہے ہوتے ہیں، شفاعت نبوی منافیتی کو اس تناظر میں بیان کرنا کہ عوام یے خونی ، بے علی بلکہ بد عملی پر قوی ہو، یہ ظلم عظیم ہے۔ ایمان خوف اور امید کے در میان ہے، جہال جنت کی بیان کی جائیں۔ جہال جنت کی بیان کی جائیں۔ جہال جنت کی بیان کی جائیں۔ کہ مناہ کی وعیدیں بھی بیان کی جائیں۔ خوتی مناہ کی وعیدیں بھی بیان کی جائیں۔ خوتی مناہ کی وعیدیں بھی بیان کی جائیں۔ خوتی مناہ کی دعیدیں بھی بیان کی جائیں۔ خوتی مناہ کی دیدی مناہ کی دعیدیں بھی بیان کی جائیں۔ خوتی مناہ کی دور میان کی جائی کی دور کی ہوئی خوتی یا مریض کو تکلیف ہو۔ اس طرح خورت کاخوش الحان نے شہر کی آواز ایسے (نعیت) پڑھنا کہ نامح موں کو اس کے نغمہ کی آواز ایسے واز جائے سے حورت کاخوش الحان نے شہر کی آواز ایسے (نعیدی) پڑھنا کہ نامح موں کو اس کے نغمہ کی آواز جائے سے حرام ہے۔ (۱)

مر ہے۔ ﴿ بعض او قات رات دیر تک محفل جاری رہتی ہے اور صبح ٹجر کی نماز سوئے ہوئے گزر جاتی ہے۔ ایسا کرنا بالکل درست نہیں کیونکہ صبح ٹجر کی ٹماز باجماعت پڑھنا ساری رات عبادت سے بہتر ہے۔اس لیے چاہیے کہ محفل میلا و کا دورانیہ رات اتنی دیر تک ندر کھا جائے کہ لوگ ٹجر کی نماز کے لیے اُٹھ نہ شکیں۔

اس بات کا خاص خیال رکھنا چاہیے کہ رحمت عالم مَانْٹِیْلِ کی ولادت کے بابر کت دن ہم کسی مسلمان کواڈیت پہنچانے کا باعث نہ ہو۔

^{1 (}فتأوي رضويه، ج 22. ص 242، رضا فأؤنثيش، الأهور)

جلوس نكالنا:

میلاد النی منافیق کے جلوس تعظیم و تو قیر مصطفی منافیق کے اظہار کا ایک طریقہ بیں۔ کتب احادیث وسیرت بیں ہے کہ: "جب نی منافیق بجرت کرے مدید منورہ بیں داخل ہوئے تو مدید منورہ بیں جو مسلمان موجو دیتے، ان کا حال یہ تھا مر د اور عور تیں چیتوں پر چڑھ گئے ، نیچے اور غلام راستوں بیں چیل گئے اور اس طرح پیارتے تھے یا محمد یارسول اللہ، یا محمد یارسول اللہ، یا محمد یارسول اللہ، یا محمد یارسول اللہ، یا محمد یارسول اللہ منافیق اور اس

اس مدیث پاک سے پتا چلا کہ خوش کے موقعہ پر جلوس نکالنا محابہ کرام دن الله عنهم اجمعین کا طریقہ ہے۔ بہت سے بیان کیا ہے، جس میں اُن طریقہ ہے۔ بہت سے محد ثین نے اِس حدیث پاک کو تفصیل سے بیان کیا ہے، جس میں اُن اشعار کا بھی ذکر کیا جوخوا تین اور چھوٹی بچیاں آ قاکر یم مَلَّا اللَّهُ عَلَى اَللَّهُ عَلَى اَللَّهُ عَلَى اَلْهُ عَلَيْ اِللَّهُ عَلَى اَللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَيْ اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَيْكُونِ اِللَّهُ عَلَى اِللَّهُ عَلَيْكُونَ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْكُونَ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُونَ الْكُلِيْكُونَ اللَّهُ عَلَيْكُونَ اللَّهُ عَلَيْكُونَ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُونَ اللَّهُ عَلَيْكُونَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُونَ اللَّهُ عَلَيْكُونَ اللَّهُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَ اللْعُلِيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَى اللْكُونَ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَى اللَّهُ عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَيْكُونَا عَلَ

اصلاح:

ہے محفل میلاد کے جلوسوں میں باوضو ہو کر زبان پر درووشر یف یا نعت جاری رکھتے ہوئے باو قار
انداز میں شرکت کرنی چاہیے۔اگر کوئی غیر مسلم بھی دیکھے تو کشش محسوس کرے۔ لیکن پعض
جلوس اس قدر منفی افرات کے حامل ہوتے ہیں کہ اغیار کا متاثر ہو ناتو کجا، خو د سنجیدہ مسلمان بھی
پریشان ہوجاتے ہیں، اکلی در تنگی کے لیے انظامیہ کو مناسب تھکت عملی کرنی چاہیے۔
ہی جلوس میلاد کے موقع پر اس بات کا خاص خیال رکھنا چاہیے کہ جلوس جس (route) سے
گزرے دہاں موجود کسی چیز کو نقصان نہ پنچے۔ بعض جگہوں پر لوگ شکر کاءِ جلوس میں چیزیں
(تبرک وغیرہ) بانٹنے کے لیے اُسے اُچھالے ہیں جو بعض او قات زمین پر گر کرضائع بھی ہو جاتا
(تبرک وغیرہ) بانٹنے کے لیے اُسے اُچھالے ہیں جو بعض او قات زمین پر گر کرضائع بھی ہو جاتا
ہے ، ایسا کرنا رزق کی بے مخرمتی ہے جو بالکل جائز نہیں۔ کسی کو کوئی چیز دینا چاہیں تو ہاتھ میں
د چیجے۔ محفل میلاد النبی منافین کے حکوس کے دوران یہ بات بھی یادر کھنی چاہیے کہ کوئی نماز
قضانہ ہو کہ جلوسِ میلاد ایک مستحب امر ، اور نماز فرض ہے۔

^{1 (}صيح مسلم، كتاب الزهنوالراقائق باك في منيك الهجرة ج3، ص710 منيك 7438 فرينهك ستال، لاهور)

حجنڈے لگانا:

ولادت مصطفیٰ مَنَا اللَّهُ مِنْ مِهِندُ بِ حِهندُ بِ كَانا مِعِي رسول الله مَنَا اللَّهُ مَنَا اللَّهِ مَنا الله

مصطفیٰ کے اظہار کا ایک انداز ہے۔ نبی مکرم نور مجسم شاہ بنی آدم منافیز مل والدہ محترمہ سید تنا

آمنه آ قاكريم مَا لَيُعْيِّرُ كَلَ ولادت كاذكر كرتے موے فرماتى إين:

(1) " میں نے دیکھا کہ تین حجنڈے نصب کئے گئے۔ایک مشرق میں دوسرامغرب میں اور " میں کے دیکھا کہ تین حجنڈے نصب کئے گئے۔ایک مشرق میں دوسرامغرب میں اور

تبسر اکعیے کی حبیت پر تو حضور انور مَنْ اللّٰهُ عُمْ ولادت ہوگئ"۔(1) منابعہ منابعہ کی حبیب میں منابعہ کی در سے دورہ

روح الاثين نے گاڑا کھیے کی حصت پر جھنڈا

تا عرش اڑا پھريرا صح شب ولادت

(2) مدارج النيوت ميں شيخ عبد الخق محد في دولوى دهدة الله عليه وسول مَلَا لَيْنِيْم كى مدينه سے مكم كى طرف جمرت كا واقع نقل كرتے بيں كه دوران سفر: "حضرت بريده ده والله تعلا عنه في أكرم كى بارگاه ميں عرض كيا: آپ مدينه طيب ميں اس حال ميں واخل ہوئے كه آپكي ساتھ ايك حجند البحق ہو، تو انہوں نے اپنا عمامہ اتارا اور اس نيزے يہ بانده ليا پھر دسول الله مَثَّلَ اللَّهُمَّ كَ آكے آگے واور قافلہ بيجھے بيجھے آتار با)" _(2)

اس روایت ميں جھنڈے اور جلوس دونوں كاذكرہے۔

جراغال كرنا:

جشن آزادی پر لا کھوں روپے کے جھنڈے اور جھنڈیاں لگائی جاتی ہیں اس پر کوئی اعتراض نہیں کرتا، لیکن میلاد النبی مَالَّیْرِیَّا کے موقع پہ جھنڈے اور چراغاں (lighting) محتراض نہیں کرتا، لیکن میلاد سے ہیں اور اسے فضول خرچی (اسراف) کہتے، ورحقیقت یہ اسراف نہیں، یہ سب حضور مَالَّیْرِیُّا کی محبت و تعظیم میں کیاجاتا ہے۔ خانہ کعبہ پر معمولی غلاف بھی ڈالا جاسکتا ہے، لیکن پھر ہر سال کروڑوں ریال کا غلاف کیوں ڈالا جاتا؟ اِس لیے کہ کعبہ شریف کی تعظیم متعمود ہے۔ یادر کھیں "اسراف میں کوئی بھلائی نہیں اور بھلائی کے کاموں میں شریف کی تعظیم متعمود ہے۔ یادر کھیں "اسراف میں کوئی بھلائی نہیں اور بھلائی کے کاموں میں

^{1 (}الخصائص الكيزى بأب خصائص ولادت ج 1.ص 154 مكتبه احل حورت الأهور)

^{2 (}مدارج العبوت، ج2، ص103، ضياء القرآن يبلي كيشنز، لاهور)

خرج كرنے ميں كوكى اسراف خبيں (علامه على قارى امام احدر ضا) " _

(1) امام قسطلاني رصة الله عليه مواجب اللديديين روايت تقل كرت بين:

" آقا كريم مَنَّالِيَّيْلُ كي والده محترمه حضرت آمنه فرماتي بين: "ولاوت مصطفيٰ مَنَّالِيَّلُمُ كي رات میں نے دیکھا کہ میں نے ایک نور جناہے۔ جس سے شام کے محلات روشن ہو گئے یہاں تک کہ میں نے انہیں و کچے لیا"_(1)

(2) حضرت على المرتفى دهى الله تعالى عنه في حضرت عمر دهى الله تعالى عنه كو ماو رمضان ميس مسجد میں فندیلیں نگا کرزیادہ روشن کرنے پریہ دعادی :"الله عزوجل حضرت عمر کی قبر کوروش فرما، جیسے انہوں نے جماری مسجد کوروش فرمایا"_(2)

ان روایات سے پید چلا کہ کی چیز کی تعظیم کے لیے زیادہ (lighting & decoration)

كرناجائزہے۔ اصلاح:

🖈 بارہ رہے الاول کے موقع پر گلیوں محلوں کی سجاوٹ میں ایسے فانوس، حجنٹریاں اور دیگر و کیوریشن کاسامان لگایا جا تا ہے ، جس پر کعبہ شریف، گذبدِ خضریٰ یا نَقْشِ نعلینِ مصطفیٰ مَا کَالْمُیْکُمُ کَی تصویر بنی ہوتی ہے۔اس طرح ان کے چھوٹے چھوٹے ماؤل ڈیکوریشن کے طور پر اٹکائے جاتے ہیں۔ان تمام چیز دل کے گرنے ہے ان کی بےاد لی کا توی خدشہ ہو تاہے اور بعض مقامات پر گرے دیکھے بھی گئے ہیں، لہذ تمام عاشقانِ مصطفیٰ مُنَافِیْتُمْ سے التجاءے کہ اس قشم کی ڈیکوریشن کا استعال بالکل نہ کیا جائے جن کے گرنے پر بے اولی کا اندیشہ ہو۔

🖈 پرافال (lighting) کے لیے بجلی چوری نہ کی جائے۔ بلکہ اپنے گھر میں ایک دن کے لیے (connection) کروا لیاجائے اور بل ادا تیجیے یا واپڈا وغیرہ سے رابطہ کر کے مسی دوسرے جائز طریقہ سے چراغال کی ترکیب سیجے۔ اس طرح ساری رات یہ (lights) جلتی چھوڑ دینا بھی درست نہیں۔

^{1 (}البواهب اللديه، ج1، ص79، قريد بالتستأل، الأهور)

^{2 (}قيضان فاروق اعظم باب اوليا حفاروق اعظم ج1، ص735 مكتبته البدينه، كراجي)

کھانا کھلانا ، صدقہ وخیر ات کرنا :

^{کس}ی کو کھانا کھلاناصد قہ خیرات کرناسال کے کسی بھی دن

موجائز اورباعث ِثواب ہے۔ حضور پُرنور مَكَافِلَةُ مُ نَهِ ارشاد فرمایا:

- (1) " ہر ذی روح کویائی بلائے میں اجرہے "_(1)
- (2) "اورتم میں سے بہتر وہ ہے جولوگوں کو کھانا کھلا تاہے "_(2)

مسلمان میلاد النبی مظافیر کا پر لوگوں کو کھانا وغیرہ کھلا کر اس کا تواب آ قاکر یم منافیر کے بارگاہ میں بدینہ تحفۃ عقیدہ پیش کرتے ہیں ،جو کے شرعاً جائز ہے۔

کا کاما

بارہ رہے الاول کے موقع پر کیک کا شااور دوسروں کو کھلانا بھی نڈکور بالا احادیث کے تحت جائز ہے۔ ہمارے ملک میں ہر خوشی کے موقع پر کیک وغیرہ کا ثاجاتا ہے (پیدائش کا دن ہویا شادی کی سالگرہ، جشن آزادی ، د کان کا افتتاح ہویا اور کوئی خوشی کا موقع) ان سب میں کیک

ہو پاشادی میسا مکرہ، جسن ازادی ،وفان فافسان ہو پااور نوم خو می فا کاشاجائز ہے اور کیک کاٹنے کو غیر مذہبوں کا طریقنہ کہنا در ست نہیں۔

اصلاح:

﴿ ہاں البتہ خیال رہے جس طرح آن کل کئی جگہوں پر لاکھوں روپے کا صرف کیک کا ٹاجاتا اور ایک کا ٹاجاتا اور اور کر و دعور توں) کا اِرد گرو جموم اکٹھا ہو جاتا ہے ، تو اِس میں ریاکاری سمیت دیگر خرافات کا قوی اندیشہ ہے۔ ایسا کرتا درست نہیں۔ اگر کوئی کیک ہی کا ٹاچا ہتا ہے تو اُسے چاہیے کہ کیک کو گھر کے اندر ہی رکھ کر کا ٹ لے اور پھر دوسری چیزوں کی طرح باہر عوام میں تقسیم کر دے تا کہ کہیں یہ عمل خرافات کی وجہ سے گناہوں کا سبب نہ بن جائے۔

ای طرح بعض جگہوں پر دیکھا گیاہے کہ کیک پر کعبہ معظم، گنبد خطری ، نقش تعلین مصطفیٰ مَا اُلیْنِ مُصطفیٰ مَا اُلیْنِ مُصطفیٰ مَا اِلیْنِ مُصطفیٰ مَا اِلیْنِ کا اسم گرای (نام مُلِائیْنِ کم کی تصاویر بنا کر یا حضور جان رحمت آتا دو عالم محمدِ مصطفیٰ مَا اِلی میت کے لیے انتہائی مبارک) لکھ کراسی پر کاٹے وقت چھڑیاں چلائی جاتی ہیں ، جو یقینا اہل محبت کے لیے انتہائی

تكليف دهبات ع،اس سے اجتناب لازم ہے۔

 ⁽سان این ماجه، کتاب الاداب، پای قطل الصدقه الباء، ج2، ص481 شیاء القرآن پهلی کیشتر الاهور)
 (مسئد امام احد، ج10 ص103 حدیث 24425 مکتبه رحانیه، الاهور)

بانتنے میں احتیاط کیجیے:

و يكها كياب كه كوئي چيز (لنكر) وغيره بانتن موت أس عوام كي

جانب بچینکا جاتا ہے، جس سے اکثر وہ چیز زمین پر گر جاتی ہے اور لوگ ایک دوسرے سے چھینے آ

مِين لگ جاتے ہيں۔

اصلاح:

→ یہ طریقہ فلط ، رزق کی بے ٹرمتی اور اسراف ہے ، اِس طرح نہ کیا جائے ، بلکہ جو چیز بھی ہو اوگوں کے ہاتھ میں پکڑائی جائے۔

اوگوں کے ہاتھ میں پکڑائی جائے۔

بيازيال بنانا:

بانی جاتیں ہیں، مجود کے در خت لگائے جاتے ہیں۔ یہ سب اس لیے کیا جاتا کہ جس وقت آقا مرائے جاتے ہیں۔ یہ سب اس لیے کیا جاتا کہ جس وقت آقا کریم مظافیر کی مکہ معظمہ بیس ولاوت ہوئی تووہ مقام ایساتھا (یعنی پہاڑ اور مجود کے در خت وہاں موجود شخے اور آج بھی ایسا ہے)۔ اُن مبارک جگہوں کی تعظیم وعظمت بیان کرنے اور اپنے پچوں کے ول میں اُن جگہوں سے محبت پیدا کرنے کے لیے ایساکر ناجائز ہے۔ البتہ ان میں کچھ خرابیاں کے ول میں اُن جگہوں سے محبت پیدا کرنے کے لیے ایساکر ناجائز ہے۔ البتہ ان میں کچھ خرابیاں ہیں جن کی اصلاح بے حدضر وری ہے۔

اصلاح:

ہے سے شروری ہے کہ جہاں پہاڑی بنائی جائے دہاں دیکھنے والوں بیس مردوں عور توں کا إختلاط نہ ہو ، وگر نہ ایسا کرنا گناہ کا سبب ہو گا۔ ای طرح دیکھا گیا ہے کہ پہاڑیوں پر مختلف قتم کی گڑیاں و جاند اروں کے چھوٹے ماڈل (بُت) رکھے ہوئے ہوتے ہیں، ان کی اجازت نہیں، احادیث بیں اسکی شخق سے ممانعت ہے، اسکی جگہ کوئی پھول دغیرہ رکھ سکتے ہیں۔ ہے فی زمانہ اس کام کی اصل روح باقی نہیں رہی، لوگ بغیر کسی نیت کے اسے صرف تفر تے کے

جمه می زماندان کام می استن رون بای میں رہی، تو ت بییر میں سیت سے استے سرف سر ر طور پر کرتے ہیں اور خرافات بہت زیادہ ہوتی ہیں،اس کیے اب اس کام سے پچنا بہتر ہے۔

کعبہ و گنبرِ خضراء کے ماڈل بنانا:

تمفتی امچه علی اعظمی دحیةالله علیه فرماتے ہیں : " روضہ منورہ کی سیجے نقل بنا کر بقصد تبرک رکھنا جائز ہے۔جس طرح کاغذیراس کا فوٹو بہت ہے مسلمان رکھتے ہیں۔ یو نبی اگر پتھر وغیرہ کی عمارت بنائیں تو اس میں اصلاَ حرج نہیں۔ جانور کی تمثال (شکل، ماڈل) حرام ونا جائز ہے۔غیر ذی روح کی تصویر میں کوئی قباحت نہیں، نقشہ تعلین مبارک کو ائمہ و علماء جائز بتاتے ہیں اور اس کے مکان میں رکھنے کوسب باہر کت جانتے ہیں۔شبیہ روضہ (گنبدِ خضریٰ کے ماؤل) کا بھی وہی تھم ہے۔ (خانہ کعبہ کے ماؤل کا بھی یہی تھم ہے) "۔ (1)

🖈 یادر تھیں! کعبہ وروضہ کے ماڈل تعظیم کے لیے بنائے جاتے ہیں،اس لیے اسے کسی الی جگہ پر ر کھنا جہاں تعظیم نہ ہو جیسے گندی زین پر یا ایسی جگہ جہاں مر دوں وعور توں کا اختلاط ہو کسی صورت بھی (رکھنا) درست نہیں ، بے خرمتی کاسخت اندیشہ ہے۔

🖈 اگر بناناچاہیں توضر وری ہے تعظیم کے ساتھ کسی او تچی جگہ پر رکھیں اور خیال کیجیے کہ اس کے رکھنے کی وجہ سے لوگوں کو گزرنے میں تکلیف نہ ہو۔ میہ باعث ِراحت وتسکین ہوناچاہیے نہ کہ

باعث تكليف واذيت ـ

م کچھ مزید خرابیوں کی اصلاح :

🖈 12ریج الاول شریف کے موقع پر بچے وغیرہ گلی محلہ سجائے کے لیے چیٹرہ اکٹھا کرتے ہیں اور بعض او قات راستے بند کر دیتے ہیں، اِس میں یادر تھیں کہ کسی سے زور و زمر دستی کرنا ہر گز چائز نہیں ای طرح عام گزر گاہ بند کرنا بھی جائز نہیں ، والدین کو چاہیے اس معاملہ میں پچوں کی اصلاح کریں۔

🚓 بعض جگہوں پر دیکھا گیا کہ بچوں کے ساتھ بالغ نوجوانوں کارش (چندہ اکٹھا کرنے کے لیے) چو کول میں ہوتا ہے، اگر مید عام گزر گاہ ہے اور خوا تین نے بھی پہیں سے گزر ناہے تو یہ طریقتہ

ہر گز درست نہیں ، آقا کریم مَثَلِّ الْمُنِیمُ نے الی جگہوں (گزر گاہوں) پر کھڑے ہونے سے منع فرمایا ہے۔

🚓 چراغال (گلیاں بازار سیج) و یکھنے کے لیے عور توں کا اجنبی مر دوں میں بے پر وہ ٹکلناحرام ہے اور بایر ده عور توں کا بھی مر وجہ انداز میں مر دوں میں اختلاط (بعنی خلط ملط) ہونا انتہائی افسوس ناک اور گناہوں کاسبب ہے۔عور توں کا مر دوں کے جلوس میں شر کت کر نامجھی منع ہے۔ 🖈 بالخصوص میلادِ مصطفیٰ مُنَافِیکُم کے مہینے اور بالعموم پوراسال مذہبی پروگرامز کی تشہیر کے لیے بہت ی شظیمات کی جانب سے دایواروں پر گیلو کے ذریعے کاغذ کے اشتہارات لگائے جاتے ہیں، جن پر اساء اللبیہ اور انبیاء و اولیاء کے نام مبارک بھی لکھے ہوتے ہیں۔ بیہ اشتہارات موسموں کی نظر ہونے کی وجہ سے کچھ ہی عرصہ میں ریزہ ریزہ ہو کر زمین پر گرتے رہتے ہیں۔ ہمارا إن دوستوں سے سوال ہے کہ اگر کوئی مخض ہمارے سامنے ان مقدس ناموں کی بول بے ادبی کرے تو ہمارا اُسکے ساتھ کمیارویہ ہو گا ؟۔ دیکھنا چاہیے کہ کوئی ایسا کر کے سخت گناہ کا مر تکب تو نہیں ہورہا۔ محافل کی تشہیر کے لیے بہترین طریقہ بہے کہ باریک کاغذ کے بجائے (flex) کا استعال کیا جائے اور جہاں جہاں ہیر(flex) آویزاں کی جائیں ، محفل کے بعد وہاں سے اتار کر اوراتی مقدسہ والے ڈیوں میں ڈال دیاجائے۔ پہاں اس بات کا بھی خیال رہے کہ بغیر اجازت سمسی کی دیوار پر اشتہار لگانامنع ہے۔

الم میں بھی جلوس، محفل وغیرہ کے لیے عوامی گزرگاہ کو مکمل بند کر دینایاعوام کے گزرتے میں

اذیت کاباعث بنناجائز نہیں۔ امام الل سنت احمد رضاخان رصقالله علیه فرماتے ہیں: الاستختاب کردید میں دوروی میں گزیشا۔ یہ ملی تیسی لادارید اور دو میں خراد روجوز رکھی مکر دو

" بید حقوقِ عامه کی دست اندازی ہوئی، شریعت میں تواس کحاظ سے داستہ میں نماز پڑھنی بھی مکروہ ہوئی نہ کہ بازار کی سڑک پر مجلس"۔(1)

 سب کرنا، حد درجہ کی بے باکی وب ادنی ہے۔اللہ تعالی ایسے لوگوں کو ہدایت عطافر مائے۔آمین

الغسسر ف : آقائے وہ جہال سرور کا خات رہمت عالم مَنَّ اللَّيْ اَ کَ ولادت کے دن ہر طرح سے لوگوں کے لیے آسانیوں اور خوشیوں کا سبب بنیں ، بلکہ اس دن تورسول الله مَنَّ اللَّهِ اَ کَ ہر اُمْتی کی خاص نیت ہونی چاہیے کہ آج ایٹ نی کریم منگاللَّهُ کَم کی ولادت کے دن ہم کمی فتم کا غیر شرع کام نہیں خاص نیت ہونی چاہیے کہ آج اللّه نی کریم منگللَّهُ کَم کا ور مصیبت زدہ لوگوں کے کام آئی اور زندگ کریں گا، حقیق میلاد مصطفیٰ منگللُهُ کم ہی ہی ہے کہ وکھیوں اور مصیبت زدہ لوگوں کے کام آئی اور زندگ کے برکام شن شرعی احکامات کو ملحوظ خاطر رکھیں، الله عروجل ہمیں صحیح معنوں میں میلادِ مصطفیٰ منگللُهُ کَمُنْ اللهُ عَروجل ہمیں صحیح معنوں میں میلادِ مصطفیٰ منگللُهُ کَمُنْ کُلُهُ کُمُنْ کُلُهُ کُلُهُ کُلُهُ کُمُنْ کُلُهُ کُلُور کُلُهُ کُلُون کُلُهُ کُلُولُ کُلُولُ کُلُهُ کُلُولُ کُلُهُ کُلُولُ کُلُولُ کُلُولُ کُلُهُ کُلُولُ کُلُولُ کُلُولُ کُلُولُ کُلُ

كسياعيدين صرف دوبين؟؟

عیدمیلاڈالٹی تو عیدک بھی عید ہے بالیقیں ہے عید عیداں عیدمیلاڈالٹی

مسلمان 12ر رئیج الاول شریف کواللہ عزوجل کی نعمت، رحمت، فضل ملنے پر اللہ عزوجل کے تھم پرخوشی کا اظہار کرتے ہیں اور اِس دن کواپنے لیے عید کا دن سیجھتے ہیں، جو کے شرعاً بالکل درست ہے۔ عید کے لغوی معنی ہیں: " جوبار بار آئے، مسلمانوں کے جشن کاروز، خوشی کا تہوار "۔(1)

مكرين ميلاديد اعتراض كرتے بي كه اسلام ميں تو صرف دو عيديں بيں ، يه تيسرى عيد اپنے ياس سے بنالى ہے ؟

ان کا یہ کہنا کہ عیدیں صرف دوہیں غلط اور دجل و فریب پر بٹن ہے کیونکہ احادیث مبار کہ میں اِن دوعیدوں (عیدالفطر،عیدالاضیٰ) کے علاوہ بھی کئی دنوں (یوم جمعہ، یوم عاشورہ، یوم عرفہ، یوم خر) کو بھی عید کا دن قرار دیا گیاہے۔ لہذا جس دن الله عزوجل مسلمانوں کو اپنی کسی خاص رحمتوں اور بر کتوں سے نوازے اُسے عید کا دن کہنا درست ہے۔

يوم عرفه و يوم عاشوره كو احاديث بين عيد كا دن كها گيا اور ساتھ بى احاديث بين اس ون روزه ركھنے كى ترغيب وفضيلت بيان كى گئى ہے۔اس طرح يوم عرفه ويوم عاشوره كواحاديث بين عيد كا دن كها گيا، مگران بين عيدكى نماز نہيں ہوتى۔لبذابيه اعتراضات باطل ہيں۔

افعالِ میلا دیے متعلق تھم شرعی

یادرہے کہ عید میلاد النبی متافیق منانا (جلوس نکالنا، جینڈے لگانا، گھر کو سجانا وغیرہ) لبتی اصل کے اعتبارے نہ ضروریات دین میں ہے ہیں اور نہ ہی ضروریات اہل سنت وجماعت ہے، بینی پر فرض وواجب نہیں بلکہ مستخب (باعث تواب) افعال ہیں۔ البتہ نہ صرف ہمارے ملک میں بلکہ اکثر مسلم ممالک میں بھی ہے اہل سنت کا شعاد اور معمول ہیں اور ٹی نفسہ جائز و مستحن ہیں۔ ان سے دینی فائدہ حاصل کرنے کے لیے مناسب حکمت علی کی ضرورت ہے تاکہ اہل سنت وجماعت کا صحیح تشخص واضح ہو۔ ان مستحب اور مستحس دینی کا موں کو بدعات و خرافات سنت وجماعت کی طرف منسوب کرکے مسلک حق کو ہدف طعن نہ بنا سکیس کو گر اولوگ اہل سنت وجماعت کی طرف منسوب کرکے مسلک حق کو ہدف طعن نہ بنا سکیس۔ (۱)

اگر كوئى شخص ايسے (افعال ميلاد) نہيں كرتاليكن إن كو جائز سجھتا ہے تو ايسے شخص كى تنقيص نہيں كى جائے گى (يعنی أسے برابھلا نہيں كہا جائے گا)، ليكن اگر كوئى إن افعال ميلاد كوبرا كہتا ہو تو أسكى بات كا ضرور رَد كيا جائے گا۔ بال البتہ جو آ قاكر يم مُثَالِيَّتِمُ كى يوم ولادت پر خوش بھى نہ ہو اور مسلمانوں نے بارہ رہج الاول پر خوشى منانے كور سول الله مَثَالِيَّتُم كى وفات پر خوشى منانے اور مسلمانوں نے بارہ رہج گھٹيا الزام لگائے، وہ ضرور شيطان كا چيلا ہے۔ جيسا كه روايت ميں ہے۔ ابن كثير دمشتى البدايہ والنھا يہ (تاریخ ابن كثير) میں لکھتے ہیں، امام سُمِيلى نے بقى بن مخلد حافظ كى ابن كشير سے روايت كيا كہ :

"شیطان (ابلیس) چاربار چیخ کررویا۔ پہلی مرشبہ اُس وقت رویا جب اس پر اللہ تعالی نے لعنت کی، دوم جب اس کو جنت سے نکال کر زمین پر چھینک دیا گیا، سوم جب نبی کریم مُثَافِیْتُمْ پیدا ہوئے ، چہارم جب سورة فانخہ نازل ہوئی "۔(2)

^{1 (}ماخوذاصلاحقائدواعمال،ص47 دارالعلوم تعيميه، كراجي)

^{2 ((}تأريخ ابن كثير) البدايه والنهايه ، من الأياسليلته مولدة عليه . ج2 . ص 166. نفيس اكيدني ، كراجي)

جو شخص آ قاکریم مُنَافِیْتِمْ کی ولاوت پر خوشی کا اظہار نہیں کر تا اور چو جشن ولادت مصطفیٰ مَنَافِیْتِمْ پرخوشی کا ظہار کریں اُن پر طعن و تشنیع کر تاہے، اُسے سوچناچا ہیے کہ وہ مسلمانوں کے رہتے پر ہے یاشیطان کے۔

> شار تیری چہل پہل پر ہر اروں عیدیں ربھ الاول سوائے اہلیس کے جہاں ہیں سبھی توخوشیاں منارہے ہیں

> > ***

من گھڑت روایات

رہیج الاول شریف ہے متعلق جھوٹی روایت:

ماور بھے الاول کی آمد پر خوشی منانا اور چرچا

کرنا بہت اعلیٰ اور مستحسن عمل ہے۔ لیکن چند سالوں سے رکھے الاول قریب آتے ہی ایک من گھڑت (جھوٹی) روایت سوشل میڈیا پر گروش کرنے لگتی ہے کہ: "جس نے سب سے پہلے رکھے الاول کی مبار کباد دی اِس پر جنت واجب ہو جائے گی "۔ ایسی کوئی روایت نظر سے نہیں گزری، نہ علاء سے سنی، بلکہ ایسی با تیس عموماً من گھڑت ہوا کرتی ہیں ، اور من گھڑت بات حضور سکا لیے گئے گئے کی طرف قصد آمنسوب کرنا حرام ہے (1)۔ حدیث پاک ہیں اس پر سخت و عید ارشاد فرمائی گئی ہے۔ حدیث پاک ہیں ہے آتا کریم مناظر تا ہے ارشاد فرمایا:

" جس نے جان بو جھ کر مجھ پر جھوٹ باندھاءوہ اپناٹھ کانا جہنم میں بنالے "_(2)

اور بغیر شخفین و تصدیق ہر سنی سٹائی بات کو آگے بھیلانا بھی تہیں چاہیے، کیونکہ حدیث پاک میں الیے مخص کو جمونا قرار دیا گیاہے، چنانچہ فرمانِ مصطفیٰ مَثَالِثَائِم ہے: "انسان کے جمونا ہونے کو

يكى كافى ب كه برسى سنائى بات (بغير حفين كراك آكر) بيان كردے "_(3)

لہذا الی روایات پر مشمل (messages & posts)سے بچابہت ضروری ہے۔

بوڑھی عورت سے متعلق جموٹی روایت:

-اس طرح "رسول الله مَنْأَلْفِيْظُمْ پر كوژا بچينكنے والى

پوڑھی عورت" سے متعلق ایک من گھڑت روایت گروش کرتی ہے۔ جس کی کوئی اصل نہیں۔ تمام مکاتب فکر اور عرب و عجم کے علماء و محدثین کی متفقہ رائے ہے کہ یہ روایت موضوع اور

^{1 (}منتصر قتاوى اهلسنت، ص199 مكتبة المدينه، كراچى)

^{2 (}صحيح اليخاري، كتأب العلم ، يأب الحرمن كلب على النبي، ج1، ص153، حديث 108. قريد بك ستأل، لأهور)

^{3 (}صيح مسلم مقدمه باب النهى عن الحديث . ج1. ص34، حديث 7. فريد بالعستال، لاهور)

من گھڑت ہے۔ (1)(2)

ن سرت ہے۔ اس کے متعلق مفتی ضیاء احمد قاوری وام ظلہ نے "بڑھیاء کہ حقیقت" کے نام سے 330 صفحات پر مشتمل ایک مختیقی کتاب لکھی ہے، جس میں آپ نے ہر جہت سے اس روایت کارو کیا ہے اور علائے عرب وعجم کے فناویٰ کو نقل کیا ہے۔

خُلق عظيم:

سے اور رسول اللہ منافید کے اپنی معاصد کے لیے اس (بوڑھی عورت کو معاف کرنے والی) من کھٹرت روایت کا اکثر ذکر کرتے ہیں ، اور گتاخ رسول کی سزا کی مخالفت ہیں اسے پیش کرتے ہیں۔ یاور کھیں ہے استدلال بالکل غلط ہے۔ گتاخ رسول کی سزاجو کہ کثیر احادیث ہیں بیان کی گئ ہے اور رسول اللہ منافی بین حیات مہار کہ میں اسے 11سے زائد گتاخان مصطفی منافی کی گئی کے بین اسے 11سے زائد گتاخان مصطفی منافی کی بین میں اسے یہ تا کیدہ صفحات ہیں پر نافذ کیا ہے ہے آپکے خلق عظیم ہونے کے بالکل منافی تہیں۔ جیسا کہ ہم آئندہ صفحات ہیں تفصیلا تعصیں گے۔

آئ ہماری قوم نے صرف معاف کرنے کو خلق عظیم سمجھ لیا ہے جو کہ درست نہیں۔
حضور جانِ جانال جناب رحمۃ للعالمین مَالَّیْنِ کا ہر ہر تول و فعل خلق عظیم ہے۔ رسول اللہ
مَالِّیْنِ کَا عَدا اور دین کے دشمنوں سے جہاد کرنا بھی خلق عظیم ہے اور آپ کا مَالِیْنِ کَا فرول
اور گناخوں پر سخی کرنا بھی خلق عظیم ہے۔ الغرض سرکار دوجہاں ، حبیب کبریاء مَالِیْنِ کَا
حیاتِ طیبہ میں جو چیز بھی آپ سے منسوب ہے وہ خلق عظیم میں داخل ہے۔

ہمیں رسول الله منگالیکی کی سیرت مبارکہ کے سیچ اور مستند واقعات کو بیان کرتاچاہیے اور انہیں پر اکتفاء کرنا چاہیے۔ جھوٹی روایات کو ٹیک بیتی یا بدیمتی دونوں طرح سے بیان کرنے کا جواز نہیں بڑا۔

الفهيم البسائل، عقائد كمسائل، ج11، ص38 شياء القرآن پهلى كيشاز الإهور)
 فإهياء كي حقيقت مكتبه طلح الهدر عليها الإهور)

چند مزید من گھڑت روایات:

(1) ایک روایت مید بیان کی جاتی ہے کہ: " ماں کی گودسے لیکر قبر تک علم حاصل کرو"۔

یه روایت موضوع ومن گفرت ہے۔ بیرروایت حدیثِ مصطفیٰ مَنْ اللَّهُمُ نہیں ہے بلکہ یہ لوگوں کا

کلام ہے۔ لہٰذااس کی نسبت رسول اللہ مَثَاثِیْتُا کی طرف جائز نہیں۔ (1) علم کی اہمیت بیان کرنے کے لیے دوسری احادیث بیان کرنی چا تمییں۔

(2) ایک روایت بدبیان کی جاتی ہے کہ: "دنیا آخرت کی کھیتی ہے"۔

یادرہے میدروایت قرآن و احادیث کی تعلیمات کا اولین مفہوم تو ضرورہے۔ کیکن میہ جملہ " و نیا آخرت کی کھیتی ہے " حدیث کے الفاظ نہیں ہیں۔ للبذا اسے مفہوم احادیث کی طور پر توبیان کیا

جاسکتاہے، لیکن اس جملے کی نسبت رسول اللہ کی طرف جائز نہیں۔ ⁽²⁾

(3) ایک روایت به بیان کی جاتی ہے کہ: "مومن کے جو محصے میں شفاء ہے"۔

یہ روایت بھی فرمانِ مصطفیٰ منگالیُکٹِم نہیں ہے۔ ہاں مسلمانوں کے مل بیٹھ کر کھانے میں برکت ضرور ہے جیسا کے دیگر احادیث میں روایات موجو دہیں ، لیکن ندکور بالاروایت حدیث شریف و مسام

> میں اور الکاک معاددہ

(4) ایک روایت بیر بیان کی جاتی ہے کہ: "کہ حضرت سید ٹابلال دھی الله تعالى عند كے اوان نہ و ہے اوان نہ دينے كو د

یہ واقعہ مجمل کتب احادیث میں موجود تہیں ہے۔ علماء نے اسے بے بنیاد اور موضوع قرار دیا ۔۔ (4)

') ایک روایت سه بیان کی جاتی ہے کہ : " کہ جو شخص رمضان کے آخری جمعہ کو ایک قضائے عمری کی نماز اور کے لیے کا فی ہے "۔ عمری کی نماز اواکر لے توبید ایک نماز اس کی ستر سالوں کی قضاء نمازوں کے لیے کا فی ہے "۔ بید روایت قطعی طور پر باطل ، بے بنیاد اور اجماع کے خلاف ہے۔ یاد رہے زندگی میں جتنی بھی

^{1 (}يزهياء كىحقيقت، ص34 مكتبه طلح البدر علينا، الإهور / قيمة الرسى عند العلماء مص)

^{2 (}بزهياء كي حقيقت، ص38 مكتبه طلع الهدر علينا. لاهور /المقاصد منة، ص351 دار الكتأب بيروت)

^{3 (}بزهياء كىحقيقت، ص38 مكتبه طلع البدر عليدا. الدور / كشف الخفاء ج1. ص524 مكتبه القدس القاهر 8)

^{4 (}بزهياء كىحقيقت، ص39. مكتبه طلح البدر عليدا. لاهور)

نمازیں قضاء ہوئی ہیں اُن سب کو الگ الگ اواکر نالازم ہے، لینی اُن سب کی قضاء کرنا ہوگ۔(1) (6) ایک روایت بیہ بیان کی جاتی ہے کہ "حضرتِ اولیں قرنی دخی الله تعلق عند کو جب رسول الله مَثَالِيَّ عَلَيْمَ کَا حَدِيْمِ وَمُدان مبارک شہيد ہوئے کی خبر ملی تو حضرت اولیں قرنی نے اپنے سارے دانت نکال دیے۔"

علاء فرماتے ہیں کہ یہ روایت درست نہیں ہے ، یہ بعض جاہلوں کی طرف سے وضع کر دہ واقعہ ہے۔اگرچہ چند کتب میں بیہ روایت موجو دہے لیکن کسی معتبر یا محفوظ ذریعے سے بیہ ثابت نہیں ہے،اسکی کوئی مستنداصل نہیں۔ ⁽²⁾

I (بڑھیاء کیحقیقت، ص40مکتیمطلحالیدوعلینا ،لاھور /الیوجوعات،ص، 91پیروت) 2 (بڑھیاء کیحقیقت، ص41مکتیمطلحالیدوعلیدا ،لاھور /فتاوئیشارخ،تفاری، ج2،ص115مکتیمبرکات الیدیده، کراچی)

ضعيف اور من گھڑت احاديث ميں فرق سيجي

الل اسلام سال کے مختلف دنوں (شبِ معراج ، شبِ براءت 27 شب وغیرہ) میں اللہ تعالیٰ کے حضور عیادات و مناجات کا خصوصی اہتمام کرتے اور انفرادی واجماعی طور پر اپنے رب کے حضور توبہ وسجدہ ریزی کرتے ہیں ، صدقہ و خیرات کرتے ہیں ، میہ سب کام جائز بلکہ اعمالِ مستحد میں سے ہیں۔

وہائی حضرات مسلمانوں کے اِن ٹیک اعمال کوبری بدعت قرار دیتے ہیں اور اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں انفرادی واجتماعی توبہ واستغفار کرنے سے روکتے ہیں (معافاللہ)۔ان مخصوص دنوں شب معراج، شب براءت وغیرہ کے فضائل وبرکات سے متعلق بہت کی احادیث کتب احادیث میں موجود ہیں اور علماء نے اپنی تصنیفات میں انہیں جمع کیا ہے (وہاں ملاحظہ کیجیے)۔ لیکن مہاں چنداصولی یا تیں ذہن نشین کرلیں:

اول: یہ کہ شریعت مطہرہ میں اصل تھم اباحت (اجازت) کا ہے۔ لینی جو چیز اللہ تعالیٰ نے حال کی وہ حلال ہے، جو حرام قرار دی وہ حرام ہے اور جس کے بارے میں سکوت کیا (لیعنی جن کے بارے میں کوئی واضح تھم خہیں ہے) وہ کام بھی کرسکتے ہیں، جبکہ وہ کام شریعت کے خلاف نہ ہو۔ (1) لہذا مسلمانوں کے وہ طور طریقے جن کی شریعت میں ممانعت نہ آئی ہو وہ جائز ہیں۔ (مزید تفصیل کے لیے شروع کتاب میں "بدعت کی حقیقت" مضمون ملاحظہ سیجھے)۔

روم: ید که جن کامول کی اصل شریعت میں موجود ہے وہ تمام کام بدر جہ اولی جائز ومستحب
بیں۔ اللہ تعالی نے قرآنِ پاک میں سیکٹروں جگہ اپنی عبادت کا تھم ارشاد فرمایا اور اس پر کوئی
قید نہیں لگائی یعنی فلال وقت میں کروفلال میں نہ کرو، فلال دن رات میں کرواور فلال دن رات

قید میں لگائی ہی فلال وقت میں کروفلال میں نہ کرو، فلال دن رات میں کرواور فلال دن رات میں نہ کرو، ایسانہیں فرمایا بلکہ مطلقاً تھم ارشاد فرمایا۔اور جن او قات میں عبادات نہیں کرنی اُن کا بھی اللّٰہ تعالیٰ اور اُس کے حبیب مُنافِیْتِم نے خود ہی بنادیا، مثلاً سورج طلوع یاغروب ہورہا ہو تو

^{1 (}ترمذى، كتاب اللياس، بأب ماجاء في ليس القراء ج1. ص835 مدين 1781، قريد بك ستال الاهور)

نمازنہ پڑھو، عید کے ون روزہ نہ رکھو، عورت ایام مخصوصہ میں نماز و روزہ نہ رکھے وغیرہ الہذا جس وقت عباوت نہیں کرنی تھی وہ اللہ تعالیٰ اور اس کے حبیب مَنَّالَیْکُمُ نے بتادیا، اس کے علاوہ ہر وقت عباوت کا وقت ہے، ہر وقت اللہ کی بندگی کا وقت ہے۔ ان عمالِ صالحہ سے مسلمانوں کورو کنا قطعاً درست نہیں۔

ہم سوم: فی زمانہ ضعیف احادیث کے انکار اور ضعیف احادیث کو عام عوام کے سامنے موضوع ہم سوم: فی زمانہ ضعیف احادیث کو انکار اور ضعیف احادیث کو عام عوام کے سامنے موضوع کے مسلمنے موضوع احدیث بناکر پیش کرنے کا فتنہ عروج پر ہے۔ لیکن یاور کھیں ضعیف اور موضوع احادیث کے علم میں فرق ہے۔ جب فضائل اور نیکی کے کام کی ترغیب کی صعیف اور موضوع احادیث بحض میں فرق ہے۔ جب فضائل اور نیکی کے کام کی ترغیب کی بات ہو تو بہت سے بدغہ جب حضرات ہو گئے نظر آتے ہیں کہ سے حدیث ضعیف ہے۔ لطف کی بات ہد ہے کہ ایسا کہنے والوں کی بڑی تعداد کو یہ بھی معلوم نہیں ہو تا کہ حدیث ضعیف کہتے کے بیں اور ضعیف احادیث پر عمل سے متعلق محد ثین کرام کیا فرماتے ہیں۔

ضعیف احادیث سے متعلق ہے بات یادر کھیں کہ حدیث کو ضعیف محدثین وغیرہ کے کہنے پر یا محدثین کے وضع کیے گئے اصولوں پر کہا جاتا ہے، توجب محدثین کرام کی حدیث کے ضعیف ہونے یانہ ہونے ہیں پیروی کی جاتی ہے تو پھر لازم ہے ضعیف احادیث پر عمل سے متعلق بھی محدثین کرام کی ہی پیروی کی جائے گی اور ضعیف ضعیف کی رٹ لگاکر کسی مخالطہ وینے والے بدئہ ہب کی باتوں کو خاطر میں نہیں لایا جائے گا۔ چنانچہ ضعیف احادیث سے متعلق تمام اکابر محدثین (صحاح سنہ کے مصنف، ان کے شاگر و، ان کے استاد) سب کی اس کے متعلق بھی رائے کہ خعیف احادیث سے کوئی عقیدہ اخذ نہیں کے کہ ضعیف احادیث سے کوئی عقیدہ اخذ نہیں کی جائے گا۔ لہذا بدخہ ہوں کا محدثین کیا جائے گا۔ لہذا بدخہ ہوں کا محدثین کیا جائے گا۔ لہذا بدخہ ہوں کا محدثین کی اصادیثِ ضعیف معتبر و قابلِ قبول ہے، ان پر عمل کیا جائے گا۔ لہذا بدخہ ہوں کا محدثین کے اصولوں پر یا تھینی تان کر حدیث کو ضعیف تو کہہ دینالیکن محدثین کا اس پر عمل کرنے سے متعلق تھم نہ ماننا ہن وحرم می کے سوا پچھ نہیں۔ (۱)

^{1 (} فَنْهِ الْكَارِضِعِيفَ احاديث ہے منتحلق مفتی حسان عطاری المدنی کا یوٹیوب پرریکارڈو کیکچر لماحظہ سیجیے، جس میں آپ نے تقریباً 27 اکابر محدثین کی کتب سے بیربات ثابت کی ہے کہ فضائل کے اعتبار میں ضعیف احادیث معتبر و قابل قبول ہیں)

﴿ چہارم: شبِ معران ، شبِ براءت وغیره یس خاص عبادات سے متعلق کوئی حدیث میں بہت کی روایات موجود ہیں لیکن اگر کسی خاص رات عبادت سے متعلق کوئی حدیث نہ ہو یا موضوع حدیث ہو توائس رات عبادت کرناناجائز ہو جائے گا؟ کیا اگلے دن روزہ رکھنا بدعت ہو جائے گا؟ ، قرآنِ پاک ش کہاں اس رات یا کسی بھی رات عبادت سے متعلق نفی موجود ہے بلکہ ارشاد باری تعالی ہے : فَاِذَا قَضَيْدُتُمُ الصّلَّوٰ فَاذَ كُرُوا اللّٰهَ قِیْمًا وَ قُعُودًا وَ عَلَى جُنُو بِكُمْ عَن الله کویاد کروا الله قاد کروائس پر لیٹے الله کویاد کروا ترجہ کن العرفان : "پھرجب تم نماز پڑھ لوتو کھڑے اور بیٹے اور کروائس پر لیٹے الله کویاد کروا

کوئی بھی مسلمان ان مخصوص راتوں میں کی جانے والی عبادات کو فرض و واجب سمجھ کر نہیں کر تا بلکہ نفلی عبادات کے طور پر کر تاہے، بیہ سب مستحب (باعث ِ ثواب) افعال میں سے ہے۔ لہذا مسلمانوں کو اس سے رو کنااور عبادت سے روکئے کے لیے ان راتوں میں اپنی مساجد کو تالے تک لگا دیناایک گھٹیا فعل اور یہی سب سے بڑھ کر بری بدعت ہے۔

عسرض:

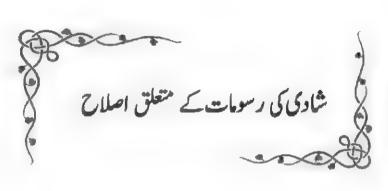
الل اسلام کو چاہیے کہ وہ غور کریں کہ بیدایک مخصوص لوگوں کا گروہ ہے جو کہی مسلمانوں کو اللہ تعالیٰ کی عبادات اور اس کے حضور توبہ و استغفار کرنے سے رو کہا ہے تو کہی پیارے آقا مَنْ اللّٰهِ عَلَیْمُ پر ورود و سلام پڑھنے ، حضور جان جاناں مَنْ اللّٰهِ عُلَمُ کُنِی کُر فضا کُل و برکات بیان کرنے ، آپ مَنْ اللّٰهُ عُلَمُ کُر و شیال مناتے ہوئے محفل میلاد کرنے سے روک کر مسلمانوں کے دلوں میں اپنے نبی کی عظمت شان کم کرنے میں کوئی کر نہیں چھوڑ تارید لوگ کمجی اللہ کے دلوں میں اپنے نبی کی عظمت شان کم کرنے میں کوئی کر نہیں چھوڑ تارید لوگ بھی اللہ کے مجبوب امام الا نمیاء حبیب کریاء صاحب لولاک مَنْ اللّٰهُ عَلَمُ کو اپنے جیسا کہتے ہیں تو کہی آپ مَنَّ اللّٰہُ کُلُمُ کُوب اللّٰہ کے اللّٰہ کا انگار کرکے آپ مَنْ اللّٰهُ کُلُمُ کُوا پنے جیسا کہتے ہیں تو کہی آپ کہ گاہائے کے افتارات و کمالات کا انگار کرکے آپ مَنْ اللّٰہُ کُلُمُ کُلُمُ اللّٰہ کا ایک درازی کرتے ہیں۔ وار کہی اولیاء اللہ کی شان میں زبان درازی کرتے ہیں۔ عاشقانِ رسول مَنْ اللّٰہ عُلِمُ کُو ایسے محروم لوگوں سے دور رہنا شان میں زبان درازی کرتے ہیں۔ عاشقانِ رسول مَنْ اللّٰہ عُلُم کُوں سے دور رہنا شان میں زبان درازی کرتے ہیں۔ عاشقانِ رسول مَنْ اللّٰہُ کُون کے استعمال کو کو ایسے محروم لوگوں سے دور رہنا شان میں زبان درازی کرتے ہیں۔ عاشقانِ رسول مَنْ اللّٰہُ کُون کے ایک کو کو ایسے محروم لوگوں سے دور رہنا

چاہیے اور انہیں خو دسے دور ر کھناچاہیے ، امام اہل سنت لکھتے ہیں:

سوناجنگل رات اندهیری چھائی بدلی کالی ہے سونے والو! جاگتے رہیو، چوروں کی رکھوالی ہے

آ تھے کا جل صاف چرالیں، یاں وہ چور بلاکے ہیں تیری مشمری تاکی ہے اور تُونے نیند نکالی ہے

یہ جو تجھ کوبلاتا ہے یہ طمگ ہماری رکھے گا ہائے مسافر دم میں نہ آنا مَت کیسی متوالی ہے (صدائل بخشش)







سنت نكاح:

مریعت مطبرہ نے زندگی گزار نے میں ہماری بہترین رہنمائی فرمائی ہے۔ چنانچہ شادی کرنے کا تھم دیا کہ اس میں بڑی عافیت اور دین و دنیا کی بہتری ہے۔ بلکہ ثکار سے تنگ دس می کو در ہوتی ہے۔ میطان سے ایمان بھی محفوظ رہتا ہے اور عبادات کی لذ تیں اور بر مہتیں میں نسیب ہوتی ہیں۔ شادی کے فوائد و فضائل سے متصلق فرابین مصلفی مالین کے الدخلہ سمجھ:

- (1) پیارے آتا امام الانبیاء منافظ نے ارشاد فرمایا: "جو مخص میری فیلرت (لیتی اسلام) سے محبت کر تاہے اُسے اُسے ا محبت کر تاہے اُسے میری سنت افقیار کرنی چاہیے اور نکاح بھی میری سنت ہے "۔(1) (2) اور حضور جانِ عالم منافظ کے ارشاد فرمایا: " دو محبت کرنے دالوں کیلیے نکاح سے بہتر کوئی
- ري اور تعلق خيس ديكها كيا"_ (2)
- (3) اور حضور رحمة للعالمين مَثَالِيُّهُمْ نَهُ فرمايا: "جس نه نكاح كيابِ فك اس نه اينا آدها وين بحالياب باتى آدھے ميں الله عزوجل سے ڈرے "۔(3)
- (4) اور نبی رحت مَثَلِظُمُ فِي فرايا: "جب تم ميں سے كوئى تكان كر لينا ب توشيطان كهنا ب بلئے افسوس! اين آدم نے مجھ سے دو تهائى دين بچاليا"۔(4)
- (5) اور حضور خاتم النبيين مَلَاقَيْمُ فِي ارشاد فرمايا: "شادى فده كى دور كعتيس غير شادى فده فخص كى ستر ركعتوں سے اور ايك روايت كے مطابق بياى ركعتوں سے بهتر ہيں "_(5) (اى طرح بہت كى روايات ش ب تكارت رزق ش بركت ، وتى اور مغلى دور ، وتى ب

^{1 (}مصنف صدار (الى كتاب الدكاح ياب وجوب الدكاح وقضله ج 4 ص 269 مديمة 18978 شهر يرادر الأهور)

^{2 (}سابي اين ماجه كتاب الدكاح بأب مأجاء أن فضل الدكاح ج1، ص574. حزيره 1836. هيأء القرآن بهمل كيفاز الاهور)

^{3 (}معهم الاوسط من اسهه عيد بعد من 702 منها 7647 يرو كريسويكس لاهور)

^{4 (}مستن الفردوس، ج 1. ص 369، حديث 1222 دار الكتب العلبية)

^{5 (}جأمع ميقور، ص:300، حزيب 4867، دار الكتب العليية)

ر شتول کاا متخاب اور پبند کی شادی :

اسلام میں نکاح مرود عورت کے در میان قائم ہونے والا ایک مقدس رشتہ ہے۔ اس مقدس رشتے کی بنیاد اگر کسی نا گوار فیصلہ (معاملہ) پرر کھی جائے تو جلد ہی ہے خوشیوں کے بجائے ، افریت کا سبب بن جا تا ہے۔ البندااس معاطے میں احتیاط ہے حد ضروری ہے۔ ہمارے معاشرے میں دوسری بہت ہی برائیوں کے علاوہ ایک اور برائی جو عام ہوتی جا رہی ہے وہ ہے لاکا لاکی کا باہم دوستی کرنا ، تعلقات بڑھانا ، اور ایک دوسرے کو ہوتی جا رہی ہے وہ ہے لاکا لاکی کا باہم دوستی کرنا ، تعلقات بڑھانا ، اور ایک دوسرے کو اور برزرگوں کے فیصلوں کے مقائل کھڑے ہوجاتے ہیں۔ بھی چھپ کر نکاح کرنے جیسے اقدام اور بزرگوں کے فیصلوں کے مقائل کھڑے ہوجاتے ہیں۔ بھی چھپ کر نکاح کرنے جیسے اقدام میں اٹھا لیتے ہیں۔ جو والدین کی شرمندگی و ناراضی ، بہن بھائیوں کی شادی میں رکاوٹ، رشتے داروں کی خوشیوں میں شامل ہونے سے محرومی ، زوجین کے آپنی معمولات میں تاخوشگواری معمولات ہیں۔ بہارے ملک میں طلاق کی بڑھتی شرح کی ایک اہم وجہ بہی معمولات ہیں۔ بہار کو سب بنتے ہیں۔ بہارے ملک میں طلاق کی بڑھتی شرح کی ایک اہم وجہ بہی شعمولات ہیں۔ یا درکھیں اسلام وین فطرت ہے ، اسلام پندگی شادی سے منع نہیں کر تا بلکہ شادی سے منع کر تا ہے۔ شرمندگی مول لے کرشادی جیسی زندگی کے اہم فیصلہ خود کرنے سے منع کر تا ہے۔ شرمندگی مول لے کرشادی جیسی زندگی کے اہم فیصلہ خود کرنے سے منع کر تا ہے۔

بروں کے فیصلوں کو فوقیت دیجئے:

رشتے کے انتخاب میں بعض او قات والدین اور پچول

دونوں کی طرف سے بے اعتدالی کی جاتی ہے، جس میں جانبین کی طرف سے احتیاط بے حد ضروری ہے۔ پیچوں کو چاہیے کہ یادر کھیں! اسلام میں نکاح مر دو عورت کے در میان قائم ہونے والا ایک مقدس رشتہ ہے، جس دین نے اس مقدس رشتہ کو قائم کرنے میں عاقل بالغ مر د و عورت کو اختیار دیاہے اس نے والدین کے ادب واحترام، اُن کے ساتھ مہریانی وحسن سلوک اور جائز معاملات میں اُن کی فرمانبر داری کا درس بھی ویاہے، لہذا شادی کے معاملے میں بھی اپنی پشد جائز معاملات میں اُن کی فرمانبر داری کا درس بھی ویاہے، لہذا شادی کے معاملے میں بھی اپنی پشد کو ترجیح دینے کے بجائے بیارے آ قاملاً تی اُن کے باعث سعادت سمجھنا چاہئے۔ بچپن سے جوائی ہوئے باعث سعادت سمجھنا چاہئے۔ بچپن سے جوائی

تک والدین نے ان کے ساتھ جن محبتوں، شفقتوں، مدر دیوں اور قربانیوں کا شلوک کمیا، کمیا اُن کا صلہ بھی ہے کہ اُن کے احسان و بھلائی کو فراموش کر دیا جائے ؟ ، اولاد کی خُوشی دیکھنے سے متعلق أن كى تمناؤل كا خون كرديا جائے، أن كى عزت كو اپنى خُوشى و پيند كى جھينٹ چڑھا ويا جائے ، اُنہیں معاشر ہے کے طعنوں کی زویر چھوڑ دیاجائے اور اُن کی ول آزاری کر کے بڑھاہے میں اُن کی اشکباری کاسامان کیاجائے ؟۔(1)

حدیث پاک میں ہے: " والدین کی رضامیں الله عزوجل کی رضامے اور ان کی ناراضی میں الله عروجل کی تاراضگی ہے "_(2)

والدين بچول کی خوشی کا خيال ر تھيں:

والدین کو بھی چاہئے کہ اولاد کی پیند اور نا پیند کا

خیال رنھیں اور جہاں وہ اپنی پسندے شاوی کرناچاہتے ہیں اگر وہاں اُن کی شاوی کرنے میں کوئی شر کی، خاند انی یامعاشر تی خرابی نہ ہو توبلاوجہ اُنہیں اپنی مر ضی کے مُطابق شادی کرنے پر مجبور نہ کریں بلکہ جہاں بچپین سے جوانی تک اُن کی ضروریات کا پورا پوراخیال رکھا، اُن کے مستقبل کو بہتر بنانے کی مختلف تدابیر اختیار کیں، اُنہیں ہر مشکل و پریشانی سے بچانے کی ہر ممکن کوشش کی وہیں شادی کے معاملے میں بھی اُن کی خُوشی کا خیال رکھیں اور اُن کی خُوشی کے برخلاف اپنی مر ضی اُن پر مسلط کر کے ہر گز ہر گز اُن کیلئے از دواجی زندگی کی تاہمواری وناخو شکواری کا باعث نہ بنیں۔ یہ کھیے بھر کا مستجھو تہ کرنا لبعض او قات عمر بھر کا پچھتاوا بن کر رہ جاتا ہے بلکہ بارہا خود والدین بھی اپنے کئے پر حسرت وندامت میں مبتلا ہوتے ہیں۔ لہٰدا دالدین کو چاہئے کہ اگر اُنہیں اینے بچوں کی ترجیجات اور کسی کے ساتھ ان کی قلبی وابستگی کا اندازہ ہو جائے تو خُدارا انتہائی تحمت عملی سے کام لیں بلکہ ہوسکے توشادی کے معاملے میں اپنی اولا دکی رضامندی ضرور معلوم

^{1 (}اسلامى شادى، ص48.51مكتبة البديده، كراچى)

^{2 (}شعب الإيمان بأب في رالوالدين. ج 6، ص168 مديث 7830 دار الاشاعت، كراهي)

^{3 (}اسلامىشادى، ص 53 مكتبة المدينه، كرابي)

جارے معاشرے میں عموم آلؤ کول سے تو اس کی مرضی معلوم کی جاتی ہے لیکن بیٹیول سے شادی سے متعلق پوچھنا مناسب نہیں سمجھا جاتا، بیررویہ بالکل درست نہیں۔ ذیل میں اس کے متعلق فرامین نبوی منافقینظم ملاحظہ سیجیے۔ حدیث پاک میں ہے:

سلس فرائین ہوی سی تناعائشہ صدیقہ دض اللہ تعلامنها فرماتی ہیں : " میں نے رسول اللہ مُثَالِّیْنِیْمُ سے پوچھا: جب گھر والے لڑی کا نکاح کریں تو اُس سے اجازت لینی چاہئے یا نہیں ؟ رسول الله مُثَالِیْنِیْمُ اللهُ مُثَالِیْنِیْمُ نے ارشاد فرمایا: اُس کا خاموش ہوجانا اُس کی اجازت کو شرم آئے گی ! تو رسول الله مُثَالِیْنِیْمُ نے ارشاد فرمایا: اُس کا خاموش ہوجانا اُس کی اجازت ہے۔ اُس کا خاموش ہوجانا اُس کی اجازت ہے۔ (۱) (لیعنی ولی اقرب یا اس کا و کیل یا قاصد کا کواری لڑی سے اجازت طلب کرنے پر،اگر کری خاموشی اختیار کرے اور پچھ نہ کے تو اسے شرعاً لڑکی کی رضامندی واجازت قرار دیا جائے گا)۔

(2) سیرنا عثمان بن مظعون دخی الله تعالی عند کا انتقال ہوگیا، آپ کی ایک بیٹی تھی جے آپ نے ایپ بیٹی تھی جے آپ نے ایپ بیٹی تھی جب نکاح کی عمر تک بیٹی توسیدنا و مولانا عبدالله بن عمر دخی الله تعالی عند کے سپر و کیا تھا۔وہ بیٹی جب نکاح کی عمر تک سیدنا قد امد نے آپ کے ساتھ نکاح کردیا۔سیدنا مغیرہ بن شعبہ دخی الله تعالی عند کو جب اس میدنا قد امد نے آپ کے ساتھ نکاح کردیا۔سیدنا مغیرہ بن شعبہ دخی الله تعالی عند کو جب اس کے اور انھیں مالی طور پر رغبت ولائی (کہ لیک بیٹی کارشتہ عمر سے ساتھ کریں، سکھی رہے گی۔ چول کہ وہ مال تھیں، اٹھول نے بھلائی (کہ لیک بیٹی کارشتہ میرے ساتھ کریں، سکھی رہے گی۔ چول کہ وہ مال تھیں، اٹھول نے بھلائی میں سمجھا اور) وہ راضی ہو گئیں، اور ان کی بیٹی کار بھان بھی لیک والدہ کی طرح سیدنا مغیرہ دخی الله تعالی عند کی طرف ہو گیا ، اور اٹھول نے سیدنا ابن عمر حضرت عثمان بن مظعون دخی الله تعالی عند کے بھانچ تھے)۔یہ در حالا تکہ سیدنا ابن عمر حضرت عثمان بن مظعون دخی الله تعالی عند کے بھانچ تھے)۔یہ معاملہ جب رسولِ خدام کارشتہ اس کے بھو بھی زاد عبداللہ بن عمر دخی الله تعالی عند سے کیا ہے اور یارسول الله مثالی نے بھے وصیت کی تھی۔ یارسول الله مثالی نے بھے وصیت کی تھی۔ یارسول الله مثالی نے اس کارشتہ اس کے بھو بھی زاد عبداللہ بن عمر دخی الله تعالی عند سے کیا ہے اور عبداللہ بن عمر دخی الله تعالی عند سے کیا ہے اور عبداللہ بن عمر دخی الله تعالی عند سے کیا ہے اور

^{1 (}صيح مسلم. كتاب الدكاح ، باب استفنان الغيب ج2.ص207، حديث 3460 فريد بلخستال، لاهور)

میں نے اس کی بھلائی اور کفویس کوئی کی نہیں چھوڑی، لیکن بدلڑی اور اس کی ماں دو سری طرف مائل ہوگئی ہے۔ رسول پاک منگا تیکٹی نے فرمایا: "اس بیٹیم پنگی کا ٹکاح اس کی اجازت کے بغیر منہ کہتے ہتے: "اللہ کی قسم! بدلڑی میری منہیں کیا جاسکتا۔" سیدنا عبد اللہ بن عمر دخی الله تعالی عند کہتے ہتے: "اللہ کی قسم! بدلڑی میری مکیت میں آنے کے بعد بھی مجھ سے چھن گئی اور حضرت مغیرہ دخی الله تعالی عند کے تکاح میں چلی گئی "۔ (1)

پل ت حضرت ام سائب دخی الله تعالی عنها کے والد نے ان کا تکاح اپنی مرضی سے ایک شخص سے کیا، تو اٹھوں نے اس کے ہاں جانے سے اٹکار کر دیا، اور کہا "میں نے حضرت ابو لئبابَہ دخی الله تعالی عنه سے شادی کر فی ہے۔" ان کے والد بعند شے کہ جہاں میں نے تکاح کر دیا ہے وایں جائ الیکٹی وہ نہیں مانتی تھیں۔ جب یہ معاملہ سید عالم مکا الیکٹی کے حضور پیش ہو گیا تو عاول و حکیم رسول مکا الیکٹی نے فیصلہ سنایا کہ: "یہ عورت اپنے معالمے کی (باپ سے) زیادہ حق دار ہے، جہاں یہ چاہتی ہے وایں اس کی شادی کی جائے۔"۔ اس فرمان عالی کے بعد ان کی شادی سیدنا ابولہا بہ دھی الله تعالی عنه سے کر دی گئے۔ (2)

علامہ لقمان شاہد حفظہ اللہ بیہ احادیث تقل کرنے کے بعد لکھتے ہیں: ﴿ جب سی محاطے بیں اللہ ورسول کا تھم آجائے تو مسلمان کو فوراً سرتسلیم خم کر دیتا چاہیے۔ ﴿ ہماری بیٹیوں کو اللہ کے رسول مَنَّالِیْنِ کُمْ نے جو حق دے ویا ہے ، وہ ہم ان سے کسی صورت

نہیں چھین سکتے، چھینیں گے تو ظالم کہلائیں گے۔ ﷺ ٹکاح کے معاملے میں وہ اپنی پیند، ناپیند کا اختیار رکھتی ہیں اور اس کا اظہار کرنے میں ہم سے

زیادہ حق دار ہیں۔ ﴿ الله کرے سے بات جارے ذہن میں ہمیشہ کے لیے بیٹھ جائے، اور ہم جو جھوٹی پار سائیاں، رکھ رکھاؤ، اور رسم ورواج لیے بیٹے ہیں ان سے ہماری جان چھوٹ جائے۔

استنامام احدىمستان عيد الله بن عمر ، ج 3، ص 409، حديث 6136 ، مكتيه رحاليه، الأهور)
 (مستنامام احد، مستناللساء ج 12، ص 123، حديث 27326 ، مكتيه رحاليه، الأهور)

ا تکاح کی اجازت باو کالتِ نکاح کی؟

ہمارے یہاں لڑکی سے اجازت تومائلی جاتی ہے مگر تکاح

کے دن عین نکاح کے وقت ، اور یہ اجازت بالکل رسمی قشم کی ہوتی ہے جس کا مقصد اس کی رضا معلوم کرنائہیں ہوتا بلکہ و کالت نکاح کی اجازت لینا ہوتا ہے ایسی صورت میں وہ دل سے راضی نہ ہونے کے باوجود بھی حالات کی نزاکت اور والدین کی عزت کے پیش نظر اجازت دے دیتی ہے۔ دالدین کو چاہیے کہ شادی کی بات کی کرنے سے پہلے ہی یا تو پیار محبت اور حکمت عملی سے أے اپنی رضا پر حقیقی طور پر راضی کرلیس یا پھراس کی خوشی پر راضی ہوجائیں جبکہ کوئی شرعی خرابی نہ ہو ، غرض اس بات کا لحاظ ر کھنا ضروری ہے کہ شادی کے پُر مسرت موقع پر جہاں سب لوگ خُوش ہیں وہیں جن بچوں کی شادی کی جارہی ہے وہ بھی حقیقی طور پر خوش ہوں اور آئندہ نجى اپنى از دواتى زندگى خوشگوار گزار سكيس_(⁽¹⁾

خاندان كاانتخاب

مچوں کو پُر سکون ازدواری زندگی مہیا کرنے کے لیے جہال اور بہت سی چیزوں کو پیٹی نظر رکھا جاتا ہے، وہیں لڑ کا لڑ کی کے بااخلاق ہونے اور دین داری کو مرکزی حیثیت و بنی چاہیے۔ انچمی صورت اونجا خاندان اور پیسے والے لوگ دیکھنے کے بجائے انچھی سيرت، نيكوكار، سن سيح العقيده، حلال كمانے والے كوتر جيح ديں، تاكه د نياو آخرت كى مجلائيال نسيب بول-اس معلق چنداحاديث نبوى مَالْلِيْكُم الاحظه بول:

(1) رسولِ كريم رؤف رحيم مَثَالِيَّيَّةُ إِنْ فرمايا: "جب تمهارے ياس ايسے لاكے كارشتہ آئے جس کی دین داری اور اخلاق حمہیں پیند ہوں تو اُس ہے (اپنی بیٹی کا) تکاح کروء اگر ایسانہ کر دگے توزمین میں فتنے اور لیے چوڑے فساد ہر میاہو جائیں گے "۔⁽²⁾

^{1 (}اسلامى شادى، ص55 مكتية البنينه كراجى)

^{2 (}ترمذي، كتاب المكاح، بأب ماجا في من ترهون، ج1، ص554 ، حديث 1076، فريد بك ستال الأهور)

(2) اور پیارے آقا مُنَّالِیُّنِمُ نے ارشاد فرمایا:"عورت سے نکاح چار باتوں کی وجہ سے کیا جاتا ہے (لیتن نکاح میں ان کالحاظ ہوتا ہے): (1) مال(2) حسب نسب(3) خُوبصورتی اور (4) دین، (پھر فرمایا) تم دین والی کوتر جج دو "۔(1)

ر چر طرعایا) مرین وای و طرین دو -(3) اور محبوب رحمة للعالمین مَلَّ النَّیْمُ نے ارشاد فرمایا: "ول کوشکر گرار بناؤ، زبان کوالله عزد جل کے ذکر میں مصروف رکھو اور تیک عورت کا انتخاب کرو جو تیکی کے کامول میں مدد کرنے والی ہو" _(2)

ہو" _ رہے ۔ اور جان عالم مَنَّ النَّمِنَّمُ نے ارشاد فرمایا: " تقویٰ کے بعد مومن کے لیے نیک بیوی سے بڑھ کر کوئی نفع مندشے نہیں کہ جب شوہر غائب ہو تواس کی عزت ومال کی حفاظت کرے " _ (3) ماں باپ دنیاوی مال و دولت کی خاطر اپنے بچوں کی شادی بدند بھوں میں کر دیتے ہیں ، جو گستاخ رسول ، گستاخ صحابہ اور گستاخ اولیاء ہوتے ہیں اور اس وجہ سے ان کی اولاد میں بھی چروہی بدند ہی والے جراشیم ہوتے ہیں ، حضور مَنَّ النِّرِیُّمُ نے بدند بھوں سے تکاح کرنے سے منع فرمایا ہے بدند بھی دائے۔ :

(5) رسول کریم مُنگانینظم نے ارشاد فرمایا:"ان(بدند ہبوں) کے ساتھ کھانانہ کھاؤ،ان کے ساتھ یائی نہ پیو،ان کے پاس نہ بیٹھو،ان سے رشنہ نہ کرو"۔(4)

پون ماہیں ہے جاء، بے دین سے نکاح کیا جائے تو اولاد بھی الیم ہوگی:

بر من من النبيين مَنَّا النبيين مَنَّا النبيين مَنَّا النبيين مَنَّا النبيين مَنَّا العرق" الجيمي (6) حضور خاتم النبيين مَنَّا النبيين مَنَّا العرق" الجيمي أنسل مِن شادى كروكدرك خفيفه ابناكام كرتى ہے"_(5)

^{1 (}كارى، كتاب الدكاح، باب الاكفاء في الدين، ج3. ص71، حديث 5090. فريد بك سفال، الاهور)

^{2 (}سان ابن مأجه. كتاب النكاح، بأب اقضل النساء، ج1، ص576، حديث 1845 ضيأء القر ان يبلي كيشاز الأهور)

^{3 (}سان اين مأجه، كتأب التكاح بأب افضل النساء. ج1، ص577 حديد 1846 شياء القرآن پيل كيشانر (هور)

^{4 (}كانزالعبال كتاب القضائل بأب في فضائل المحابه ج6 مصه 11،ص 257 مديدة 32528.3254 دار الاشاعت كراجي)

^{5 (}كلز االعيال, كتاب البواعظ، يأب لا ثالث قرآداب الدكاح، ج8، حصه، ص526. كتاب الاشاعت، لاهور)

شادی کی مروجه رسموں میں خرابیاں

شادی کی سنت جو (نکاح و ولیمه) پر مشتمل تھی تی زمانہ بہت ہی جائز و ناجائز رسومات کا مجموعہ بن چک ہے۔ مختلف خطوں کے رہنے والے مسلمان شادی کے موقع پر اپنے علا قائی اعتبارے مختلف رسومات سے منسلک ہیں۔ ان نگ رسومات کے جائز و ناجائز ہونے کا قاعدہ و کلیہ وہی ہے جو بدعت کے بیان میں گزرا۔ لیتنی ہر وہ رسم و رواح جو شریعت مطہرہ کی حدود سے نہ تکر اتے، وہ نے اُمور جن میں کوئی خلافِ شرع چیز نہ ہو جائز ہیں، وگر نہ جائز نہیں۔

شادی کی مروجہ رسومات میں ڈھول باہے، ناچنا گانا ، مردوں وعور توں کا اختلاط (گھلناملنا)، غیر محارم کو چھونا، بد نظری ،اسراف، وغیرہ جیسی خرابیاں شامل ہو گئی ہیں۔ یہاں عبرت و نصیحت کے لیے ان غیر شرکی افعال کے بارے میں فرامین مصطفیٰ مَثَالَیْنِمُ نَقَل کرتے ہیں۔اُسکے بعد مروجہ رسومات کے متعلق حکم شرکی لکھیں گے۔

عبرت حاصل سيجي

گانے باج کی ذمت:

- (1) رسول اکرم نور مجسم مَنَّافِیْتُمْ نے ارشاد فرمایا: " دو آوازوں پر دُنیاد آخرت میں لعنت ہے: نعمت کے وقت باجا(کی آواز)اور مصیبت کے وقت چلانا"۔(1)
- (2) اور جانِ جانال مَلَا عَلَيْمًا كا ارشاد ب: "جو كان والى ك باس بيضي ، كان لكاكر دهيان سے
 - سے تواللہ عزوجل بروز قیامت اُسکے کانوں میں سیسہ اُنڈیلے گا"۔(2)
- (3) اور نی رحمت مظافیق نے ارشاد فرمایا: "بے شک میرے رب نے جھے دونوں جہانوں کے لئے رحمت اور ہدایت بناکر بھیجاہے اور میرے دب نے مجھے بانسری اور گانے باج کے آلات ، بہت اور صلیب توڑنے کا تھم دیاہے، (ایک روایت میں ہے جھے ڈھول اور بانسری توڑنے کا تھم

^{1 (}كنزالعبال. كتاب اللهو واللعب... الخ ج ه. حمد 15. ص110 حديث 40661 كتاب الإشاعت، كراجي) 2 (كنزالعبال. كتاب اللهو واللعب... الخ ج 8، حمد 15. ص15 من 14066 كتاب الإشاعت، كراجي)

81

وياكما)"_(1)

(4) اور حضور خاتم التبيين مَنَاتُلْيُكُمْ نَهُ ارشاد فرمايا: "ميرى امت كے بچھ لوگ شراب پئيں کے اور اس کا نام بدل کر چھے اور رکھیں گے ، ان کے سرول پر باج بجائے جائیں گے اور گانے والیاں گائیں گ۔ اللہ تعالی انہیں زمین میں دھنسا دے گا اور ان میں سے کچھ لو گوں کو بندر اور سور بناوے گا"_(⁽²⁾

اسراف(نضول خرچی) کی مذمت:

فضول خرچی کرنے والوں سے متعلق ارشاد باری تعالی ہے:

إِنَّ الْمُبَذِّدِيُنَ كَانُوۡۤ الِخُوَانَ الشَّيٰطِيُّنِ * وَكَانَ الشَّيْطُنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ⁽³⁾

ر جمد كنزالعرفان: "بيشك فعنول خريكي كرنے والے شيطانوں كے بھائي ييں اور شيطان اپنے رب كا

رسول اكرم مَكَا لِيُعِيِّفُ فِي ارشاد فرمايا: "الله تعالى في تنهارے ليے تين باتوں كوناليت فرمايا ہے: بِ كار گفتگو ، مال ضائع كرنا اور زياده سوال كرنا "_(4)

بے حیائی کی مذمت:

بے حیائی پھیلاتے والوں سے متعلق ارشاد باری تعالی ہے:

إِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّونَ أَنَّ تَشِيْحُ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ أَمَنُوْالَهُمْ عَذَابُ اَلِيُمُّ 'فِي الدُّنْيَا وَالْأَخِرَةِ ' ⁽⁵⁾

ترجمہ کنزالعرفان: "بینک جولوگ چاہتے ہیں کہ مسلمانوں میں بے حیائی کی بات تھیلے ان کے لیے د نیااور آخرت میں در دناک عذاب ہے۔"

1 (مستدامامراجد، حديث ابوامامه بأهلى ج 10 . ص 413. حديث 22571 . مكتبه رحماتيه الأهور)

^{2 (}سان، اين ماجه، كتاب الفتن بأب العقويات، ج2. ص586، حديث 4009. قريد بالتستال، الأهور)

^{3 (}بني اسر اثيل، آيت 27)

^{4 (}صحيح البخاري، كتاب الزكوة بأب قول الله تعالى م 1. ص 625، حديث 1477، فريد بك ستال، الأهور)

^{5 (}النور ،آيت 19)

حدیث یاک میں ہے:

(1) رسول اکرم مَنَّافِیْنِم نے ارشاد فرمایا: "الله تبارک و تعالیٰ کی لعنت ہو دیکھنے والے پر اور اس پر جس کی طرف دیکھاجائے"۔ (ایعنی جو مر د اجنبی عورت کو قصد اُبلا ضرورت ویکھے اس پر

میں لعنت ہے اور جو عورت قصد اُبلا ضرورت اجنبی مر و کو اپنا آپ د کھائے اس پر بھی لعنت

، غرض میہ کہ اس میں تین قیدیں لگانی پڑیں گی اجنبی عورت کو دیکھنا، بلاضرورت دیکھنا، قصداً دیکھنا (مرہالناچ))۔ عورت کابال یاکلائیاں کھول کرنامحرم کے سامنے آٹاحرام ہے۔(²⁾

دیکھنا (مراہات کی)۔ گورت قابان یا ملائیاں کوں مراسم ہے سات ، ہر، ہے۔ (2) اور آقا کریم مُنافید کی نے فرمایا "آگھوں کا زنابد نگاہی ہے "۔(3)

(3) اور امام الانبیاء مَنَالِیَّیُمُ نِے ارشاد فرمایا: "جو شخص لینی آنکھ کو حرام سے بُر کر تاہے الله تعالیٰ بروز قیامت اسکی آنکھ میں جہنم کی آگ بھر دے گا "۔(4)

بروز قیامت اُس کی آنکو میں جہنم کی سَلائی پھیری جائے گی۔" ⁽⁵⁾ (5) اور محبوب خدا مَثَالِیْنِمُ کا فرمانِ عبرت نشان ہے:" دوز خیوں میں دو جماعتیں ایسی ہوں گی

(ک) اور سبوب حدا مینوا ۵ مرمان سرت سان ہے، دور پین سرود میں سراہ اور اور میں اس ایس اور اور میں اس ایس اور کا میں اس میں جنسی میں ایس میں ایس میں ایس میں ایس میں ایس میں ایس میں ایک جماعت ان عور تول کی ہے جو (کیڑے) پہن کر نظی ہوں گی،دوسروں کو (لینی حرکتوں کے ایک جماعت ان عور تول کی میں ایس میں اور ایس میں ای

ذریعے)بہکانے والیاں اور خو دمجھی بہتی ہوئی ہوں گی، ان کے سر بحتی او نٹوں کی ایک طرف جھگی ہوئی کوہانوں کی طرح ہوں گے ، وہ جنت میں داخل نہ ہوں گی اور نہ اسکی خو شبویائیں گی اور اسکی خو شبوا تنی اتنی دُوری سے پائی جاتی ہے "۔⁽⁶⁾

اس کی شرح میں مفتی احمد پارخان تغیمی علیہ رحمہ فرماتے ہیں ،حدیث پاک میں جوہے: "پہن

^{1 (}شعبالا مان بلب الله تعالى وعد كويسند يح6. ص156 حديد 7788 دار الاشاعت كراجي)

^{2 (}عنتصر فتأوى اهلسلت، ص 231 مكتبة البديده، كراجي)

^{3 (}صحيح البخاري، كتاب الإستئذان، باب زنا الجوارج ج3. ص 479 حديث 6243، فريد بك ستأل الاهور)

د رخي ميدوري. مدب رسيدي بهرواجوار 4 (مكاشفة القلوب، ص33 مكتبة البديدة كراجي)

^{5 (}كَمُوُ النُّهُوع ، ص 171، دار الفجر جمشي)

^{6 (}مخيح مسلم ، بأب النساء الكاسيات ، ج 3. ص127 منيث 5547 فرين بك ستال الاهور)

کر نگی ہو گلی "لیعنی جسم کا پیچھ حصہ لباس سے ڈھکیس گی اور پیچھ حصہ نگار کھیں گی بیا تنابار یک (اور نگلی ہو گلی الباس پیمنیں گی جس سے جسم ویسے ہی نظر آئے گا۔ یہ دونوں غیوب آج دیکھے جارہے ہیں۔ اور جو فرمایا " سر بختی او نٹول کی کوہانوں کی طرح ہوں گے" اس سے مر ادہے کہ وہ عور تیں راہ چلتے شرم سے سر نیچانہ کریں گی بلکہ بے حیائی سے اوٹی گردن سر اٹھائے ہر طرف دیکھتی، لوگوں کو گھورتی چلیں گی جیسے او نٹ کے تمام جسم میں کوہان او نجی ہوتی ہے ایسے ہی ان کے سر ادبی ہوتی ہے ایسے ہی ان کے سر ادبی رہا کریں گے۔ یہ حدیث پڑھو اور آج کل کی عور توں کو دیکھو، یہ اس غیب دال مجبوب منافظیم کی غیبی خبریں ہیں (سر اہالمناجی)۔

(6)اور حضور رحمة للعالمين مَنَالِثَيْرَ نِي ارشاد فرمايا: "جب كوئى عورت خوشبولگا كرلو گول ميس تكلّی ہے تاكہ اس كى خُوشبو پائى جائے تو يہ عورت زائيہ ہے"۔ ⁽¹⁾

خوا تین اپنے گھر کی چار ویواری میں جہال فقط شوہریا تحارم (محرم مرد) ہوں وہاں ہر طرح کی خوشبو استعال کر سکتی ہیں۔اور اگر گھرسے باہر جائیں تو مہک والی الیی خوشبو استعال نہیں کر سکتیں،جو غیر مردوں کی توجہ کا باعث ہے۔

(7) حضور خاتم النبيين مَكَالِيَّةُ كا فرمانِ عبرت نشان ہے: " تبن محض ہیں جن پر اللہ عزوجل نے جنت حرام فرمادی ہے ایک تووہ شخص جو ہمیشہ شر اب پے،دوسر اوہ شخص جو اپنے ماں باپ کی نافرمانی کرے،اور تیسر اوہ دیوٹ (لیتی بے حیاہے) کہ جو اپنے گھر والوں میں بے غیر تی کے کاموں کوبر قرار رکھے (لیتی جو اپنے گھر والوں کو بے حیائی سے شروکے)"۔ (2)

غير محرم كوحچونا :

۔ رول اکرم نور مجسم مُنَافِیْنِم نے ارشاد فرمایا: " اگر کسی کے سر پر لوہے کی کنگھی رکھ دی جائے جس کو کھینچنے سے ہڈیوں تک گوشت اتار وے توبیہ بہترہے اس سے کہ اس (مر د) کو کوئی عورت ہاتھ لگائے جو اس کی محرم نہ ہو (لیتن غیر محرم عورت)" اس طرح ایک روایت میں ہے: "تم میں سے کسی کے سر میں لوہے کی کیل ٹھونک دی جاتی اس سے بہترہے کہ وہ کسی الیں عورت

^{1 (}سان نساق، كتاب الزينة، بأب ما يكر كاللساء. ج 3. ص 454، حديث 5035 . هبياء القرآن يبل كيشاز، لاهور) 2 (مستن مامر احد، ج2، ص 223 حديث 5372، مكتبه رحانيه، لاهور)

کو چُھوئے جواس کے لیے حلال نہیں۔ "_(1)

(2) اور جانِ جانان مَكَالِينَةُ في أرشاد فرمايا: "أكلمون كازنا (حرام كو) ديكمنا ب اور كانون كازنا (حرام کو)سنتاہے اور زبان کا زنا (حرام) مات کرناہے اور ہاتھوں کا زنا (حرام کو) پکڑناہے، اور

پاول کازنا(حرام کی طرف) چلناہے"۔(⁽²⁾

(3) اور حضور خاتم النبيين مَنْكَافِيَّةً عِلَم نِهُ ارشاد فرمايا: "عورتول كے ساتھ تنہائی اختيار كرنے ہے پچو!اس ذات کی قشم جس کے قبضہ گدرت میں میری جان ہے!کوئی مخض کسی عورت کے ساتھ تنہائی اختیار تہیں کرتا مگر ان کے در میان شیطان داخل ہوجاتا ہے اور مٹی یاسیاہ بدیو دار کیچڑ میں لتھڑاہوا خزیر کی مخص سے نکرا جائے تو یہ اس کے لئے اس سے بہتر ہے کہ اس کے کندھے (جسم) الی عورت سے تکرائیں جو اس کے لئے حلال نہیں۔(لیعنی غیر محرم کو چھونا خزیر کو چونے سے بھی زیادہ براہے)"۔(3)

عورت كازينت اختيار كرنا

بذكور بالا احاديث بين عورت كاسنور كرخو دكو غير مردك سامنے پيش كرنے سے منع كيا كيا ہے، البتہ عورت کا اپنے شوہر کے لیے بننا سنورنا یا کنواری لڑکی کا اپنے گھریش زینت اختیار کرنا شریعت میں پندیدہ، متحب (باعث واب) عمل ہے۔

شادى شده عورت : اعلى حضرت امام ابلسنت امام احدر ضاخان دحدة الله عليد فرمات بن "عورت کا اپنے شوہر کے لئے گہنا پہننا، بناؤسڈگار کرنا باعث اجر عظیم اور اس کے حق میں نماز نفل سے افضل ہے بعض صالحات کہ خو د اور ان کے شوہر دونوں صاحب اولیاء کرام سے تنص ،ہر شب بعد نماز عشا پورا سنگار کرکے ولیصن بن کر اپنے شوہر کے پاس آتیں اگر انھیں اپنی طرف حاجت یا تیں حاضر رہتیں ورنہ زیور ولہاس اتار کر مصلی بچھا تیں اور نماز میں مشغول

I (شعب الإيمان بأب غرمكاهون كي حرمت اورياك دامتي، ح4. ص 303، حديث 5455، دار الإشاعت، كراجي/البعيم)

^{2 (}صيح مسلم، كتأب القنز ،بأب قنز على ين عدم ، ج 3، ص 466 ، فريذ بك ستَّال ، لأهور)

^{3 (}الزواجرعناقتراف الكبائر، الباب الفائي ق الكبائر الظاهرة. كتاب العكاح. ج2.ص 6 بيروت)

ہوجاتیں۔اور ولھن کوسجاناتوسنت قدیمہ اور بہت سی احادیث سے ثابت ہے"۔(1)
کثوار کی لڑکی :"اور کنوار کی لڑکیوں کوزیور دلباس سے آراستدر کھنا کہ اٹکی منگنیاں آتی ہیں۔ یہ
جس سنت ہے۔ بلکہ عورت کا باوصف قدرت بالکل بے زیور (زیور کے بغیر)رہنا کروہ ہے کہ
مر دوں سے تشبیہ ہے۔ ام المومنین حضرتِ عائشہ صدیقہ عورت کو بے زیور نماز پڑھنا مکروہ
جانتیں اور فرماتیں : کچھ نہ پائے تو (زیور کے طور پر) ایک ڈوری ہی گلے میں باندھ لے "۔(2)

عورت اور پردے کی مقدار

یہ موال بھی اکثر کیاجا تاہے کہ عورت پر کس حد تک پر دہ کرنالازم ہے؟۔اسکا جواب میہ ہے کہ مسلمان خواتین کے لیے پر دہ د جاب کے کچھ در جات ہیں۔ اول درجہ: پردے کا اول درجہ یہ ہے کہ عورت خود کو گھر کی چار دیواری اور پر دے کا اس طرح پابند بنا لے کہ کسی غیر مر دکی نِگاہ اس پرنہ پڑے، یعنی کوئی غیر محرم اس کے جسم کو تؤکجا اس کے لباس تک کونہ و مکھ یائے، آیت پر وہ نازل ہونے کے بعض صحابیات نے پر دے کے اس پہلے درجہ پر عمل کرتے ہوئے خود کو گھر کی چار دیواری تک محدود کرلیا چنانچہ مروی ہے کہ" حضرت سید ثنا فاطمة الزہرا رهادلله هنهائے موت کے وقت سیر وصیت فرمائی که بعدانتقال مجھے رات کے وقت دفن کرناتا کہ میرے جنازے پر بھی کسی غیر کی نظر نہ پڑے "۔جب عورت اس قدر پر دے کی پابند ہو تو پھر اُسکے گھر اولاد مجی امام حسن و حسین رضی الله عنها جیسی ہوتی ہے۔ ووسرا ورجہ: پردے کا دوسرا درجہ بہ ہے کہ اگر کسی مجوری کے تحت عورت گھر کی چار <u>دیواری میں خو</u>ر کو پابند نہ کر سکے اور باہر لکلنا پڑے تو خوب پر دے کا اہتمام کرکے لکلیں تاکہ کوئی آپ کو پہچان نہ پائے۔ لیتنی عورت برقعہ و نقاب کا اہتمام کرے، اور اپنا چیرہ وبدن کسی پر ظاہر نہ ہونے دے علمائے امت کی اکثریت نے چہرہ کے پر دہ کو داجب قرار ویاہے اور موجو دہ پُر فتن دور میں تومسلم خواتین کے لیے اس کی خاص طور پر تا کید ہے۔

 ⁽قتأوڭرضوية، ج22ص 126، رضافاؤننيشن، ((هور)
 (قتأوڭرضوية، ج22ص 128، رضافاؤننيشن، ((هور)

تیسرا ورجہ: پردے کا تیسرااور سب ہے تم تر درجہ بیہ کہ عورت کم از کم اس قدر پر دے کا ہمام ضرور کرے کہ جس قدر رب کی بار گاہ میں حاضر ہوتے لینی نماز پڑھتے وقت لازم ہے۔ مرادیہ ہے کہ نامحرم کے سامنے کم از کم ستر عورت کا خیال ضرور رکھے۔ستر عورت سے مراو عورت کا منہ، دونوں ہتھیلیاں اور دونوں پاؤں کے تلووں کے علاوہ ساراجسم بال سمیت مجھیانا

شادی کی رسومات سے متعلق تھم شرعی

منگنی کی رسم: منگنی کامطلب ہے شادی کی نسبت یعنی لڑکا اور لڑکی کوشادی کے لیے منسوب کر لڑکی کو انگو تھی پہنائیں ، لڑکی کا باپ یا بھائی وغیرہ لڑکے کو انگو تھی پہنائیں اور گانے باہے ، مر دول عور تول كااختلاط وغيره نه بهو تويه رسم جائز ہے۔

یا درہے منگنی کی رسم فقط ایک وعدے کی ہے، نہ کہ وہ حقیقی میاں ہیو کی بن جاتے ہیں۔اس لیے تکاح سے پہلے متانی کے موقع پر لڑکے کالڑ کی کوخود انگو تھی پہنانا اشد حرام ہے ، کہ غیر محرم کو چھونا جائز نہیں۔ احادیث میں اس کے متعلق سخت وعیدیں ارشاد فرمائی گئی ہیں جیسا کہ پیھیے (باب "عبرت حاصل سیجیے" میں) بیان ہوا۔ مزیدیہ کہ لڑکے کا سونے کی اگو تھی پہننا جائز نہیں۔مرد کے لیے ساڑھے چار ماشے سے کم چاندی کی ایک تگ والی ایک انگو تھی پہننا جائز

ماں باپ اپنی بگی کو شاوی پر جو اشیاء ویں وہ جھیز کہلاتی ہیں۔ جھیز دینا سنت ہے۔ جھیز میں سنت یہی ہے کہ اپنی خوشی سے حسب توفیق دیا جائے۔حضور مُنگالینے نے اپنی شہزادی خاتونِ

اماخوذ محابيات اوريرده، ص13، مكتبة المدينه، كراچى)

²⁽ماخوذرسمرواج كىشرعىحيشيت، ص225مكتبهاشاعت الاسلام الاهور/اسلامىشادى، ص36 مكتبة المدينه كراچى)

جنت حضرت فاطمہ دی اللہ عنها کو جہیز میں جو چیزیں دی تھیں اس کے متعلق سیرت کی کتابول میں مختلف روایات موجود ہیں۔ چنانچہ علامہ عبد المصطفیٰ متعلق دھید الله علید کی کتاب سیرتِ مصطفیٰ مَثَالِیٰ کُنْ مِیں المواہب اللدنیہ کے حوالے سے لکھا ہے: "شہنشاہ کو نمین مَثَالِیْکُمْ نے شہزادگ اسلام حضرت بی بی فاطمہ دی اللہ عنہ کو جہیز میں جو سامان دیااس کی فہرست بیہ ہے۔ ایک کمی بان کی ایک چار پائی، چڑے کا گداجس میں روئی کی عبد مجود کی چھال بھری ہوئی تھی، ایک محمود کی چھال بھری ہوئی تھی، ایک چھاگل، ایک مشک، ودچکیاں، دوممنی کے گھڑے "۔(1)

وہ نی علیہ السلام جن کورب تعالیٰ نے خزانوں کی تنجیاں عطافر مائی تھیں انہوں نے اتنا مخضر جہیز دیں۔ وہ جہیز جو سنت تھا جہیز دے کر یہ سنت قائم کر دی کہ بیٹی کو ماں باپ حسب توفیق جہیز دیں۔ وہ جہیز جو سنت تھا موجودہ دور میں آزمائش بن چکاہے کہ اس کے سبب بچیوں کی شادیاں نہیں ہویا تیں۔ جہیز کو لعنت کہنادرست نہیں کیو کلہ بیٹی کو جہیز دینا سنت سے ثابت ہے ، والدین کا اپنی توفیق کے مطابق مناسب جہیز دینا جائزہے۔

شرعاً لڑکی کے ماں باپ اگر اپنی خوشی سے سلمان وغیرہ دیں تو جائز ہے۔البنۃ آج کل جو رائج ہے کہ لڑکے والے مخصوص چیزوں کی ڈیمانڈ کرتے ہیں نہ ملنے پر لکاح نہیں کرتے یا بعد میں طعن و تشنیج کانشانہ بناتے ہیں، بیرسپ ناجائز ہے۔

علامہ عبد المصطفیٰ اعظمٰی رحمۃ الله علیه فرماتے ہیں: " یاور کھو کہ جہیز میں سامان کا ویٹا بیہ ماں باپ کی محبت وشفقت کی نشانی ہے اور ان کی خوشی کی بات ہے۔ ماں باپ پر لڑکی کو جہیز دیٹا بیہ فرض و واجب نہیں ہے۔ لڑکی اور داماد کے لئے ہر گز ہر گزیہ جائز نہیں ہے کہ وہ زبر دستی مال باپ کو مجبور کرکے اپنی پیند کاسامان جہیز میں وصول کریں، بہت سے غریبوں کی لڑکیاں اس لئے بیائی نہیں جارہی ہیں کہ ان کے ماں باپ لڑکی کے جہیز کی مانگ پورگ کرنے کی طاقت نہیں رکھتے ہیں سے دہیز لیٹا بیہ ناجائز ہیں میں تعیناً غلاف شریعت ہے اور جبراً قبراً ماں باپ کو مجبور کرکے زبر دستی جہیز لیٹا بیہ ناجائز ہے۔ لہذا مسلمانوں پر لازم ہے کہ اس بری رسم کو ختم کر دیں "۔(2)

^{1 (}سىرىتىمىطىغى، يأب7. ص 248 مكتبة البدينه، كراچى) 2 (جنتىزيور ياپ رسومات، ص153 مكتبة البدينه، كراچى)

شادی کے بعد اس قشم کا نقاضا کرنا کہ لڑکی والے مجبور ہو جائیں اور نہ ویئے پر لڑکی کو طلاق وے دی جائے گی یاطعن و تشنیع سننا پڑے گا تو ہیے لینا دینا رشوت ہی ہے اور نا جائز و حرام ہے۔(1) اگر لڑکے والے لمباج و ٹا جہنر لینا چھوڑ دیں اور لڑکی والے بے تھاشہ زیورات ، الگ مکان کی ڈیمانڈ اور دیگر فضول اخراجات و غیر ہ کا مطالبہ ترک کر دیں تو تکاح جیسی مبارک سنت آسائی سے عام ہو سکتی ہے اور معاشر سے ہیں بڑھتی بے حیائی کوروکا جاسکتا ہے۔

مائيول کي رسم:

تیل مهندی کی رسم:

اس رسم میں لڑے کو عور تیں تیل لگاتی ہیں اور لڑی کو مہندی لگاتی ہیں اور لڑی کو مہندی لگاتی ہیں۔ تیل مہندی کی تیب ہیں۔ تیل مہندی کی تیب مہندی کی حرام کاموں کا مجموعہ ہے۔ ناچ گانا، نائحرم کا چھوتا، عور توں مر دوں کا اختلاط سب اس رسم میں ہوتا ہے۔ اگر تیل مہندی میں بید سب ناجائز افعال نہ ہوں توبید رسم جائز ہے۔ جیسے لڑی کی بہنیں، سہیلیاں مل کر لڑی کو مہندی لگائیں اور لڑکے کو اسکے بہن بھائی تیل لگائیں، اس میں حرج نہیں۔

تیل مہندی پر غیر محرم عور توں کا دولہے کو تیل لگانا درست نہیں اور بیہ بھی یادر کھنا چاہئے کہ مر دکے لیے سر اور داڑھی کے علاوہ ہاتھ پاؤں میں مہندی لگانا اور شادی پر سونا پہننا جائز نہیں۔ اسی طرح عورت کا کسی بھی موقع پر غیر محرم سے ہاتھ پاؤں پر مہندی لگوانا جائز نہیں۔ (3)

^{1 (}ماغوذرسمورواج كي شرعي حيفيت، ص 231، مكتبه اشاعت الاسلام. الاهور)

^{2 (}مأغوذ بنار شريعت، حمه 7. ص105 مكتبة البدينه، كراجي /اسلامي زندگي، ص43. مكتبة البدينه، كراجي)

^{3 (}ماخوذرممورواج كى شرعى حيثيت، ص 234 مكتبه اشاعت الاسلام. الاهور)

گانه باندهنا:

- تیل مہندی پر ایک رسم بیر ادا کی جاتی ہے کہ ود لہے کو اس کے ماموں اور دلہن کو

اُسکے ماموں گانہ باند ہے ہیں، جو بارات تک دونوں پہنے رکھتے ہیں۔شرعاً اس میں کوئی ممانعت نہیں (ہاں پارات تک گانہ باند ھناکوئی ضروری تھی نہیں، جب مرضی گانہ اُتار سکتے ہیں) ۔(⁽¹⁾

دولهے كاسر بالا:

دولیم کا کسی مجھوٹے بچے کو سربالا بنایا جاتا ہے جس میں کوئی حرج خبیں۔ بھانچا جاتا ہے جس میں کوئی حرج خبیں۔ بھانچا جاتھا ہے اور کی جس سربالا ہو سکتا ہے۔(2)

واگ چرانی :

میہ پنجانی کا لفظ ہے۔ گھوڑی پر جورسی ہوتی ہے اسے واگ کہتے ہیں۔ پہلے زماتے میں جب اسے واگ کہتے ہیں۔ پہلے زماتے میں جب لڑکا گھوڑی پر سوار ہو تا تھا تو اس کی بہن اس گھوڑی کی واگ پکڑ کر بھائی سے پیسے ما نگتی تھی۔ اب اگرچہ بہنیں واگ نہیں پکڑ تیں گر اس رسم پر عمل کرتے ہوئے بھائی سے پیسے ضرور لیتی ہیں۔ بیرسم شرعاً جائز ہے جبکہ اس میں زیادہ رقم کا مطالبہ نہ کیا جائے جو لڑکے کی حیثیت سے زائد ہواور وہ مجبوراً و ہے۔ (3)

نيوتا (سلامي):

شادی پر دولہا کو جو پئیے دیے جاتے ہیں اسے نیو تا یاسلامی کہتے ہیں۔ نیو تا کی دو صور تیں ہیں (قرض یا تحفہ)۔ جن ہر ادر بوں میں اپنے پچوں کی شادی پر دیے گئے نیوتے کی واپسی کا با قاعدہ مطالبہ کیا جاتا ہے، وہاں سے قرض ہے اور واپس دینا لازم ہے۔ ہمارے ہاں زیادہ تر نیو تا تحفہ ہی ہو تاہے کہ واپسی نہ کرنے پر مطالبہ نہیں ہو تا۔

^{1 (}رسمورواج كي شرعي حيثيت على 238 مكتبه اشاعت الاسلام الاهور)

^{2 (}ماخوذرسمورواج كيدرعيحيديد، ص 239 مكتبه اشاعت الاسلام الاهور)

^{3 (}ماخوذرممورواج كي شرعى حيفيت، ص239مكتبه اشاعت الاسلام. الاهور)

نیو تا دینالینا جائز ہے ، حدیث پاک میں ہے: "کہ ایک دوسرے کو ہدیہ (تخفہ) دو محبت بڑھے گ"۔ گمراس میں بیہ احتیاط رہے کہ اس تخفہ کو فیکس نہیں بنالینا چاہیے کہ اگلا شخص اس تحفہ کے بغیر آ بکی تقریبات میں آبی نہ سکے ، اور نہ ہی تخفہ نہ دینے پر طعن و تشنیج کانشانہ بنانا چاہیے۔(1)

بارات رو کنا:

ایک رسم بارات روکنے کی رائج ہے جس میں بارات کو عور تیں روک لیتی ہیں اور پیسے لے کر آگے جانے دیتی ہیں۔ ہی رسم جائز نہیں۔اس وجہ سے کہ عور تیں بارات روک لیتی ہیں جس میں بے پر دگی ہوتی ہے اور نداق مسخری یقینی ہوتی ہے۔(2)

حق مبر

حق مہر نکاح کا ایک لازی حصہ ہے۔ بغیر اسکے نکاح کا تصور نہیں۔ حق مہر کی کم از کم مقدار وس در ہم (بعنی دو تولہ ساڑھے سات ماشہ (30.618 گرام) چاندی یا اُس کی قیمت بنتی ہے)۔ اور زیادہ سے زیادہ حق مہر کی کوئی قید نہیں، جتنا باہم لڑکے کی حیثیت کے مطابق رکھنا چاہیں رکھ سکتے ہیں۔ آج مور خہ 27 مارچ 2021 کو (30.618 گرام) چاندی کی قیمت تقریباً

یہ بات بھی یاور تھنی چاہیے کہ زبر وستی عورت سے حق مہر معاف نہیں کروایا جاسکتا۔ ہاں بعض او قات عور تیں حق مہر معاف کر دیتی ہیں، جب عورت حق مہر شوہر کو معاف کر دے تو بعد میں مطالبہ نہیں کر سکتی۔ (3)

کم از کم حق مہر پید چلانے کا طریقہ سے کہ سب سے پہلے انٹرنیٹ پر (silver rate in pakistan) کھھ کر چاندی کی قیت (market value) معلوم کر لی جائے۔عموماً چاندی کی قیمت دو طرح سے (10 گرام ادر ایک تولد کی قیمت) انٹرنیٹ پر موجود

 ⁽ماغوفرسمورواج كى در عىحيثيت، ص240 مكتبه اشاعت الإسلام. الافور)
 (ماخوذرسمورواج كى در عىحيثيت، ص244 مكتبه اشاعت الإسلام. الافور)
 (ماخوذرسمورواج كى در عىحيثيت، ص425/ماخوذ بهار شريعت، حصه 7. ص46، مكتبة البديده، كراچئ)

بوتی میں۔10 گرام والی قیمت لوٹ کر کیجے اور پھریہ کیجے:

For example:

10 grams Silver rate: 1175 Rupees (27 / march / 2021)

Minimum Haq Mehar = $\frac{(10 \ grams \ Silver \ rate)}{10} \times 30.618$

Minimum Haq Mehar = $\frac{1175}{10}$ × 30.618 = 3597.6

Minimum Hag Mehar = 3600 Rupees (approx)

فون كال ير نكاح كامسّله:

فقہائے احناف کی تصریحات کے مطابق نکار کے لیے ایجاب و قبول ضروری ہے اور اس کے لیے ایجاب اور و قبول ضروری ہے اور اس کے لیے مجلس نکار کا ایک ہوناشر طہے، جبکہ موبائل فون پر ایساممکن نہیں ہوتا۔ مفتی ضمیر احمد مرتضائی حقطہ اللہ لکھتے ہیں: "نکار ش گواہوں کا ہوناشر طہے اور گواہوں کا مجلس عقد میں ہونا ضروری ہے اور عاقدین کے کلام کو سننا شرط ہے۔ سوفون پر یا انٹر نہیف پر یاکا نفرنس کال کے ذریعے نکار نہ ہونے کی وجہ بھی یہی ہے کہ ان صور توں میں گواہ عاقدین کے کلام کو سننا اور ہے اور حاضر ہو عاقدین کے کلام کو ایک مجلس میں انتہ ہو کر نہیں شن سکتے، محض کلام کو سننا اور ہے اور حاضر ہو کر سننا اور ہے اور حاضر ہوناضر وری ہوتا ہے۔

ہاں اب اگر عملی فون کے ذریعے نکاح کرنے کی مجبوری بن پڑے۔ مثلاً لڑکی دو بتی ہے اور لڑکا پاکستان۔ اب لڑک کو بیاہ کر پاکستان بھیجنا چاہتے ہیں (یعنی ان کا ٹکاح کر ناچاہتے ہیں)۔ تو لڑکا پاکستان۔ اب لڑک کو بیاہ کر پاکستان بھیجنا چاہتے ہیں (یعنی ان کا ٹکاح کر ناچاہتے ہیں)۔ تو لڑکا میں فون کے ذریعے اپنے کسی رشتہ دار یاجائے والے کو باوہاں (دو بٹی) کے قاری صاحب کو اپناوکیل مقرر کرے کہ میں آپ کو اجازت دیتا ہوں کہ آپ میر کی طرف سے بطور و کیل میر ا نکاح فلاح لڑکی سے کر دیں تو اب یہ لڑکے کا وکیل بن گیا۔ اب یہ خاوند کا وکیل لڑکی کے پاس جاکر کہے کہ فلاں بن فلاں نے جھے وکیل بنا یا اور (میں نے آبے سے کہے میں نے قبول کیا ، نکاح ہوجائے گا۔ یا اس سے کر دیا تو نے قبول کیا ، نکاح ہوجائے گا۔ یا داس طرح) عورت کا وکیل بن کر مر و کے پاس جاکر کہے کہ فلاں بنت فلاں نے جھے و کیل

بنایاہے۔ میں نے بطور و کیل تیرا نکاح اس سے کر دیا تونے قبول کیا؟، وہ مرد آگے سے کہے میں نے قبول کیا ، نکاح ہو جائے گا۔خیال رہے کہ میہ "قبول کیا" گواہوں کے لیے سننا شرط ہے"۔ (1)(2)

رشم دودھ پلائی :

قرآن كو سر پرر كھنااور چاول كھينكنا:

ر شمقی کی ایک رسم ریہ ہے کہ ولہن کے سر پر قرآن الفاکر پیچے چینکی ہے۔ جہاں تک قرآن سر پر اٹھانے کا تعلق اٹھاکرر کھاجاتا ہے اور ولہن چاول اٹھاکر پیچے چینکی ہے۔ جہاں تک قرآن سر پر اٹھانے کا تعلق ہے تو وہ جائز ہے کہ اس میں اسراف ہے اور رزق پاؤل میں آتا ہے۔ اس طرح ولہن جب رخصت ہو کر آتی ہے تو آتش بازی، فائرنگ کی جاتی ہے، اور گھر کے دروازے میں تیل ڈالا جاتا ہے۔ یہ جاتی ہے، اور گھر کے دروازے میں تیل ڈالا جاتا ہے۔ یہ سب اُمور اسراف (مال کاضائع کرنا) ہیں۔ اور اسراف یعنی فضول خرچی کرنے والوں کو قرآن پاک میں شیطان کا بھائی کہا گیا ہے۔ (۵)

گوڈابٹھائی:

جب دلہن شوہر کے گھر آ جاتی ہے تو چھوٹا دیوراس کے گھٹنے پر بیٹھ کراس سے پیسے لیتا ہے۔اگر دیور چھوٹا بچیہ ہے تواس رسم میں حرج نہیں۔اگر دیور بڑا ہو تو وہ بھا بھی کے پاس یا

^{1 (}ماغوذموباتل قون اور شرعى مسائل و دلائل، ص88، مسلم كتابوى، لاهور)

^{2 (}تفهيم البسائل، تكاح كمسائل، ج7، ص221، ضياء القرآن يبلي كيشنز الاهور)

⁽مأخوذرسمورواج كىشروعىحيثيت، ص246مكتبه اشاعت الاسلام. الاهور)

^{4 (}ماخوذرسم ورواج كي شروعي حيثيت. ص 247.مكتبه اشاعت الاسلام الاهور)

یاؤں کے قریب بیٹھ کراس سے پلیے لیتاہے۔الیی صورت میں اس رسم کی اجازت نہیں کہ دیکھنے چیونے کا بہت زیادہ امکان ہو تاہے۔ ⁽¹⁾

ولیمه کامطلب ہے شادی کی خوشی کا کھانا۔شب زفاف کی صبح کواحیاب کی وعوتِ ولیمه کرنا سنت مستحبه ب- حديث ياك مس ب: "وليمه كروخواه ايك بى بكرى ميسر بو"_(2) ولیمے کے لیے لوگوں کی بھیڑ کرناشر طہے اور نہ ہی دس قشم کی ڈشیں بنانے کی حاجت ہے، اپنی حیثیت کے مطابق دال چاول یا گوشت و غیرہ جو بھی کھانا آپ پیش کر سکتے ہیں، پیش کر دیجیے ولیمه ہو جائے گا۔وو تین دوست یار شیتے دار ہوں تو بھی ولیمہ ہو سکتاہے۔اسی طرح مکلاوہ کی رسم مجی جائزہے۔⁽³⁾

ايك معاشر تي برائي :

ہمارے معاشرے میں ایک برائی برعام ہے کہ لوگ باہمی اختلافات میں ا یک دوسرے کو جلد معاف نہیں کرتے بلکہ کسی ایسے موقع کی حلاش میں رہتے ہیں جہاں اپنے رشتے داروں کولو گوں کے سامنے ذکیل کیا جاسکے ، لوگ ان پر اٹکلیاں اٹھائیں اور طعن و تشنیج کا نشانہ بناگیں۔ تو اس کام کے لیے ان لوگوں کو جو سب سے بہترین وقت معلوم ہو تا ہے ، وہ دوسروں کی خوشیوں کے مواقع ہیں۔ کسی کی دعوت کو سالوں پرانے اختلاف، کو کی ذاتی رعجش وغيره پر محکرا دينا جمارے لوگوں كا عام وطيره ہے۔ ياد رتھيں وعوتِ وليمه قبول كرناسنتِ موكده ب- اور بلاعذر شرعی نه جانا مکروه ب- (4) پیارے آ قا مُنْاَقِیِّکُمْ نے ارشاد فرمایا: "جب تم میں سے کوئی ولیے کی طرف بلایا جائے تواسے چاہیے کہ حاضر ہو جائے"۔⁽⁵⁾

^{1 (}رسمورواج كى شروعى حيفيت، ص 248، مكتبه اشاعت الاسلام، لاهور)

² رحميح البخاري. كتاب الدكاح بأب الوليمته ولوبشأة ج3. ص105 مدين 5167 فريد بالتستأل الاهور)

^{3 (}رسمورواج كي شروغي حيثيت ص248 مكتبه اشاعت الاسلام الاهور)

^{4 (}فتأوى رضويه، ج21، ص440 ملغصاً ، رضافاؤن ليشي، لاهور)

^{5 (}صحيح البخاري، كتاب الدكاح، باب حق اجابته الوليمة جد، ص106، صيف 5173 فريد باك ستال، الاهور)

کسی کی طرف سے اذیت و تکالیف طنے پر انتقام کی قدرت ہونے کے باجود أسے معاف كر ويناعظیم اجرو اتواب كا باعث ہے۔ حدیث پاک میں ہے: "بے حک اللہ تعالی در گزر فرمانے والا ہے اور در گزر كرنے كو كپند فرماتاہے "۔(1)

ہے اور در ترر کرنے ولیند فرماتا ہے " ۔ " اللہ کوئی شخص پر انے اختلافات بھلا کرشادی یا کسی موقع پر اپنی غلطی کا اعتراف کرتے ہوئے معذرت قبول نہیں کرتے بلکہ أسے ذليل و اعتراف کرتے ہیں ،اللہ تعالی ہمارے علی تو ہم معذرت قبول نہیں کرتے بلکہ أسے ذليل و رسواء کرتے ہیں ،اللہ تعالی ہمارے حالوں پر رحم فرمائے، ہمیں اس فرمانِ نبوی مَنَّا اللهُ مَنْ اللهُ ال

اور پھر پھولوگ وہ ہیں جو اس وجہ سے کسی کی شادی پر نہیں جاتے کہ اس نے میرے فلال برشتے دار کو نہیں بلایا یا بیل نے ان کے سب گھر والوں کو لپٹی وعوت پر بلایا تھالیکن اس نے صرف وہ چننوں کو وعوت پر بلایا۔ اے میرے بھائی! عین ممکن ہے کہ اُسے کسی معاشی مجبوری نے تمہارے سب گھر والوں کی وعوت کرنے سے روگ رکھا ہو و گرنہ اُسے کیاضر ورت ہے کہ وہ زندگی بھر کے لیے تمہارے طعنے مول لے، اگر تنہیں اللہ تعالی نے مال و دولت نے توازاہے اور تم استطاعت رکھتے ہو تو دوسروں کو خود پر قیاس نہ کرو بلکہ اللہ کا شکر اداکر واور کسی بدگمانی کو دل میں جگہ نہ دو، اپنے مسلمان بھائی سے اچھا گمان رکھنا تم پر واجب ہے۔ ہمارے آقا و مولا حضور جانِ رحمت منگا ہے تا ہو جس ہے۔ ہمارے آقا و مولا حضور جانِ رحمت منگا ہے تا ہو جس سے تعلیم ارشاد فرمائی ہے چنانچہ ارشاد فرمایا:

- (1) جوتم سے تعلق توڑے تم اُس سے تعلق جوڑو
 - (2) جو تمہیں محروم کرے اُسے عطا کرو
 - (3) جوتم پر ظلم کرے أسے معاف کرود (3)

اور قطع رحى كرنے والوں سے متعلق فرمايا: "قطع رحى كرنے والا (يعنى رشية ناطے توژنے والا)

^{1 (}مستنرك، كتاب الحنود، اول سارق قطعه رسول الله، ج6، ص440، حديث 8155، شيير برادرز، الاهور)

^{2 (}معجم الاوسط،بأب س اسم محمد، ج4، ص682، حديث 6295، يرو كريسو بكس، لاهور)

^{328 (}معهم الاوسط، بأب من اسم محمد، ج4. ص 328 حديث 5567. يرو كريسو بكس، لاهور)

جنت بین داخل نه بو گا"_⁽¹⁾

تواے عزیز! اپنے نفس کی اتباع کرتے ہوئے اپنی آخرت کا سودامت کرو۔۔۔!! فد کور بالا ان تمام رسومات کو جب تک شریعت کے دائرے میں رہتے ہوئے کیا جائے لیعنی گانے باج، ڈھول ڈھمکے، بے پر دگی، اسراف دغیرہ نہ ہو توبہ جائز ہیں۔ان رسومات میں ضیافت کرنا (کھاناکھلانا) بھی جائز ہے۔

بركت والا نكاح:

جمیں کو حش کرنی چاہئے کہ نکاح کا اسلامی انداز اختیار کریں اور شادی بیاہ کے تمام تر معاملات کو عین اسلامی تعلیمات کے سانچ میں ڈھالیں ، نہ غیر شرعی رسمیں ادا کریں اور نہ بی فضول خرچیاں کریں ، لڑکالڑ کی یا ان کے گھر والوں میں سے کوئی بھی دو سرے فریق سے بنگلہ ، گاڑی ، موٹر سائنگل ، جائید او ، سونا ، بھاری جہیز ، حق مہرکے نام پر خطیر رقم ، برات یاولیے میں متعدو اقسام کے کھانوں اور ان کیلئے عظیم الشان شادی بال کے اجتمام وغیرہ کا ہر گڑ ہر گر مطالبہ نہ کرے شادی سنت اواکرنے کی نیت سے بی کی جائے ، اسے کاروبار کرتے یاراتوں ہر گر مطالبہ نہ کرے شادی سنت اواکرنے کی نیت سے بی کی جائے ، اسے کاروبار کرتے یاراتوں رات مالدار ہونے کے ارمان پورے کرنے اور اینی لالی طبیعت کی تسکین کا ذریعہ نہ بنایا جائے۔ اگر ان باتوں کا خیال رکھا جائے تو نہ صرف شادی بیاہ کی جبت سی پریشانیاں دور اور شادی نہایت استی و آسان ہوجائیگی بلکہ اللہ عزوجل کے فضل و کرم سے باعث پر کت بھی ثابت ہوگی۔ حیس میں جیسا کہ رسول اکرم ، نورِ مجسم منگائیڈ کی نے ارشاد فرمایا: "بڑی پر کت والا تکاح وہ ہے جس میں بوجھ کم ہو "۔ (2)

بْخِي كَىٰ پيدائش (رسم چله، چهله):

رواج ہے کہ عورت پہلا بچہ اپنے والدین کے ہال پیدا

کرتی ہے اور جب چالیس دن پورے ہوجاتے ہیں تو لڑکے والے اسے لینے آتے ہیں۔اس پر دعوت کا اہتمام ہو تاہے ، والدین کپڑے سامان وغیرہ دیتے ہیں۔ ان رسموں میں شرعاً کوئی

^{1 (}معجم الأوسط بأب من اسم عميد، ج4، ص374 حديث 5664، يرو كريسو بكس، لاهور)

^{2 (}شعب الإيمان بأب الاقتصاد في الدفقة ج 5ص 226 حديث 6566 دار الإشاعت كراجي/اسلامي شادي)

قباحت نہیں اور اور کی کے والدین اگر اپنی خوشی سے بچے کی ولادت وغیرہ کے معاملات پر آئے والا خرج خود اواکریں تو بھی حرج نہیں۔ لیکن میہ لڑکی کے بھائی اور والدین پر فرض وواجب ہر گر نہیں، خدبی اُن پر ان معاملات کا بوجہ ڈالا جاسکتا، اور خہ اُن پر طعن و تشنیخ جائز ہے۔ بیوی اور پچے کا نفقہ ، پچے کی پیدائش پر آئے والا تمام خرچ و غیرہ پچے کے باپ پر لازم آتا ہے۔ لوگوں بیل میہ بات جو مشہور ہے کہ چلہ بیل عورت گھر سے باہر خہ نظے ، اسکی کوئی اصل نہیں۔ (1)

بات جو مشہور ہے کہ چلہ بیل عورت گھر سے باہر خہ نظے ، اسکی کوئی اصل نہیں۔ (1)

پہلے بچے خصوصاً لڑکے کی پیدائش پر بہت خوشی منائی جاتی ہے۔ اور ہمار سے بہاں روائ ہے پیدائش اور شادی پر تیجو ہے آگر ناچتے ہیں اور چسے دینا جائز نہیں اور خائز نہیں جائز ہے۔ مفتی احمہ بار خان نعیمی دے ہاللہ علیہ فرماتے ہیں: "میر اڈی لوگوں کو دینا ہر گز جائز نہیں کیوں کہ ان کی جمدر دی کرنا دراصل ان کو گناہ پر ولیر کرنا ہے۔ اگر ان موقعوں پر ان کو پچھ نہ کے تو یہ تمام لوگ ان حرام پیشوں کو چھوڑ کر حلال کمائی حاصل کریں گے "۔ (3)

ويتم:

جب عورت چلہ (چھلہ) کے بعد سسرال واپس جانے لگتی ہے تو میکے والے اسے پھے
سامان دیتے ہیں جے ویئم کہاجا تا ہے۔ عورت کے بھائی بہن اس کے لیے اور پچے کے لیے کپڑے
پیسے دیتے ہیں۔ اس میں بھی اگر یہ سب خوش سے اور حسب تو فیق ہو تا ہے تو جائز ہے۔ جبکہ
دیکھا گیاہے کہ لڑکی کے بھائی بہن مجوراً طعن تشنیع سے بچنے کے لیے اپنی حیثیت سے زیادہ دیتے
ہیں۔ اگر کوئی طعنے سے بچنے کے لیے دے تولیزا جائز نہیں۔ (3)
ما۔ انگر کوئی طعنے سے بچنے کے لیے دے تولیزا جائز نہیں۔ (3)

سے و سیجے: آج ہمارے معاشرے میں ایک دوسرے کو طعن و تشنیج کا نشانہ بنانا اور اپنے نفس کی تسکین کے لیے قول و فعل سے دوسروں کو اذبت دینالو گوں کی عادت بن گئی ہے۔عوام اپنے

بہت سے کام دوسروں کی طعن و تشنیع سے بچنے کے لیے مجبوراً کرتے ہیں۔ایسے لوگوں کو ان

^{[(}ماخوندسمورواجكيشرعيحيثيت،ص166مكتيه اشاعت الاسلام الاهور)

^{2 (}اسلامى زىدگى، ص20مكتية البدينه، كو ايمى)

^{3 (}رسمورواج كىشروعىحيفيت.ص168.مكتبه اشاعت الاسلام. الاهور)

احادیث سے عبرت حاصل کرنی چاہیئے۔

(1) رسول اكرم مَنَّ الْيُغِيمُ كا قرمان عبرت نشان ہے: "مومن نه طعن كرتے والا ہو تاہے، نه الحد من الله عبد الله

لعنت كرنے والا، نہ فخش كنے والا بے ہو دہ ہو تاہے "_(1)

(2) اور نبی رحت مُكَالِينَة م نے ارشاد فرمایا: "بهت لعن طعن كرنے والے قیامت كے دن نه

شہادت دیں گے نہ شفاعت کریں گے "_(2)

(3) اور امام الا نبیاء مَنْ النِیْزُم نے ارشاد فرمایا: " اگر کوئی شخص تنهیں تمہارے کسی عیب کا طعنہ

وے تو تم اسے اس کے عیب کا طعنہ ہر گزنہ دو کیونکہ متہیں اس کا ثواب ملے گا اور طعنہ ویے والے پر وبال ہو گا"۔(3)

سی مسلمان کو تکلیف دیناناجائز و حرام ہے: طعنے دینے میں مسلمان کی سخت دل آزاری ہے اور مسلمان کوبلاوجہ شرعی تکلیف دیناجائز نہیں ہے۔

مسلمان توبدا وجد سمر می تعیف دیناجام بیں ہے۔ (4) الله عزوجل کے پیارے حبیب مُنالِقیْقِ کا فرمانِ عبرت نشان ہے: "جسنے سی مسلمان کو (بلا وجہ شرعی) ایذا دی اُس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اُس نے اللہ کو ایذا دی"۔(4)

^{1 (}ترملى، كتاب البروالصلة بأب ماجاء في اللععة ج1. ض 920 مديد 2042 فريد بالتستأل الاهور)

^{2 (}صحيح مسلم. كتأب البروالصلة والإدب، بأب التَّهي عن لعن. ج3، ص428، حديث 6555. قريد بك ستأل الأهور)

^{3 (}اين حيان، كتاب البروالإحسان، ج1،ص370، منيث 23 شدار الكتب العلبي مييروت)

^{4 (}معجو الاوسط،بأب من اسمامسعيد،ج2 ص803، مديث 3607، پرو گريسو بكس، لاهور)

خوشگوار ازدواجی زندگی

فی زمانہ بچوں کی تربیت کرنے میں لوگ بہت کو تاہی کرتے ہیں۔ والدین اور بچوں کی علم دین اسے دوری گھریلوں جھڑوں اور طلاق کی اس بڑھتی ہوئی شرح کی ایک اہم وجہ ہے۔ اسی طرح ازدواجی زندگی کے بارے میں بچوں کی تربیت کرنے میں ایک بہت بڑا المیہ بیہ ہے کہ لوگ بچیوں کی تربیت نہیں کرتے بلکہ شاید اس کی ضرورت ہی محسوس نہیں کرتے حالا تکہ عور توں کے مقابلے میں مردوں کو تربیت کی اس کی ضرورت ہوتی ہے ، کیونکہ مردگر کا حاکم و سربراہ ہوتا ہے ، اُسے گھر بلوزندگی کو خوشگوار بنانے کے گراچی طرح معلوم ہونے چاہئیں، البذا والدین کو چاہئے کہ صرف لڑکیوں ہی کو نہیں لڑکوں کی کو نہیں لڑکوں کو کھیں لڑکوں کی کو کھیں کریں اور انہیں اچھی طرح ازدواجی زندگی کے آواب سے آگاہ کریں

میاں بوی کے حقوق کا بیان:

خُوشگوار ازدواتی زندگی کانی حد تک اس بات پر مجی مو توف ہے کہ میاں بیوی میں سے ہرایک کو دوسرے کے خُقوق کے بارے میں کُتنی معلومات ہے اور وہ اِن معلومات کی روشن میں کس حد تک اپنے رقیقہ حیات کے خُقوق کا خیال رکھتا ہے۔ عموماً ایک دوسرے کے خُقوق ادانہ کرنے اور ایک دوسرے کو اہمیت نہ وینے ہی کی وجہ سے باہم ناچا قیاں پید اہو جاتی ہیں جو میاں بیوی میں فاصلوں اور دُور یوں کو بڑھائے کا سبب بنتی ہیں۔ دینِ اسلام میں میاں بیوی کے خُقوق کو بہت اہمیت حاصل ہے۔ کثیر احادیث میں میاں بیوی کو ایک دوسر سے کے خُقوق اداکرنے کی تکفین کی گئے ہے۔ (2)

 ⁽ماغوذاسلامیشادی، ص98مکتیة البدینه، کراچی)
 (اسلامیشادی، ص101مکتیة البدینه، کراچی)

بیوی پر شوہر کے حقوق:

اعلى حضرت امام المسنت، مجدودين وملت إمام احدر ضاخان دحدة

المصعليد فناوي رضويه كى جلد تمبر 24 ميس بيوى يرشو مركے جو خفوق بيان فرمائے بين تفسير صراط البحثان ميس أن كاخلاصه بيه بيان كيا گياہے كه: ازدواجي تعلقات ميس مطلقاً شوہر كي اطاعت كرناء اُس کی عزت کی سختی سے حفاظت کرنا، اس کے مال کی حفاظت کرنا، ہر بات میں اس کی خیر خواہی کرنا، ہر وقت جائز امور میں اس کی خُوشی چاہنا، اے اپناسر دار جاننا، شوہر کونام لے کرنہ لِکارنا، کسی ے اس کی بلاوجہ شکایت نہ کرنااور خُداتو فیق دے تووجہ ہونے کے باجو د شکایت نہ کرنا، اُس کی اجازت کے بغیر آٹھویں دن سے پہلے والدین کے گھر اور ایک سال سے پہلے دیگر محارم کے یہاں نہ جانا، وہ ناراض ہو تواس کی بہت خُوشامہ کر کے مناناد غیر ہ حقوق شامل ہیں۔⁽¹⁾

شوہر کے حقوق کی تاکیدواہمیت:

🖈 بیوی پر شوہر کے محقوق کی اہمیت کے بارے میں چند احادیث مبار کہ ملاحظہ کیجئے۔

(1) أم المومنين حضرت سيد تناعاكشه صديقه رضى الله عنها فرماتي بين كه ميس في رسول الله

مَنَّالِيْنِمُ سے پوچھا: عورت پر سب سے بڑا حق کس کا ہے؟ فرمایا: " شوہر کاحق "۔ اِس نے پوچھا: مر دیرسب سے براحق کس کا ہے؟ فرمایا:" اُس کی مال کاحق "_(⁽²⁾

(2) اور بیارے آ قامنگانین نے ارشاد فرمایا :"اللہ تعالیٰ اُس عورت پر نگاور حمت نہیں کرتا، جو ایے شوہر کی شکر گزار نہیں ہے۔ ۱۱(3)

(3) اور حضور اكرم مَنَا لَيْكُمْ في ارشاد فرمايا: "أس ذات كي فشم جس ك قبض مي محم مَنَا لَيْكُمْ كي جان ہے عورت اس وقت تک اللہ عزوجل کے حق سے دستبر دار نہیں ہوسکتی جب تک اپنے شوہر کاحق ادانہ کردے "_(4)

^{1 (}اسلامي شادي، ص103 مكتبة المديعه، كراجي/تفسير صراط المحتان، البقرة، تحت الآية 228)

^{2 (}مستندك كتأب البروالصنه ج5 ص 820 حديث 7338 فريدبات ستال شييربرادرز) 3 (مستنوك، كتأب البروالصنه، ج5،ص819، حديث 7335، قرين بك ستال، شهير برادرز)

^{4 (}مستدرك، كتاب البروالصنه، ج5، ص819، حديث 7335 قريد بك ستال، شهير برادرز)

(4) اور حضور جانِ جاناں مُنَّافِیْنُ نے ارشاد فرمایا: "اگر انسان کیلئے کسی انسان کو سجدہ کرنا جائز ہو تا تو میں عورت کو ضرور تھم دیتا کہ جب شوہر اُس کے پاس آیا کرے تو اُسے سجدہ کیا کرے، اُس فضیلت کی وجہ ہے جو الله عزوجل نے شوہر کو بیوی پر عطافرمائی ہے "۔(1)

(5) اور امام الانبياء مَلَى الْمِيَّةِ مِنْ ارشاد فرمايا: "جوعورت اس حال مين فوت مونى كه اس كاشو مر

اس سے راضی تھا ، تودہ جنت میں داخل ہوگی "_(2)

(6) اور حبیب کریا منگانی کل نے ارشاد فرمایا: "جب مرد اپنی بیوی کو اپنے بستر پر بلائے اور دہ نہ آئے اور دہ نہ آئے اور دہ نہ آئے اور دہ نہ آئے اور مرد اس سے نادا منگی میں رات گزار دے تو صبح تک فرشتے اس پر لعنت جیجے رہتے ہیں "_(3)

(7) اور حضور رحمۃ للعالمین مکالیہ اُلم نے ارشاد فرمایا: "جوعورت پانچوں نمازیں اداکرے، این شرمگاہ کی حفاظت کرے اوراپ شوہر کی اطاعت کرے توجنت کے جس دروازے سے چاہیے داخل ہوجائے گی "۔(4)

(8) اور آ قاکریم منگافیزم نے ارشاد فرمایا: میں نے جہنم میں عور توں کی کثرت دیکھی ہے، میں نے ملا ککہ سے وجہ پوچھی تو انہوں نے کہااس کی وجہ رہے کہ عور تیں بہت زیادہ لعنت کرتی ہیں ۔اوراکٹر اپنے شوہروں کی شکایت وناشکری کرتی ہیں "۔(۵)

(9) سیدنا انس بن مالک کہتے ہیں ، رحمت عالم منگالی کے ہم سے فرمایا: کیا صحصیں بتاؤں کہ مخصاری کون سی عور تنیں جنتی ہیں؟ ہم نے عرض کی: حضور کیوں نہیں، ضرور ارشاد فرمائیں!، فرمایا: (وہ عورت جو شوہر سے) محبت کرنے والی ہو، کثیر اولاد والی ہو، جب أسے عصد آئے، یا اس کے ساتھ براسلوک کیا جائے، یا اس کا خاوند اس سے ناراض ہوجائے تو کہے: میر اہاتھ، آپ اس کے ہاتھ میں ہے۔ بیس فی اس وقت تک نہیں سونا، جب تک آپ راضی نہیں ہوجائے "۔(6)

^{1 (}سنن الكبرى للميهق. كتاب الدكاح باب من تخلى لعبادة الله ج7. ص135 حديث 13485 دار الكتب العلمية)

^{2 (}ابريمأجه، كتاب النكاح، بأب حق الزوج على المراقع، ص 576. صديث 1843 شياء القرآن پهلى، كيشنز الاهور)

^{3 (}صحيح مسلم، كتاب الدكاح بأب تحريم امتداعها من فراش زوجها . جد من 230 مديث 3526 فريد بالتستال الاهور)

^{4 (}الاحسان)بّرتيباينجبان كتاب التكاح، ياب معاشرةالزوجين، ج6، ص184 مديث 4151، دار الكتب العلبيه بيروت) 5 ركيبيائے سعادت، ص239، شياء القرآن پيلي كيشائرلا فور)

^{6 (}الترغيبوالترهيب، كتاب المكاح ياب ترغيب الزوج في الوفاء، ص358 حديث 2902. دار الكتاب العرفي ، يبروت)

(10) اگر کسی عورت کا شوہر بداخلاق ہو تو اُسے چاہیے کہ اِس فرمانِ مصطفیٰ مَثَالِیْنِیْم پر غور کر ہے اور اُخروی اہر و تو اب کی اُمیدوار ہے، چنانچہ حضور خاتم النبیسین مَثَالِیْنِیْم نے ارشاو فرمایا: "جس شخص نے اپنی بیوی کی بداخلاقی پر صبر کیا اللہ عزوجی اسے ایسا اجرعطافر مائے گاجو حضرت ایوب عَلَیْهِ الصَّلَوٰةُ وَالسَّلَام کو ان کی آزمائش پر عطافر مایا اور جس عورت نے اپنے شوہر کے برے اخلاق پر صبر کیا اللہ عزوجیل اسے ایسا اجرعطافر مائے گاجو فرعون کی بیوی حضرت آسید رض الله تعالی عنها کوعطافر مایا"۔ (1)

شوہر پر بیوی کے حقوق:

اعلی حضرت، امام البسنت، مجدودین و ملت اِمام احدر شاخان دسة الله علیه نظرت المام احدر شاخان دسة الله علیه نظر فتاوی دخوید کی جلد 24 ش شوہر پر بیوی کے جوحقوق بیان فرمائے ہیں تفسیر صراطُ البخان میں اُن کا خلاصہ بید بیان کیا گیاہے کہ (عور توں کے حقوق میں سے ہے انہیں) خرچہ وینا، رہائش مہیا کرنا، ایکھ طریقے ہے گزارہ کرنا، نیک باتوں، حیاء اور پروے کی تعلیم ویتے رہنا، ان کی خلاف ورزی کرنے پر سختی ہے منع کرنا، جب تک شریعت منع نہ کرے ہر جائز بات میں اس کی خلاف ورزی کرنے پر سختی ہے منع کرنا، جب تک شریعت منع نہ کرے ہر جائز بات میں اس کی ولیون کرنا، اس کی طرف ہے جنی والی تکلیف پر صبر کرناا گرچہ بیہ عورت کاحق نہیں۔ (2) بیوی کے حقوق کی تاکید واہمیت :

قرآن پاک بیں الله عزوجل ارشاد فرماتا ہے:

وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ⁽³⁾

ترجمه كنز العرفان: " اور عور تول كيليح بهي مروول پر شريعت كے مطابق ايسے ہى حق ہے جيسا

(أن كا)عور تول پرہے "

لیتیٰ جس طرح عور توں پر شوہر وں کے مُحقوق کی اداواجب ہے اسی طرح شوہر وں پر عور تول کے مُحقوق کی رعایت لازم ہے(خزائن العرفان)۔ للبذاشوہر کو چلہئے کہ دہ ہر گز ہر گز ہو گی کے

^{1 (}احياء العلوم، كتاب آداب الدكاح، ج2، ص136 مكتبته الهديده، كراجي)

^{2 (}اسلامى شادى، ص105 مكتبة الهديده، كراجي/تفسير عبراط المحتان، البقرة، تحت الآية 228)

^{3 (}البقرة،آيت228)

خقوق کو ہلکانہ جانے ، اُسے کمزور سمجھ کر اُس کے ساتھ تاانصافی نہ کرے ، اُس پر ظلم وستم نہ کرے اور ہر وقت اس بات کو پیشِ نظر رکھے کہ جس رب عزوجل نے اُسے بیوی پر حاکم بنایا ہے وہ آخکھ اُلکھا کیدین جَلَّ جَلَالْه سب حاکموں کا حاکم ہے ، وہ ناانصافی کرنے والوں کو پیند نہیں فرماتا۔

﴿ آیے ! الله عزوجل کے رسول، رسولِ مقبول مُنَا اللّٰهُ اللّٰهِ فَعُرات کے مُقول کی جو اہمیت بیان فرمائی ہے اُس کے بارے میں چند فرامین مُصْطَفَّ مَنَا اللّٰهِ مُمَا اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الله

ہے۔ اور معاصے پیسے مسامات میں ان سے ماعل ہے۔ اور کو انتیاں کے جو حقوق لازم کیے ہیں، اُن میں مناسب روٹی، کپڑا، رہائش وغیرہ شامل ہے۔ اگر کوئی ہیوی اس سے بڑھ کر فرمائش کرتی ہے اور شوہر کے دہ چیز نہ دلانے پر شوہر سے ناراضگی یا طلاق تک معاملہ پنچادیتی ہے (حیسا کہ اکثر ہمیں نظر آتا ہے) توالی کی نافرمانی اور شوہر کی ناشکری کرنے والی ہے)۔

(2) اور ٹمی رحمت مَنْطَقِیمُ نے فرمایا: " کامل ایمان والے مومنین وہ ہیں جن کے اخلاق ایتھے ہوں اور تم میں بہتر وہ ہیں جو اپنی بیویوں کیلئے اخلاقی طور پراچھے ہوں "_⁽²⁾

(3) اور جان جانال مَا الليكم في ارشاد فرمايا: "تم مين سب سي بهتروه مخف ب جواب الله

عیال کے حق میں بہتر ہواور میں اپنے اہل وعیال کے حق میں تم سب سے بہتر ہوں "۔(3) (4) اور امام الانبیاء مَنَائِلِیَمُ نے ارشاد فرمایا: "کوئی مومن مر دکسی مومنہ عورت سے بغض و

(4) اور امام الانبیاء سخافینی نے ارشاد فرمایا : " لوی مو تن مر د کی مومنه مورت سے • س و نفرت نه رکھے کیونکه اگر عورت (بیوی) کی کوئی عادت بری معلوم ہوتی ہو تو اسکی کوئی دوسری

عادت پسندیده (انچیمی) بھی ہوگی "۔(⁴⁾ (5) اور صبیب کبریا مَثَافِیْمُ نِیْم نِیْ ارشاد فرمایا: "کوئی شخص (شوہر)عورت کو اس طرح شہارے

^{1 (}توملى، كتاب الرضاع، بأب ما جاء في حق المرأة على زوجها، ج1، ص595 حديث 1162. فريد بك سئال، لاهور) 2 (ترمذى، كتاب الرضاع بأب ما جاء في حق المرأة على زوجها، ج1، ص595 حديث 1161 قريد بك سئال، لاهور)

^{3 (}اين ماجه، كتاب النكاح بأب حس معاشرة النساء ج1، ص612 حديث 1966 شياء لقرآن يعلى كيشنز الأهور)

^{4 (}معيح مسلم، كتاب الرضاع بأب الوصية بالنساء. ج2،ص260 مديث 3633 فريد بك ستأل الاهور)

جس طرح اپنے غلام کومارا کرتا ہے بھر دو سرے وقت اس سے صحبت (جماع) بھی کرہے "۔(1)
(6) اور حضور رحمۃ للحالمین سُکالٹیڈ کے ارشاد فرمایا: "ایک دیناروہ ہے جو تم نے اللہ عزوجل کی
راہ ش خرج کیا، ایک دیناروہ ہے جو تم نے کسی غلام پر خرج کیا، ایک دیناروہ ہے جو تم نے کسی
مسکین پر خرج کیا اور ایک دیناروہ ہے جو تم نے اپنے گھر والوں (والدین، بیوی، بچوں) پر خرچ کیا
مسکین پر خرج کیا اور ایک دیناروہ ہے جو تم نے اپنے گھر والوں (والدین، بیوی، بچوں) پر خرچ کیا
مسکین پر خرج کیا اور ایک دینارکا ہے جو تم نے اپنے گھر والوں پر خرچ کیا"۔(2)
(7) اور حضور خاتم النہیین مُنالِقی کے ارشاد فرمایا: "جس شخص کے پاس دو بویاں ہوں اور اس
نے ان کے در میان عدل اور بر ابری کا ہر تاؤنہیں کیا تو وہ قیامت کے دن میدان محشر میں اس
حالت میں اٹھایا جائے گا کہ اس کا آ دھابدن مفلوج (فالح لگاہوا) ہوگا"۔(3)

(8) حضرت سیدناعمر فاروق وسیدنالقمان دخی الله تعالی عنها فرمایا کرتے تھے کہ: "عقل مندکو چاہئے کہ گھریں عروں کی طرح چاہئے کہ گھریں میں مردوں کی طرح

دہے"_(4)

(9) حدیث پاک میں ہے: اللہ عزوجل کے پیارے حبیب مظافیۃ کی آخری وصیت تین باتوں پر مشتل تھی اور باربار انہیں ہی دہرارہے تھے حتی کہ زبان میں چنبش اور کلام مبارک میں آستگی آگئی، آپ مظافیۃ ارشاد فرمارہے تھے: "نماز کولازم پکڑو! نماز کولازم پکڑو! اور جن کے تم مالک ہو(لینی لو تڈی غلام) ان پر ان کی طافت سے زیادہ بوجھ نہ ڈالو! عور توں کے معاطے میں اللہ عزوجل سے ڈرو کہ یہ تمہارے ہاتھوں میں اللہ عزوجل سے ڈرو کہ یہ تمہارے ہاتھوں میں قیدی ہیں، تم نے انہیں اللہ عزوجل کی لمانت کے ساتھ لیا ہے اوراللہ عزوجل کے کلمہ کے ساتھ ایا ہے اوراللہ عزوجل کے کلمہ کے ساتھ ان کی شرم گاہوں کو حلال کیا ہے "۔(5)

(10) امام شعر انی نے اپنے استاد شیخ علی الخواص رحمة الله عليهها كا قول نقل كرتے ہیں كمہ: " بيوى كے اخلاق اصل ميں مر د كے اخلاق كا متيجہ ہیں، كيونكمه عورت تو مر دسے ہى پيدا ہوئى ہے

^{1 (}صيح البغاري، كتاب الدكاح باب مايكر كامن درب النساء ج3. ص121 منيك 5204 فريد باكستال الاهور)

^{2 (}صحيح مسلم، كتأب الزكاة بأب قضل النقة ج1. ص701، حديده 2308 قريديك سفال. لاهور)

^{3 (}ترمذى، كتأب الدكاح بأميما جاء في التسوية بين العرائر .ج1.ص584 مدين 1138 فريد بلت ستأل الأهور) 4 (احياء العلوم، كتاب اداب الدكاح .ج2ص 161 مكتبة البدينه، كراچي)

^{5 (}احياء العلوم كتاب اداب النكاح . ج 2. ص 156 مكتبة البديده كراجي)

مر داپنی بداخلاتی سے غافل ہوجائے تو عورت کے اخلاق کی طرف دیکھ لے کہ وہ مر دکا اخلاق ہی و کی بداخلاق ہی داری و یکھاتی ہے۔ پیارے ہمائی اگر تو چاہتا ہے کہ تیری بیوی بااخلاق ہو تو اللہ تعالی کی فرمال بر داری کر تارہ اس بات ہے بہت سے لوگ غافل ہیں ، اپنی بیویوں کی شکا یتیں کرتے ہیں اور خو و کو نہیں دیکھتے!اگر ہماری بات پر توجہ ویں ، اپنا آپ ٹھیک کرلیس توان کی بیویاں خو د ہی درست ہو جائیں گی"۔ پھر امام شعر انی فرماتے ہیں ہیں نے اس بات کا تجربہ کیا تو شیخ کے قول کے مطابق ہی پایا (مفہوما)۔ (1)

پیارے آ قامنگافیتر کاازواج مطہر ات سے حسن سلوک

حضور مَثَلِّ اللَّهِ ِيِّلِ ارْدانِ مطهر ات کے ساتھ بہت ہی بہترین سلوک فرماتے ان کی پاس داری کرتے انکے ساتھ استر احت فرماتے۔ ذیل میں آ قاکریم مَثَلِّ اللَّهِ کَا لَیکَ ارْدانی سے حسن سلوک سے متعلق چندروایات ملاحظہ ہول۔

الله تعالی عند میں میں الله تعالی عند میں الله تعالی عند میں الله تعالی عند میں میت محبت فرماتے۔ آپ منا الله تعالی عند میں الله تعالی عند میں میارک (بونٹ) رکھتے جس جگہ حضرت منا الله الله معدیقہ نے لینا مند رکھ کر پانی پیابو تا۔ حضرت عائشہ صدیقہ کی کلائی کو پکڑ کر برتن کے اس جانب سے پیتے جہاں سے اُنہوں نے پیابو تا۔ حضور منا الله الله مسواک صاف کرنے کے لیے حضرت عائشہ کو دیتے تو وہ اسے اپنے منہ میں چباکر قرم کر تیں۔ پھر حضور منا الله این مواک منہ میں چبائی گئ مسواک لے کراپنے دبن مبارک میں لے لیتے۔ یہ غایت درجہ تواضع اور حضرت عائشہ صدیقہ سے انتہائی محبت کی ولیل ہے۔ (2)

ا یک مرتبہ حضور مَنَّ اللَّیْمِ نے حضرت عائشہ صدیقہ دن الله تعالی عند کے ساتھ مسابقت فرمائی اور ایک دوسرے کے ساتھ دوڑے۔حضرت عائشہ صدیقہ دوڑ میں آگے نکل گئیں۔ پھر

^{1 (}الصبر على الروجات، ص25-26، دار الفتح)

^{2 (}مدارج النبوت. ج1، ص79 هيأء القرآن يملي كيشاز الاهور)

کی ذہانہ بعد دوسری مرتبہ دوڑ ہوئی تو حضرت عائشہ صدیقہ سے حضور مُنافیخ آگے لکل گئے،
وجہ سے تقی کہ پہلی مرتبہ حضرت عائشہ صدیقہ عام جسم کی تقییں دوسری مرتبہ وہ تو مند بھاری جسم کی ہوگئی تقیں۔حضور مُنافیخ آئے فرمایا (اے عائشہ!) پہلی مرتبہ بیں مجھ سے تمہارے آگے لکل جانے میں بدلہ ہے۔
لاکل جانے کا آج تم سے میرے آگے لکل جانے میں بدلہ ہے۔
لاکل جانے کا آج تم سے میرے آگے لکل جانے میں بدلہ ہے۔
لاکل جانے کا آج تم سے میرے آگے لگل جانے میں الله تعالى عندے گھر میں تشریف فرما حتے کہ حضرت اُم سلمہ دھی الله تعالى عند نے کھانا بھیجا۔ حضرت عائشہ کا ہاتھ کھا وں کو چنا اور کھانا میں لگ گیا۔ برتن گر کر ٹوٹ گیا اور کھانا بھر گیا۔ حضور سُنافیخ برتن کے کھڑوں کو چنا اور کھانا الله کے اللہ کے اللہ کے معالے میں افسوس ہے، بیتائی کا اظہار ہوا۔ پھر حضرت عائشہ کے گھرسے درست پیالہ لے کے معالے میں افسوس ہے، بیتائی کا اظہار ہوا۔ پھر حضرت عائشہ کے گھرسے درست پیالہ لے کے موالے میں بیالہ اور کھانا بھی کے کراس کے گھر خاوم کے ہاتھ بھیحوا بیا اور فرما یا بیالے کے کراور ایک روایت میں غیرت کے موقع پر کورت کے بدلے میں کھانا ہے۔ (1) راس صدیت میں غیرت کے موقع پر عورت سے موافذہ نہ کرنے پر دلیل ہے، اس صدیت میں مردوں کو تھیحت حاصل کرنی عورت سے موافذہ نہ کرنے پر دلیل ہے، اس صدیت سے اُن مردوں کو تھیحت حاصل کرنی عالیہ بیا ہے۔ جوالیے مواقع پر عورت کو لعن طعن کا نشانہ بناتے ہیں)۔

﴿ ایک مرتبہ حضرت سودہ دخی الله تعالى عند حضور مَنَّ اللّٰهُ عَلَیْ مُومِت مِیں شوربہ لائیں۔
حضرت عائشہ صدیقہ دخی الله تعالى عند نے حضرت سودہ سے کہا اسے فی لو، توانہوں نے نہ پیا۔
پھر کہا اسے فی لو ور نہ میں تمہارے منہ پر مل دول گی۔ انہوں نے پھر بھی نہ پیاتو حضرت عائشہ
نے حضرت سودہ کے چبرے پر مل دیا اور حضور اکرم مَنَّ النَّنِیْمُ بید دیکھ کر ہنتے دہے۔ آپ مَنَّ النَّنِیْمُ نَدُ حضرت سودہ نے حضرت عائشہ
نے حضرت سودہ سے فرمایا تم بھی ان کے منہ پر مل دو۔ چنانچہ حضرت سودہ نے حضرت عائشہ
کے چبرہ پر مل دیا اور حضور مَنَّ النِّنِیْمُ دیکھ کر ہنتے دہے۔

ہم ای طرح روایت میں ہے کہ ایک موقع پر ام المومنین حضرت صفیہ دعی الله تعالى عند کے

^{1 (}مدار جالتبوت. ج1. ص 79. ضياء القرآن يعلى كيشنز. لأهور) 2 (مدار جالتبوت، ج1. ص 80. ضياء القرآن يعلى كيشنز. لأهور)

^{3 (}مدارج النبوت، ج1،ص 80، ضياء القرآن يبلي كيشنز، لاهور)

لیے جب سواری کے لئے اُوٹٹ قریب لایا گیا، تورسولِ خدا مَثَاثِیْمُ نے حضرتِ صفیہ کو اپنے کپڑے سے پر دہ کرایا اور رسول اللہ مَلَا لِنَيْظُمُ اپنی اہلیہ محترمہ ام المومنین حضرت صفیہ کے لیے اونث کے قریب بیٹھ گئے اور اپنے کھٹنہ مبارک کو کھڑا فرماویا۔حضرت صفیہ نے اپناقدم اس مبارک زِینے (رسول اللہ کے گھٹنے) پر رکھااور بآسانی اُونٹ پر سوار ہو کیں۔ ⁽¹⁾ 🖈 أم المؤمنين حضرت سيد تُناعاكشه صديقه رهي الله تعالى عنها سے مروى ہے فرماتي ہيں كه مجھے حضور نبی کریم رؤف رحیم عَلَیْهِ الصَّلْوةُ وَالسَّلَام کی أزواجِ مطهر ات میں سے سی پر اتنار فنک نہ آتا جنتا حضرت خدیجہ دعی الله تعالی حند پر آتا حالانکہ میں نے انہیں کبھی نہیں و یکھالیکن ا کثر تاجدارِ رسالت مَنْالِیْتِیْمُ ان کا ذکر خیر فرماتے تھے۔ بعض او قات بکری ذیج کرتے اور اس کے اعصاء الگ الگ کر کے حضرت خدیجہ کی سہیلیوں کے گھر ہیجیجتے۔ بسااو قات میں یوں عرض کرتی کہ دنیا میں حضرت خدیجہ کے سواکوئی عورت نہیں ہے ؟۔ آپ مُنْالْقِیْظُم ان کی اوصاف بیان کرتے ہوئے فرماتے: "وہ الی تھیں وہ الی تھیں اور اُن سے میری اولا دہو کی ہے "۔ (⁽²⁾ 🖈 حضرت عائشہ صدیقتہ رضی الله تعالی عند سے مروی ہے کہ تبی کریم منگافی آن سے فرمایا كرتے تھے "جب تم ناراض ہوتی ہو تو مجھے تمہاري ناراضكي كا پيد چل جاتا ہے اور جب تم راضي ہوتی ہو تو مجھے اس کا بھی پید چل جاتا ہے۔ انہوں نے عرض کیایار سول الله مَلَا تَقَيْرُ أَمْ ! آپ کواس كاكيسے پينة چل جاتاہے؟، تبي سَكُالْلِيَّا نِه فرمايا: جب تم ناراض ہوتی ہو توتم "يامحمه" كہتی ہو اور جب تم راضی بو توتم " يار سول الله " كېتى بو ـ (³⁾ 🖈 سیدہ عاکشہ رہی الله تعالى عنها سے مروی ہے: فرماتی ہیں کہ جب میں نے رسول الله سَاکَالْفِیْزُمُّا

^{1 (}صحيح المغارى، كتأب المغازى، بأب غزو تغيير. ج2. ص639، حديث 4211، فريديك ستأل، لاهور)

^{2 (}صحيح اليغاري، كتأب مناقب الانصار، پاب تزويج النبي خديجة ، ج2. ص466، حديث 3818، قرينها تستأل، لاهور) 3 (مسلدامام احد، حديث عائشه صديقه. ج11، ص4، حديث 24513، مكتبه رحمانيه، لاهور)

نے فرمایا: الله کی تشم ایس ہر نمازیس لیتی امت کے لئے یہ دعاکر تاہوں۔(1) 🖈 اگر بوی سوئی ہوئی ہو توبلاوجہ اُسے جگا دیناسنت کے خلاف ہے۔سیدہ عاکشہ صدیقہ رہی الله تعالى عنها فرماتى بين: كدين سوئى موئى تقى تواللد تعالى ك حبيب مَثَالَيْكُم بسرے ينج أترے، آہتہ سے اپنے جوتے پہنے، آہتہ سے اپنی چادر لی، پھر آہتہ سے دروازہ کھولا اور آہتہ سے باہر نكل گئے۔جب میں نے یو چھا اے اللہ كے رسول آپ نے ايسا كيوں كيا؟، تو آپ نے فرمايا: عائشہ! تم سور ہی تھی تومیر ابی چاہا کہ تمہاری نیند میں خلل نہ آئے۔(2) 🖈 نبی کریم منگافتی فی این ازواج مطهرات میں سے کسی کے بارے میں ان کے والدین سے تمجھی شکایت شہیں کی۔ بیہ نہایت عظیم ازوواجی کر دار ہے۔ایک وفعہ حضرت ابو بکر صدیق نبی كريم مُنْكَ تَنْتُكُمُ كَي خدمت مِين حاضر ہوئے، آپ نے اُم المومنین عائشہ صدیقہ کی آواز بلند ہوتی ہوئی سنی، جب آپ اندر داخل ہوئے تو انہیں تھیٹر مارنے لگے اور فرمایا: اپنی آواز رسول اللہ مُنْ النَّيْجُ سے بلند کرتی ہو ؟۔ نبی کریم سُلُالنِّیجُ انہیں روکنے لگ گئے اور ابو بکر غصے میں باہر نکل كتے، ني كريم مَنْ فَلِيْمُ نے فرمايا: اے عائشہ تم نے ديكھا بيں نے حميس كيسے بي الياہے؟ - يجھ د نوں بعد ابو مکر پھر حاضر ہوئے اور دیکھا کہ دونوں (اللہ کے پیاروں) میں صلح ہو چکی ہے تو کہنے ككے: مجھے جس طرح اپنے جھڑے ش شامل كيا تفااى طرح مجھے صلح ميں بھی شامل كريں۔ ني

ازواج مطہر ات کے ساتھ آپ مُنگافیز کم کا یہ حال تھا کہ آپ ان کی غیرت و مذاح پر مواخذہ نہ فرماتے۔ اور انہیں اس میں معذور رکھتے تھے۔ اور جب ان پر عدل کی ترازو اور شریعت کے احکام قائم فرماتے تو نرمی کے ساتھ کرتے۔ شادی شدہ حضرات بیارے آ قامُنگافیز کم کی سیرت کے ان پہلووں پراگر عمل کریں تو یقینا ہمارے گھر خوشیوں کا گہوارا بن جائیں۔

کریم منگانگیز کے فرمایا: "ہمنے ایساہی کیا، ہمنے ایساہی کیا"۔⁽³⁾

^{[(}صيح ابن حيان، كتاب المعاقب, ج 8، ص 281، حديث 7111، شهير برادرز، (هور)

^{2 (}سان الىداؤد، كتاب المحالة ،بأب مومنون كر ليه استعفار ،ج2، ص90 حديث 2009. شياء القران يبلى كيشاز ،لاهور)

^{3 (}سان اليداؤد، كتاب الإداب، بأب ماجاء في المراخ، ج 3، ص 530، حديث 4347، ضياء القران يملي كيشاز الإهور)

خاتون جنت كونفيحت

حضرت سیرنا علی المرتفی دعی الله تعالی عنه اور حضرت سیر تنافاطمة الزبراء دعی الله تعالی عنها میں شکر رخی (ر بخش) ہوگئی، چنانچہ وہ رسولِ کریم، رؤن رحیم مَنَّالَیْمَا کے پاس جانے کیلئے گھر ہے روانہ ہوئی تو حضرت سیرنا علی بھی اُن کے پیچے ہو گئے اور ایسی جگہ کھڑے ہوگئے جہاں سے گفتگوس سیس، حضرت سیر تنافاطمہ نے اپنے بایا جان، رحمت عالمیان مَنَّالَیْمَا ہے حضرت علی کی شکایت کی تو آپ نے ارشاد فرمایا: میری بٹی! غور سے سُنو اور اچھی طرح سجھ لو کہ الیسی کوئی عورت نہیں ہوتی کہ وہ اپنے شوہر کے مزاج کے خلاف کچھ کرے اور شوہر خاموش بھی رہے دیا اور ایجی طرح سجو قواسے بھی غصر آبی جاتا رہے دیا اور ایجی بوئے وہاں سے شوہر کے مزاج کے خلاف کوئی بات ہوتی ہے تو اُسے بھی غصر آبی جاتا ہے ہوئے وہاں سے لوٹ آیا کہ خدا کی فتم اب بیں ایسا پھی نہیں کروں گاجو حضرت فاطمہ دھی الله تعالی عنها کو سے لوٹ آیا کہ خدا کی فتم اب بیں ایسا پھی نہیں کروں گاجو حضرت فاطمہ دھی الله تعالی عنها کو بھی نہیں کروں گاجو حضرت فاطمہ دھی الله تعالی عنها کو بھی نہیں کروں گاجو حضرت فاطمہ دھی الله تعالی عنها کو بھی نہیں کروں گاجو حضرت فاطمہ دھی الله تعالی عنها کے بھی نہیں کروں گاجو حضرت فاطمہ دھی الله تعالی عنها کو بھی نہیں کروں گاجو حضرت فاطمہ دھی الله تعالی عنه کونا پیند ہو۔ (1)

دیکھا آپ نے کہ خاتون جنت بلکہ جنتی عور توں کی سر دار حضرت سید تنافاطمہ دض الله تعالى عنها جب حضرت سیدنا علی دض الله تعالى عنه کی شکایت لے کر اپنے بابا جان رحمت عالمیان مَکَّالَّتُنِکُمُ جب حضرت سیدنا علی دض الله تعالی عنه کی شکایت لے کر اپنے بابا جان رحمت عالمیان مَکَّالِیْکُمُ کے پاس حاضر ہوئیں تو ہمارے بیارے آتا ، کی مدنی مُصَطَّفٌ مَکَّالِیْکُمُ لَے اُنہی کو انتہائی شفقت سے تصبحت فرمائی ، یقیناً حضور اکرم ، نور مُجم مَکَّالِیْکُم کا بہ طرز عمل بھی والدین کیلئے بہترین محونہ ہے ، انہیں چاہے کہ اپنے بچوں کی باہمی ناراضیوں کو اپنی عظمندی اور معاملہ فہمی سے جلدسے جلد ختم کرویں۔

خاتون جنت کی حیاتِ مبار که (حالاتِ زندگی)

حطرتِ عمران بن حصين دخى الله تعالى عنه سے مروى ، فرماتے يان : " حضور اكرم مَثَلِظَيْمً مجمع سے حسن ظن ركھتے تھے، ايك مرتب حضور مَثَالَظِيمُ نے فرمايا: اے عمران اجمہارامیرے نزدیک ایک خاص مقام ہے، کیاتم میری بیٹی فاطمہ کی عیادت کو چلو ہے؟ میں نے کہا: "میرے مال باب آپ پر قربان! ضرور چلول گا" چنانچہ ہم روانہ ہو گئے اور حضرتِ فاطمه رهى الله تعالى عنها كے وروازہ پر پنچے، آپ نے وروازہ كھتكھنا يا اور سلام كے بعد اندر آنے كى اجازت طلب فرما كى وحضرت فاطمه نے فرمايا: تشريف لايے! آپ نے فرمايا: ميرے ساتھ ا یک اور مخص بھی ہے، پوچھا گیا: حضور! دوسرا کون ہے؟ آپ نے فرمایا: عمران! حضرتِ فاطمہ بولیں: ربِ ذوالجلال کی قسم اجس نے آپ کوحق کے ساتھ مبعوث فرمایا میں صرف ایک چادر سے تمام جمم چھپائے ہوئے ہوں۔ آپ نے دست اقدس کے اشارے سے فرمایا: تم ایسے ایسے یردہ کرلو، انہوں نے عرض کیا: اس طرح میر اجہم توڈھک جاتا ہے مگر سر نہیں چھپتا، آپ نے ان کی طرف ایک پرانی چاور چھیکی اور فرمایا: تم اس سے سر ڈھانپ لو، اس کے بعد آپ گھر میں داخل ہوئے اور سلام کے بعد بوچھا: بٹی کیسی ہو؟ حضرتِ فاطمہ نے عرض کما: حضور مجھے دوہری تکلیف ہے، ایک بہاری کی تکلیف اور دو سرے بھوک کی تکلیف!میرے پاس ایس کوئی چیز نہیں ہے جسے کھاکر بھوک مٹاسکوں،رسول مَلْ ﷺ بیس کراشکبار ہو گئے اور فرمایا: بیٹی گھبر اؤ نہیں،

رب کی قشم ایمبرارب کے یہاں تم سے زیادہ مرتبہ ہے مگر میں نے تین دن سے پھے نہیں کھایا ہے اگر میں اللہ تعالیٰ سے مانگوں تو جھے ضرور کھلائے مگر میں نے دنیا پر آخرت کو ترجیج دی ہے پھر آپ نے حضرتِ فاطمہ کے کندھے پر ہاتھ رکھ کر فرمایا "خوش ہوجاؤتم جنتی عورتوں کی سر دار ہو "۔ انہوں نے پوچھا: حضرتِ آسیہ اور مریم کہاں ہو گی؟ آپ نے فرمایا: آسیہ اپنے زمانے کی عورتوں کی سر دار ہو، تم جنت کے ایسے محلات میں رہو گی جس میں کوئی عیب، کوئی دکھ اور کوئی تکلیف نہیں ہوگی۔ پھر فرمایا: اپنچ پچپاڑا دکے ساتھ خوش رہوں ہیں تہراری شادی دنیا اور آخرت کے سر دار کے ساتھ کی ہے۔ (1)

فقراء كى فضيلت:

الله عزوجل نے اگر کسی مسلمان کو و نیادی مال و دولت سے نہیں تو ازا تو اسے چاہیے کہ کہ وہ اس عارضی مال و دولت کے بجائے اُنٹروی انعام پر نظر کرے اور ہر حال شی الله کا شکر اوا کرے۔ حدیث پاک میں آ قاکر یم مَنَّالْتُیْنِیْمُ نے فقراء کے بارے میں ارشاد فرمایا: "اس اُمت کے سب سے بہترین لوگ فقراء ہیں اور سب سے پہلے جنت میں داخل ہونے والے کمزور لوگ ہیں "اور فرمایا" میری امت کے فقراء مالداروں سے پانچ سوسال پہلے جنت میں داخل ہوں کے میری امت کے فقراء مالداروں سے پانچ سوسال پہلے جنت میں داخل ہوں گے بہاں تک کہ اگر کوئی مالدار آدمی ان کی جماعت میں شامل ہوگا تواسے ہاتھ کی گڑ کر باہر تکال دیا جائے گا"۔(2)

﴿ حضرتِ سيدُنا ابراتِيم بن بشار دحمة الله عليه فرمات بين: مين حضرت سيدُنا ابراتيم بن اوہم
دحمة الله عليه كے ہمراه سفر پر تھا اور ہم دونوں روزے سے نظے، گر ہمارے پاس إفطار كے لئے
کچھ نہ تھا اور نہ ہى كوئى ايسے ظاہرى اسباب نظر آرہے شفے كہ جن سے افطارى كا اقطام كيا جا
سكے۔ ميرى اس فكر كو دكھ كر حضرت سيدنا ابرائيم بن ادہم دحمة الله عليه نے ارشاو
فرمايا: "اے ابن بشار! الله عزوجل نے غريبوں اور مسكينوں كو دنيا و آخرت ميں كس قدر نعتوں اور داحتوں سے مرفراز فرمايا ہے بروز قيامت ندان سے ذكوة كے بارے ميں يو چھاجاتے

 ⁽مكاشفته القلوب بأب فقراء كى قضيلت، ص245/255 مكتبة المدينه. كراچى)
 (مكاشفته القلوب بأب فقراء كى قضيلت، ص249/257 مكتبة المدينه. كراچى)

کا اور نہ جج وصد قد اور صلہ رحمی و حسن سلوک کے بارے میں حساب و کتاب ہوگا، جبکہ مال وارول سے اِن سب چیز وں کے بارے میں سوال ہو گا۔ دنیا کے بید امیر و سرمایہ دار آخِرت میں غریب و نادار اور محض و نیوی عزت دار وہاں ذلیل وخو ار ہول گے ، آپ فکر نہ کیجئے ، اللہ عز و جل روزی کا ضامن ہے وہ تمہارے گئے رزق کا انتظام فرمائے گا، ہم ان دنیاوی امیروں سے زیادہ امیر ہیں۔ دنیاد آخرت میں کامل مسرت ہمیں حاصل ہے ندر نج و غم ہے اور نداس کی پرواہ کہ ہماری صبح کیسے ہوئی اور شام کیسے ؟بس شرط ہیہ ہے کہ اللہ عزوجل کی اِطاعت و فرمانیر واری کے معالمے میں کو تاہی آڑے نہ آئے دیں۔ "یہ فرماکر آپ ٹماز میں مشغول ہوگئے اور میں نے بھی نماز شر وع کر دی۔ تھوڑی ہی دیر بعد ایک شخص ہمارے پاس 8روٹیاں اور بہت سی تھجوریں لے کر آیا اور بیر کہہ کر واپس چلا گیا کہ کھاہیے! اللہ عزوجل تم پر رحم فرمائے۔حضرت سیڈنا ابرائيم بن اوجم رحدة الله عليه في مجوس فرمايا: "ليج اور كمايية " جول بي جم كمانا كماف کے، ایک سائل نے صدالگائی کہ الله عروجل کے نام پر مجھے پچھ کھانا وے و بیجے۔ حضرت سیدتا ابراہیم بن ادہم رحبتدالله علید نے 3 روٹیال اور کھے مجورین اس حاجت مند کودے دیں اور فرمایا:" عَمْ خواری کرنااہلِ ایمان کا حصہ ہے" ۔ ⁽¹⁾

اللدرب العزت عزوجل كى أن يررحت بواور أن كے صدقے بمارى بے حساب معفرت بو

رسول الله مَنْ اللَّيْزُ فَمَ الله عَرَادِ فرمايا: كثرتِ ذكر اور مجھ پر دُرودِ پاك پر صناكريه عَمَل فقر (يعنى غُريت) كودُور كرتاہے۔" صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيه وَاللهِ وَسَلَّم

> بہر رُقعِ مرض و زَحمت و رَجْج و کُلفت ڈھونڈٹ پھرتے ہیں دہ لوگ کہاں کا تعویڈ تم پڑھو صاحب لَولاک پر کثرت سے دُرُود ہے عجب دردِنہاں اور اَمال کا تعویذ

طلاق:

ہمارے یہاں طلاق کے مسئلہ کو بہت بگاڑ دیا گیاہے۔ بعض لوگ تو طلاق سے بہت زیادہ نفرت کرتے اور اسے برا بھلا کہتے ہیں اور بعض نے طلاق کو تھیل بنار کھاہے، تین اور تین سے زائد طلاقیں دیتے ہیں اور پھر غیر شرعی طریقے سے رجوع کرکے زنا کرتے رہتے ہیں۔ یہ یا در کھنا چاہئے کہ بلاوجہ شرعی طلاق دینا اللہ تعالیٰ کو سخت نالپندیدہ و کمروہ ہے۔

پیسے طہور بہ مری مقد فرمایا: "الله تعالیٰ کے نزدیک طلل (کاموں میں سے)سب سے مبغوض اور نالیندیدہ عمل طلاق ہے "_(1)

اس طرح وہ عورت جو بلاوجہ شرعی طلاق کامطالبہ کرے اُسکے متعلق آ قاکر یم مَثَاثَیْمُ نے فرمایا: "جوعورت بلاوجہ اپنے خاد ندسے خلع طلب کرے اس پر جنت کی خوشبو حرام ہے۔(یعنی الیمی عورت جنت کی خوشبو بھی نہ یا سکے گی)"۔(2)

البتہ اگر میاں بیوی کا اکتصے رہنا واقعی نا ممکن ہوجائے اور طلاق کی ضرورت پڑئی جائے تو طلاق دینا جائز ہے۔ای طرح اگر عورت واقعی مظلوم ہے اور اس کاشو ہر کے ساتھ رہنا مشکل ہو جائے توشر یعت نے اجازت دی ہے کہ وہ شوہرسے خلع لے لے۔

تين طلا قول كامسكله:

ودر حاضر میں بید مسئلہ بہت زیادہ زور پکڑ گیاہے کہ شوہر بیوی کو جذبات میں آکر تنین طلاقیں اکشی دے دیتاہے۔ اور پھر دنیاوی مفاد پاشر مندگی سے بیچنے کے لیے طلاق کا اٹکار کر دیتاہے۔ کہ بیس نے طلاق نہیں دی بایہ بہانا بنا تاہے کہ بیس غصر بیس تھا۔ ایسے حضرات سے پوچھنا چاہیے کہ بھل بیار محبت بیس بھی کھی کسی نے طلاق دی ہے؟۔ طلاق عمو ماغصے میں ہی ہوتی ہے۔ امام احمد رضاخان قادری فیصیرہ العزید کھتے ہیں:
اسخصہ مانع و قوع طلاق نہیں بلکہ وہی طلاق پر حامل ہو تاہے، تو اُسے مانع قرار دینا گویا تھم طلاق کا

^{1 (}سان) إيداؤد، كتاب الطلاق، بأب في كراهيه الطلاق، ج2، ص69، حديث 1863 ضياء القرآن يبلي كيشاز الأهور)

^{2 (}ترمذى، كتاب الطلاق بأب ماجاء في المختلعات ج1.ص608، مديث 1190 فريد بك ستأل الاهور)

راساً (سرے سے) ابطال (باطل قرار دینا) ہے، ہاں البتہ! اگر شدت غیظ وجوشِ غضب اس حد
کو پہنچ جائے کہ اس سے عقل زائل ہو جائے، خبر نہ رہے کہ کیا کہتا ہوں زبان سے کیا لکاتا ہے، تو
بیشک الی حالت کی طلاق ہر گزواقع نہ ہوگی "۔(1)
صدر الشریعہ علامہ امجد علی اعظمی رحمۃ الله علیہ لکھتے ہیں: "آج کل اکثر لوگ طلاق دے بیٹھتے
ہیں بعد کو افسوس کرتے اور طرح طرح کے حیلہ سے یہ فتویٰ لینا چاہتے ہیں کہ طلاق واقع نہ ہو۔
ایک عذر اکثر یہ بھی ہو تا ہے کہ عصہ میں طلاق دی تھی۔مفتی کوچا ہیے یہ امر ملحو خار کے کہ مطلقاً
غصہ کا اعتبار نہیں۔معمولی غصہ میں طلاق ہو جاتی ہے۔وہ صورت کہ عقل غصہ سے جاتی رہے

بہت نادرہے، البذاجب تک اس کا شوت نہ ہو محض سائل کے کہہ دینے پر اعتمادنہ کرے "_(⁽²⁾

اس طرح ایسے موقع پر کوئی جائل ہے کہ گاکہ حمل پیل طلاق نہیں ہوتی ، کوئی کہ گاجب تک عورت نہ سے طلاق نہیں ہوتی یا جب تک عورت طلاق والے پیپر نہ لے طلاق نہیں ہوتی۔ پھر بعض لوگ وہ ہیں جوشو ہر کے ہوں کو نتین طلاقیں دینے کے بعد یہ مشورہ دینے نظر آتے ہیں کہ شوہر اگر دو مہینے کے روزے رکھ لے یاسا تھ مسکینوں کو کھانا کھلا دے تو ہوی اس پر حلال ہو جائے گی جبکہ شریعت مطہرہ بیل نین طلاقیں دینے کے بعد اگر شوہر اس ہوی کے ساتھ رہنا چاہتا ہا جائے گی جبکہ شریعت مطہرہ بیل نین طلاقیں دینے کے بعد اگر شوہر اس ہوی کے ساتھ رہنا چاہتا ہا جاتے گی جبکہ شریعت مطہرہ بیل کے علاوہ اور کوئی دو سر اطریقہ نہیں۔ یہ دو مہینوں کے روزے یا ساتھ مسکینوں کو کھانا کھلانے کا حکم ظہار کا ہے (یہ طلاق سے جداگانہ مسلہ) نہ کہ طلاق کا ساتھ مسکینوں کو کھانا کھلانے کا حکم ظہار کا ہے اور بظاہر ہمدردی کر رہا ہو تا ہے لیکن حقیقتا ایسا شخص کسی الغرض ہر کوئی اپنی جہالت بکتا ہے اور بظاہر ہمدردی کر رہا ہو تا ہے لیکن حقیقتا ایسا شخص کسی دو سرے کی خاطر اپنی آخرت خراب کر تا ہے۔ ایسے لوگوں کے متعلق ارشادِ نہوی مثالی آخرت خراب کر تا ہے۔ ایسے لوگوں کے متعلق ارشادِ نہوی مثالی آخرت خراب کر تا ہے۔ ایسے لوگوں کے متعلق ارشادِ نہوی مثالی آخرت خراب کر تا ہے۔ ایسے لوگوں کے متعلق ارشادِ نہوی مثالی آخرت خراب کر تا ہے۔ ایسے لوگوں کے متعلق ارشادِ نہوی مثالی ہوت خوب ہو غیر کی و نیا کے لیے اپنی آخرت خراب کر یا۔ (د)

یہ بات یاد رسمیں! اسٹھی تین طلاقیں دیٹا گناہ ہے۔احادیث میں آقا کریم مُنَّافِیْزُم نے اس

^{[(}قتأوڭارضويه، كتأبالطلاق، ج12، ص383، رضاً، فاؤنْثْيْهَن، لاهور)

^{2 (}بهار شريعت، حصه8، ص113مكتبة البديدة، كراجي)

^{3 (}شعب الايمان، بأب في اعلاص العبل . ج 5، ص 316 حديث 6938 . دار الاشاعت. كراجي)

متعلق شدید غصہ کا اظہار فرمایا (1) کیکن اگر کوئی شخص اکھی تین طلاقیں دے تو تینوں واقع ہو جاتی ہیں۔ ایسے شخص کو چاہیے کہ اب صبر واستقامت کے ساتھ اپنے اس فیصلے کاسامنا کرے ، نہ طلالہ کا مکروہ حیلہ اختیار کرے اور نہ دہائی حضرات سے خلاف شرع (غلط) فتوئی لے کر ساری زندگی زنا کا ارتکاب کر تارہے۔ ایسا کرنے والا شخص اپنی دنیا و آخرت خراب کرنے والا ہوگا۔ جس کی رسول مُنَّا اَلَّیْنِ نے پہلے ہی پیش گوئی فرمائی تھی۔ چنانچہ ارشاد فرمایا:

"لوگوں پر ایک وقت ایسا آئے گا شوہر بیوی کو طلاق دے گا پھر اس طلاق کے متعلق جھڑا الوگوں پر ایک وقت ایسا آئے گا شوہر بیوی کو طلاق دے گا پھر اس طلاق کے متعلق جھڑا الدیرے کا (کہ میں نے طلاق نہیں دی) بعد میں اس عورت کے ساتھ صحبت (جمہتری) کرے گا اور یہ دوٹوں زناکریں گے "۔(2)

جہور اہل سنت کے نزدیک اکٹی دی گئ تنیوں طلاقیں نافذہ و جاتی ہیں۔ چاروں آئمہ کرام (اہام اعظم امام ابو حنیفہ ، امام مالک ، امام شافعی ، امام احمد بن حنیل دحدة الله علیهم) اور قدیم و جدید جہور علماء و فقہائے کرام کے نزدیک اکٹی تین طلاقیں دی جائیں تو تینوں نافذہ و جاتی ہیں ، اس پر پوری امت کا اجماع ہے (3)۔ یہ کثیر احادیث سے ثابت ہے۔ ذیل میں وو احادیث ملاحظہ ہوں:

﴿ حضرت فاطمه بنت قيس دهن الله تعالى عنها فرما في بين "كه مجهد مير ب شوبر ني يمن جات وقت تين طلاقيس دين، ان تنيول كو حضور أي كريم مَا الليوم الله عن انبين نافذ كر ديا)_(4)

﴿ حضرت مهل بیان دهی الله تعالی عنه کرتے ہیں "عویمرنے رسول الله مَنَّا الْکَیْمُ کے سامنے ایک ساتھ تین طلاقیں دیں تورسول الله مَنَّالِیْمُ نے انہیں نافذ فرما دیا"۔ (5)

مديث كى معتبر كتاب محيح البخارى من المام بخارى دحدة المعديد ف ايك باب كا نام بى باب من

^{1 (}نسائي، كتاب الطلاق. ج 2 ص 532، حديث 3347 منياء القران پملي كيشاز ، (اهور)

^{2 (}جمع الزوائد، كتاب الفتن بأب ثاني في امارات ج7، ص 624.دار الفكرييروت)

^{3 (}مقالات قاسمى، ص28. ج2رحة للعاليين يملى كيشنز، سر كودها)

^{4 (}سنن اين ماجه، كتأب الطلاق، بأب من طلق ثلاثاً، ج1، ص627 مديث 2013 شياء القرآن يبل كيشاز، الأهور)

^{5 (}سأن ابيداؤد، كتاب الطلاق، بأب ق اللعان، ج2، ص95 حديث 1917 ضياء القرآن يبلي كيشاز الاهور)

جاز الطلاق الثالث رکھاہے جس کا معنی ہے (تین طلا توں کے جائز ہونے کا باب)۔ اس طرح صحاح ستہ بیں سے این ماجہ شریف بیس بھی اس کے متعلق ایک مکمل باب موجودہے جس کا نام ہے من طلق ثلاثاً فی مجلس واحد (لیتی ایک ہی مجلس میں تین طلاقیں دینے کا باب)۔ بیہ عنوان صاف بتار باہے کہ ان احادیث بیل اکٹھی تین طلاقوں کی بات ہور ہی ہے اور بہاں کسی ہیر اکچھیری کی مختال نہیں۔ سنن ابو اواؤد میں ہے: " ایک شخص لینی بیوی کو تین طلاقیں و ہیر اکچھیری کی مختال نہیں عباس دھی الله تعالی عند کے پاس صاضر ہوا تو آپ نے اس شخص پر غصہ کا اظہار فرما یا اور کہا: "تم لوگ کام خراب کرنے کے بعد میرے پاس آ جاتے ہو، میرے پاس اس کا کوئی حل نہیں۔ تیری بیوی تم سے جدا ہو چکی ہے "۔(1)

اس قسم کی بے شار احادیث ابن ابی شیبه ، وار قطنی ، موطاامام مالک وغیر هیں موجو دہیں ، جن میں حضرت ابن مسعود ، ابو ہریرہ ، عائشہ صدیقہ اور ابن عباس دخوالله تعالی عنهم اجمعین کا یمی فتوک بیان ہواہے۔ (2)

للذاكس سى كے ليے جائز نہيں كہ وہ سب كھ جانے بوجھے تين طلاقيں دينے كے بعد كسى وہائي مولوى سے فتویٰ لے كر حرام كا ار تكاب كرے اور كل قيامت والے دن اپنے رب تعالیٰ كے حضور اس حال ميں حاضر ہوكہ اس كا شار زائيوں ميں ہو۔ خاندان و ديگر دوست احباب كو بھى

چاہیئے کہ تین طلا قوں کے بعد میاں بیوی کو اکٹھار ہے سے رو کیس نہ کہ ان کے ہمدر دین کر خو و گناہ گار ہول۔اور ان کے فائدے کے لیے اپنی آخرت خراب کرلیں۔

ایک مسئلہ مزید بیر یادرہے کہ بیوی کو اگر معلوم ہے کہ شوہر نے جھے تین طلاقیں دے دی
ہیں لیکن شوہر شر مندگ سے جموٹ کا سہارالیتے ہوئے اس کا اٹکار کر تاہے، تو بیوی ہر گزاس کے
ساتھ نہ رہے، جس طرح بھی ہوسکے اس سے چھٹکارا حاصل کرے۔

🖈 اس مسئله كى مزيد تقصيل علمائے الل سنت كى كتب ميں ملاحظه سيجير

المعلاق سے متعلق چھوٹے سے چھوٹامسلہ بھی در پیش آئے، تو چاہئے کہ فوراکسی صحیح العقیدہ

^{1 (}سان ابي داؤد، كتأب الطلاق، بأب نسخ البراجعته ج2ص 77، حديث 1878 بنياء القرآن يبلي كيشاز، لاهور) 2 (ماخوذمقالات كاسي، ج2.ص 219رحة للعالمين يبلي كيشاز، سرگودها)

سن عالم دین کی طرف رجوع کریں۔ ہوسکے تو دارالا فآء اہلِ سنت دعوتِ اسلامی کی پاکستان بھر میں کسی بھی برانچ میں موجود مفتیانِ کرام کے پاس اپنے دین مسائل کے حل کے لیے تشریف لے جائیں ادر رہنمائی کے ساتھ (printed) فآدیٰ حاصل کریں۔

طلاق دیخ کااحسن طریقه:

آگر میاں بیوی کا ایک ساتھ رہنا ممکن نہ رہے اور طلاق کی فویت آ جائے تو چاہئے کہ بیوی کو اسلامی تعلیمات کے مطابق طلاق دے تاکہ میاں بیوی کو اسپٹے فیصلے پر سوچ و بیچار کرنے کا وقت بھی ملے اور وہ دوبارہ آگر چائیں تورجوع بھی کر سکیں۔
اسلامی تعلیمات کے مطابق احسن طریقہ یہ ہے کہ: "عورت کی پاکی کے اُن ایام میں، جن میں صحبت (جیستری) نہ کی ہو، صرف ایک طلاق دی جائے اور عورت کو چھوڑ دیا جائے اور عدت کے پورے زمانے میں (جو تقریباً تین ماہ یعنی تین حیش) کا ہے ، دوبارہ طلاق نہ دی جائے۔ اس عدت کے تین ماہ میں شوہر چاہے تورجوع کر سکتاہے ، اس میں نہ حلالے کی ضرورت ہے نہ تجدید نکاح

کی۔ اور اگر صلح نہ ہوئی بہاں تک کے عدت گزرگئی تو یکی طلاق ، طلاق بائنہ ہو جائے گی اور عورت نکاح سے نکل جائے گی۔ عورت اب جہاں چاہے نکاح کر سکتی ہے اور دوبارہ پہلے شوہر سے بھی نکاح کر سکتی ہے اور کسی حلال دیے بحد مجھی نکاح کر سکتی ہے اور کسی حلال دیے بحد سے ایک فاصر عمد میں تو تنیوں طلاقیں واقع ہو جائیں گی اور عورت ہمیشہ کے سے۔ لیکن اگر اکٹھی تین طلاقیں وے دیں تو تنیوں طلاقیں واقع ہو جائیں گی اور عورت ہمیشہ کے

ب حرام موجائ كى، آب بغير حلاله ك والسن قد آسك كى" _ ارشاد بارى تعالى ب: فَإِنْ طَلْقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ * فَإِنْ

طَلَقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا آنَ يَكُواجَعَا إِنْ ظَنَا آنَ يُقِيْمَا حُدُودَ اللهِ * وَ تِلُكَ حُدُودُ اللهِ يُبَيِّنُهَالِقَوْمِ يَعْلَمُونَ (1)

ترجمہ کنزالعرفان: " پھر اگر شوہر بیوی کو (تیسری) طلاق دیدے تواب وہ عورت اس کیلیے حلال نہ بوگ جب تک دوسرے خاوندے تکاح نہ کرے ، پھر وہ دوسر اشوہر اگر اسے طلاق دیدے تو

ان دونوں پر ایک دوسرے کی طرف لوٹ آنے میں پچھ گناہ نہیں اگر وہ یہ سمجھیں کہ (اب) اللّٰہ کی حدول کو قائم رکھ لیں گے اور یہ اللّٰہ کی حدیں ہیں جنہیں وہ دانش مندول کے لئے بیان کر تاہے"۔

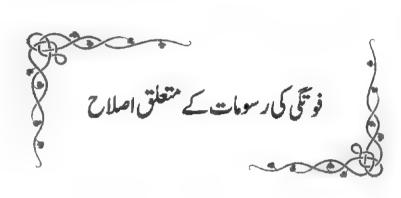
حلاله کیا ہے:

صلابہ یہ ہے کہ اگر کوئی شوہر اپنی ہوی کو تینوں طلاقیں اکھی یا مختف او قات میں دے، تو اب اگر ہیہ میاں ہوی دوبارہ اکھے رہنا چاہتے ہیں تو ان کے پاس حلالہ کے مکروہ طریقہ کے علاوہ اور کوئی رستہ نہیں۔ اس کا طریقہ یہ ہے کہ تین طلاقوں کے بعد عورت اولاً عدت گذارے پھر دو سرے شوہر سے تکاح کرے اور وہ اس کے ساتھ صحبت (جماع) کرے، اس کے بعد وہ دو سر اشوہر لبتی مرضی سے طلاق دے پھر یہ عورت عدت گزارے، اس کے بعد اس کے بعد وہ دو سر اشوہر لبتی مرضی سے طلاق دے پھر یہ عورت عدت گزارے، اس کے بعد اس عورت کے بعد وہ دو سر ایشوہر سے تکاح کرنا جائز ہوگا، ورنہ نہیں۔ حلالہ کا مکروہ طریقہ ایک قسم کی سزاد آزمائش ہے اس لیے کہ اکھی تین طلاقیں دینے والا شخص شرکی طریقے سے طلاق دینے کے بجائے احکام اللی کی خلاف ورزی کرتا ہے۔

نوٹ: یہاں یہ بات یاد رہے کہ " مشروط حلالہ " لیعنی عورت کا نکار سے قبل ہی دوسرے مر دکے ساتھ یہ طلاق دے گا دوسرے مر دکے ساتھ یہ طہ کرلینا کہ بعد از دخول (صحبت) وہ دوسرا شوہر اسے طلاق دے گا تاکہ وہ پہلے شوہر کی طرف لوٹ سکے ، یہ (مشروط حلالہ) ناجائز و گناہ ہے اور آقا کریم مَنَّا اللَّہِ اللّٰہ عَلَیْ اللّٰہ اللّٰہ کے ایساکرنے والوں پر لعنت فرمائی ہے۔ مشروط حلالہ اگر چہ مکروہ تحریمی (ناجائز و گناہ) ہے لیکن اس سے بھی عورت کا پہلے شوہرسے نکاح کرناجائز ہوجاتا ہے۔

والدین کوچاہیے کہ اپنی اولا دکوشادی سے قبل طلاق وغیرہ کے مسائل سکھائیں تاکہ مستنقبل میں اس قشم کی تکلیف وہ صور تحال کاسامنانہ ہو۔

**





🚓 🍪 کی رسومات



فو کئی ہے متعلق ہمارے معاشرے میں یجھ غلط رسومات رائج ہیں، جنہیں عوام جائز سمجھ کر کرتے ہیں یااس کے متعلق افراط و تفریط کا شکار ہوتے ہیں۔ ہم ذیل بیں ان کی اصلاح سے متعلق لكسة بالبار

میت کی تدفین میں دیر کرنااور میت کو فریز میں ر کھنا:

ہمارے یہال رائے ہے کہ جس

كونى مخض وفات يا جائے توجب تك اس كاسارا خاعدان اكشمانہ ہوجائے جنازہ ميں تاخيركي جاتي ہے، یہاں تک کے اگر کسی نے باہر کے ملک سے آنا ہو تومیت کو فریز کروادیا جاتا ہے۔ شرعی تھم یہ ہے کہ مرنے والے کے کفن ود فن میں جلدی کرنی چاہیئے اگر کسی نے بہت دور سے آنا ہو تو اس کے لیے کئی تھنے یادن میت کور کھ چھوڑ نانمیں چاہئے۔ای طرح میت کو سر د خانے میں ر کھٹا جائز نہیں ہے۔ تفصیل اس میں ہیہے کہ جس چیز ہے زندہ کو تکلیف ہوتی ہے اس سے مر دہ کو مجى تكليف موتى بهاورجس طرح زنده كوبلادجه شركى تكليف ديناجائز نييس باى طرح مرده کو بھی بلا وجہ شر کی تکلیف دینا جائز خمیں ہے ، اور سر دخانے میں اگر ذیرہ کو تھوڑی ویر کے لیے ر کھا جائے تواسے مجی سخت تکلیف ہوتی ہے کہ وہاں (minus temprature) اللہ ہوتا ہے ، البذااس سے میت کو بھی تکلیف ہوتی ہے۔ ادر کسی قریبی کو میت کا چبرہ د کھانا وغیرہ ایسے اعذار نہیں کہ جن کے لیے میت کو تکلیف دیناجائز ہو سکے (1)(2)

اس سے متعلق احادیث نبوی منافقیم ملاحظہ ہوں:

(1) چانچ حضور اكرم نور مجسم صاحب اولاك مكافية من ارشاد فرمايا:

^{1 (}مأعود المسيدة عاوى المستسوس ١٨ مكتبة المديدة كراجي) 2 (رسمورواج كي شرع معيشيد ص269 مكتبه اشاعت الإسلام الأخور)

"جنازہ جلدی لے کر جائز،اگر وہ نیک ہے تواہے اچھے کی طرف لے چلوگے اور اگر براہے تواہے گر دن سے اتار دوگے "_(⁽¹⁾

(2) ایک موقع پر رسول الله مَالَّيْنَ الله مَالِيَّةُ مَان حضرت على دهى الله تعالى عند سے قرمایا: "اے على! تین کامول میں دیرنہ کرو، قماز جب کہ اس کا وقت ہوچائے، جنازہ جب حاضر ہو، اور بیوہ عورت جب اس کے لیے کفو (مناسب رشتہ) مل جائے "۔(2)

(3) اور آقاکریم مَنَّالَیْخُ نے ارشاد فرمایا: "میت کی بدی توژنازندہ آدمی کی بدی توڑنے کی مثل ہے"۔ (3) (ای طرح میت کو فریزر ش رکھ دینازندہ آدمی کو فریزر ش رکھ دینے کی مثل ہے)

اس طرح علماء فرماتے ہیں کہ اگر کوئی شخص بیر دنِ ملک انتقال کر جائے تو اُس کے لاشے کو فریز کرکے اپنے ملک منگوانے کے بچائے اُسے وہیں دفن کر دیا جائے اور یہاں سے ایصالِ تواب وہائے مغفرت کا اہتمام کیا جائے۔

عورت کے جنازے کو غیر محرم اور شوہر کا کندھادینا:

جنازے کو کندھا دینا باعث اجر

و او اب کام ہے، جنازہ مر دکا ہو یا عورت کا اس کا کچھ فرق نہیں۔ للذا غیر محرم عورت کے جنازے کو بھی کندھا دیا جاسکتا ہے۔ البتہ قبر میں اتار نے والے محارم ہونے چائیں۔ بینہ ہوں تو دیگر دشتہ وار تند فین کریں۔ اور یہ بھی نہ ہوں تو پر ہیز گار مسلمان قبر میں اتاریں۔ نیز عورت کے جنازے میں مزید یہ احتیاط بھی کی جائے کہ اس کے جنازے کی چار پائی کسی کیڑے سے چھپی ہوئی ہو اور سلیپ یا تختوں سے قبر بند ہونے تک اس کی قبر کو کسی چا درسے ڈھانپ کرر کھیں۔ (4) مسلمیپ یا تختوں سے قبر بند ہونے تک اس کی قبر کو کسی چا درسے ڈھانپ کرر کھیں۔ (4) ہمار شریعت میں ہے : "عورت مرجائے تو شوہر نہ اُسے نہلا سکتا ہے نہ چھو سکتا ہے اور دیکھنے کی ممانعت نہیں (یعنی شوہر بیوی کا چرہ و کھھ سکتا ہے) "، اور عوام میں جو یہ مشہور ہے کہ شوہر ممانعت نہیں (یعنی شوہر بیوی کا چرہ و کھھ سکتا ہے) "، اور عوام میں جو یہ مشہور ہے کہ شوہر

^{1 (}ترمذي، كتاب الجدائز بالمحاجاة في الإسراع، ج1. ص522 مديد 1002 قريديات سفال الأهور)

^{2 (}ترمذي، كتاب الصلوٰة، بأسماجاء في تعجيل الجفازة، ج1. ص551 حديث 1065 فريد باتستال، ((هور) 3 (سان، افي داؤد، كتاب الجفائز ، بأب في الحفار يجد، ج2. ص498 حديث 2792 شياء القرار، يعلى كيشاز، ((هور)

ق (سان) پاداود، تتاپ! چدانز باپسی: حدرچین عدس محد حبیت مدیر مصید، مرابیجی بیستر، رخ 4. (غدمر فتاوی) اهاسات، ص8همکتبهٔ البدیده، کراچی)

عورت کے جنازہ کونہ کندھاوے سکتا ہے نہ قبر میں اتار سکتا ہے نہ منہ ویکھ سکتا ہے ، ہیہ محض غلط ہے صرف نہلانے اور اسکے بدن کو ہلا حائل ہاتھ لگانے کی ممانعت ہے "۔(1)

قبر كا پخته كرنا، قبرير نام كى مختى لگانا:

عام مسلمانوں کی قبر کو پخته کرنامناسب تبین-بان!

تعظیم کے لیے اولیاء وعلماء کرام کی قبور کو پختہ کرنا جائز ہے تاکہ لوگوں کے ولوں میں عظمت و احترام قائم ہو اور لوگ ان کی تعلیمات کی طرف رجوع کریں۔ علامہ ابن عابدین شامی لکھتے ہیں:"الاحکامر " میں "جامع الفتاویٰ " سے منقول ہے: کہا گیا ہے کہ مشاکع ،علماء اور ساداتِ کرام کی قبور کواو پر سے پختہ کرنا مکروہ نہیں ہے "۔

جہرائی طرح اگر قبر کی مٹی نرم پاریت والی ہو، جس میں قبر کے پیٹھ جانے کا اندیشہ ہو تو قبر کے اندر اینٹوں کے ذریعے چنائی کر کے اُس میں تدفین کی جاسکتی ہے۔علماء نے قبر میں پکی اینٹیں (جو بھٹی میں بنائی جاتی ہیں) اور لکڑی لگانے کو تکروہ لکھاہے، لیکن اگر زمین نرم ہو تو قبر کے اندر اینٹ اور لکڑی کا استعمال بھی جائز ہے۔

ا مرف ضرورت کے لیے باشاخت وعلامت کے طور پر قبر پر نام کی سختی لگانے میں حرج نہیں ہے ہوئی سے میں حرج نہیں ہے ہو نہیں ہے تاکہ قبر کے آثار ہاتی رہیں اور اس کی اہانت نہ ہو۔اس کے علاوہ قرآن مجید کی آیات یا اشعار لکھنا یام بالغہ آرائی پر ہنی تحریر لکھنا عمروہ ہے۔ (2)

قبر پرچراغ اور اگر بتی جلانا:

وفنانے کے بعد قبر پر پر کئ لوگ اگر بتیاں لگا کروایس آجاتے

ہیں میہ اسراف (پلیے کا ضائع کرنا) ہے۔ اسی طرح جب قبر کی زیارت کو جاتے ہیں تو قبر پر موم بتی اور اگر بتی جلائی جاتی ہے۔ یہ بھی ورست نہیں۔ اگر قبر پر تلاوت قر آن کرنی ہو اور خوشبو حاصل

^{1 (}بهار شريعت صهه ص13مكتيته البديته كراجي

^{2 (}تفهيم اليسائل. ج. ص 114-118 شياء القرآن بهل كيشنز الأهور البختار على الدو البختار ج. ص 132-135)

کرنے کے لیے اگر بی لگائی جائے تو قبر سے ہٹ کرلگائی جائے۔ عین قبر کے اوپر اگر بی یاموم بی جانا منع ہے۔ (۱)
جانا منع ہے۔ (۱)
ہاں اولیاء اللہ کے مز ارات پر اِن کی عظمت کے اظہار کے لیے مز ار کے پاس چراغ جلانا جائز ہے
تاکہ لوگوں کے دل اِن کی طرف متوجہ ہوں اور لوگ اِن کی تعلیمات کی طرف رجوع کریں۔
لیکن موجودہ دور میں بجلی ہونے کے باوجود عرس وغیرہ پر بہت زیادہ چراغال کیا جا تا ہے۔ جس میں ہز اروں کے حساب سے چراغ اور موم بتیاں جلائی جاتی ہیں، یہ اسر اف (پییوں کا ضائع کرنا ہے) اور ناجائزہے۔ (پیاوں کا ضائع کرنا ہے) اور ناجائزہے۔ (ا

ايصالِ ثواب:

صدر الشرایحہ بدر الطریقہ مفتی امجد علی اعظمی رصد اللہ تصابی علیہ فرماتے ہیں:
"ایسال تواب یعنی قرآن مجید یاوروو شریف یا کلمہ طیبہ یا کسی نیک عمل کا تواب دو سرے کو پہنچانا جائز ہے۔ عبادتِ مالیہ یابد شیہ فرض و نقل سب کا تواب دو سروں کو پہنچایا جاسکتا ہے، زندوں کے ایسال تواب سے مردوں کو فائدہ پہنچتا ہے۔ کتب فقہ وعقائد میں اس کی نصر تئ ذکور ہے، ہدایہ اور شرح عقائد نسفی میں اس کا بیان موجو دہاس کو بدعت کہنا ہد دھری ہے اور شرح عقائد نسفی میں اس کا بیان موجو دہاس کو بدعت کہنا ہد دھری ہے اور شرک عقائد نسفی میں اس کا بیان موجو دہاس کو بدعت کہنا ہد دھری ہے اور شرک علیا ناپلانا، جمر ات یا چالیسویں کا ختم میں اللہ بیت اطہار کے ایصالی تواب کے لیے کھلانا پلانا، محمر سالانہ ختم شریف (عرس)، محرم میں اہل بیت اطہار کے ایصالی تواب کے لیے کھلانا پلانا، رجب میں امام جعفر صادق دھی اللہ علیہ کے ایصالی تواب کے لیے ختم دلانا (جو کو نڈوں کے نام سے مشہور ہے)۔ اس طرح ہر اسلامی ماہ کی گیار ھویں کو حضور غوثِ اعظم شیخ عبد القادر جبلائی دھی انتہ میں بشر طیکہ ان میں کوئی غیر شرعی چیز (خرافات) نہ ہوں۔ (4)

^{1 (}رسمورواج كىشرعحىدىد، ص306مكتبه اشاعت الاسلام الاهور)

¹ ررسمورون ق صرح حیتیمه، ۱۳۰۰ محتیه اشاعت از سده رو هور) 2 (ماخود بهار طریقت، ۱۳۵۰ مکتبه امام اهلست. لاهور امزار احداولیا داور توسل)

^{3 (}بهارشريعت،حصه 16،ص 642،مكتبة المدينه كراجي)

ايصاكِ تُواب پر روايات :

ستب احادیث میں ایصالِ ثواب پر کثیر روایات موجود ہیں۔ ذیل میں تین روایات ملاحظہ سیجے:
(1) حصرت عائشہ صدیقہ دعی الله تعالی عنها سے روایت ہے کہ "ایک آدمی ٹی مُلَّالِیْنِمُ کی
بارگاہ میں عرض گزار ہوا کہ میر می والدہ ماجدہ اچانک فوت ہوگئی ہیں۔ میر اخیال ہے کہ وہ گفتگو
کر تیں توصد قد دیتیں۔ اگر میں اُن کی طرف سے خیر ات کروں تو کیا اُنہیں تواب ملے گا۔ آپ
مُلُّالِیُمُ نِمُ فَرِمُایاً: "بال"۔ (1)

(2) حضرت سعد بن عباده دخى الله عند سے روایت ہے: "انہوں نے عرض كى: يارسول الله مَا الله مِن الله مَا ا

" پانی پلانا" راوی کابیان ہے کہ انہوں نے ایک کثواں کھدوایا اور فرمایا: بیہ سعد کی ماں کے لیے ہے (لینی اس کا ثواب سعد کی ماں کے لیے ہے) "۔(2)

(3) اور رسول الله مَنَا لَيْمَ فِي ارشَاه فرمايا: "بيشك نَيكى كے بعد نَيكى بيہ كه تم لهن نماز كے ساتھ ساتھ (ايصالِ ثواب كے ليے) اپنے والدين كے ليے نماز پر عو اور اپنے روزوں كے ساتھ (ايصالِ ثواب كے ليے) والدين كے ليے بھى روزے ركھو"۔(3)

میت والے گھرے کھانا:

جس گھر میں کسی محض کی موت ہوگئ ہو اس گھر کے لوگ غم دہ اور نجیدہ ہوتے ہاں گھر کے لوگ غم دہ اور نجیدہ ہوتا ہے جب حزن و ملال بڑھا ہوا ہو تو اس کو لیکانا تو کیا کھانا بھی اچھا نہیں لگتا ، دوسر امیت کی تجہیز و تنفین کے

مسائل بھی در پیش ہوتے ہیں ،اس لئے اس بات کو مستحب (باعثِ ثواب) قرار دیا گیا ہے کہ اس کے پڑوس،رشتے دار وغیر وان لو گوں کے کھانے کا انتظام کریں۔

^{[(}صحيح البخارى، كتاب الجدائز باب موت القبعاة البغة. ج1، ص589 منيت 1388 فريد بك ستال الاهور)

^{2 (}سان ايداؤد، كتاب الركوقباب في قضل سقى المادرج1. ص 613، صيف 1431 شياء القرآن يعلى كيشان (هور)

^{3 (}سميحمسلم بأبق الاستادج، ص38 فريد بك ستال الاهور)

لوگوں کو ہدایت دی تھی کہ " حضرت جعفر کے گھر والوں کے لئے کھانا بنایا جائے کیو نکہ انہیں ایک آنے والے حاوثے نے (کھانے پکانے سے) روک ر کھاہے " ۔ (1) اس لئے فقہاء نے لکھاہے کہ ایسے عم زدہ او گول کے پڑوسیوں اور رشنہ داروں کو ایک وان و رات ان کے لئے کھانا بنانامستحب ہے۔ (ر دالمحتأر) اس کے برخلاف مرنے والے کے اہل خاند پر آنے والوں کے لئے کھاتا بنانے کی رسم مکروہ اور بدعت سیئہ (بری بدعت) ہے ، کیونکہ یہ منشاء شریعت کے بالکل برعکس عمل ہے ، شریعت چاہتی ہے کہ غم زدہ لوگوں کی ولداری ہو ، لیکن اس عمل کے متیجہ میں ان پر ایک طرح کا بوجھ پڑ جاتا ہے اور اکثر او قات تو اہل میت لو گوں کے طعن و تشنیع سے بیخے کے لیے قرض کے بوجھ تلے دب جاتے ہیں، جو کسی طرح مناسب نہیں ،اس لئے فقہاءنے اس کے مکر وہ اور فتیج ہونے کی صراحت کی ہے ،شریعت نے ضیافت کا اہتمام کرناخوشی میں رکھاہےنہ کہ عمی میں۔ اعلی حضرت امام املسنت امام احمد رضاخان دحیدة الله علیه نے اس مسئلہ پر فقاوی رضوبیہ کی تویں جلد میں ایک رسالہ بنام "کسی کی موت پر دعوت کی ممانعت کاواضح اعلان" تحریر فرمایااور اِس كوبدت سيئه قرار ديا- الل ميت كى طرف يهل دن كعانے كى ممانعت صرف علماء يافقهاء كا نظريه نہیں بلکہ خیر القرون لینی صحابہ کے زمانے میں خو و صحابہ بھی اس کوبر اجائے تھے۔ ⁽²⁾

چنانچہ رسول الله سَنَّطَةِ لِمُنْمِ نِهِ حضرت جعفر دھ الله تعالى عنه كى شہاوت كى اطلاع كے موقع پر

فوتگی پر پکایاجائے والا کھانا تین قشم کا ہے۔ ایک وہ کہ ایام موت میں لوگ بطور دعوت کرتے ہیں یہ ناجائز و ممنوع ہے (جیسے پیچھے گزرا)، کہ شریعت نے دعوت خوشی کے موقع پر رکھی ہے، غمی میں نہیں۔افٹیاء (امیر) کو اس کا کھانا جائز نہیں ، ہاں فقیر کھا سکتا ہے ۔ دوسری قشم وہ کہ میت کو ایصالی تواب کے لیے بہ نیت تصدق (صدقہ) کیا جاتا ہے،یہ کھانا بھی فقراء کے لیے لینا جائز ہے ، جبکہ افٹیاء (امیر) کو منع ہے۔ تیسرا وہ کھاناہے کہ جومیت اور دیگر ارواحِ طیبہ حضراتِ انبیاء والیاء کے ایصالِ ثواب کے

 ^{1 (}ترمازی، کتاب الجنائز بأب ما جاء فی الطعام، ص515. ج1. حدید 385 فرید بات مثال ((هور)
 2 (سان این ما جه باب ما جاء فی العبی ع1. ص502. حدید 1600 شیاء القر آن پهلی کیشنز ((هور)

لیے صدقہ نافلہ کی غرض ہے ہونہ کہ صدقہ واجبہ ہے۔ یہ کھانا امیر غریب سب کے لیے جائز ہے۔ای طرح قل شریف کے ختم پر یا اسکے بعد چالیسویں وغیرہ کے ختم شریف پرجومیت کے ایسال ثواب کے لیے کھاناوغیرہ پکایاجا تاہے وہ فقیروغنی دونوں کے لیے لیناجائزہے "۔(۱)

جہ بعض خاندانوں میں بد بری رسم رائح ہے کہ فو تنگی پر لازمی طور پر بہوکے والدین کھانا پکاکر لائمیں یا کوئی مخصوص رشتہ دار اس کا اہتمام کرے اور اگر اس بری رسم کی اتباع میں کھانا نہ کھلائیں تو اُن کو طعن و تشنیج کا نشانہ بنایاجا تاہے یہ ناجائز اور حرام ہے۔ کیونکہ یہ کھانا کھلانا کسی پر فرض وواجب نہیں بلکہ مستحب عمل ہے، ہاں کوئی رشتے دار خود اہل میت کے لیے کھانالانا چاہے تو حرج نہیں جیسے او پر بیان ہوا۔

ا نوٹ: یہ بات بھی یادر کھنی چاہیے کہ فوتگی وختم شریف وغیرہ پر کھانا کھلانے کا مقصدیہ ہوتا ہے کہ اس کھلانے پر جو ثواب حاصل ہوائے مرحوشن کوالیصال کرے (لیعنی بخش کر)، دب تعالیٰ کی بارگاہ میں اُن کے لیے بلندی دَرجات کی دعا کی جائے، یہ ایک مستحب (باعث ثواب) عمل ہے، لیکن فرض دواجب نہیں، اس لیے اگر کوئی ایصالِ ثواب کے لیے کھانے کا انتظام نہیں کر تا تواس کے متعلق طعنہ زنی کرنا اورائے لوگول میں ذلیل کرنا، ناجائز دحرام ہے۔

ای طرح ایصالِ ثواب کے علادہ کھانا کھلانے سے متعلق جنتی ہاتیں اور قیدیں عوام میں مشہور ہیں مثلاً یہ کہ چالیس دن تک میت کے لیے کسی فقیر کو کھانا کھلانالازم ہے یا جس گھر سے میت اٹھائی جائے وہ میت کی طرف سے کھانا کھلائے یا یہ کہ مرحوثین کی ارواح کھانا لینے گھر آتی ہیں یہ تمام ہاتیں لغوو بے بنیاد ہیں۔

سس کی وفات پرسوگ :

سوگ کے معنی رخج وغم کے ہیں۔ کسی کی دفات پر رخج وغم کا اظہار

و کے میں البات شوہر کی دفات پر زوجہ کا سوگ عدت (چار ماہ دس دن) تک ہے۔ مہیں ،البتہ شوہر کی دفات پر زوجہ کا سوگ عدت (چار ماہ دس دن) تک ہے۔ چنانچیہ صدیث پاک

سن بنت الى سلمه دهى الله تعالى عنها فرماتى بيں : جب نبى كريم عنا الله فيم كن روجه حضرت ام حبيبه دهى الله تعالى عنها كى دوجه حضرت ام حبيبه دهى الله تعالى عنها كى والد حضرت ابو سفيان دهى الله تعالى عنه فوت بو گئے تو حضرت ام حبيبه نے پہلے رنگ كى ايك خوشبو منگائى اور ايك باندى نے وہ خوشبو ان كے رخساروں پر لگائى _ پھر انبوں نے كہا قسم بخدا: بجھے اس خوشبوكى كوئى ضرورت نبيس تقى، ليكن ميس نے سناہے كه رسول الله مَنَّ اللهُ مَنَّ اللهُ عَنَّ اللهُ عَنَّ اللهُ عَنَّ اللهُ عَنَّ اللهُ عَنَّ اللهُ عَنَّ اللهُ عَنْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ ال

تین دن میں کیا کرناہے کیا نہیں، اس متعلق عجیب وغریب باتیں مشہور ہوتی ہیں۔ جیسے گھر میں جھاڑوں نہیں لگانا، ہرتن نہیں دھونے، گوشت نہیں پکانا وغیرہ۔ شرعاً ان باتوں کی پچھ اصل نہیں۔ میت کے گھر والول کے لیے ضرور تا ان کامول کے کرنے میں کوئی حرج نہیں۔ آج کل جس کے گھر میں مرگ ہوئی ہواس میں سوگ کسی نہ کسی صورت میں ساراسال جاری رہتا ہے۔ اس سال گھر والے عید پرنے گیڑے نہیں پہنتے، بلکہ لیعض جاہل توبڑی عید میں قربانی جسی نہیں کرتے اگر چہان پر واجب ہو، اگر کوئی عورت سوناچاندی یازینت اختیار کرے تواس پر طعن و تشنیع کرتے ہیں۔ اسکے علاوہ ایک بیروان زور پکڑ گیاہے کہ پہلی عید کے موقع پر رشتے دار آئر اہل میت سے سوگ کا اظہار کرتے اور گھر والوں کا غم تازہ کرتے ہیں، خواہ وفات کو گئے ہی ماہ گزر گئے ہوں۔ یہ ورست نہیں، یہ سب غیر شرعی حرکات ہیں۔ لہذا حسن نیت سے شے ماہ گزر گئے ہوں۔ یہ ورست نہیں، یہ سب غیر شرعی حرکات ہیں۔ لہذا حسن نیت سے شے ماہ گزر گئے ہوں۔ یہ ورست نہیں، یہ سب غیر شرعی حرکات ہیں۔ لہذا حسن نیت سے شا

البتہ اگر جہالت کثیر ہو اور لوگ اس کی وجہ سے طعنہ زنی کریں گے تولو گوں کی باتوں سے بچنے کے لیے نئے کپڑے نہ پہنناور ست ہے، جبکہ سوگ کی نیت نہ ہو۔ (1)

امام المسنت امام احررضا خال دحدة الله عليه فرمات ين

"شریعت نے عورت کو شوہر کی موت پر چار مہینے دس دن سوگ کا تھم دیاہے اور وں کی موت کے تیسرے دن تک اجازت دی ہے باتی حرام ہے۔ اور ہر سال سوگ کی تجدید تو کسی کے لیے حلال نہیں "۔(²⁾

زوجه کی عدت سے متعلق وضاحت:

شوہر کے مرنے کے بعد عورت جتنی دیر میں سوگ کرتی ہے اسے عدت جتنی دیر میں سوگ کرتی ہے اسے عدت کہاجا تا ہے۔ اگر عورت کاشوہر مر گیاہواور عورت حاملہ نہ ہو تواس کی عدت عورت حاملہ ہو تواس کی عدت بچے پیداہونے تک ہے۔ (3) عدت بچے پیداہونے تک ہے۔ (3)

صرت بچپیدا اورے ملے ہے۔ عدت کے دوران زوجہ سوگ کرے گی بینی زینت اختیار نہیں کرے گی جیسا کہ بخاری نثر بیف کی حدیث پاک میں ہے: "حضرت اُم عطیہ دھی الله تعالی عنها فرماتی ہیں: " جمیں سوگ میں سرما، خوشبولگائے اور رکئین کپڑے (لیمنی زیادہ زینت والے سے کپڑے) پہننے ہے منع کیا گیا"۔(4)

عورت کی عدت سے متعلق من گھڑت ہاتیں :

روجہ کی عدت کے متعلق بھی بہت غلط باتیں مشہور ہیں۔ کٹی لوگ کہتے ہیں بوڑھی کی عدت نہیں ہوتی ، کوئی کہتا ہے اگر چنازہ کے ساتھ باہر تک آ جائے تو عدت نہیں ، یہ سب غلط ہے اور اس طرح شرعی مسائل میں اپنی عقلیں لڑانا حرام ہے۔اسی طرح جب عدت ختم ہو تواس وقت کوئی کہتاہے کہ شوہر کی قبر پر جائے ، کوئی کہتاہے دور سفر کے لیے شوہرسے قبر پر جاکر اجازت طلب

^{1 (}ماخوذقتاوىدار الاقتاء دعوب اسلامي ارسم و رواج كي شرعي حيثيس)

^{2 (}فعاوى رضويه، ج.24 ، ص.495 ، رضافاؤنثيشي، الأهور)

^{3 (}البقرة، آيت 234/الطلاق، آيت4)

^{4 (}محيح المعارى، كتأب الحيض ياب الطيب للبراة. ج1. ص222 منيث 313 فريد بك ستال الأهور)

کرے، کوئی کہتا ہے عدت ختم ہونے پر مٹھائی تقسیم کرے، اور اپنے والدین یا بھائی کے گھر رات گزارے۔ای طرح اور کئی غلط رسمیں رائج ہیں۔ شرعاً ان کی کوئی اصل نہیں۔عدت ختم ہونے کے بعد عورت کے لیے کوئی خاص کام کرناضر وری نہیں۔(1) عدت والی عورت کا گھرسے یا ہر جاتا:

اعلى حضرت امام الكسنت امام احد رضاخان معمدالله

علیہ سے اس مسئلہ سے متعلق سوال کیا گیاتو آپ نے ارشاد فرمایا: " دورانِ عدت عورت کوبلا ضرورتِ شرعیہ گھر سے باہر لکلنا جائز نہیں ہے۔ ہال جس عورت کے پاس کھانے، پہننے کو نہیں اور ان کے حاصل کرنے کے لیے اس کا گھر سے باہر لکلنا ضروری ہے، تواس عورت کو صبح وشام

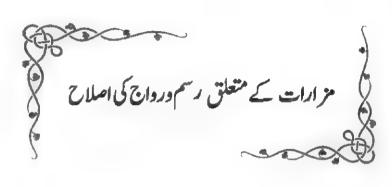
نگلنے کی اجازت ہے، ہاں عورت رات اپنے گھر ہی میں گزارے گی"۔ اور آگے لکھتے ہیں:
" موت کی عدت والی عورت ضرورت پر دن میں اور رات میں گھر سے باہر نکل سکتی ہے، اور
رات کا اکثر حصہ اپنے گھر میں ہی رہے کیونکہ اس نے اپنا خرچہ خود پورا کرنا ہے اس لئے وہ باہر
نگلنے کی مختاج ہے حتیٰ کہ اگر اپنی کفایت اور ضرورت کے لئے اس کے پاس نفقہ ہو تو یہ مطلقہ
عورت کی طرح ہے اس کو باہر نکلنا حلال نہیں ہے، (درمختان (میں کہتا ہوں) یو نہی اگر وہ گھر
میں رہ کر کوئی محنت کر کے اپنا خرچہ بنا سکتی ہے تو نکلنا حلال نہ ہو گا کیونکہ اس کا باہر نکلنا ضرورت
کی بناء پر جائز ہوا ہے اور جب ضرورت نہیں تو جو از بھی نہیں، اور یہ بات بالکل واضح ہے " (2)

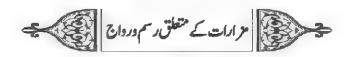
(طلاق کی عدت والی عورت کا مجمی بہی علم ہے)۔ عدت کے دوران عورت اگر بیار ہو جائے اور ڈاکٹر کو گھریلا کر چیک کر اناممکن ہو تو ہا ہر لے جانا جائز نہیں۔ہاں ڈاکٹر گھر آ کر چیک نہیں کر تا یا ضرورت الی ہے کہ گھر میں پوری نہیں ہو سکتی تو پر دے کا خیال رکھتے ہوئے ڈاکٹر کو چیک کرائے کے لیے لیے جانا جائز ہے کہ یہ لکلتا ضرورتِ شرعی کی بتا پر ہے۔ (3)

^{1 (}مأخوذ رسم ورواج كي قرعي حيثيت، ص323 مكتبه اشاعت الاسلام، لاهور)

^{2 (}ماغودفتاوي رضويه، ج13. ص327 رضافاؤدليش، لاهور)

^{3 (}اغتصر فتأوى اهلسنت، ص146 مكتبة البدينه، كراجي)





حاضري مز اراتِ اولياء:

ادلیاہ اللہ کے مزادات سے برکتیں حاصل کرنا اسلاف (بزرگانِ دین) کاطریقہ دہاہے۔ کیونکہ بیہ اللہ عزد جل کی رحمتوں کے نزول کی جگہ ہے۔ مزرات پر جانانہ صرف سنت ِ صحابہ وصالحین ہے بلکہ سرکار مُثَالِّنِیْمُ مجمی اسپنے صحابہ کے ساتھ قبور پر تشریف لے جاتے تھے۔

مصنف عبد الرزاق میں ہے: "نی کریم منافیظم ہر سال شہداء کی قبور پر تشریف لاتے تو انہیں یوں سلام کرتے ہے "سلامتی ہوتم پر تمہارے مبر کابدلہ تو پچھلا گھر (جنت) کیا خوب ملا" ۔اور ابو بکر صدیق، عرِفاروق اور حثان غی مجی ایسان کیا کرتے ہے "۔(1)

اور ابو داؤد شریف کی حدیث پاک ش ہے، آقاکر یم مَلَّاقَیْکُمْ نے ارشاد فرمایا :"تم قبرول کی زیارت کیا کرو کیو تک میہ موت کی یاد دلاتی ہیں "۔ (2)

ای طرح اولیاء کے حرارات پر دعاما نگنا بزرگانِ دین سے ثابت ہے، امام شاقعی دحمة الله حلیه فرمائے ہیں: "میں امام ابو حنیفه رحمة الله علیه فرمائے ہیں: "میں امام ابو حنیفه رحمة الله علیه نے برکت حاصل کرتا ہوں اور ان کی قبر مبارک کی زیارت کرتا ہوں۔ جب جھے کوئی حاجت چی آئی ہے تو دور کھت نماز پڑھ کران کے حرار پر جاتا ہوں اور بارگاءِ الی عزوجل میں وعاکرتا ہوں تو (وئی اللہ کے قرب کی برکت سے) میری حاجت فور آپوری ہو جاتی ہے "۔(3)

: 5

جس اسلامی تاریخ کو کوئی ولی الله فوت موامو، اُس تاریخ کو اُن کاعرس کیاجا تاہے، جو

^{1 (}مصنف صديالرزاق، كتأب الجعائز، بأب فيزيارة القيور، ص 23. ج. حديد 2712، شهير براحرز الأهور)

^{2 (}سان ايرداؤد، كتاب المحالز، بأب في زيار سالقيور ج2، ص587. هيمه 2816 هيما دالقران پيل كيهاز، لاهور)

^{3 (}الخورات المسأن ص149 في المرسعيان كدياي كواجئ

که شرعاً جائز ہے جبکہ اس میں غیر شرعی حرکات نہ ہوں۔ مدمد مصرعاً جائز ہے جبکہ اس مدمقعی میں شاعر ہے ک

موجو دور میں عرس کے موقع پر بے شار غیر شرعی حرکات ہوتی ہیں۔ ناچ گانا، ڈھول بجانا، عجیب وغریب طریقے سے ہزاروں موم بتیاں کچ میں ڈال کر آگ جلانا، مزامیر کا استعال مرووں اور عور توں کا اختلاط وغیرہ۔ ان تمام غیر شرعی حرکات کی شریعت بالکل اجازت نہیں دیتی۔ باں چاہیے کہ عرس کے موقع پر ان ہزرگانِ دین کی دینی خدمات کو بیان کیاجائے اور ایصالِ تُواب (فاتحہ و قرآن خوانی)کا اہتمام کیاجائے۔

عرسول پر جابل عوام کی طرف نے غیر شرعی حرکات ہوئے پر مز اراتِ اولیاء پر تنقید کرنا ہے جاہے۔ وہ مز ارات جہال زیادہ تر یہ غیر شرعی حرکات نظر آتی ہیں اُن مز ارات کے انتظامی اُمور عموماً حکومتی اداروں کے زیر اہتمام ہیں، اس لیے مز ارات کے متولیوں، اور حکومتی اداروں کو چاہیے کہ ان غیر شرعی حرکات کے تدارک کا مناسب بندوبست کریں تاکہ ان بایر کت مقامات کا تقدس بحال رہے۔ جو مز ارات علیاء اہلسنت کے تحت ہیں اُن میں آج بھی مکمل بیر کت مقامات کا تقدس بحال رہے۔ جو مز ارات علیاء اہلسنت کے تحت ہیں اُن میں آج بھی مکمل بھر بعت کے دائرہ میں رہتے ہوے سالانہ عرس منعقد ہو تاہے۔

اعلی حضرت امام الل سنت امام احمد رضاخان رحمة الله علیه فرمات بین: "ایساعرس جس پس عور تول مر دول كا اختلاط نه بو، شركیه امور اور فسن و فجور كا ار تكاب نه بو، كليل تماشے اور رقص و سرور و موسيقى نه بو جائز ہے، كيونكه مختل عرس كا مقصد تو ايصال ثواب، فاتحه و قرآن خوانى ہے "۔

عرس کے موقع پر بعض جگہ قوالی بھی ہوتی ہے۔ شخقیق سیہ کہ مر قدبہ قوالی تاجائزہے۔ صوفیہ اور بزر گوں سے جوساع منسوب کیاجا تاہے۔وہ مر وجہ ساع نہیں۔(1)

علامہ غلام رسول قاسمی حفظہ اللہ لکھتے ہیں: "صوفیائے کرام نے جہاں ساع پر بحث فرمائی ہے، وہاں ان کی مر او یہی صوفیائہ کلام بغیر ساز کے ہے۔ انہوں نے تصر سے فرمائی ہے کہ کلام پڑھنے والوں کا باشرع ہونا، کلام کا خلاف شرع نہ ہونا، شیخ کا موجو د ہونا، نماز کا وقت شہونا اور عور توں اور چوں کا محفل میں شامل نہ ہونا ساع کی شر ائط میں شامل ہے" (کشف المحجوب

^{1 (}بهار طريقت، ص366، مكتبه امام اهلست، لاهور امزرات اولياء اورتوسل، ص123-125، زاويه پيلفرز، لاهور)

وغددی۔ آگے لکھتے ہیں: ہم قادری اور نقشبندی قوالی کو جائز نہیں سجھتے جب کہ بعض چشتی بزرگان علیھد الوحدة والوضوان شروع میں ضرورت اس کے جواز کے قائل ہوئے اور اب ذو قاَ جائز سجصة بين بشر طبيكه ساع والى مذكور بالاشر ائط كو ملحوظ ركھا جائے (يعنى كلام يرصف والون كا بإشرع ہونا، کلام کاخلاف شرع نہ ہونا، شیخ کاموجو د ہونا، نماز کاوفت نہ ہونااور عور توں اور بچوں کا (توالی کی) محفل میں شامل نہ ہونا)۔ باتی رہاو یکن بس یا ہو ٹلوں وغیرہ پر قوالیاں لگاناتواس کے ناجائز ہونے میں کسی کو کوئی شک نہیں اور ہمارے زمانے میں بعض چیشی بزرگ خود بھی توالی رَک کر<u>نکے ہیں</u>"_(1)

آداب حاضری قبور:

اعلى حضرت امام الل سنت امام احمد رضا خان دحمة الله عليه ارشاد فرمائے ہیں: " مزار شریف پر حاضر ہونے میں پائٹی (پاؤں) کی طرف سے جائے اور کم از کم چار ہاتھ کے فاصلے پر مواجہہ میں کھڑا ہو اور متوسط آ واز بادب عرض کرے " السّلام علیک پاسیده ی ورحیهٔ الله و بو کاته " کچر درود غوشه تین بار ، الحمد شریف ایک بار ، آیة الگرسی ایک بار، سورہ اخلاص سات بار، پھر درود غوشیہ سات بار، اور وقت فرصت دے توسورہ کیس ادر سورہ ملك بھی پڑھ كراللہ عزوجل ہے دعاكرے كرالهى!اس قرأت پر مجھے اتنا ثواب دے جو تيرے كرم كے قابل ب، ندا تناجومير ، عمل كے قابل ب اوراسے ميرى طرف سے اس بنده مقبول کونڈر پہنچا، پھر اپناجو مطلب جائز شر کی ہواس کے لیے دعاکرے اور صاحب مز ارکی روح کواللہ عزوجل کی بار گاہ میں اپناوسیلہ قرار دے، پھر اس طرح سلام کرکے واپس آئے، مز ار کونہ ہاتھ لگائے نہ بوسہ دے اور طواف بالا تفاق ناجائزے اور سجدہ حرام "_⁽²⁾

مز ارپرچادر ڈالنے، سجدہ وطواف کرنے، بوسہ دینے سے متعلق حکم شرعی: اولیاء کے مزارت پر چاور ڈالنا جائز ہے۔ کہ اس سےلوگوں کی نظر میں صاحب مزار کی اللہ میں صاحب مزار کی عزت و تو قیر پیدا ہوتی ہے اور مسلمانوں میں نیک اعمال کرنے کا جذبہ پیدا ہو تاہے، جیسا کہ تعظیم

^{1 (}مقالاتِقاسى ج2، ص325 رحة للعاليون بيليكيشنز سر كوها)

^{2 (}فعاوى رضويه، ج9، ص522، رضافاؤنليشن، الاهور)

کے لیے خانہ کعبہ پر غلاف ڈالا جاتا ہے (ماغوذددالمنعتان) ہال جب چادر موجو و ہو اور وہ بنوز پر انی یاخر اب نہ ہوئی کہ بدلنے کی حاجت ہو تو نئی چادر فضول (اسراف) ہے۔ بلکہ جو پیسے اس کو خریدنے میں صرف کریں، وہ ولی اللہ کی روح مبارک کو ایصالِ تو اب کی نیت سے محتاج کو دیں (1) کھمز ارکا بطور تعظیم طواف کرنا جائز نہیں اور قبر کو چومنے کے بارے میں فقہائے کرام کا اختلاف ہے اور اکثریت منع کرتی ہے لہذا قبر کو بوسہ ویتے سے بچنا چاہئے، اور اسی میں اوب زیادہ ہے۔ (2)

کی کسی شخص ، زندہ دلی یا مزار کو سجدہ کرنا جائز نہیں۔ مفتی محمد اجمل قادری رضوی رحبتہ الله علیه فرماتے ہیں: " ہماری شریعت میں سوائے خدا کے کسی کو سجدہ جائز نہیں۔ لہٰذا اب کسی صاحب مزار کے لیے بخیال عزت تحیة سجدہ (لیعنی سجدہ تعظیمی) کمیا جائے تو وہ ناجائز وحرام ہے۔اگریہ نیت عبادت سجدہ کمیا جائے تو وہ کفروشرک ہے۔بالجملہ مزارات بزرگانِ دین پر کسی نیت سے سجدہ کرنا جائز نہیں "۔(3)

عور توں کا مز ارات پر جانا: عور توں کا مزاراتِ اولیاء پر جانا منع ہے۔جس طرح صحابہ کرام دخی الله تعالی عنهم اجمعین کے مبارک ادوار بیل اندیشہ فتنہ کی وجہ سے عور توں کو مساجد بیل جانے ہے۔ منع کر دیا گیاتھا، اسی طرح علماء کرام نے فتنہ و فساد کے قوی اندیشہ کی وجہ سے عور توں کے مزارات پر جانے کی ممانعت فرمائی ہے۔ جیسا کہ معلوم و مشاہدہ ہے کہ خواتین عزیروں کی قبور پر جاکر ہے صبر کی کا اظہار (آہ و بکا) کرتی ہیں اور اولیاء اللہ کے مزارات پر مرو سے تعظیم میں إفراط (یعنی حد سے بڑھتی ہیں) ، ادب کا لحاظ نہیں رکھ یا تیں۔ اور مزارات پر مرو وعور توں کے اختلاط کا بھی قوی اندیشہ ہو تا ہے۔ امام الل سنت امام احمد رضا خان دحمة الله علیه فرماتے ہیں: "عور توں کا حزاراتِ اولیاء و مقابرِ عوام (عام قبرستانوں) دونوں پر جانا منع فرماتے ہیں: "عور توں کا حزاراتِ اولیاء و مقابرِ عوام (عام قبرستانوں) دونوں پر جانا منع

^{1 (}احكامِشريعت، ص97، كتبخانه أمام احمدرها الأهور)

^{2 (}فتاوى شويه جورص 528 رضافاؤنليشن، الأهور)

^{3 (}فتأوي اجليه ، ج4، ص117، شهير برادر زالاهور)

ہے"۔(1)۔۔۔ مڑید اس کے متعلق ایک سوال کے جواب میں ارشاد فرماتے ہیں: "بینہ پوچھو کہ اس عورت کامز ارات پر جانا جائز ہے یا نہیں بلکہ بیا چھو کہ اس عورت پر کس قدر لعنت ہوتی ہے ،اللہ عزوجل کی طرف ہے اور کس قدر صاحب قبر کی جانب ہے۔ جس وقت وہ گھرے اراوہ کرتی ہے لعنت شروع ہو جاتی ہے اور جب تک واپس آتی ہے ملا تکہ لعنت کرتے رہتے ہیں" (2) سوائے روضہ رسول مُؤالِّئِم کے ،عورت کو کسی مزار پر جانے کی اجازت نہیں اور روضہ رسول مُؤالِّئِم کے ،عورت کو کسی مزار پر جانے کی اجازت نہیں اور روضہ رسول مُؤالِّئِم کے مظیمہ قریب بواجبات ہے۔ کہ خود آتا کریم مُؤالِّئِم نے ارشاد فرمایا: "جو میرے مزار کریم (قبر اقدس) کی زیارت کو حاضر ہوا اس کے لیے میر ک شفاعت واجب ہوگئی" (3)۔۔ لہذا عورت صرف روضہ رسول مُؤالِّئِم پر حاضری دے سکتی ہے ، شفاعت واجب ہوگئی" (3)۔۔ لہذا عورت صرف روضہ رسول مُؤالِئِم پر حاضری دے سکتی ہے ،

سبحان الله! یہ بی امام الل سنت امام احد رضا خان رحمہ الله کی تعلیمات۔ للذاجو لوگ مز ارات پر ہونے والی خرافات کو آپ سے منسوب کرکے لوگوں کوید ظن کرنے کی کوشش کرتے ہیں، انہیں اس فتیج حرکت پر اللہ عزوجل کے حضور توبہ کرنی چاہیے۔

الله نوف: بعض علائے اہل سنت نے عور توں کا قیوداتِ شرعیہ کے ساتھ مزارات یا قبر سنان جانے کو جائز کہاہے ، مفتی اکمل مدنی حفظہ الله فرماتے ہیں: "اگر عورت محرم کے ساتھ مزاریا قبر سنان جائے جہاں عور توں مردوں کا اختلاط نہ ہو، راستہ پُر فتن نہ ہو، وہاں جان ومال کے چھن جانے کا اندیشہ نہ ہو تو عورت کا ان قیوداتِ شرعیہ کا لحاظ رکھتے ہوئے یہاں (مزاریا قبر سنان) جانا جائز ہے۔ اگر چہ عورت کے لیے افضل یہی ہوئے مزار ہے کہ گھرسے ایصالی ثواب کرے۔ اگر عورت قیوداتِ شرعیہ کا لحاظ نہ رکھتے ہوئے مزار ہا قبر سنان جائے تو بیدلعنت و گناہ والی صورت ہوگی۔

⁽احكامِ شريعت، ص183، كتبخاله امام احدر شا، لاهور)

^{2 (}غىيتەالىتىلى،قصل،قىچنائز،ص594ملقوظات،امامراھلستىن)

^{3 (}شعب الإيمان، المجو العبرة، يأب في مناسك ج3، ص388 حديث 4159 دار الإشاحت، كراچي)

^{4 (}ملقوظاتِ امام اهلسنت، حصه 2،ص315 مكتبة المديده كراجي)

منت ماننا(نذرونیاز):

نذر / نذرِ شرعی: الی عبادت جومسلمان پرواجب نه بولیکن کوئی بنده خود این قول سے اسے این ذمه واجب کر لے ، نذر کہلاتی ہے۔ مثلاً یہ کہا کہ میر اقلال کام ہو جائے تو وس رکعت نقل اداکروں گایا دوروزے رکھوں گاوغیرہ۔ اسے نذرِ شرعی کہتے ہیں۔ اس کا پوراکر نالازم ہے۔ (۱) نذر عرفی : اولیاء اللہ کے نام کی جونذر مانی جاتی ہے اسے نذرِ (عرفی اور) لغوی کہتے ہیں۔ اس کامعتی نذرانہ ہے جیسے کوئی شاگر و اپنے استاد ہے کہ کہ یہ آپ کی نذر ہے یہ بالکل جائزہے یہ بندوں کی ہوسکتی ہے مگراس کا پوراکر ناشر عاواجب نہیں۔ (2)

مفتی احمہ بارخان تعیمی دھمة الله علیه فرماتے ہیں: "اگر کوئی شخص کسی ولی اللہ کی بارگاہ بیں درخواست کرتاہ کہ آپ اللہ عزوجل کی بارگاہ بیں دعاکریں کہ اللہ ہماری مشکلیں آسان فرما دے اور حاجتیں ہو لائے اور اگر میرک مشکلات آسان ہو جائیں تو بیں آپ کے نام کی دیگ فرما دے اور حاجتیں ہو لائے اور اگر میرک مشکلات آسان ہو جائیں تو بیں آپ کے نام کی دیگ پکاؤں گا لیعنی دیگ صدقہ کرول گا اور اے ولی اللہ! اللہ کی طرف سے اس پرجو تو اب ملے گا بیں آپ کو بخشوں گا، تو یہ نذر عرفی ہے، یہ یالکل جائزہے۔ فقہاء اُس نذر کو حرام کہتے ہیں جو کہ اولیاء اللہ کے نام کی نذر شرعی مانی جائے "۔(3)

نذر مانے سے متعلق چند باتوں کی اصلاح:

☆ بعض عور تیں لڑکوں کے ناک کان چھدوائے ، پچوں کی چشیار کھنے کی منت انتی ہیں۔ مزار پر
تالے یا وہاگے باند ھتی ہیں اور اس کے علاوہ طرح طرح کی الی منتیں مانتی ہیں جو کہ شرعاً
ورست نہیں۔اولاً توالی منتوں سے بچناچاہیے اور اگرمانی ہوں تو پوری نہ کریں۔

^{1 (}ماخوذجارِشريعت،ج2.الف.ص33.مكتبةالبدينه كراچ) 2 (ماخوذجارِشريعت،ج2.الف.ص33.مكتبةالبدينه كراچ)

^{3 (}ماخوذجاالحق، ص248، قادري بمليشرز، لاهور)

ا کر منت ماننی ہو تونیک کام نماز، روزہ، خیر ات، دُرود شریف، کلمه شریف، قر آن مجید پڑھنے، نقیروں کو کھانادینے، کپڑاپہانے وغیرہ کی منت ماننی چاہیے۔ (1)

وسیله واستمدار اور راواعتدال:

انبیاء واولیاء سے وسیلہ واستمد او (مد د طلب کرنے) کوشر کے کہنے والوں کارو اور غالی (حدسے گزرنے والی) ان پڑھ عوام کی اصلاح

الله عزوجل كو حقیقی مدد گار جانت بوت انبیائ كرام علیهم السلام اور اولیاء الله سے مدد مانگنا "داستنداو" كهلاتا به اور "استنعانت" كانجى يى مطلب بـ

إِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَاللَّهُ يُعْطِي (2)

" میں تفسیم کرنے والاہوں اور اللہ ہی عطافرماتاہے "

اور فرمایا: وَاللهِ، لَأَنْظُو إِلَى حَوْضِي الآنَ، وَإِنِّي أُعُطِيْتُ مَفَالِيْنَ خَزَ آيْنِ الْأَرْضِ (3) "بينك خداكى قسم! ميں اپنے حوض كو اس وقت بھى ويكھ رہا موں اور بيننگ جھے زمين كے خزانوں كى تنجياں عطاكر دى گئ ہيں "۔

أ (بهار شريعت، حصه 9, ص 318, مكتبة المدينه كراجي)

^{2 (}صحيح البخاري، كتاب العلم بأب من يردالله ج1، ص136 منيت7. فرين بات سئال الاهور)

^{3 (}صبيح البخاري، كتاب الجدائر، بأب الصلوة على الشهيد. ج1، ص572، حديث 1344، فريد بك سدّال، الأهور)

راواعتدال:

علامہ ابو عارفین القادری حفظہ اللہ لکھتے ہیں: "اس مسئلہ (استمداد) میں ہمارا موقف بیہ ہے کہ حقیقی مدد کرنے والا اللہ تعالیٰ ہی ہے، البند انفشل، اعلیٰ، اولیٰ، بہتر اور احسن بہی ہے کہ ہر حال میں اللہ تعالیٰ سے مدد طلب کی جائے، یہاں تک کے جوتے کا تسمہ بھی ٹوٹ جائے، تو اللہ سے مدد ما تکی جائے۔ گمر کوئی محض اللہ تعالیٰ کے نیک بندوں کو مدد کے لیے پکار تا ہے آتا سی کارساز اللہ تعالیٰ ہی ہے)"۔(1)

مفسر قرآن، شارح صحیح بخاری و مسلم علامه غلام رسول سعیدی دحدة الله علیه نے تفسیر تبیان القرآن میں سورة فاتحه کی آیت (اِیّاک تغیر قرآن میں سورة فاتحه کی آیت (اِیّاک تغیر قرآن میں سے تبدوا حادیث صححه، آثارِ صحابہ و صفحات پر مشمل طویل بحث کی ہے جس میں آپ نے قرآنِ مجیدوا حادیث صححه، آثارِ صحابہ و فقہاء اسلام سے ثابت کیا کہ استفافہ واستمداد جائز ہے۔ اِس طویل بحث کے بعد علامہ سعیدی علیہ رحمہ فرماتے ہیں:

" خلاصہ یہ ہے کہ اس اعتقاد کے ساتھ انبیاء علیہم السلام دادلیاء کرام سے استمداد داستغاشہ کرنا ہر چند کہ جائز ہے لیکن افضل، احسن اور اولی یہی ہے کہ ہر حال ہیں ہر معاملہ ہیں اللہ تعالی سے سوال کیا جائے اور اس سے مد و چاہیں اور دعا ہیں مستحسن طریقہ ہے ہے کہ رسول اللہ متالیق ہے وسیلہ سے دعاما تکیں (انبیاء علیم السلام اور صالحین عظام کا وسیلہ پیش کرناا یک جداامر ہے۔ اس کے جواز اور استحسان ہیں کوئی شک وشبہ خہیں ہے، جب مقربین بارگاہِ صدیت کے وسیلے سے دعاکی جائے گی تو اس کا مقبول ہونازیادہ متوقع ہوگا) (2) اور زیادہ محفوظ وزیادہ سلامتی وسیلے سے دعاکی جائے گی تو اس کا مقبول ہونازیادہ متوقع ہوگا) (2) اور زیادہ محفوظ وزیادہ سلامتی اس میں ہے کہ دہ دعاک میں بھی اللہ تعالی کی حت اور رسول اللہ متالیق کی سنت سابہ افکن رہے ، اگر کسی خاص حاجت میں دعاما گئی ہوتو رسول مثالیق کی وسیلہ سے دعاما گئی چاہیے یا (بارگاہِ انبیاء وادلیاء میں درخواست کی جائے کہ رسول مثالیق کی بارگاہ میں دعاما گئی چاہیے یا (بارگاہِ انبیاء وادلیاء میں درخواست کی جائے کہ رسول مثالیق کی بارگاہ میں دعاما گئی چاہیے یا (بارگاہِ انبیاء وادلیاء میں درخواست کی جائے کہ رسول مثالی تعالی کی بارگاہ میں دعامائی کی ہارگاہ میں دعامائی کی بارگاہ میں دعام رس کے دہاری مشکلیں آسان فرمادے اور حاجتیں برلائے ، اس

^{1 (}عقائد)ئوٹس، ص14)

^{2 (}تفسير تبيان القران . ج 3 ، ص 494 فريد بك ستال ، الأهور)

طرح کسی کوغلط فہنی بھی پیدا نہیں ہوگی اور اختلاف کی خلیج بھی زیادہ و سیع نہیں ہوگی (عبد الحکیم شرف قادری))"_(1

سرف قادری))"۔ یہ اعبیاء علیہم السلام اور صالحین کا بیہ معمول رہاہے کہ وہ اپنی مہمات، مشکلات اور تمام حاجات میں صرف اللہ تعالیٰ سے دعاکرتے تھے اور اس سے استمداد اور استغاثہ کرتے تھے۔ سوہمیں تبھی ان کے اسوہ حسنہ پر عمل کرناچاہیے۔

كياچيز شرك إوركياچيز شرك نبيس:

وہائی حضرات مسلمانوں کے بہت سے معاملات میں شرک و بدعت کی رے لگائے رکھتے ہیں اور مسلمانوں کو بلاوجہ کا فربنانے پر شلے

رہتے ہیں جبکہ انکی اکثریت شرک وبدعت کے حقیقی مفہوم سے بھی واقف نہیں ہوتی۔ کہاب کے شروع میں بدعت سے متعلق ہم مختصر لکھ لچکے ہیں یہاں شرک کی تعریف پڑھ لیجے:

علامہ تفتازانی رصنعه الله علید کھتے ہیں: "شرک میے ہے کہ کسی کو الوہیت میں شریک ماناجائے ، خواہ کسی کو اللہ کے سواواجب الوجود مانا جائے جیسا کہ مجوس مانتے ہیں یا کسی کو عبادت کا مستحق مانا جائے جیسا کہ بت پرست مانتے ہیں "۔(2)

مفسر قرآن، شادح صحیح بخاری و مسلم علامه غلام رسول سعیدی دهدة الله علید اس عبارت کی شرح کرتے ہوئے فرماتے ہیں:

☆ "خلاصہ بیہ ہے کہ شرک کا مدار صرف دوچیز ول پرہے "واجب وجود اور استحقاق عبادت"۔ اگر کوئی شخص اللہ تعالیٰ کے سواکسی کو واجب الوجو و یا مستحق عبادت مانے تو بیہ شرک ہے ور نہ نہیں "۔

🖈 "اگر کوئی مخض کسی کی کوئی صفت مستنقل باالذات مانے توبیہ بھی اس کو داجب الوجو دمانتاہے ۔ لہذا جو مخض کسی نبی علیہ السلام بیاکسی ولی کے متعلق بیہ عقیدہ رکھے کہ ان کے سننے یا دیکھنے کی

(مأخوذ ثفسير تبيان القرآن، ج1، ص13-208، فريد بك سفال، لاهور)
 (شرح العقائد، ص56، مطبوعه محمد سعيد ايدل سنز، كراچ)

صفت مستقل (بالذات) ہے لینی وہ اپنی ذاتی طاقت سے سنتے یادیکھتے ہیں یاان کاعلم ذاتی ہے یاان کا علم ذاتی ہے یاان کی قدرت ذاتی ہے اور اگریہ عقیدہ ہو کہ اللہ تعالیٰ کی دی ہوئی طاقت سے وہ سنتے ہیں اور دیکھتے ہیں، اور ان کاعلم اور قدرت اللہ کی عطاسے ہے توبہ شرک نہیں ہے "۔

﴿ " مزید لکھتے ہیں: کسی شخص کی تعظیم بہ طورِ عیادت کرناشر ک ہے، رسول الله مَالَّيْنَافِيم کے لیے تعظیماً قیام کرنااور بیار سول الله! کہناشر ک نہیں ہے اور اسی نوع کے دوسرے افعال جو آپ منافیقیم کی تعظیم اور محبت کی جہت سے کیے جاتے ہیں شرک نہیں ہیں "۔(1)

الله مشركين كے بتوں كو پكار نے اور بعض مسلمانوں كا اولياء اللہ كو پكار نے بين سے بنيادى فرق ہے۔ اس وجہ سے مشركين كا بتوں كو پكار فاشرك ہے اور مسلمانوں كا اولياء اللہ كو پكار فاشرك مبين وجہ سے مشركين ان بتوں كى عبادت كرتے ہتے اس كے برخلاف مسلمان اللہ كى عبادت كرتے ہيں۔ مشركين ان بتوں كى عبادت كرتے ہيں، اللہ سے دعائيں كرتے ہيں اور لا المه الا الله پڑھتے ہيں، ان كا بيہ ظاہر حال اس پر قريبہ ہے كہ وہ اپنى مشكلات بيں جس كو پكار رہے ہيں، اس كو خدا نہيں ان كا بيہ خدا كا مقرب بندہ اور ماذون فى التصرف سيحتے ہيں۔ تاہم اپنى تمام حاجات اور تمام مشكلات بيں صرف اللہ عزوجل كى طرف رجوع كرنا چاہيے۔ (١٤٥٥) نبى اكرم مَثَلَّ اللَّهُ عَلَى الله عزوج الله كى طرف رجوع كرنا چاہیے۔ (١٤٥٥) نبى اكرم مَثَلَ اللهُ عَلَى الله عندا كا مقرب بندہ واپرہ قورف اللہ سے مدوچاہو"۔ (١٤)

^{[(}ماخوذتفسير تبيان القرآن، ج 1، ص 311، فرينيك ستال، لاهور)

^{2 (}تفسير تبيان القران، ج 3. ص 494 فريد بك ستال، الأهور)

^{3 (}ماخوذتفهيم البسائل، ج 10، ص 25، ضياء القرآن پهلي كيشنز، الاهور)

⁴⁽ترملى، كتاب صفعه القيامته باب تخرت كأخوف ج2. ص172 منيث 408 فريد بالتسلال الاهور)

خانقابوں اور آستانوں کے متعلق اصلاح

مفتی اعظم پاکستان مفتی منیب الرحلن مد ظلہ العالی لکھتے ہیں: "صوفیاء کے آسانے اور خانقابیں اہل سنت و جماعت کے قدیم دیٹی ، اصلاحی اور رفائی ادار سے ہیں ، اللہ تعالی انہیں آیادر کھے گر فی زمانہ بعض آسانوں کی اصلاح کی اشد ضرورت ہے۔ ان آستانوں پر اُن کے اپنے ہی مشاک (بزرگوں) کی تعلیمات کو فر اموش کر دیا گیا ہے۔ اور اپنے سلمائہ مشاک کی تعلیمات کے برخلاف بہت می خرافات کو روائ ویا گیا ہے۔ اس کی اصل وجہ اہلیت اور علم کے بغیر محض اولا و ہونے کی بنیاد پر خلاف اور طریقت وشریعت ہونے کی بنیاد پر خلافت اور سجادگی کی مسئد پر بھادینا مقاصد رُشد و ہدایت اور طریقت وشریعت کے خلاف ہے ، ہمارے ہاں نفوذ کرنے والی بہت می خرابیوں کا بڑا سبب یہی ہے۔ علامہ اقبال

میراث میں آئی ہے انہیں سندِ ارشاد زاغوں کے تصرف میں عقابوں کا نشین یہی شیخ حرم ہے جو چرا کرچ کھاتاہے گلیم بوڈر و دلق ادیس و چادرِ زہرا

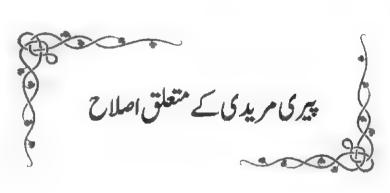
سلاسل طریقت (قادریہ، نقشبندیہ، چشتی، سپر وردی وغیرہ) کے ماننے والے اگر اپنے مشاک کی مسلاسل طریقت (قادریہ، نقشبندیہ، چشتی، سپر وردی وغیرہ) کے ماننے والے اگر اپنے مشاک کتب کا مطالعہ کریں تو بہتی بھی رافضیت، نقضیلیت، خارجیت کی طرف میلان نہ کریں گے بلکہ اٹل سنت و جماعت کہ عقائد و نظریات پر پچتگی سے قائم رہیں گے۔اسی طرح بعض آستانوں پر حاضر ہونے والے زائرین کی تربیت کا کوئی نظام نہیں۔ اعراس مبارکہ کی تقریبات میلوں میں تبدیل ہوگئی ہیں۔ ضعیف الاعتقادی اور توہم پرستی کو فروغ دے کر لوگوں کو اپنی عقیدت کے حصار میں رکھا جاتا ہے۔ان آستانوں کو تو دین تعلیم و تربیت کے مراکز بننا چاہیے۔
حصار میں رکھا جاتا ہے۔ان آستانوں کو تو دین تعلیم و تربیت کے مراکز بننا چاہیے۔

نوس جبروندرسه وحاهاه که دروے بود قیل و قال محمر ترجمہ: " کیابی بات ہے اُس مسجد، مدرسہ اور خانقاہ کی کہ جہاں سیدنا محد مصطفیٰ مَنَافِیْتُمْ کے ادشاداتِ مبارکہ کی تعلیم دی جاربی ہو"
ان خانقابوں اور آستانوں کی اصلاح کے لیے اب ضروری ہے کہ اہلِ سنت وجماعت کے ثقتہ علاء ومشاکُخ کا ایک تگران بورڈ بنایا جائے اور سچادگی کے لیے اس خانقاہ سے منسلک مُتندین، باشرے، صحیح الحقیدہ اور ذی علم محض کا انتخاب کیا جائے۔ جاہل، بے عمل بلکہ ید عمل سچادہ نشین بیروں کو فی الفور معزول کیا جائے۔ (1)

عوام اہل سنت کو چاہیے کہ فی زماندامت و مسلک کی اس زبوں حالی اور ابھرتی ہوئی اس بدراہ روی و بید ہیں کا حساس کرتے ہوئے اپنی تمام تر صلاحتیں اور پییدان آستانوں پر ہونے والی توالیوں پر لٹانے اور عرسوں پر صرف تبرک بائٹے کے بچائے اہلسنت کے مدارس و جامعات کا خیال کرتے ہوئے وہاں موجود طلباء و اسائڈہ کی خدمت میں صرف کریں اور وینی رسائل و جرائد کی اشاعت میں بڑھ چڑھ کر حصہ لیں۔ یہ عظیم اُمور صحیح معنوں میں صدقہ جاریہ ہیں کہ جب تک علم پھیلارہ کا ثواب پنچارہ کا، اپنے بزرگوں کے ایصالی ثواب کے جاریہ ہیں اس طرح بھی اہتمام کرناچاہیے۔

اعلی حضرت امام اہل سنت امام احمد رضاخان رحمة الله عليه فرماتے ہيں: "محافل، نياز فاتحہ اور لنگر ميں خرچ كرنے پر ايك كى وس نيكياں اور طالب علم وين پر خرچ ميں ايك كى كم سے كم سات سونيكياں ہيں"۔(2)

**





بیعت ہونا(پیری مریدی):

"بعت ورفريدوفروخت) سے جس كامطلب بك

جانا اور اصطلاحی معنی میں بیعت سے مراد ہے ہے کہ انسان اپنا تعطق کمی یا عمل نیک پر ہیز گار فضی کے ساتھ قائم کر نے اور اس کے واسطے سے حضور مُلَّافِیْکُمُ تک اس کا سلسلہ متصل ہوجائے۔ بیعت کرنا قر آن وحدیث سے ثابت ہے چنانچہ صلح حدیدیہ کے موقع پر سر کار مُلَّافِیُکُمُ بی وجائے۔ بیعت کرنا قر آن وحدیث سے ثابت ہے چنانچہ صلح حدیدیہ کے موقع پر سرکار مُلَّافِیُکُمُ اللہ علیہ مارضوان سے بیعت لی جس کواللہ عزوجل نے قر آن مجید میں ذکر قربایا:

إِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ إِنَّنَا يُبَايِعُوْنَ اللَّهُ "بَدُ اللَّهِ فَوْقَ آيَدِيْهِمَ" (1) ترجه كزالعرفان: "مِيْك جولوگ تمهاري بيعت كرتے بي وه توالله على سے بيعت كرتے بي "

اس آیت کی تغییر میں حضرت علامہ مفتی احمد یارخان تعیمی رحمة الله علیه فرماتے ہیں: "
بزرگوں کے ہاتھ پر بیعت سنت محابہ ہے خواہ بیعت اسلام ہویا بیعت تقویٰ یا بیعت توبہ یا
بیعت اعمال وغیرہ "۔(2) حدیث یاک میں ہے، حضرت جریر بن عبداللہ دھی الله تعلل

بیت امان و یره مد مدید و سره می این به سرت برید بن حبرات در است اور است اور است اور است اور است این فرمات بین : "بین نے رسول الله منافیق سے بیعت کی نماز پڑھنے زکوۃ وید اور بر مسلمان کا نیم خواہ رہے پر "_(3)

بیعت کے دنیادی واُخروی فوائد:

بیعت کی ضرورت نہ صرف دنیا کے لیے کارآ مرب

بلکہ آخرت بی مجی فائدہ بخش ہے۔ دنیا بی انسان کی اللہ والے کی محبت بی رہ کر با اخلاق بنا ہے، منابوں سے بازر ہتاہے، شیطان کے حملوں اور دوسری آفات سے بچتا رہتاہے۔ اور

⁽الفتح آيمه 10)

² زېار طريقت س 161 مکتبه امام اهلست ، الاهور)

^{3 (}مفيح الهفاري، كتأب الإيمان باب تول الدين الدين . ج1. ص127 مديده 57 فريد بالاستثال، الأهور)

آخرت میں کامل فیخ اپنے مریدوں کا شفیح ہوگا۔ اعلیٰ حضرت امام اہل سنت امام احمد رضاخان رحمة الله علیه فرمائی : وَابْتَعَفُوۤ اللّٰهِ الْوَسِينَلَةَ (اللّٰه کی طرف وسیلہ وسول الله مَنَّا اللّٰه کی الله مَنَّا اللّٰه کی طرف وسیلہ وسول الله مَنَّا اللّٰه کی الله مَنَّا اللّٰه کی طرف وسیلہ وسیلہ وسیلہ مشاکح کرام (الله والے ہیں)، سلسلہ ہس طرح الله عزوجل تک بے وسیلہ وسیلہ مشاکح کرام (الله والے ہیں)، سلسلہ ہس طرح الله عزوجل تک بوسیلہ وسیلہ وشوار عادی ہے۔ احادیث رسائی محال تعلی ہے کہ رسول الله مَنَّالْتُنِیْمُ مَنْ سامنی ہے وسیلہ عزوجل کے حضور وہ شفیح ہو گئے اور ان کے حضور علاء واولیاء اپنے مریدین کی امداد فرمائے ہیں۔ (2)

بیعت کس نیت سے ہواجائے:

موجودہ دور میں بعض ایسے لوگ ہیں جو سنتے ہیں فلال کا

مرید ہونے سے کار دہار میں اضافہ ہو جاتا ہے ، اولاد ہو جاتی ہے دغیرہ اللہ والے کی نسبت کے طفیل مل سلوک سے ناواقف ہے کیونکہ یہ الی چیزیں جو اگر چہ کامل پیر اللہ والے کی نسبت کے طفیل مل جاتی ہیں لیکن یہ بیعت کا مقصود خبیں ہو تیں مقصود توراو سلوک (شریعت وطریقت) پر چلنا ہے۔ اس طرح بعض کسی کی کرامات کو دیکھ اور سن کر مرید ہوتے ہیں ، کرامت اگر چہ بہت بڑی ایک فعمت ہے لیکن بیعت کی شرائط میں سے خبیں ہے نہ بی علم والے اس سبب سے مرید ہوتے ہیں۔ کیا اتنا کم ہے ایک ولی کامل کے ساتھ نسبت ہو جائے ، اس کی وعامیں شامل ہو جائے۔ (3)

^{1 (}البائانة، آيت 35)

^{2 (}فتأوى رخويه ، ج 21 ص 424، رضافاؤلد يشن ، لاهور)

^{3 (}بهارطريقت، ص170 مكتبه امامراهلسلت، الاهور)

کامل پیرکی بیہ پہچان نہیں کہ اس سے کرامات کا ظہور ہو تاہو بلکہ کامل پیروہی ہے جس کی نظروں سے دلوں کے احوال بدل جائیں ، مریدین شریعت کے مطابق زندگی گزانے والے ہو جائیں ، پانچ وقت کے نمازی ہو جائیں ، مرکار مثالثی گئم کی سنتوں پر عمل پیراہونے والے ہو جائیں اور ہوسکتا ہے ایسا پیراس پیرسے درجہ میں بڑاہو جس کے ہاتھوں کرامات کا ظہور ہو تا ہے۔(1)

ایک مر شبہ ایک شخص حضرت جنید بغدادی علیہ الرحمہ کی خدمت میں پچھ دنوں تک رہا۔ بالآخر اس نے اجازت چاہی ، آپ نے بچ چھا کس مقصد کے لیے آئے تھے،اس نے کہا حضرت! آپ کی بڑی شہرت سنی تھی گر کئی روز تک آپ کے پاس تھہرنے کے باوجود کوئی کرامت دیکھنے میں نہیں آئی ، آپ نے فرمایا تم نے میراکوئی کام خلاف سنت دیکھا ہے اس نے کہا نہیں آپ نے فرمایا یہی سب سے بڑی کرامت ہادشاد باری تعالیٰ ہے اِنَّ اکْرَهُکُمْدُ عِنْنَ اللّٰواَ اَتْظُمْکُمْدُ * (تم میں سب سے زیادہ کرامت والاوہ ہے جو سب سے زیادہ متق ہے) (2)

سچی کر امت کی پیچان ہے کہ وہ شریعت مصطفیٰ مناہ پی کے دائرہ میں ہو، جو شریعت سے باہر ہووہ کر امت نہیں بلکہ شیطان کا فریب (ایانت) ہے۔ شریعت کے عین مطابق زندگی گزار نا ہی بہت بڑی کر امت ہے۔حضور غوث پاک علیہ رحمہ فرماتے ہیں: "ولی کی کر امت بہت کہ اس کا فعل نبی مناہ پیٹم کے قول کے قانون پر مصیک اترے "۔ (3)

ہاں اگر کوئی ایسا پیر کامل ہو جس کے ہاتھوں کرامات کا بھی ظہور ہو اور مریدین کی اصلاح بھی کمال احسن طریقے سے کرے بیہ ٹور علیٰ ٹورہے۔

^{1 (}بهارطریقت، ص78،مکتبه اماه اهلسنت، لاهور /ماغوز مکتوبات امام ریالی) 2 (مقالات قاسمی، ج2،ص55، رحته للعالیه ایریبلیکیشاز،سرگوهها)

^{3 (}بهجته الإسرار،ص 39، مكتبه الهائي، مصر)

بيعت كي شرائط:

سی شخص کی بیعت کرنے سے قبل تین چیزوں کا ہوناضروری ہے۔

(1) ایک به که پیرزنده بوکه جو دنیاسے پر ده کر گیااس سے بیعت نہیں ہوسکتی۔

(2) دوسراب کہ پیر مجذوب نہ ہو کہ دہ اپنے مریدوں کی صحیح تربیت نہیں کریائے گا۔

(3) تیسراید که مر د ہو کیونکه عورت مرشد نہیں ہوسکتی۔اولیائے کرام کا اجماع ہے کہ داعی الی

الله كامر دجوناضر ورى ہے۔

پھر جب کسی کی بیعت کرنے لگو تو اُس میں چار شر طول کا ہونا ضروری ہے جن میں سے اگر ایک بھی کم ہوگی اس کا مرید ہونا جائز نہ ہوگا۔اگر کسی ایسے سے بیعت کی ہو جس میں سیر شر ائط نہ ہول

تواس بيعت كاتوژ نالازم ہے۔ ده چارشر ائط يہ اين :

(1) ایک بید که شی صحیح العقیده بور

(2) دوسری شرط ضروری علم کاموناه اس لیے کہ بے علم خدا کو نہیں پیجان سکتا۔

(3) تیسری سے کہ کبیرہ گناہوں سے پر بیز کرنے والا ہو۔

(4) چوتقى اجازت صيح متَّصل بو (ليني شيخ كاسلسله باتصال صحح حضور اقدس مَثَالِثَيْمَ مُلك پينچتا

ہون من منقطع نہ ہو) جیسا کہ اس پر اہل باطن کا اجماع ہے۔(1)

ا بیعت کی شر اکط میں ہاتھ میں ہاتھ دینا نہیں بلکہ بیعت میں اصل اِرادتِ قلبی ہے اور اسکانا فذ ہو تا ایجاب و قبول پر مو قوف ہے۔ لہذا خطء اسپیکر یالا ئیو پر و گرام کے ذریعے سے بیعت ہوسکتی

-2

جعلی پیر:

آن کل لوگ بیعت کرتے وقت یہ نہیں سوچتے کہ جس پیرکی بیعت کی جار ہی ہے وہ کا ال پیر بھی ہے یا نہیں ؟ واڑھی منڈھے، جانل، بے نمازی، چرسی بھنگی، لمبے بال والے، انگوشمیاں پہننے والوں کی بیعت کر لی جاتی ہے۔ یہ جعلی پیرڈھکوسلے بارتے ہیں، واڑھی شدر کھنے پر کہتے ہیں ڈاکٹر اقبال نے بھی نہیں رکھی تھی، نماز نہ پڑھنے پر کہتے ہیں ہماری نماز کے ہرسینے ہوتی ہے۔ ظاہری شریعت کی خلاف ورزی کرکے کہتے ہیں ظاہر کا کوئی اعتبار نہیں رب تعالیٰ دل و یکھتا ہے۔ پھر جعلی پیرکھے جادو ٹونہ بھی سیکھ کر لوگوں کی نظر بندی کرکے اپنا تنابعد اربناتے ہیں۔ کسی جعلی پیرکا دل کی بات بتادیا، کئی دن بھوکے رہنا، ہوایش آڑنا پیری نہیں۔ مسلمانوں پر لازم ہے کہ وہ ایسے جعلی پیروں سے بچیں۔ جو اس طرح شریعت کا خداتی اڈاتے ہیں۔ طریقت کی بنیاد شریعت پر ہے جو انسان شریعت کی اوب نہیں کرتاوہ راہ طریقت پر نہیں۔ ذیل میں کلام سے واضح ہو جائے گا کہ شریعت وطریقت جداگانہ راہیں ہر گزنہیں ہیں۔

شريعت وطريقت:

دورِ حاضر میں جہاں بے عملی عروج پرہے وہیں معرفت الی (عشق و محبت) کے نام پر دین اسلام کی حقیقی ساخت کو خراب کرنا اور لوگوں کے ولوں میں شریعت مطہرہ و علائے کرام سے متعلق نفرت مھرنا دو نمبر جعلی شریعت کے باغی صوفیوں ، پیروں کی

جانب سے عروج پر ہے، پھر لبرل سکولر طبقہ اور بدند ہموں کی جانب سے ان جعلی بناوٹی صوفیوں کے کر تو توں کی آڑیں اولیاء اللہ کی شان میں زبان دراز کرنا بہت افسوستاک ہے۔ ہم ان سب لوگوں کے شریعت وطریقت کا حقیقی مفہوم اور اولیاء اللہ کس قدریا بئر شریعت ہوتے ہیں اُس کا ذکر کرتے ہیں۔

شریعت کی تعریف : "شریعت سے مراد وہ ظاہری اعمال واحکام ہیں جے اللہ تعالی نے اپنے بندول کے لیے بطور ضابطہ حیات تجویز کیا اور اس پر چلنے کا تھم دیا (جیسے نماز، روزہ، جج، زگوۃ عملال وحرام اور جملہ اعمال صالحہ) "۔

تصوف وطریقت کا حقیقی مفہوم: "طریقت در حقیقت شریعت بی کا باطن ہے، شریعت جن انثمال و احکام کی جکمیل کا نام ہے آن اعمال و احکام کو حسن نیت اور حسن اخلاص کے کمال سے آراستہ کرنے کی کوشش علم الطریقت اور تصوف کی بنیاد ہے " (بیعت ہونا، پیری مریدی وغیرہ ، طریقت کے سلاسل کہلاتے ہیں) ۔

طریقت شریعت سے جدانہیں بلکہ شریعت پر کامل طریقے سے عمل پیرا ہوئے میں مدود بتی ہے۔ ۔ جعلی پیرو بناوٹی صوفی وغیرہ دعویٰ کرتے ہیں شریعت وطریقت جداگانہ راستے ہیں اور عشق و محبت کے معاملات شریعت کے دائرہ سے ہاہر ہیں۔اس بناء پر بیہ جعلی پیرظاہری شریعت پر نہ خود عمل کرتے ہیں اور نہ اینے مانے والوں کو اس کی تلقین کرتے ہیں بلکہ لوگوں کوخو وساختہ آسان راہ فراہم کرکے لہوولعب میں مشغول رکھتے ہیں۔

شریعت وطریقت کے متعلق بزر گانِ اُمت کے اقوال:

حدیث پاک بی ہے، آقاکر یم مُنَّالَّیْمُ نے ارشاد فرمایا: "بغیر علم عبادت کرنے دالا اس گدھے کی طرح ہو آئے کی چکی میں جتابو"۔(1)

^{[(}صلية الأولياء . شأل بن معنان . ج 219/5 . مطبوعه دار الكتاب العربية بيروت)

الله كا ولى تمجى مجى جامل نهيس جو سكتا، بميشه عالم (شريعت كاعلم ركھنے والا) ہى الله كا ولى ہو گا، چاہے بیہ علم وہ ظاہری اسباب سے حاصل کرے یا الله عزوجل اپنی خاص عنایت سے علم لُد ٹی أسے عطافر ما دے۔

🆈 امام المحظم امام ايوحنيفه اور امام شافعي رحية الله عليهها سے متقول ہے: "جب علماء اولياء الله شہیں تو پھر کوئی اللہ کا ولی نہیں اور بیہ اس عالم کے بارے بیں ہے جواپیے علم پر عمل کر تاہے ⁽¹⁾ 🛠 حضور غوثِ اعظم شیخ عبدالقادر جیلانی رحبةالله علیه كا ارشادِ مبارك ہے: " فقه (علم شریعت) حاصل کر، اسکے بعد خلوت تشین ہو، جو بغیر علم کے خدا کی عبادت کرے وہ جتنا سنوارے گااس سے زیادہ بگاڑے گاء اپنے ساتھ شریعت البید کی تھم لے لے " (2)

آپ غوث ِ اعظم علیه الرحمه نے لین کتاب " سرالاسرار " میں شریعت کی اہمیت بتاتے ہوئے قرمان نقل کیا ہے کہ: "شریعت ورخت ہے، طریقت اس کی شاخیں ہیں، معرفت اس کے بیت ہیں ، حقیقت اس کا کھل ہے " (3) (اب جس تخص کے پاس علم شریعت

🖈 جنة الاسلام امام غزالي رحمة الله عليه فرماتے: " شريعت ِ مطهره كے منكر اور خوا مِشاتِ نفسانی کے پیروکار جائل پیرجواس زمانہ میں نمودار ہوئے ہیں ۔وہ مخلوق کے لیے شیطان اور الله عزوجل اوراس کے رسول مَلَاثِيْزُم کے دشمن ہیں" (4)

المصطفى المصطفى اعظمى دحمة الله عليه فرمات ين: " آج كل ك مكّار (جعلى) فقير كها کرتے ہیں کہ شریعت کاراستہ اور ہے اور فقیری کاراستہ اور ہے۔ ایسا کہنے والے فقیر خواہ کتنا ہی شعبدہ (غیر معمولی عادات) و کھائیں گر ان کے بارے میں بہی عقیدہ رکھنا فرض ہے کہ بیہ گمر اه اور حجو ٹے ہیں " (5)

(درخت کی جڑ) ہی نہ ہوائے کھل کیانصیب ہو گا)۔

^{1 (}فتأوى قيض الرسول، ج2، ص 640 شير بر ادرز، لامور)

^{2 (}بهجته الإسرار، ص53، مطبوعه مصر)

^{3 (}سر الاسرار، ص 53، قادری رضوی کتب مانه ، لاهور) 4 (كيبي<u>ائر</u>سعادت، ص44 شياء القرآن يمل كيشاز، لاهور)

^{5 (}جنتىزيور،ص462مكتبة البنينه، كراجى)

﴿ تَفْيِرِ تَعْيِى مِينَ بِينَ: "جو شخص فره بَعر شريعت كى مخالفت كرے وه مر دود ہے اگر چه برا پيرو مر شدينا پحرے ايے شخص مجبول كاجو بحى مريد ہے گاوه بنده ابليس بهو گا" (1)
﴿ المام قشير كى دحدة الله عليه اپنى كتاب "رساله قشير به" ميں حضرت جنيد بغدادى دحدة الله عليه ہے نقل فرماتے بين: "جس نے نه قرآن ياد كيانه حديث لكھى نينى جو علم شريعت سے عليه ہے نقل فرماتے بين: "جس نے نه قرآن ياد كيانه حديث لكھى نينى جو علم شريعت سے آگاہ نہيں طريقت ميں اس كى اقتداء نه كريں اور اسے اپنا پير نه بنائيں كيونكه بماراب علم طريقت بالكل كتاب وسنت كا پابند ہے " (2)

﴿ حفرتِ جنيدِ بغدادى دحدة الله عليه كسائ ايك فخص كاذكركيا كياجوكها تماكه شريعت خداتك بنيخ كاراسة ب جو بي في فيكا أسكواب شريعت كى حاجت نبيس آب دحدة الله عليه في فرمايا: "وه في كهتاب مبين كليا بي كركهان اجبنم كو" (3)

شریعت کا درجه برا ہے یا طریقت کا:

مفتی انس رضا قادری حفظہ اللہ لکھتے ہیں: اگر پوچھا جائے کہ شریعت اور طریقت ہیں: اگر پوچھا جائے کہ شریعت اور طریقت ہیں سے بڑا درجہ کس کا ہے؟ توجواب یہ ہے کہ شریعت کا، کیونکہ طریقت خود شریعت کے تالع ہے۔ علماء فرماتے ہیں کہ شریعت سے اوپر عمل واجر ہیں طریقت کا درجہ ہے۔ اگر کوئی حقیقت سے نیچے آ جائے تو وہ حقیقت سے نیچلے درجے ہیں آئے گا۔ اور اگر کوئی طریقت سے نیچلے درجے ہیں آئے تو وہ تو وہ شریعت کے درجے ہیں آجائے گا اور اگر کوئی شریعت کی مخالفت کرے تو شریعت سے نیچ جہنم میں جائے گا۔ اور اس خواجبات ہیں جن کے ترک پر عذاب ہے اور اس عبار کی ترک پر عذاب ہے اور اس علمائے دین اور صوفیاء کرام کے ان اقوال سے بالکل واضح ہو گیا کہ شریعت اور طریقت (راہِ علمائے دین اور صوفیاء کرام کے ان اقوال سے بالکل واضح ہو گیا کہ شریعت اور طریقت (راہِ

^{1 (}تفسير تعيمي،جلن12،ص442،نعيم كتبخانه، گجرات)

^{2 (}رسألەقتىزريە،ص24.مطبوعەممىر)

 ⁽چاړشريعت،حصة 1،00 مكتبة البنينه، كراچئ)
 (ماخوذبهار طريقت، 160 مكتبه امام اهلسلت، لاهور)

تصوف) جدا گانہ راہیں ہر گزنہیں بلکہ طریقت شریعت ہی کی ایک شاخ ہے۔اس لیے جو هخص ظاہری شریعت کا منکر ہو وہ جعلی صوفی مر دود و بندہ اہلیس ہے۔ان لو گوں کو نہ قر آن کی ضرورت ، نه حدیث کا احتیاج اور نه بی اجماع امت کا پاس ہے۔بس ان کے لیے آستانے کا پراپیکٹراکافی ہے۔جس طرح ملحدین (atheist) اپنا پورازور لگا کر علیائے کرام کی مخالفت کرتے ہیں اسی طرح جابل صوفی بھی علمائے کرام کو مولوی اور ملال کہد کران کی توہین کرتے ہیں۔ میچے صوفی وہی ہے جو اجماع امت کا پابند ہو اور قر آن وسنت کے سامنے تھم جائے۔

نہ کور بالاعبارات سے اُن لوگوں کو سبق لیڑا چاہیے اور اپنا قبلہ درست کرناچاہیے جو اپنے جاہل پیروں ، گذی نشینوں کی خلاف شرع اُمور کو (عشق و محبت) کا نام دے کر اُنہیں شریعت سے بيكاند سيحقظ بير مولاناروم دحمة الله عليه فرمات بين:

أع بساابليس آدم روع بست

پس بهر دسته نباید دا دوست

(بہت سے اہلیس انسانی صورت میں ہیں، کپس ہر ہاتھ میں عقیدت کا ہاتھ تہیں دینا چاہیے)

عورت کا اپنے غیر محرم پیرسے پردہ:

عورت کا جس طرح نامحرم اجنبی سخف سے پر دہ

کرنا فرض ہے ای طرح عورت کا اپنے نامحرم پیر و مرشدے پر دہ کرنا بھی فرض ہے کہ پر دے کے معاملے میں دونوں کا تھم یکساں ہے، لہذاعورت کا بال یا کلائیاں کھول کراہیے نامحرم پیر کے

سامنے آناحرام اور ای طرح چرہ کھول کر آنا بھی سخت منع ہے۔⁽¹⁾

پیر کی تصویر گھر میں لگانا:

آج کل رائج ہے کہ لوگ اپنے پیریابز گانِ دین یاعز بروا قرباء کی

تصوير كو مكرون مين سجائے بين - بلكه اب تو حضور داتا صاحب اور حضور غوث اعظم دحمة الله

علیه اور دیگر بزرگانِ دین کی خو و ساخت تصویری بنائی گئی ہیں۔ لوگ اسے برکت کے طور پر
دکانوں میں لگاتے ہیں، یہاں تک بھی دیکھنے میں آیاہ کہ تصویر پر ہار ڈال دیاجا تا ہے۔ یہ سب
ناجائز ہے۔ جاندار کی تصویریں چاہے بزرگوں کی ہوں یا دالدین کی یا عام لوگوں کی گھر میں لاکاتا
حرام ہے۔ اس پر سخت وعیدیں ہیں۔ احادیث اس بارے میں حد تواتر پر ہیں۔ ذیل میں
تین احادیث ملاحظہ کیجے۔ (۱)

(1) چنانچہ آقا کریم مَنَّالِیُّنِا نے ارشاد فرمایا: "رحمت کے فرشتے اُس گھر میں داخل نہیں ہوتے جس میں کُمایا تصویر ہو"۔(2)

نوٹ: جانوروں اور تھیتی اور مکان کی حفاظت اور شکار کے لئے کتا پالناجائز ہے ان مقصدول کے علاوہ کتا پالناجائز نہیں۔

(2) حضرت عائشہ صدیقة دض الله تعالى عنهمات روایت بے كه: "نبي اكرم مَاللَيْظُم الله كاشانه

اقد س کے اندر تصویر والی کوئی چیزنہ چھوڑتے مگر اسے توڑ پھوڑ کر پچینک دیتے تھے "۔ ⁽³⁾

(3) حضرت عروه بن زبير دعى الله تعالى عنه كابيان م كم حضرت عائشه صديقه دعى الله تعالى

عنهانے فرمایا کہ: "نبی مَنَالْتَنِیُمُ ایک سفر سے والیس آئے تومیس نے ایک پر دہ لٹکایا ہو اٹھا جس میں تصویریں تھیں، پس آپ نے مجھے تھم دیا کہ اسے اتار دوں، تومیس نے اسے اتار دیا"۔(4)

جاندار چیزوں کے برعش جو مکہ مدینہ، بڑگانِ دین کے مزارات کی بے جان تصویریں رکھی جاتی بیں، بید بالکل جائز ہے۔ خصوصاً نقشِ تعلین پاک مُظَافِیْزُم کی تصویریا نقشِ تعلین کا آج لگانانہ صرف جائز بلکہ عقیدت سے لگایا جائے تومستحب (اثواب کا عمل) ہے۔(5)

^{1 (}رسم ورواج كى شرعى حيفيت ، ص522 مكتبه اشاعت الاسلام ، الاهور)

^{2 (}معيح البغاري، كتاب اللباس، بأب التصاويو، ج3، ص377، حديث 5949، قريد بك ستال الاهور)

^{3 (}صيح البغاري، كتأب الياس، ج3. ص 379، حديث، 5952، قريبيا الستال. الأهور)

^{4 (}صيح البخاري، كتاب اللياس، ج3.ص 379، حديث 5955، فريد بالتستال ، لاهور)

^{5 (}رسمورواج كيشرعىحيثيت، ص523. مكتبه اشاعت الاسلام. الاهور)





نظرلكنا:

مرک افظر الکنااحادیث سے ثابت ہے، اس کے برے الرّات کا انسان پر الر کرنا حق ہے۔
(1) حدیث پاک میں ہے، آ قا کر یم طَالِیْنِیْم نے ارشاد فرمایا: " نظر حق ہے، اگر کوئی چیز نقلر بر ہے ہائی اور جب تم د حلوائے جا کتو دھود د "۔

(2) اور رسول الله مُنَا اللّٰهِ مُنَا اللّٰهِ مُنَا اللّٰهِ مُنَا اور خربایا: "بے حک نظر مر د کو قبر میں اور اُونٹ کو دیگ میں داخل کردیتی ہے "۔(2)

نظراً تارنا (تو کھے کرنا):

نظر لک جانا عیب نیل افران باپ کی مجی بچی کو اگد میں انظر الد جانا عیب نیل انظر الدے کے لیے عوام میں مشہور ٹو کئے اگر خلاف شرع نہ ہو تو جائز ہیں۔ اگر چہا تور دعائیں افضل ہیں۔ نظر والے کے ہاتھ مشہور ٹو کئے اگر خلاف شرع نہ ہو تو جائز ہیں۔ اگر چہا تور دعائیں افضل ہیں۔ نظر والے کے ہاتھ پاؤں دھو کر جس کو نظر کی ہوئی ہی آئے کی بھوی تین شرخ مر چیں منظور (لیعن جس کو نظر اسے باقی رکھا ہوئی ہے تو بھی اگر ہوئی ہے تو بھی فیل ہو کہ بیل اگر نظر ہوتی ہے تو بھی فیل ہو کی بیری اگر نظر ہوتی ہے تو بھی فیل ہو کی بیری اور رہ تعالی شفاء دیتا ہے۔ صفرت عمان غنی دھی اللہ تعالی صفہ نے ایک خوب میں میں افھی اور رہ تعالی شفاء دیتا ہے۔ صفرت عمان غنی دھی اللہ تعالی صفہ نے ایک خوب میں سابی لگا دو تاکہ نظر نہ گئے۔ یہ سب خوب موری ہیں سابی لگا دو تاکہ نظر نہ گئے۔ یہ سب عمل جائز ہیں۔ ای طرح صفرت ہمام این عروہ دھیۃ اللہ علیہ جب کوئی پندیدہ چیز دیکھتے تو فرمائے ایک کے بعض نظروں میں فرماتے: "ماشاء اللہ کو فو قا آلا پاللہ " تاکہ نظر نہ گئے۔ علاء فرماتے ہیں کہ بعض نظروں میں فرماتے: "ماشاء اللہ کو فو قا آلا پاللہ " تاکہ نظر نہ گئے۔ علاء فرماتے ہیں کہ بعض نظروں میں فرماتے: "ماشاء اللہ کو فو قا آلا پاللہ " تاکہ نظر نہ گئے۔ علاء فرماتے ہیں کہ بعض نظروں میں فرماتے: "ماشاء اللہ کو فو قا آلا پاللہ " تاکہ نظر نہ گئے۔ علاء فرماتے ہیں کہ بعض نظروں میں

^{1 (}صيح سلم، كتأب السلام، كتأب الطب الطب الطب البرض والرقى ج3. ص161، حديث 5666 غريذ بالتستأل الأهور) 2 (عم الجوامع ب50 ص204 مديث 1458، دار الكتب الطبية ، يزون)

زہریلاین ہوتاہے جواثر کرتا ہے۔⁽¹⁾ احادیث میں تظر کاعلاج :

آفتوں اور مصیبتوں سے نجات حاصل کرنے کی تدبیر کرنا اور مصیبتوں سے نجات حاصل کرنے کی تدبیر کرنا اور مناسب احتیاطیں اختیار کرنا انبیاءِ کرام کا طریقہ ہے، حضور مثل النیاءِ کی افتوں اور مصیبتوں سے نجیئے کے لئے خود بھی مناسب تدبیری فرمایا: " میں تمہیں وہ کلمات ندبتاوں جو (شریر جنات اور نظر (1) حضورِ اقد س مثل النیائی نے ارشاد فرمایا: " میں تمہیں وہ کلمات ندبتاوں جو (شریر جنات اور نظر بدسے) اللہ تعالی کی پناہ طلب کرنے میں سب سے افضل ہیں؟ انہوں نے عرض کی: یارسول اللہ! مثل النیائی کی بناہ طلب کرنے میں سب سے افضل ہیں؟ انہوں نے عرض کی: یارسول اللہ! مثل النیائی ہیں (آپ ضرور بتاہیے) ارشاد فرمایا "وہ کلمات بید دونوں سور تیں ہیں: اللہ! مثل النیائی "۔(2) حضرت ابو سعید خدری دخی اللہ تعالی عند فرماتے ہیں: "حضورِ اقدس مثل النیائی "۔(2) حضرت ابو سعید خدری دخی اللہ تعالی عند فرماتے ہیں: "حضورِ اقدس مثل النیائی خات اور

2) مطرت ابو سعید خدری دهی الله تعالی عند حرمات بین بسطور افد سی میوم جنات اور الله است اور الله است اور السانوں کی بری تظریعے پتاہ مانگا کرتے تھے یہاں تک کہ سور کا فاق اور سور کا الناس نازل ہوئیں تو آپ مَانگَیْمُ نے ان دونوں کو اختیار فرما لیا اور دیگر دعاؤں کو چھوڑ دیا"۔(3)

دم كروانا:

وم کامطلب ہے پھے پڑھ کر پھو نکنا۔علاج کے طور پر کسی نیکوکارسے دم کروایاجاتا ہے یا خور دم کیاجاتا ہے، یہ بالکل جائز ہے اور کثیر احادیث واسلاف سے ثابت ہے :چنا نچہ (3) امام احمد و ترفری و ابن ماجہ نے اسمایت عبیس دھی الله تعالی عنصا سے روایت کیا کہ: انہوں نے عرض کی، یار سول الله مَنَّ اللّٰهِ عَلَیْ اللهِ عَفر کو جلد نظر لگ جایا کرتی ہے، کیا میں انہیں دم کروا سکتی ہوں؟ فرمایا: " بال کیونکہ اگر کوئی چیز نقدیر سے سبقت لے جانے والی ہوتی تو نظر بد سبقت لے جانے والی ہوتی تو نظر بد سبقت لے جاتے والی ہوتی تو نظر بد سبقت لے جاتے والی ہوتی تو نظر بد

^{1 (}ماغوذمر اقالهناجيح شرحمشكوة، كتابالطبوارق، القصل الاول، ج6-7. ص180. حسن پيلشرز، لاهور) 2 (سان نسأل، كتاب الاستعاذة، ج3. ص546. حديث 5336 شياء القرآن يبلي كيشانه لاهور)

ر (سان نسان، تعاب الاستعداد) 3. - 6. - 6. - مريث 5336. طبياء القران يعلى ديشار (رهور)

 ⁽ترمذى، كتأب الطب، بأب ساجاء فى الرقية بالبعوذتين. ج1. ص948. حديث 2132 قريد بك سفال الأهور)
 (ترمذى، كتأب الطب، بأب مأجاء فى الرقية . ج1. ص948. حديث 2134.2133 قريد بك سفال الأهور)

(4) حضرت عائشہ صدیقہ دخی اللہ تعلا عند اللہ علی جیں کہ "رسول اللہ مَلَّ اللَّهِ مِلْ اللَّهِ مِلْ اللَّهِ مِلْ اللَّهِ مِلْ اللَّهِ مِلْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللللَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللْمُولِمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُولِيَّةُ الللْمُولِمُ اللللْمُ اللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ الللللِمُ اللللْمُ اللللللْمُلِمُ الللللْمُ الللللْمُ الللللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ الللللْم

تعویڈ کا مطلب ہے امان ، بیچائ لیٹن اللہ عزوجل کے نام سے امان حاصل کرنا۔
مسلمانوں میں رائے ہے کہ وہ کسی بیاری یا نظر بدیا جادو سے بیخنے کے لیے تعویذ وغیرہ بہنتے ہیں یا
گھر میں لگا دیتے ہیں۔ یہ عمل جائز ہے۔ متبرک (برکت والی) چیزوں سے شفاء حاصل کرنا
احادیث سے ثابت ہے، جبکہ عقیدہ یہی ہو حقیقی شفاء دینے والا اللہ تعالیٰ ہی ہے۔

بہارِ شریعت میں ہے: "گے میں تعوید الاکانا جائزہ، جبکہ وہ تعوید جائزہولیانی آیاتِ
قرآنیہ یا اساء الہیہ (اللہ تعالیٰ کے ناموں) یا اوعیہ (دعاؤں) سے تعوید کیا جائے اور بعض
حدیثوں میں جو ممانعت آئی ہے، اس سے مرادوہ تعویدات ہیں جوناجائز (شرکیہ الفاظ وغیرہ)
الفاظ پر مشمل ہوں ، جو زمانہ جاہلیت میں کیے جاتے تھے ، ای طرح تعویدات اور آیات و
الفاظ پر مشمل ہوں ، جو زمانہ جاہلیت میں کو بہ نیت شفا پلانا بھی جائزہ ہے۔ جنب و حائض و
احادیث و ادعیہ کو رکائی میں لکھ کر مریض کو بہ نیت شفا پلانا بھی جائزہ ہے۔ جنب و حائض و
افسائجی تعویدات کو گئے میں پہن سکتے ہیں، بازو پر باندھ سکتے ہیں جبکہ فلاف میں ہوں "۔(2)
نفسائجی تعویدات کو گئے میں پہن سکتے ہیں، بازو پر باندھ سکتے ہیں جبکہ فلاف میں ہوں "۔(2)
سے گھر ا جائے تو کہہ لے آغوڈ پر بکیکہ آت اللہ التّافیّاتِ مِنْ غَضَیه وَعِقَابِه وَشُوّ عِبَادِهِ
کی ناماضی اس کے عذاب سے اور اس کے بندوں کے شر اور شیطانوں کے وسوسوں سے اور ان
کی حاضری سے "، تو جہیں پھی نقصان نہ پنچے گا "، حضرت عبداللہ بن عمرولینی بالغ اولاو کویہ
کی حاضری سے "، تو جہیں پھی نقصان نہ پنچے گا "، حضرت عبداللہ بن عمرولینی بالغ اولاو کویہ
کی حاضری سے "، تو جہیں پھی نقصان نہ پنچے گا "، حضرت عبداللہ بن عمرولینی بالغ اولاو کویہ
سکھادیے شے، اور ان میں سے نابالغوں کے گئے میں کی کاغذ پر لکھ کر ڈال دیتے شے "۔(3)

^{1 (}صحيح المبخاري، كتاب قضائل القرآن، بأب قضل البعوذات، ج3. ص41 حديث 5016 . فويد بالتستأل الإهور)

^{2 (}بهار هريعت، حصه 16،ص 419مكتبة المدينه، كراچي/ (در محتار، ردالمحتار))

^{3 (}ترمذى، كتاب الدعوات، بأب يخواني كأعلاج، ج 2، ص 629، حديث 1450، فريدبك ستال الاهور)

(2) روایات میں ہے کہ سیدہ اساء بنت ابو بکر رضی الله تعلق عندائے ایک اطلی جبہ نکالا اور فرمایا کہ اس جبہ شریف کو نبی کریم منگائی آئی نے زیب تن فرمایا ہے۔ اور ہم بیارول کے لیے اس کا دامن دھو کر پلاتے ہیں تو انہیں (اسکی برکت سے نی الفور شفاء حاصل ہو جاتی ہے اور حضور منگائی کا ایک پیالہ تھا اس میں پائی ڈال کر بیاروں کو پلاتے تو انہیں شفاء حاصل ہو جاتی ہے۔ (1) داسی طرح رسول الله منگائی کی بال مبارک کی برکت سے شفاء لینا بھی ام المومنین ام سلمہ رمی الله تعالى عنها سے مروی ہے۔ (عمدہ ڈالقاری))

کو تعویذات سے متعلق بیر احتیاط کرنی چاہیے کہ آن کل جو جعلی پیر بے نمازی، واڑھی منڈ ب بیر، نہان سے متعلق تعویذات کاعلم بیں، نہان سے دم کروایا جائے اور نہ ان سے تعویذ لیا جائے۔ بلکہ اس سے متعلق تعویذات کاعلم رکھنے والے کسی سنی صبح العقیدہ عالم وین سے رجوع کیا جائے۔

اللہ بعض لوگ لوہے ، پیتل ، سونا ، چاندی وغیرہ کی چیزیں گلے میں یا ہاتھ ، پاؤل وغیرہ میں تعویذ سمجھ کر پہن لیتے رہے سب (مر د کیلئے) ناجائزہے (ہاں تعویز کو چیزے میں سلوا کر پہنا جا

سكتاب)-اى طرح سى خلاف شرع مقصدك ليه تعويدلينا ناجائزب-

بدایمال ہے خداشاہد کہ ہیں آیات قرآنی

☆☆☆

علاج جمله علتنبائح جسمانی و روحانی



صحابہ کرام وہ مبارک ہستیاں ہیں جنہیں اللہ تعالی نے اپنے پیادے حبیب مکانی کے اسے دورہ مبارک ہستیاں ہیں جنہیں اللہ تعالی نے اپنے پیادے حبیب مکانی کی صحبت اختیار کرنے کے لئے منتخب فرمایا اور ان کی عظمت وشان کو قر آن مجید میں بیان فرمایا۔ اہلِ اسلام کا اجماع ہے کہ صحابہ کرام کی محبت ، ان کی تعظیم و توقیر اور ان کا اداب و احترام ہر مسلمان پر واجب ہے۔ اہلِ سنت و جماعت کا شعار رہا ہے کہ وہ خلفائے داشد بن، عشرہ مبشرہ ، حجیج اہل بیت اطہار ، امہاۃ المو منین اور جمیع صحابہ کرام رض اللہ تعالی عنهم اجمعین سے محبت و عقیدت رکھتے ہیں ، ان سب کی تعظیم کرتے ہیں ، ان کی توصیف و توقیر کرتے ہیں ۔ اس طرح برجمی اہل سنت کا اجماعی عقیدہ ہے کہ شیخین کر سمین (سیدنا صدایق اکبر وسیدنا عرفاروق دعی اللہ تعالی منہ کی افضایت کا اجماعی عقیدہ ہے کہ شیخین کر سمین (سیدنا صدایق اکبر وسیدنا عرفاروق دعی اللہ تعالی منہ کرام کے بعد تمام انسانوں ہیں سب سے افضل ہیں ، اور جو ان کی افضایت کا انکار کریں وہ مگر اہ و بد فد ہب، تفضیلی ، دافضی ہے۔

سیدناعلی المرتضی شیر خدا دهی الله تعالی عند فرماتے بیں: رسول الله مَنَّ اللهُ عَلَیْمُ کے بعد تمام لوگوں سے افضل ابو بکر بیں اور ابو بکر کے بعد سب سے افضل عمر ہیں۔(1)(2)

صحابہ کرام کی عظمت وشان ان کے اوصاف حمیدہ اور اُن کے جنتی ہونے سے متعلق قر آن پاک میں جابجا آیاتِ مبار کہ وارد ہیں۔ اس طرح صحابہ کرام کے فضائل و منا قب پر کثیر احادیث موجود ہیں۔ چنانچہ ارشادِ باری تعالی ہے:

وَالشَّبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهْجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ التَّبَعُوْهُمْ بِإِحْسَانٍ * رَّ ضَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَصُّوْا عَنْهُ وَاعَدَّ لَهُمْ جَنَّتٍ تَجْرِىٰ تَحْتَهَا الْاَنْهُرُ خُلِدِيْنَ فِيهُا آبَدًا * ذَٰلِكَ الْقَوْرُ الْعَظِيْمُ ⁽³⁾

^{1 (}سان ابن ماجه، كتاب فضائل: اسحاب بأب فضل عمر ، ج1، ص60 مديد 142 خيراء القرآن يبلي كيشاز ، لاهور)

^{2 (}مسلى امام احد مسلى خلفائير اشنين .ج 1. ص 402 حديث 836 مكتبه رجائيه الإهور)

^{3 (}التويه ،آيت 100)

ترجہ کنزالعرفان: " اور بیشک مہاجرین اور انصار میں سے سابقین اولین اور دوسرے وہ جو بھلائی کے ساتھ ان کی پیروی کرنے والے ہیں ان سب سے اللّدراضی ہوا اور یہ اللّه سے راضی ہیں اور اس نے ان کیلئے باغات تیار کر دکھے ہیں جن کے یٹچے نہریں بہتی ہیں ، ہمیشہ ہمیشہ ان میں رہیں گے ، کہی بڑی کامیا بی ہے "
گے ، کہی بڑی کامیا بی ہے "
حدیث پاک میں ہے :
حدیث پاک میں ہے :

(1) رسول الله معیلیوم نے ارساد فرمایا: "میرے محابہ ساروں ن مانند ہیں م ان ش سے میں کی بھی افتداء کروگے ہدایت پاجاؤگے "۔⁽¹⁾

(2)اور بیارے آقا منگانگی نے ارشاد فرمایا: "آگاہ رہوتم میں میرے اہل بیت کی مثال جناب نوح (علیہ السلام) کی کشتی کی طرح ہے۔جواس میں سوار ہو گیا نجات پا گیااور جواس سے پیچھےرہ سیابلاک ہوگیا"۔(2)

سبابون سبوسی مفتی احمد بارخان نعیمی رحمة الله علیه اس کی شرح میں فرماتے ہیں: سبحان الله! کیسی نفیس تشبیہ مفتی احمد بارخان نعیمی رحمة الله علیه اس کی شرح میں فرماتے ہیں: سبحان الله! کیسی نفیس تشبیہ دوسرگ حدیث میں اپنے اہل بیت دھی الله تعالی عنهم اجمعین کو کشتی نوح فرمایا، سمندر کا مسافر کشتی کا بھی حاجت مند ہو تاہے اور تارول کی رہبری کا بھی کہ جہاز ستارول کی رہنمائی پربی سمندر میں چلتے ہیں۔ اس طرح امت مسلمہ اپنی ایمائی زندگی میں اہل بیت اطہار دھی الله تعالی عنهم اجمعین کے بھی محتاج ہیں اور صحابہ کرار دھی الله تعالی عنهم اجمعین کے احت مند، امت کے لئے صحابہ دھی الله تعالی عنهم اجمعین کی افتداء میں بی اہتداء لیخی ہدایت ہے۔ (3) امام اہل سنت امام احمد رضافان دحمته الله علیه نے ان احادیث کی ترجمانی کرتے ہوئے فرمایا:

اہل سنت کاہے ہیڑا پار ،اصحاب رسول مجم ہیں اور ناؤ ہے عشرت رسول اللہ کی (خدائق بخشش)

 ^{1 (}مراة المناجع شرح مشكؤة . كتاب البناقب بأب مناقب الصحابة . ج 8. ص 299 حديث 5757 حسن پهليشر تا (هور)
 2 (مراة المناجع شرح مشكؤة كتاب البناقب بأب مناقب الصحابة . ج 8. ص 416 حديث 5915 حسن پهليشر ترا (هور)
 3 (مراة المناجع شرح مشكؤة . كتاب المناقب بأب مناقب الصحابة . ج 8. ص 416 حديث 5915 حسن پهليشر ترا (هور)

جہ لیکن افسوس! کچھ لوگ خود کو مسلمان مجی کہتے ہیں اوران کے سینے صحابہ کرام دھی الله تعالی عنهم تعالی عنهم الله تعالی عنه الله تعالی عنه فرماتی ہیں: " لوگوں کو حکم توبه دیا گیا کہ صحابہ کیلئے استغفار کرتے ہیں کہ انہیں گالیاں دیتے ہیں "۔ (1)

ایسے لوگوں کے لئے درج ذیل حدیث پاک میں بڑی عبرت ہے۔

جس تعخص کے دل میں کسی بھی صحافی کے لیے پنفس و نفرت ہو الیہا تعخص مومنین کی اقسام سے خارج ہے ۔ ایکے لیے وعائے مغفرت کرنا یاان سے کسی قشم کا کوئی تعلق رکھنا جائز نہیں۔

حیسا کہ حدیث پاک بیس آ قاکر یم منگانٹیکم نے ارشاد فرمایا: "آخری زمانہ بیس ایک قوم آئے گی جو میرے صحابہ دھی الله تعالی عنهم اجمعین کو گالیاں دے گی، ان سے پخض رکھے گی، ان کے ساتھ کھا تانہ کھا تانہ کھا تانہ کھا تانہ کھا تانہ کھا تانہ کہ ساتھ پانی نہ ہو، ان کے پاس نہ بیٹی وہ ان سے رشتہ نہ کرو، وہ بیار پڑس تو عیادت نہ کرو، مر جائیں تو ان کی میت کے پاس نہ جاؤ، ان کی نمازِ جنازہ نہ پڑھو (لینی دعائے مغفرت نہ کرو، مر جائیں تو ان کی میت کے پاس نہ جاؤ، ان کی نمازِ جنازہ نہ پڑھو (لینی دعائے مغفرت نہ کرو) اور نہ ہی ان کے ساتھ نماز پڑھو "۔(3)

^{1 (}معيج مسلم ، كتأب التفسير ، بأب في تفسير آيات ، ج 3 ، ص 715 ، حديث 7455 فريد بك سئال ، الاهور)

^{2 (}ترمثى، ابواب المناقب، باب فيمن يسب اصاب النبي، ج2،ص762 حديث 1796 فرين بالتستال الاهور)

^{3 (}كنز العبال كتاب الفضائل بإب في فضائل الصحابه. ج6. حصه 11. ص 257 حديث 32528.32542 دار الإشاعت، كراجي)

اور حضور اقدس رسول کریم مَنَاقِیْمُ نے ارشاد فرمایا:" جب تم اُن لوگوں کو دیکھو جو میرے اصحاب کی بدگوئی کرتے (برامجلا کہتے) ہیں تو کہہ دو کہ تمہارے شر پر خدا کی لعنت"۔ (1)

ہم تک جو اسلام کی تعلیمات پہنچیں وہ اصحابِ رسول مَنَّافَیْنَم ہی کے ذریعے پہنچی ہیں،
اس لیے دشمنان اسلام کی شروع سے میہ سازش رہی ہے کہ وہ ان حضرات کے قول و فعل
سے متعلق شکوک و شبہات پیدا کریں تاکہ پورا دین اسلام ہی مشکوک بنا دیاجائے ، للمذا
اصحاب رسول مَنَّافِیْنَم کی محبت اور ان کا دفاع کرناہم سب پر لازم ہے ۔
حضور جانِ جانال مَنَّافِیْم نے ارشاد فرمایا: "جس نے میری وجہ سے میرے صحابہ کاخیال رکھاوہ
میرے پاس میرے حوض کو ٹر پر آئے گا اور جس نے خیال نہیں کیا وہ قیامت کے روز میری
زیارت نہیں کرسکے گا مگر دور سے "۔(2)

حق چاريار:

پیارے آقا کریم منگانی کے تمام صحابہ ہی ہے ، عادل، نیک اور بڑی عظمتوں والے نیے ، یہ وہ لوگ تھے جنہیں اللہ تعالی نے اپنے حبیب منگانی کی لیے پُنااور قرآنِ پاک میں اور زبانِ مصطفیٰ منگانی کی سے جار تیں دیں۔ اصحابِ رسول منگانی کی میں سے چار یا اور زبانِ مصطفیٰ منگانی کی بہت مرتبہ ومقام ہے اور جانِ جاناں حضور منگانی کی نے ان کی محبت کو امت پر خصوصی طور پر فرض قرار دیا، چنانچہ، نبی رحمت منگانی کی استاد فرمایا:
"بے شک اللہ نے تم لوگوں پر ابو بکر، عمر، عثان اور علی کی محبت فرض کی ہے جیسا کہ اس نے تم پر نماز، روزے جی اور زکوۃ فرض کے ہیں۔ توجس نے ان میں سے کسی ایک کے ساتھ بھی پغض رکھا اس کی کوئی نماز نہیں، کوئی جی نہیں ، کوئی زکوۃ نہیں اور قیامت کے دن اپنی قبر سے سیدھا جہنم کی طرف اٹھایا جائے گا"۔ (3)

^{1 (}ترمذى، كتأب المعاقب باب ق من سب اصاب العبى ج20، 763 مديد 1800 فريد بالمسلل الاهور)

^{2 (}كازالعبال، كتابقضائلالصعابهباپقضائلالصعابه اجالاً، ج11،ص258،حتيث 32534.دار الاشاعت، كراچی) 3 (مقالاتِقاسمی،ج2،ص140،رحةللعالبين پهليكيشتز،سرگودها /طبقات عنابله)

اور امام الانبیاء مَنَالِیَّیُمُ نے ارشاد فرمایا: "الله تعالی نے میرے صحابہ کو نبیوں اور رسولوں کے سواء سارے جہانوں پر ترجح دیتے ہوئے پند فرمالیا ہے اور ان میں سے خصوصاً میرے لیے چار صحابہ کو پیند فرمالیا ہے۔ ابو بکر، عمر، عثان اور علی۔ اور انہیں میرے صحابہ میں سے افضل بتایا ہے۔ ویسے میرے سارے صحابہ میں مجلائی ہی مجلائی ہے "۔(1)

حضرت سلطان بابوعليه رحمه عقائد اللسنت كى ترجمانى كرتے بوئے فرماتے بين:

ازمذ هب رفاض وخوارج بے زارم من که ستی دوست دار چار بارم

(میں رافضیوں اور خارجیوں کے مذہب سے برزار ہوں، میں سی ہوں اور چار یاروں کا یار ہوں)الجمدیشہ

الى بيت ميس كون كون شامل بين؟:

قر آن واحادیث کی تمام تصریحات پر نظر کی جائے

توید بات واضح ہوتی ہے کہ جن ہستیوں کورسول الله مَا لَظْیَرُ من اللهِ بیت میں شامل فرمایا آئی تین تشمیں ہیں:

(1) "اصل الل بيت "جن من ازواج مطهر ات، چارشهر اويال اور تمام شهر اد عشامل بين-

(2)" واخل الل بیت " جنہیں چاور مبارک کے فریعے الل بیت میں واخل کیا گیا یعنی سیدنا علی المرتضی سیدنا اور میں اور سیدنا امام حسین دھی الله تعالی عنهم اجمعین اور

(3) " لا حق البيت " جن مين سيدنازيد بن حارثه ، سيدناأسامه بن زيد اور سيدناسلمان فارسي

رض الله تعالى عنهم اجمعين شامل بير_(2)

I (الشفاء،بلب محابه كى عزت و تكريم ، ج2، ص401 ، مكتبه متفيه ، لاهور) 2 (مقالات قاسمى ، ج2 ، ص151 ، رحمته للعالمين يبليكيشنز ، سرگوهما / سيخ سفابل)

ان نہ کور بالا احادیث میں صحابہ کرام دخی اللہ تعالی عنهم اجمعین کے ساتھ محبت واخلاص و ادب و تعظیم کولازم قرار دیا گیاہے۔ لہذا جان لو کہ اہل بیت سے محبت نہ رکھنا خارجیت ہے اور صحابہ پر طعن و تشنیح کرنا رافضیت ہے ، جبکہ اہل بیت اور صحابہ کرام دونوں سے محبت رکھنا اور ان کا ادب واحز ام کرنا انفیت ہے۔ جس کے دل میں اہل بیت اطہار یا صحابہ کرام میں سے اور ان کا ادب واحز ام کرنا انفیت ہے۔ جس کے دل میں اہل بیت اطہار یا صحابہ کرام میں سے کسی کا بعض ہے ، ایسے محف کی ایمان کی شمع بچھ چکی ہے۔ اس لیے سنیوں کو جائز نہیں کہ رافضیوں کی مجلس میں شرکت کریں۔ کہ اصحاب رسول مُن اللہ المحفیق کے دشمنوں سے میل جول مومن خالص الاعتقاد کا کام نہیں۔ آدمی اپنے دشمنوں کے ساتھ نشست و برخاست اور پخوش دلیات کرنا گوارا نہیں کر تا ہے تو دشمنان رسول ودشمنان اصحاب رسول علیہ الصلاۃ والسلام کے ساتھ کیا۔ اسلام کیا۔ اسلام کے ساتھ کیا۔ اسلام کیا۔ اسلام کے کور ان کیا۔ اسلام کے کور ان کی کور کور کیا۔ اسلام کیا کیا۔ اسلام کیا۔ اسلام کیا کیا۔ اسلام کیا۔ اسلام کیا کی کور کیا کی کیا۔ اسلام کیا کی کور کی کیا۔ اسلام کیا کی کور کی کیا۔ اسلام کی کی کی کور کیا کی کیا کیا کیا کیا کی کی کی کی کی کی کی کی کور کی کی کور کی کار کیا کی کور کی کی کرنا کی کی کی کی کی کی کور کی کی کور کی کی کرنا کور کی کی کرنا کی کی کور کی کی کرنا کور کی کی کی کرنا کور کی کرنا کور کی کرنا کی کرنا

الله تعالی ایسے لوگوں کو ہدایت اور عقل سلیم عطافر مائے اور ان کے ولوں کو صحابہ کرام دھی الله تعالی عندہ اجمعین کی عظمت وشان سے معمور فرمائے، آمین۔

> اسلام ما اطاعت خلفائے راشدین ایمان ما محبت آلِ محمد است

مشاجرات صحابہ سے متعلق ہم پر کیا لازم ہے؟

صحابہ کرام دخی الله تعالی عنهم اجمعین کے خوشگوار باہمی معمولات اور رشتہ دار یوں پر کشر روایات کتب حدیث و کتب سیرت وغیرہ میں موجود ہیں۔ اسی طرح بعض میں باہمی رخیشیں ہوئیں ہم انہیں اللہ تعالی کے سیر و کرتے ہیں۔ بیسب ہمارے قدسے او پچی با تیں ہیں۔ جب اُن سب سے جنت کا وعدہ ہولیا تو اب کسی مسلمان کے لیے جائز نہیں کہ وہ مشاجرات صحابہ کو لے کر معاذاللہ اُن پر زبان دراز کرے۔ صحابہ کرام اور اُنگے باہمی معمولات (مشاجرات صحابہ) سے متعلق امام اہل سنت امام احمد رضا خان رحمة الله علیه نے "فاوی رضوبہ" میں ہماری بہترین رہنمائی فرمائی فرمائی ج، یہاں چندسطروں میں اعلی حضرت کے کلام کا خلاصہ ملاحظہ کیجیے، فرماتے ہیں:

البعین سے لے کر قیامت تک امت کا کوئی بڑے سے بڑاولی کمی کم مرتبے والے صحافی کے رہے تک نہیں بیٹی سکتا۔

اگر اگر سحابہ کرام دھی الله تعالی عنهم اجمعین میں سے کسی کا کوئی ایسا فعل منقول ہے جو کم نظر کی آنکھ میں ان کی شان سے قدرے گرا ہواہو اور اس میں کسی کواعتراض کرنے کی گئجائش ملے تو (اس کے بارے میں اہل سنت کے علاءاور عوام کا طرزِ عمل ہیہ ہے کہ وہ) اس کا اچھامحمل بیان کرتے ہیں ، اللہ تعالی کا سچا فرمان "رَحِی الله عَنْهُمُ " (اللہ ان سے راضی) سن کرول کے آئینے میں تفیش کے زنگ کو جگہ نہیں ویتے۔ نہیں دیتے اور حقیقی آحوال کی شخصیت کے نام کا میل کچیل، دل کے آئینے پر چڑھے نہیں ویتے۔

ان کا فیصلہ کرام دخی الله تعالی عنهم اجمعین کے رہتے جماری عقل سے وراء ہیں ، پھر ہم اُن کے معاملات میں کیسے دخل دے سکتے ہیں اوران میں صورة جو تنازعات اور اختلافات واقع ہوئے ہم ان کا فیصلہ کرنے والے کون ہیں؟ ایسا ہر گزنہیں ہو سکتا کہ ہم ایک کی طرف داری میں

دوسرے کو براکینے لگیں، یا ان جھڑوں میں ایک فریق کو دنیاطلب تھہرائیں، بلکہ یقین سے جانتے ہیں کہ وہ سب دین کی مصلحتوں کے طلبگار تھے، اسلام اور مسلمانوں کی سربلندی ان کا فسٹ العین تھی، پھر وہ مُجنتہد بھی تھے، توجس کے اجتہاد میں جو بات اللہ تعالیٰ کے دین اور تاجدارِ رسالت مَنَاظِیْم کی شریعت کے لیے زیادہ مصلحت آمیز اور مسلمانوں کے آحوال سے مناسب ترمعلوم ہوئی، اس نے اسے اختیار کیا، اگرچہ اجتہاد میں خطاہوئی اور شیک بات ذہن میں نہ آئی لیکن وہ سب حق پر ہیں اور سب واجب الاحرام ہیں، ان کاحال بالکل ایسا ہے جیسادین میں نہ وی مسائل میں خود علائے اہل سنت بلکہ ان کے مُجنتهدین مثلاً امام اعظم ابو حنیفہ اور امام شافعی دھید الله علیم وغیرہا کے اختلافات ہیں۔

عظمت اصحاب رسول مَنَا لَيْنَا اللهُ عَلَى مِتَعَلَق بِهِ طویل کلام ہم نے اس کیے چیش کیا کہ فی زمانہ سوشل میڈیا پر بہت سے لوگ اصلاح اور تاریخی حقائق کے تام پر لوگوں کو اصحاب رسول مَنَالِيُنِیْمْ سے متعلق بد ظن کرتے دیکھے گئے ہیں، عاجز بذاتِ خود ایسے لوگوں کو جانتا ہے جو سوشل میڈیا کی اس آفت کا نشانہ ہے اور خوش عقیدگی سے بدعقیدگی کی گہری کھائی میں جاگرے۔ اللہ تعالیٰ ہمارے ولوں کو اصحابِ رسول مَنَالِیْنِیْمْ کی محبت سے معمور فرمائے اور ان پاکانِ اُمت کے معادے واوں کو اصحابِ رسول مَنَالِیْنِیْمْ کی محبت سے معمور فرمائے اور ان پاکانِ اُمت کے صدقے ہماری بے حساب بخشش ومغفرت فرمائے، آمین!۔
اے عزیز نہ کورہ بالا تمام کلام سے اجتماعیت ثابت ہوگئی اور اور تفرقہ مٹ گیا۔

^{1 (}ماخوذتفسير صراط الجدان، جو.ص419 مكتبة البدينه، كراجي/فتأوى رضويه، ج29، رضافا وُتليشن، الاهور)



Insurance policy



انشورنس كروانا كيسامي؟

لا نَف، املاک و اعضاء کی انشورنس سود ، ظلم اور جوا پر مشتمل

مونے کی وجہ سے حرام وناجائزہے،اس کی وضاحت ذیل میں ملاحظہ ہو۔

لا نف انشورنس كاطريقه كار:

لا كف انشورنس كاطريقه كاربه بوتاب كه انشورنس تميني

اور انشورنس کرانے دالے کے در میان ایک مخصوص معاہدہ ہو تاہے کہ اس مدت میں اتنی رقم بلا تساط کمپنی کو اُدا کرے گاء جن میں ہر قسط استے روپے کی ہو گی اور مدت بوری ہونے پر وہ رقم اضافے کے ساتھ اسے تمپنی کی طرف سے واپس کر دی جائے گی۔

انشورنس پالیسی میں ملنے والی اضافی رقم سود کیے ؟

. انشورنس تمپنی،انشورنس پالیسی لینے

والے سے اس کی رقم منافع کمانے یعنی کاروبار کرنے کی غرض سے لیتی ہے۔ جبکہ شرعی طور پر غور کرنے سے معلوم ہو تاہے کہ اس میں دیگر قباحتوں کے ساتھ ساتھ کاروبار کے تمام شرعی اصولوں شرکت ومضاربت (investment and partnership) کی باسداری نہیں کی جاتی جس کی بناء پر اس رقم کی حیثیت فقط قرض (loan) کی ہوتی ہے۔ جس کی وجہ سے پالیسی لینے والا مخص (قرض خواہ)اور انشور نس سمینی (قرض دار) کی حیثیت ر تھتی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ ممپنی کو کچھ بھی ہو جائے لوگ اپٹی رقم واپس ضر در لیتے ہیں جو کہ قرض ہونے کی دلیل ہے، اب چونکہ شرعی اعتبارے قرض پر معاہدے کے تحت کچھ زائد منافع لینا اگرچہ فکس (fix) نہ ہو سود ہو تاہےاور اس انشورنس پالیسی کے معاہدے کے تحت کمپنی پالیسی ہولڈر کو جمع شدہ رقم پرزائدر قم دینے کی پابند ہوتی ہے۔اس لیے انشورنس پالیسی خالص سودی معاملہ ہے۔

قرض پر تفع لینے ہے متعلق رسول الله مَنَّالَيْکِمُ نے ارشاد فرمایا:

"ہروہ قرض جس سے نفع ملے دہ سودہے " (1)

سودی نفع کی مذمت:

سودی نفع کی قر آن و حدیث میں مذمت بیان کی گئی ہے اور اسے الله و

ر سول کے ساتھ جنگ قرار دیا گیاہے، چنانچہ ارشاد باری تعالی ہے:

(1) لَآيُتُهَا الَّذِينَ المَنُوالا تَأْكُلُوا الرِّبْوا أَضْعَافًا مُّضْعَفَةٌ " وَّا تَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (2)

ترجمه كنزالعرفان: "اسے ايمان والو! وُكنا دَر دُكناسودنه كھا وّاور الله سے دُرواس اميد پر كه ختهيں

کامیابی ال جائے"

(2) لَيَّايُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَ ذَرُوا مَا بَقِى مِنَ الرِّلَوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ فَإِنْ لَمْ
 تَفْعَلُوا فَأَذَنُوا بِحَرْبِ مِّنَ اللهِ وَرَسُولِهِ * (3)

ترجمہ کنزالعرفان: "ائے ایمان والو! اگرتم ایمان والے ہو تواللہ سے ڈرو اور جو سود باتی رہ گیاہے اسے چھوڑ دو۔ پھر اگرتم ایسا نہیں کرو کے تو اللہ اور اللہ کے رسول کی طرف سے الزائی کا یقین

كركو"

سود کی ندمت پر دوحدیث پاک ملاحظه سیجیے:

(1) حضرت جابر دهی الله تعالی عند سے روایت ہے، حضور سیدُ المرسلین مُنَّا اللَّیْمُ نِی سود کھانے والے، کو الله عند الله عند الله اور اس کی گواہی دیئے والے پر لعنت فرمائی اور فرمایا کہ سیہ اس گناہ میں برابر ہیں۔(4)

(2) حضرت عبدالله بن مسعود رض الله تعالى عندس روايت ہے ، حضورِ اقدس مَكَالْيَّمُ اللهِ اللهِ اللهُ الل

^{1 (}كتزالعبال، كتاب الدعوى. فصل في لواحق كتاب الدين، ج 6.ص 533. حديث 15516، دار الإشاعت كراجي/ابن اني شيبه) 2 (أل حمران آيت 130)

⁽¹³⁰⁰⁰⁰⁾ NO 100 2

^{3 (}البقرة)يت 289-290)

^{4 (}صحيح مسلم، كتاب البساقاة والبزارعته، بأب اللعن اكل الريأومو كله ج2. ص384، حديدة 4066 قريزيك سفال، لاهور) 5 (مستدرك، كتاب البيوع، ان او في الرباعوض الرجل البسلم، ج2، حديث 2259، شهير برادرة، الاهور)

انشورنس پالیسی ظلم کیے ؟

ظلم کی صورت میہ ہے کہ انشورنس کرائے والا اگر دو یا تین

قسطیں دینے کے بعد باتی اقساط ادانہ کرے اور پالیسی ختم کر ناچاہے تواس کی ذاتی جمع کروائی ہوئی ر قم اس کوواپس نہیں دی جاتی۔اور یہ بات صریحاً ظلم ونا جائز ہے۔ قر آن وحدیث کے خلاف اور باطل طریقے ہے ایک مسلمان کا مال کھانا ہے۔ اور کسی کا مال کھانے کے بارے میں ارشادِ باری تعالیٰ ہے :

وَلَا تَأْكُلُوا الْمُوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ (1)

"اور آليس بيس ايك دوسرے كامال ناحق نه كھاؤ" ترجمه كنزالعرفان:

اور حدیث پاک سمی کا مال ظلمالینے کے بارے میں ارشادِ نبوی مَنْالْفِیْمْ ہے: "جس نے بالشت بھر زمین ظلما لی(یعنی غصب کی) بروز قیامت اسے سات زمینوں کا طوق پہنا یاجائے گا" ⁽²⁾

انشورنس پالیس جواء کیے ؟

املاک لیتنی مکان و د کان و گاڑی وغیرہ کی انشورنس یوں ہوتی ہے کہ انشورنس تمینی اور انشورنس کر وانے دالے کے در میان ایک مخصوص معاہدہ ہو تاہے کہ اس

مدت میں اتنی رقم بالا قساط تمپنی کوادا کرے گاجن میں ہر قسط استے روپے کی ہو گی اور اس مدت کے اندر وہ املاک ضائع ہو گئیں تو تمپنی اس کی تلافی کی ذمہ داری قبول کرتی ہے۔اور اگر املاک

کو کوئی نقصان نہ پہنچا تو قسطوں کی صورت میں ادا کی گئی رقم ضائع ہو جائے گی۔ یہ سوائے جواکے کچھ نہیں کہ جوامیں بھی یہی ہو تاہے کہ یاتو آئیں گے یا جائیں گے۔اور جوے کے متعکق ارشادِ

باری تعالی ہے:

يَآيُهَا الَّذِيْنَ امَنُوٓا إِنَّهَا الْخَمُرُ وَالْهَيْسِرُ وَالْأَحْمَابُ وَالْأَوْلَامُ رِحْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطِنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُغَلِّحُوْنَ ⁽³⁾

^{1 (}المقرة، آيت188)

^{2 (}محيحمسلم، كتاب البساقاة. بأب تحريم الظلم وغضب، ج2. ص 394، حديث 4108، قرين بك سفال، لاهور)

^{3 (}البائدة، آيت90)

ترجمہ کنزالعرفان: "اے ایمان والو!شراب اور جوااور بت اور قسمت معلوم کرنے کے تیر ناپاک شیطانی کام ہی ہیں توان سے بچتے رہو تا کہ تم فلاح پاؤ"۔

جوے کی خدمت بیان کرتے ہوئے آ قاکر يم مَنْ الْفِيْمُ في ارشاد فرمايا:

"جس نے مزد شیر (جوئے کا ایک تھیل) کھیلا تو گویا اس نے اپناہاتھ خزیر کے گوشت اور خون میں ڈیوویا"۔(1)

🖈 لبذا انشورنس پالیسی سود، ظلم اور جواپر مشتمل معامله ہونے کی وجہ سے ناجائز وحرام ہے۔

سودی رقم کا کیا کرناچاہیے:

واب ن بیت مجد دِدین وملت امام احمد رضاخان رحمة الله علیه فرماتے ہیں:
" زرِ حرام (حرام مال) والے کویہ تھم ہوتا ہے کہ جس سے لیااسے واپس دے وہ نہ رہااس کے وار قوں کو دے پینہ نہ چلے تو فقراء پر نفعد ق کرے یہ تفعد ق بطور تبرع واحسان و قیر ات نہیں بلکہ اس لئے کہ مال خبیث میں اسے تصرف حرام ہے اور اس کا پیتہ نہیں جے واپس دیا جاتا لہذا وقع خبث و بحکیل توبہ کے لیے فقراء کو دیٹا ضرور ہوا، اس غرض کے لئے جومال وفع کیا جائے وہ مساجد و غیرہ امور خبر میں صرف کہ خبیث ہے اور بیہ مواضع خبیث کا مصرف نہیں، بال فقیر اگر لے کہ بول وقیضہ اپنی طرف سے معجد میں وے دے تو مضائقہ نہیں۔ (3×2)

^{1 (}صحيح مسلم. كتأب الشعر بأب تحريم اللعب بالنر دشير. ص208 مديث 5856 ڤريديك ستأل لاهور)

^{2 (}فتأوڭارضويە، ج17،ص352رضافاۇنلىش،لاھور)

^{3 (}مأخوذفتاوي،دارالافتاءفيضان،شريعت)

﴿ بینک سے طفے والے اس اضافی رقم (سود) سے متعلق بعض علاء کی دائے ہے کہ لاعلمی کی دوجہ سے اگر کسی نے (saving account) کے بچائے (current account) میں بید رکھوا دیا اور کچھ عرصہ بعد اس پر اضافی رقم جمع ہو چک ہے تواب اُسے چاہیے کہ اِس اضافی رقم کو بینک سے تواب اُسے چاہیے کہ اِس اضافی رقم کو بینک میں پڑا مذہبی سے تک کی شرعی فقیر کو دے دیں اور اس کو بینک میں پڑا نہ رہنے دیں، کیونکہ عین ممکن ہے بینک والے یہ بید دوبارہ کسی سودی معالمے میں لگائیں یا بعض او قات یہ بیبہد دین و مسلک کے خلاف بھی استعال ہو تا دیکھا گیاہے، لہذا اِس اضافی رقم کو بینک سے نکلوا کر بغیر ثواب کی نیت سے کسی شرعی فقیر کو دینا بھی جائز ہے۔

بينك فكل وْليوزك:

ینک میں (fixed deposit) کی صورت میں کچھ رقم جمع کروائی

ہاتی ہے ، یہ رقم ایک طے شدہ مدت تک (fixed deposit account) میں رہتی

ہے۔ اس پر بینک کچھ عرصہ گزرنے کے بعد رقم جمع کرانے والے کو منافع (profit) دیتا

ہے۔ چونکہ جمع کرائی گئی رقم ایک قرض کی حیثیت رکھتی ہے اور قرض کی واپلی پر کچھ منافع لیٹا

سود ہے۔ لہذا یہ منافع میں حاصل ہونے والی رقم خالص سود ہوتی ہے، اے اپنے استعال میں

لانا جائز نہیں ۔ چول کے نام پر ایک خاص مدت کے لیے بینک میں پسیے جمع کر وادینا اور پھر اس

پرسے منافع لینا بھی اس تھم میں واغل ہے۔ اس سے متعلق مزید وضاحت انھورنس کے باب

میں گزر پچی ہے، وہاں ملاحظہ ہو۔ بینک سے سودی قرضے لینا بھی جائز نہیں۔ (1)



Time Value of Money



سود کاایک حیلہ:

سلامک پروفیسر کی جانب سے اسلامک بیرے ایک اکنامکس کے پروفیسر کی جانب سے اسلامک بیکنگ کے ایک اصول پر اعتراض اٹھایا گیا اور علماء متعلق یہ کہا گیا ہے کہ وہ اس مسئلہ کی حقیقت سے ناواقف ہیں اور انجانے یس اِسے سود کہہ دیے ہیں۔ اعتراض کچھ یوں تھا کہ:
"اگر بلا سود قرض دینے کارواج ہو جائے آویہ کی قرض دینے والے پر زیادتی کا سبب بن سکتا ہے۔ مثلاً: ایک مخص کی کودس سال کے لیے ایک ہزار روپیہ کی فجی ضرورت میں قرض (loan) دیتا ہے اور چونکہ افراط زر (inflation) کی وجہ سے دن بدن کرئی کی قیت (value) گھٹ رہی ہے۔ لہذا وس سال کے بعد اس ایک ہزار روپیہ کی قیت اس ایک ہزار روپیہ کی قیت اس لیے قرض دینے والے کو سود لینے کا حق مانا چاہیے تاکہ اُسکان تھان شہو"۔

بظاہر یہ اعتراض درست لگا اور اس کا جواب جائے کا اشتیاق بھی ہوا، البذیس نے اس اعتراض کا شرگی جو اب جائے کے لیے وارالا قماء المسنت (دعوتِ اسلامی) سے رجوع کیا اور الحمدُ یلد مفتیانِ دعوتِ اسلامی کی جانب سے اس اعتراض پر عین شرعی اصولوں کے مطابق تفصیلی تحریری جواب پایا۔ مفسر قرآن شادر بخاری و مسلم علامہ غلام رسول سعیدی علیہ رحمہ نے بھی مقالاتِ سعیدی یکی اس سے متعلق مخصر آلکھا ہے۔ ہم یہاں ان دونوں کا مول کو تر تیب و اضافہ کے ساتھ بیش کرتے ہیں۔

شريعت كااصول:

اعتراض میں بیان کے گئے قلفے کودلیل بناکر قرض پرسے نفع لینا جائز نہیں ہوگا، یہ فقط سود کو جائز قرار دینے کا ایک حیلہ ہے۔ دراصل سود کو شریعت نے ہر صورت حرام

قرار دیاہے۔ سود کی تعریف میہ ہے کہ" مسلمان کو دیے گئے قرض پر جو (مشروط) نفع (profit) ملے دہ سودہے"۔ قرض میں میہ اصول ہے جو چیز قرض دی جائے وہی چیز اتنی ہی مقدار میں واپس لی جائے گی۔ اس کی قیت (value) کا اعتبار نہیں ہوگا۔ صدیث پاک میں ہے: "ہر وہ قرض جس سے نفع ملے وہ سودہے " (1)

واضح ہو گیا کہ اعتراض میں بیان کی گئی صورت سودی ہے، اس فلسفہ کو دلیل بناکر قرض پر نفح لینا جائز نہیں ہوگا۔ لہٰڈ ااگر کس نے ایک لا کھ روپے قرض دیے تو والی پر ایک لا کھ روپے ہی لے گا ، یہ ٹہیں کر سکتا کہ والی پر لا کھ سے زیادہ لے اگر چہ لا کھ کی قدر (value) کم ہو جائے۔ یو نہی اگر کسی نے دو تو لہ سونا قرض دیا تو والی پر دو تو لہ سوناہی لے گا، یہ نہیں ہو سکتا کہ دے سونا اور دیتے وقت یہ شرط ہو کہ والی پر اسٹے پسے لول گا۔ یعنی جو چیز وے گا وہی والیس لینی ہوگی۔ ہال بغیر شرط کے قرض والیس کرتے وقت مقروض لینی خوشی سے پھور قم زیادہ دے یا جو چیز قرض لی مقی اس سے اعلیٰ چیز والیس کرے تو یہ لینا جائز ہے۔

اگر پیسے دے کر زیادہ پیمے کسی بھی وجہ سے لیے جائیں تو وہ سود بی تھہرے گا۔ یہ کہنا کہ پیمے کی قدر (value) کم ہوتی ہے اس لیے قرض دینے والا خسارے میں ہے ، (value) کے اعتبار سے پچھر قم زیادہ ہونی چاہیے۔ یہ بات درست نہیں کیونکہ اگر پیسے کی قدر کو مد نظر رکھاجائے تو سود کے ساتھ ساتھ ساتھ لڑائی جھڑے کی صورت بن جائے گی کیونکہ:

🖈 ہر کوئی اپنی بی (value) متعین کرے گا۔

اگر کہاجائے کہ حکومت کی طرف ہے یہ (value) مقرر ہو توبہ بہت مشکل ہے کہ

حكومت اس قتم كاكو ئى معيار بناسكے۔

اگر بالفرض بن بھی جائے تو عوام حکومت کی اس بات لیتی فکس کی گئی (value) پر عمل کر مسلم کے مشکل ہے۔

^{1 (}كنزالعبال. كتاب الناعوى فصل قالواحق كتاب الدين. ج 6، ص 533 مديدة 15516 دار الاشاعت كراجي/اين ايشيبه)

اور اگر بالفرض کی ملک کی معیشت ترتی کر جائے اور پینے کی قدر (value) بڑھ جائے ، تو
 کیااب وہ شخص جس نے قرض دیا تھا۔ وہ والی پر کم پینے لینے کو تیار ہو گا؟؟ یاصر ف پینے کی قدر کم ہونے پراس سودی جیلے کا خیال آیا۔

اصولِ شرعی کی حکمت :

ان پیچید گیوں اور لڑائی جھڑوں سے بیخ کے لیے شریعت نے لیعن اشیاء میں اس کے والی میں اختلاف ہو سکتا ہے۔ بعض اشیاء میں اس کے قرض کالین دین حرام قرار دیا کہ اس کی والی میں اختلاف ہو سکتا ہے۔ جیسے جو شے مثلی نہیں اس کا قرض میں دینا اور لیتانا جائز اس وجہ سے ہے کہ قرض میں مثل لوٹانے کا حکم ہے ، تو جب اس کی مثل (اس طرح کی کوئی چیز) ہی نہیں تو مثل کیسے واپس کی جائے۔ مثلاً بھیش ہی کو لیجھے کہ ہر بھینس ایک طرح کی نہیں ہوتی ، کوئی موٹی ہوتی ہے تو کوئی دبلی پالی۔ قرض خواہ کہے گا میں نے یہ بھینس لین ہے ، مقروض کے گا: نہیں آپ کی اُس طرح کی نشی نتیجہ سے ہوگا کہ دونوں میں جھڑا ہو گا جو شریعت کو سخت ناپسند ہے ، اس وجہ سے یہ ناجائز ہمیں وہ چیے دمین اور ہر وہ چیز جس میں نفاوت ہو کہ اس جیسی واپس کرئی مشکل ہو ، اس جیسی واپس کرئی

بہارِ شریعت میں ہے: "ادائے قرض میں چیز کے سنے مینگے ہونے کا اعتبار نہیں مثلاً دس سیر گیبوں قرض کیے سے آن کی قیت ایک روپیہ تھی اور اداکرنے کے دن ایک روپیہ سے کم بیازیادہ ہے اس کا بالکل لحاظ نہیں کیا جائے گاوہ ہی دس سیر گیبوں دینے ہوئے "۔(1) در مختار اور رو المختار میں ہے: "قرض مثلی چیز میں صحیح ہے نہ کہ اس کے غیر قیتی (مثلی) چیز وں میں جیسا کہ حیوان لکڑی، غیر منقولی اشیاء جیسے زمین اور ہر وہ چیز جس میں تفاوت ہو کہ اس جیسی واپس کرنی مشکل ہو"۔(2)

^{1 (}بهار شريعت، حصه، ص11. ص757مكتمة المدينه، كواچى/الدر المغتار، كتاب البيوع/فتاوى هنديه، كتاب البيوع) 2 (ردالمغتار، كتاب الهيوع، فصل في القرض/بدائع الصنائع. كتاب القرض)

مسئله كالحل:

اس مشکل کا حل سود نہیں، پلیوں کی قدر (value) کم ہونے کا خدشہ ہو تو

اسکا حل شریعت میں موجود ہے۔ اس کا حل ہے ہے کہ قرض دینے والا مقروض کو ایک ہز ار روپیہ

کی پاکتانی کر نمی کے بجائے ایک ہز ار روپیہ کی متحکم کر نمی (stable currency) مثلاً فالمہ یا چاول وغیرہ (تول کے) دے اور دس سال بعد

ڈالر ، پاونڈ یا ریال دے ، یا کوئی جنس مثلاً غلہ یا چاول وغیرہ (تول کے) دے اور دس سال بعد

اتنی ہی غیر ملکی کر نسی یافلہ اور چاول وصول کرے اور مقروض اس کو اس کی پیش کش کرے۔

اس صورت میں قرض خواہ کو کوئی نقصان بھی نہیں ہوگا اور وہ سود کی لعنت سے بھی محفوظ رہے

گا۔ اس طرح ایک طریقہ ہیہ کہ روپوں کے بجائے سونا، چاند کی قرض دے اور واپس بھی وہی

گا۔ اس طرح ایک طریقہ ہیہ کہ روپوں کے بجائے سونا، چاند کی قرض دے اور واپس بھی وہی

لے، سونے چاند کی وغیرہ کی قیمت بھی مستحکم رہتی ہے۔ ان صور توں میں اگر کسی چیز کی
قدر (market value) بڑھ بھی جائے تو پچھ محتی نہیں رکھتا کیونکہ یہ قرض کا معاملہ شریعت کے اصول (جو دیں گے وہی لیس گے) کے مطابق طے پایا ہے۔

معاملہ شریعت کے اصول (جو دیں گے وہی لیس گے) کے مطابق طے پایا ہے۔

احاديث ميں پيشينگو كي:

شرعی احکامات میں اپنی عقلی قیاس آرائیاں کرنے سے بچنا ضروری ہے۔ اپنی تمام دینی و دنیاوی معمولات سے متعلق شرعی احکامات جائے کے لیے علاء سے رجوع کرناچاہئے۔ رقم کی دیلیو کم ہونے یا کسی اور بات کو دلیل بناکر قرض پر اضافی طفے والی سودی رقم کو حلال تشہر الیناایک حرام عمل ہے۔احادیث میں اس سے متعلق پیشینگوئیاں کی گئی ہیں کہ بعض لوگ سود کو حلال تھہر الیں کے چنانچہ:

- (1) امام اوزاعی علیه رحمه سے روایت ہے، آقا کریم مَثَّاثِیْمُ نے ارشاد فرمایا:" لوگوں پر ایک زمانہ ایسا آئے گا کہ وہ سود کوخرید و فروخت میں حلال بنالیں گے"۔(1)
- (2) اور رسول الله مَنَّالَيَّنَا فِي ارشاد فرمايا: "جب به أمت شراب كونبيذك ساته اور سودكو كاروبارك ساته حلال بنالے كى اور رشوت كو تخفه بنالے كى اور تجارت كو زكوة بنالے كى تواس

^{1 (}دُخيرة العقبي، في شرح البجتري، كتاب البيوع، بيعدين في بيعتم 35 ص 140 دار البعراج الدولية)

وقت ان برصے ہوے گناہوں کے سببان کی ہلاکت ہوگی "_(1)

صدقه (قرض)اور كاروبار مين فرق سيجيح:

قرض کو کار دبار کے طور پر تہیں دیکھنا چاہے کہ جب بندہ کسی کو صدقہ دیتا ہے تو جے صدقہ دیتا ہے تو دیتا ہے کہ حد قد دیتا ہے صدقہ دیتا ہے صدقہ دیتا ہے کہ صدقہ دیتا ہے صدقہ دیتا ہے کہ صدقہ ہے بہت فضائل وبرکات ہیں۔ تو قرض دینا بھی صدقہ ہے بلکہ صدقہ ہے بلکہ صدقہ سے بھی بڑھ کر کی ہے۔ اس لیے ایک مسلمان کو چاہیے کہ وہ دوسرے مسلمان کو قرض دے کراس سے کاروبار نہ کرے کہ مقروض زیادہ چیے واپس کرے بلکہ یہ نیت ہو کہ یس اللہ تعالی کی دضا کے لیے ایک مسلمان کی مدد کر رہا ہوں۔ انشاء اللہ دنیاد آخرت میں اس قرض کا بہترین اجر عطا کیا

(1) ارشاد نبوی مَلَّالَیْکِمْ ہے:" کوئی شے قرض میں دیناصدقہ میں دینے سے بہترہے"۔(³⁾

جائے گا۔(2) قرض پر اجرو تواب سے متعلق ذیل میں دواحادیث ملاحظہ موں:

(2) اور رسول اکرم نور مجسم منگالی نی ارشاد فرمایا: "میں نے شبِ معراج جنت کے دروازے پر لکھا ہوا دیکھا کہ صدقہ کا ثواب دس گنا اور قرض دینے کا ثواب اٹھارہ گنا ہے۔ چنانچہ، میں نے جرائیل سے اس بارے میں نوچھا کہ قرض کے صدقہ سے افضل ہونے کی کیا دجہ ہے؟ تو انہوں نے بتایا کہ (صدقہ تو) وہ بھی مانگ لیتا ہے جو محتاج نہ ہو گر قرض مانگنے والا حاجت وضرورت کے بغیر قرض نہیں مانگنا "۔(4)

^{1 (}كانزالعمال، كتأب القيامته، قسم الأول مرف قاف ج11، ص118 مدين 31311 دار الإشاعت، لاهور)

^{2 (}ماعوذفتاوى دار الافتاء اهلستى دعوب اسلامى ريفرلس 9294 مقالاس سعيدى ص 369. قريد بك سفال الاهور)

^{3 (}السنن الكيري للهيبق. كتأب البيوع. بأب في قضل الالقراض ج 5. ص 354 مكتبة دار الباز مكته المكرمته)

^{4 (}سان اين ماجه كتاب الصدقات باب القرض ، ج2، ص109 حديث 2421 ضياء القران إسلى كيشتر الاهور اشعب الإيمان)

بیرون ملک مقیم شخص کو قرض دینے سے متعلق ایک مسئلہ:

أيك اتهم مسئله جو

عمومی طور پر بیرون ملک قرض کی رقم مجھوانے پر پیش آتاہے وہ یہ ہے کہ کسی دوسرے ملک میں مقیم شخص کو قرض دینے پر (قرض کی) والپی کے وقت کس ملک کی کرنسی کا اعتبار کیا جائے گا۔ قرض دینے والے کی یا قرض لینے والے کی؟

تفصیل: مثال کے طور پر زیدنے کویت سے بکر کو پاکستان میں 2 ہزار وینار بطور قرض بھیج۔ یوں کہ زید نے کویت میں کرنسی ایکی بھی سے رابطہ کیا اور اسے دینار کی شکل میں رقم اوا کی اور انہوں نے وہ رقم بکر کے پاکستانی بینک اکاؤنٹ میں پاکستانی کرنسی کی صورت میں ٹرانسفر کر دی۔ یوں بکر کے اکاؤنٹ میں 2 ہزار وینار کی مالیت کے برابر پاکستانی کرنسی پہنچ گئ استفر کر دی۔ یوں بکر کے اکاؤنٹ میں 2 ہزار وینار کی مالیت کے برابر پاکستانی کرنسی پہنچ گئ استان کر دیا ہے۔ زید نے دمثال کے طور پر 7 لاکھ روپے بکر کے اکاونٹ میں پہنچ جو بکر نے وصول کیے)۔ زید نے قرض دیتے وقت بکر کو کہا تھا کہ جب آپ واپس کروگے تو میں دینار ہی واپس لوں گا۔ اب پچھ عرصہ بعد جب قرض کی اوا نیگی کاوفت آیا تو دینار کی قدر (value) میں اضافہ ہو چکا تھا۔

عرصہ بعد جب قرص لی ادایتی کا دفت ایالو دیناری قدر (value) تی اضافہ ہوچا گا۔ اب سوال یہ ہے کہ قرض کی واپسی کے دفت کیا 2 ہزار دینار واپس دیناہوں گئے یا 7 لا کھ پاکستانی روپے جو بکرنے وصول کیے تھے وہ واپس کرناہو نگے۔؟

اس سوال کاجواب یہ ہے کہ زید بکرسے فقط اتنی پاکستانی کرنسی لینے کا مستحق ہے، جنتنی بکر کے اکاؤنٹ میں منتقل ہوئی تھی (لیعنی 7 لا کھ روپے)۔اس سے زیادہ کا مطالبہ کرنا یا پاکستانی کرنسی کے بجائے کسی اور کرنسی کامطالبہ کرناشر عاً جائز نہیں۔

اس مسئلہ کی تفصیل اور وجہ کچھ یوں ہے کہ زیدئے بکر کو جب قرض دیا تو اگر چہ اس نے کویت سے دینار بھیجے لیکن جو چیز بکر کے اکاؤنٹ میں پکٹی اور اسے ملی وہ پاکستانی کرنسی تھی نہ کہ دینار۔اور قرض کاشر عی اصول ہیہے کہ جوچیز جس حالت میں مقروض نے وصول کی اس کی مثل اتنی بی چیز واپس کرنامقروض پرلازم ہے۔اس کے برخلاف قرض دیتے وقت یہ طے کر لیٹا کہ اس سے اعلیٰ کوالٹی کی چیز واپس کرنی ہوگی یا قرض میں دی گئ چیز کے علاوہ کوئی اور چیز واپس کرنے کی شرط لگانا جائز نہیں بلکہ الی شرط باطل و کا لعدم ہے۔(1)(2) الہذا چاہیے کہ بیرون ملک کسی شخص کو قرض دیتے وقت اس چیز کو ملحوظ خاطر رکھا جائے وگرنہ بعد میں مطالبہ نہیں کیا جاسکتا۔

ال مسئله كاحل:

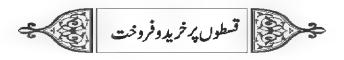
ال مسئلہ کا ایک حل ہے کہ قرض لیتے وقت قرض لینے والا قرض دیئے
والے کے ملک بین کسی شخص کو اپنا و کیل مقرر کر دے جو اِس کی طرف سے قرض کی رقم
وصول کر لے۔اب اس صورت میں و کیل نے جور قم جس کرنی میں وصول کی ہے وہی قرض
خواہ کو واپس کرنا ہوگی، کہ قرض کا اصول یہی ہے کہ جو چیز جس حالت میں مقروض نے وصول
کی اسی کی مثل اتنی ہی چیز واپس کرنا مقروض مرالازم ہے۔

کی اسی کی مثل اتن ہی چیز واپس کرنامقر وض پر لازم ہے۔
مثال کے طور پر بکرنے زیدے قرض لینے کے لیے زید کے ملک (کویت)
میں کسی شخص (عمر) کو اپناو کیل مقرر کیا۔ عمر نے زیدے 2 ہزار دیناروصول کیے اور پاکستان
میں ایکی پی کئی کے ذریعے بکر کو بھجوا دیئے۔ اب اس صورت میں اگر چہ ایکی پی ہو کر بکر کے
میں ایکی پی کے ذریعے بی آئے لیکن چو نکہ اب وصول بکرنے نہیں بلکہ بکر کے وکیل عمر
اکاونٹ میں 7لاکھ روپے ہی آئے لیکن چو نکہ اب وصول بکرنے نہیں بلکہ بکر کے وکیل عمر
نے کیے شے اور وکیل (عمر) کا وصول کرنا در حقیقت بکر کائی وصول کرنا ہے ، البذا اب پینے کی
قدر (value) کم ہویازیادہ۔ قرض کی واپس کے وقت بکر کو 2ہز ار دینارہی واپس کرنا ہوں گے۔

**

^{1 (}ماخوز قمآدي دارالا قمآه الل سنت وعوب اسلامي، ريقرنس نمبر UK34)

² مئلہ (پیسے کی قدر) سے متعلق مزید دضاحت اور فتہا کی عبارات دیکھنے کے لیے دار الافقاء الل سنت دعوت اسلامی کے قادی ریفرنس نمبر



قسطول کے کاروبارے متعلق تھم شرعی:

مختلف افراد ، کمپنیال اور ادارے ادھار پر

سامان فروخت کرتے ہیں اور قیمت اقساط (installments) پر وصول کی جاتی ہے قیمت باہمی رضامندی سے طے کر لی جاتی ہے، عام طور پر یہ موجودہ بازاری قیمت سے زیادہ ہوتی ہے، اس طرح قسط کی رقم اور ادائیگی کی کل مدت پہلے سے طے ہوتی ہے۔ ہی (sold item) خریدار کے حوالے کر کے اس کی ملک میں دے دی جاتی ہے، تو یہ عقد شرعاً جائز ہے۔ (یہ سود بلکل نہیں کیو کلہ اس میں بیچنے والے نے اپنی چیز کی رقم بیچنے سے قبل ہی فکس کی ہے اور خرید نے والے نے اس پر رضامندی کا اظہار کیا لہذا ہے عقد جائز ہے)۔ بشر طیکہ ہیہ کہ اس میں بیہ شرط شامل نہ ہو کہ اگر فدا نخواستہ مقررہ مدت میں اقساط کی ادائیگی میں تاخیر ہوگئی تو ادائیگی کی اضافی مدت کے عوض قیمت میں کی خاص شرع ہے کوئی اضافہ ہوگا۔ ادر اگر تاخیر کی مدت کے عوض میں اضافہ کر دیا تو یہ سود ہے اور حرام ہے۔ فی نفسہ حدد دوشرع کے اندر اقساط کی بھے جائز ہے۔ تسطوں پر سامان لینے پر جو اضافی رقم ادائی جاتی ہے وہ سود میں شار نہیں۔ (1)





GP Fund DSP Fund



سرکاری اورچند پرائیوٹ اداروں ش (gp fund) ، (dsp fund) وغیرہ کے نام ہے کھے (dsp fund) ، (gp fund) وغیرہ کے نام ہے کھے (schemes) متعارف کروائی جاتی ہیں جس کا طریقہ کاریہ ہو تاہے کہ ان اداروں ش کام کرنے والے ملاز مین کی تنخواہوں میں سے ہر مہینے ایک مخصوص رقم کی کوئی کر لی جاتی ہے اور ریٹائیر مینٹ کے موقع پر اس مخت شدہ رقم پر پکھ منافع (profit) دیا جاتا ہے۔ اس منافع کے حلال وحرام ہونے کی تین صور تیں ہیں۔ چنانچہ مفتی اکمل حفظ اللہ تعالی فرماتے ہیں:

(1) پہلی صورت بیہ کہ طازم (employe) اس سیم پر داخی نہیں ہے اور زیر و سی اُس کی شخواہ ش کوئی کی گئی ہو اور طازم یہ بھی نہیں جانتا کہ اس بیسے کو کاروبار میں لگایا بھی گیاہے یا نہیں۔ توبیمال خصب کرنے کی صورت ہے۔ ایکی صورت میں اُس کی اصل رقم تواس کے لیے لینا جائز ہے۔ البتہ اس مال پہ طنے والا منافع نہ لے تواس کے لیے بہتر ہے۔ لیکن چو تکہ بیمال زیر دستی خصب کیا گیا تھا اور اب مال خصب کرنے والا اوارہ خود لہی مرضی سے اصل بیسہ واپس کرتے وقت یکی اضافی رقم دے، توبہ لیمانا جائز وحرام بھی نہیں۔

(2) دوم ہیر کہ کوئی طازم اپنی مرضی ہے تخواہ یس سے کوئی کی اجازت دے مثلاً کی فارم پر
(2) دوم ہیر کہ کوئی طازم اپنی مرضی ہے تخواہ یس سے کوئی کی اجازت دے درمیان کاردبار
(ves / no) کہ جگہ (ves) پر نشان لگا دے۔ اور اس کے اور ادارے کے درمیان کاردبار
کے کی اصول شرکت یا مضاربت (investment or parntnership) کا معاہدہ
می نمیں، تواب اس کے مال کی شرعی حیثیت صرف ایک قرض کی ہے۔ اور سے اس مال پر
منافع لیما شرعاجائز نمیں کہ حدیث یاک یس ہے: "ہروہ قرض جس سے نقع کے دوسود ہے اس

(3) تیسری صورت بیہ کہ ادارہ طازم سے کے کہ ہم اس کی تنخواہ سے ہر ماہ اتنی رقم کی کاروبار میں لگائیں گے ، ریٹائر مینٹ کے وقت آپی اصل رقم ادر جمع ہونے والا منافع آپی و دے دیا جائے گا اور (بیر منافع (percentage) میں طے ہو فکس رقم میں نہ ہو) اب اگر طازم اجازت ویدے ، توبیہ حاصل ہونے والا مال حلال ہے۔ ایسے میں طازم کوبیہ جائے کی بھی حاجت نہیں کہ بید بیبیہ کس کاروبار میں ادارہ لگائے گا (اصولِ مضاربت)۔ (یہاں بیہ بات یا در ہے کہ اب چو تکہ یہ ایک خالص کاروباری معا کدہ ہے لہذا ہیہ طئے والا منافع نہ ہی فکس ہو سکتا ہے اور نہ ہی منافع کی گار شی ہے بلکہ اگر کوئی (Loss) ہوجائے تو تقصان اٹھانا ہوگا)۔

 $\Rightarrow \Rightarrow \Rightarrow$



زكوة كالحكم



ز کوۃ اداکین اسلام میں سے ہے۔ فی نمانہ زکوۃ کی ادائیگ کے معالمہ میں لوگ بہت غفات برستے ہیں، عوام کی ایک اکثریت ہے جوز کوۃ ادائیس کرتی۔ اسٹ مال کوناپاک کرکے لیتی زکوۃ ادانہ کرکے، ونیاد آخرت میں غضب اللی کے مستقل ہو کریہ سجمنا کہ مال میں کثرت ہوگئ ہے ، بہت بڑی حماقت ہے۔ ہم ایسے مال سے اللہ تعالی کی ہناہ چاہتے ہیں جو اللہ عزوجل کے غضب کا سبب ہے۔ تر غیب کے لیے یہاں زکوۃ سے متعلق مختمر آلکھتے ہیں۔

رسول الله مناطبینی کے وصال کے بعد ایک گروہ جو تمام ادا کین اسلام پر عمل کر تاتھا، لیکن المرا کین اسلام پر عمل کر تاتھا، لیکن المبول نے ذکوۃ کی دائیں سے جب الکار کیا تو خلیفہ اول سید تاصد این اکبر دھی الله تعالی مند نے ذکوۃ الله تعالی کا حق ہے۔ الله تعالی کا حق ہے۔ الله تعالی کی مندم اگریہ (لوگ) رسول الله منافین کی بطور ذکوۃ جمع کروانے والی رسی بھی روکیں کے تو بیس ان سے ضرور جہاد کروں گا "۔(1) اس سے اسلامی معاشی نظام میں ذکوۃ کی اہمیت کا اندازہ لگایا جا سکتا ہے۔ زکوۃ ادانہ کرنے والوں سے متعلق الله تعالی نے ارشاد فرمایا:

كَنَوْتُمْ لِالْفُسِكُمْ فَلْوَقُوْ امَّا كُنْتُمْ تَكُيْرُونَ - (2)

ترجمد کنزالعرفان: "اور وہ لوگ جو سوٹا اور چاندی جمع کردکھتے ہیں اور اسے اللہ کی راہ بیس خرج خبیں کرتے انہیں ورد ناک عذاب کی خوشنجری سناؤ۔ جس دن وہ مال جہنم کی آگ بیس تہایا جائے گا پھر اس کے ساتھ ان کی پیشانیوں اور ان کے پہلوؤں اور ان کی پشتوں کو داغا جائے گا (اور کہا جائے گا) یہ وہ مال ہے جو تم نے اپنے لئے جمع کرر کھا تھا تو اپنے جمع کرنے کا مزہ چھو"

^{1 (}سوليا كرام كي المنانه زندگي .ج1.ص 248 مكتبه طلع الهدر عليدا الأهور)

ز کوہ سے متعلق چند ضروری احکام:

ہر صاحب نصاب محض پر مال کی زکوہ فرض ہے۔

صاحب نصاب شخص پر سال گزرتے کے بعد حاجت اصلیہ (بیتی سامان جو استعال میں ہو) کے علاوہ موجو د مال پر اڑھائی فیصد (2.5 percent) گُل مال میں سے زکوۃ ہے۔

صاحب نصاب:

فی زمانہ چو نکہ کر نسی نوٹ کے ذریعے ہی خرید و فروخت ہوتی ہے لہذا جس شخص کے پاس ساڑھے باون تولے چاندی جتنی رقم جو کہ آج مور خہ و مئی 2021 کے مارکیٹ ریٹ کے مطابق کم ویش (75000) بنتی ہے موجو دہو، تو وہ شخص مالک نصاب کہلائے گا، اُس پرز کو ڈویٹا فرض ہے۔

ہے جس مال پرز کو قادین ہے وہ چار ہیں: سونا ، چاندی، مالِ تجارت، کر نمی نوٹ (بینک بیلنس، جیز اکاونٹ ، ایزی پییہ ، جمع کروائی ہموئی کمیٹی، وغیرہ سب اس میں شامل ہیں) ہیں لوگوں کی جمع کروائی گئی رقم میں سے زکو قائے 2.5 فیصد کٹوتی کرتے ہیں، اس سے بندے کی زکو قادانہیں ہوتی (شرائط پوری نہ ہونے کی وجہ سے)، لہذا بینک کوزکو قاکی کٹوتی نہ کرنے دی جائے، بلکہ خوواداکی جائے۔

ان کل اوگ ج پر جانے کے لیے رقم جمع کرتے ہیں،اس رقم پر بھی سال پوراہونے پرز کو تا الازم ہے۔ الازم ہے۔

را | --- المحتمل کور کوہ دینے سے عمومی طور پرز کوہ ادا نہیں ہوتی۔ (بسپتال کور کوہ دینے کے لیے شرعی حیلہ در کار ہے، لیتن زکوہ کی رقم کی فقیر شرعی کی ملک کرناہوگی)۔
﴿ اگر شوہر نے بیوی کو زیور بنوا کر دیاہو تواگر وہ زیور بیوی کی ملکیت میں دے چکاہے توز کوہ بیوی ادا کرے گی اور اگر محض پہنے کے لئے دیاہے اور مالک شوہر ہی ہے تو شوہر زکوہ ادا کریگا۔ بیوی کی ملکیت میں جو مال (کرنی، زیورات وغیرہ) ہیں آئی زکوہ بیوی پر ہی فرض ہے، ہاں اگر

شوہر خود اپنے ال سے دینا چاہے تو بیوی کی اجازت سے بیوی کے مال کی زکوۃ اداکر سکتا ہے ، اسی طرح دالدین بھی بچوں کے مال کی زکوۃ اداکر سکتے ہیں۔

ہمرای طرح الدین بھی بچوں کے مال کی زکوۃ اداکر سکتے ہیں۔

ہمرای طرح اگر بیوی خود صاحب نصاب ہے توزکوۃ کی طرح بیوی پر قربانی بھی واجب ہے ، ہال اسکی اجازت سے شوہر یا والدین اپنے مال سے اُسکے صلے کی بھی قربانی کر سکتے ہیں۔

ہمرای اور ہے جس مال پر سال گزرنے پر زکوۃ نہیں دی تو اب اُسکی زکوۃ بھی دینالازم ہے۔ مشلاً (کسی مال پر 5سال سے زکوۃ نہیں دی ، تو اب گذشتہ 5سالوں کی زکوۃ بھی اداکر ہے)۔

ہمرائز نہیں ۔ انسان جب بھی مالک نصاب ہوا اُس دن سے ایک سال تک کے دوران جتنا مال اُسکے پاس آیا اُس پر کر نہیں ۔ ادخار میں تاخیر کرنا جائز نہیں۔

ہمرائز نہیں ۔ انسان جب بھی مالک نصاب ہوا اُس دن سے ایک سال تک کے دوران جتنا مال اُسکے پاس آیا اُس پر 2.5 فیصد زکوۃ ہے بلاوجہ در مضان کے انتظار میں تاخیر کرنا جائز نہیں۔

ہمرائز نہیں وارد ل کوزکوۃ دینا افضل ہے۔

ز کوہ سے متعلق مزید معلومات کے لیے بہار شریعت حصہ 5 کامطالعہ بے حد مفید ہے۔

公公公



جري ببنول كاجائداديس مصه



الله رب العزت في ميراث شل بيناور بينيول دونون كاحصد ركما ب-ميراث (وراشت) مل ببنول كوشرى حمدے محروم ركھنا اور بھائيوں كاسارے مال پر قبضه كرلين شديد حرام اوركبيره مناو ہے۔(1)

اگر بہتیں اپنے مصے کا مطالبہ نہ کریں ، تب مجی ان کا شرعی حصہ دیتا ضروری ہے ، کیو نکہ اللہ تعالیٰ نے شریعت میں ان کاحصہ مقرر کیا ہے، لہذا تھم شریعت کے خلاف سمی رسم و روان پر عمل جائز شیل۔اگر کوئی دارث (بمن و فیره) استے مصے کا مطالبہ کرے، تو أے بيد كہناكم تم لا يكي مو اپنے بھائی سے حصہ لے رہی ہو، حمہیں ذرہ برابر عیال نہیں کہ اگر مکان پیچا تو مجھے میری ہوی بچوں کو کرائے پر رہنا پرے گا، پچھ شرم کروحیاء کرو وغیرہ۔۔۔اس قسم یا تنیں کر کے بہن کو (mentally torture) كرنا اور بهن كاحصد ديا لين والا سخت كبيره كناه كامر كلب بوكا ا کشر بہنیں ای فتم کی باتوں ہے خفاء ہو کر وراثت کا مطالبہ نہیں کر تیں کہ اگر ہا نگا تو بھائی جما بھی کی عمر بھرکے لیے نارا ملکی ہے اور عزیدیہ کہ زندگی بی خدا تخواستہ مجھی کسی آزماکش کا سامنا کرنا یز گیاتو کس کامنہ دیکھے گی۔ بھائیوں کو سجھناچاہیے کہ جنن کو حصہ دینے سے اُس کی جنن ہی اپنے محر مضبوط ہوگی اور کوئی اُسکے ساتھ کسی تشم کی زیادتی کرنے سے قبل سوبار سوہے گا۔ ميراث كے متعلق الله تعالى ارشاد فرماتا ہے:

يُوْمِينِكُمُ اللَّهُ فِي ٓ أَوْلَادِكُمْ "لِلذَّكَرِ مِثَّلُ حَظِّ الْأَلْكَيْنِي ، (⁽²⁾

ترجد كنزالعرفان: "الله متهمين عمم ويتام تههاري اولاوك بارے مين مبينے كاحصد دوبيليولك "-5-11

كى وارث كى مير اث ندوية متعلق رسول الله مَا اللهِ عَلَيْهِمُ فِي ارشاد فرمايا: "جواية وارث كو

^{1 (}فعاوي رهويه، ج 26, ص 314، رشافاؤنليشن، لاهور)

^{2 (}النساماييورو)

میراث دینے سے بھاگے ،اللہ قیامت کے دن جنت سے اس کی میراث قطع فرمادے گا"۔ (1) اور حضور رحمۃ للعالمین مَنَّالِیْنِمُ نے ارشاد فرمایا : "جو شخص کسی کی زشن کا ایک بالشت نکزا بھی ظلماً (لیعنی ناحق) لے گا، تواُسے اللہ تعالی قیامت کے دن (سزاکے طور پر)سات زمینوں کا طوق پہنائے گا"۔ (2)

وراثت کی جگه جهیز دینا :

بعض خاندان والے اپنی بچیوں کو جھیز دے کر بعد میں جائیداو میں میں جو جھیز دے کر بعد میں جائیداو میں حصہ خہیں دیتے۔ ایسا کرنا بلکل جائز خہیں ہے کیونکہ والدنے اپنی زندگی میں بیٹی کو جو کھی اُس کی شادگ کے موقع پر جھیز وغیرہ کی صورت میں ویا، وہ وراشت خہیں بلکہ ان کی طرف سے ہہ شادگ کے موقع پر جھیز وغیرہ کی صورت میں ویا، وہ وراشت خہیں بلکہ ان کی طرف سے ہہ یار خان تعیمی دصہ ختم نہیں کیا جاسکتا۔ مقی احمہ یار خان تعیمی دصہ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "بخاب میں یہ قانون (رسم ورواج) ہے کہ مال باپ کے مال سے لڑکی میر اے نہیں پاتی کھی تی باپ کے بعد سارامال، جائیداد، مکانات سب بچھ لڑک کا ہے، لڑکی ایک پائی کی حقد ار نہیں۔ بہانہ یہ کرتے ہیں کہ ہم لڑکی کی میر اے کہ بدلے اس کی شادی دھوم دھام سے کر دیتے ہیں۔ سبحان اللہ عزوجل! اپنے نام کیلئے روپیہ حرام کاموں میں برباد کر واور لڑکی کے حصے کاٹو۔ کیوں جناب! آپ جو لڑکے کی شادی اور اس کی پڑھائی لکھائی کہائی ہو تو کہ ویا ہے ہیں کیا وہ بھی فرزند کے میر اث پرجو خرچہ کرتے ہیں۔ بی اے، ایم اے، کی ڈگری دلواتے ہیں کیا وہ بھی فرزند کے میر اث برجو خرچہ کرتے ہیں۔ بی اے، ایم اے، کی ڈگری دلواتے ہیں کیا وہ بھی فرزند کے میر اث بہنوں کا اپنا حصہ معافی کرنا:

۔ ترکہ میں وُر ثاء کا حق اللہ تعالی کی طرف سے مقرر کردہ ہے

، کسی دارث کے ترکہ میں اپناحصہ چھوڑ دینے، دست بر داری کر دینے یامعاف کر دینے سے ہر گز ساقط نہیں ہو گا۔

ان میں ہوسکتا ہے کہ بیٹے اپنی بہنوں کو باہمی رضامندی سے بطور صُلَح ان کے حصے کے

^{1 (}سان اين ماجه، كتاب الوصايا، باب الحيف في الوصيلة، ص195, حديث 2693، شياء القرآن بهل كيشائز، لإهور)

^{2 (}معيح مسلم كتأب البساقاة ،بأب تحريم الظلم ،ج 2 ص 394 حديث 4108 فريذ بك ستأل الإهور)

^{3 (}اسلامىزندگى، ص51 مكتبة البدينه، كراجى)

بدلے میں کچھ رقم وے دیں چاہے وہ رقم ترکہ میں بننے والے ان کے جھے سے کم ہو اور اگر زیادہ ہو تو بھی کچھ حرج نہیں اور بہنیں قبول کرلیں۔ یوں وہ رقم ان بہنوں کے ترکہ میں جھے کا بدل ہوجائے گی اور متر و کہ مکان میں ان کا حصہ ختم ہوجائے گا۔

بدل ہوجائے فی اور سرو کہ مقان بی ان کا حصہ میں ہوجائے گا۔ ہلتہ نیز اگر مذکورہ بہنیں کچھ بھی نہیں لینا چاہتیں بلکہ ترکہ اپنے بھائیوں کو دینا چاہتی ہیں تو وہ یوں کر سکتی ہیں کہ مکان میں اپنے جھے کو تقسیم کرائے کے بعد اس پر قبضہ کرکے جس بھائی کو دینا چاہتی ہیں ان کو بہہ (gift) کرویں یا بغیر قبضہ کئے اپنا حصہ ان کو ایک مقررہ قیمت پر چے کر قیمت معاف کرویں۔(1)

۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ ہمیشہ بہنیں ہی بھائیوں کو دراخت کی چیزیں ہبہ (gift) کرتی ہیں۔ ہمیشہ بہنوں ہیں بھائیوں کو دراخت کی چیزیں ہبہ (gift) کرتی ہیں، کبھی الٹ بھی الٹ بھی ہونا ہے کہ بھائی بھی البنی دراخت کا حصہ بہنوں کو تحفہ دیدیں۔ ہمیشہ بہنوں می کا بھائیوں کو تحفہ دینا آئی رسم درواج کی طرف اشارہ ہو تا ہے جس کا پیچھے ذکر ہوا، اگر چہ بغیر مجبوری کے تحفہ دے دینا جائز ہے۔

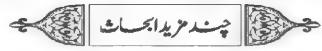
ا ہے مسئلہ بھی یادرہے کہ اگر کسی بہن نے پچھ مال اپنے سکے بھائی کو بہہ (gift) کر دیا، تواب اسے دائیں نہیں ہے جب اسے دائیں نہیں لے سکتی، کیونکہ قرابت رجوع سے مانع ہے۔ لیکن یہ اسی صورت میں ہے جب شرعی نقاضوں کے مطابق ہیہ تام ہو چکا ہو، یعنی بھائی کو حصہ اگر اوپر بیان کیے گئے شرعی طریقوں کے مطابق دے دیا ہو، تواب بہن والیسی کا مطالبہ نہیں کر سکتی۔ (2)

طریقوں نے مطابی دے دیا ہو، تواب بہن واقع مطالبہ بیں مرسی ۔۔۔۔۔
ریاست اور حکومت کا فرض ہے کہ بیٹی کو باپ کی وراشت میں اُس کا حق دلائے اور الیا قانون
بنائے کہ جس کی روسے کسی بھی شخص کے انتقال کے بعد اُس کی منقولہ (movable) اور
غیر منقولہ (immovable) جائیداد میں ہر قتم کا تضرف تقسیم وراشت سے پہلے ممنوع اور
کالعدم قرار ویا جائے اور کسی نے دو سرے وار ثوں کی لاعلمی میں بالا بی بالا باپ کی جائیداد اپنے یا
صرف بھائیوں کے نام کر دی ہو تو عدالت فی الفور اسے غیر قانونی قرار دے کر جائیداد کی سابق
حیثیت بحال کر سکے ۔(3)

^{[(}عنصر قتاوي اهل سئت، ص170 مكتبة المدينة، كراجي)

^{2 (}ماغود فتاوى ، دار الافتاء اهلستت، ريفرلس تمير 311 دعوب اسلامى)

^{3 (}تفهيم البسائل، وراثت كمسائل ج 8، ص397، ضياء القرآن يبلى كيشتز الاهور)





عور تول مر دول كامشابهت الفتيار كرنا:

مر دوعورت کالیتی وضع قطع میں ایک دوسرے

ے مشابہت اختیار کرنا جائز فہیں، لینی جو چیزیں عورت کے لیے خاص ہیں وہ سرد کو اپنانا جائز نہیں اور جن چیزوں کا تعلق خاص مر دول سے ہے وہ و صنع قطع عور توں کو اختیار کرنے کی ممانعت ہے۔مثلاً زند لباس جوتے پہننا، ناک کان چھدوانا، زیور پہننا، کند موں سے بیچے بال ر کھنا، عور توں کی طرح ہاتھ یا ویں پر ڈیز ائن والی مہندی لگاتا ہیںسب اُمور عور توں کے ساتھ خاص ہیں اس لیے یہ تمام کام مردوں کے لیے حرام ہیں۔ حدیث پاک میں عور توں سے مشابہت اختیار كرف والے مرووں ير لعنت آئى ہے۔اس ميں بالغ نابالغ، بوڑھاسب كاايك بى تھم ہے۔ ای طرح عور تول کے لیے کند حول سے اوپر بال کوانا اور وہ دیگر ائمور جو مردول کے ساتھ خاص اُن پس مر دوں کی مشابہت اختیار کرنا ناجائز وحرام ہے کہ یہ مر دوں سے مشابہت ہے۔ بعض والمدين اپنے حجوثے بچوں کو لڑ کيوں جيسے اور بيٹيوں کو لڑ کوں جيسے کپڑے و خير ہ پہنا ديت الى - يركر كريبان والى كنهار موتك (1)

مريث پاک ش ۽:

(1) حضرت الوہريره دهن الله تعالى عند فرماتے ہيں: "سركارِ دوعالم مُلَّافِيْنِ نِهُ أَسِ مر دير لعنت

فرما نی جو عورت کالباس پہنے ادر اس عورت پر لعنت فرمائی جو مر د کالباس پہنے "_⁽²⁾ (2) حضرت عبدالله بن حماس دهى الله تعالى عنه فرمات بي: "ني مَكَافِينَةً إلى زنانه مر دول اور

مر دانی عور توں پر لعنت فرمائی اور ارشاد فرمایا: " انہیں اپنے گھر دن سے باہر نکال دو"۔⁽³⁾

(3) اور حضورِ اقدى مَنَّ الْفَرْمُ فِي ارشاد فرمايا:" عور تول سے مشابہت اختيار كرنے والے مرد

^{1 (}الفتهر فعاول اهل سلسه اما غودًا حكام العربيه من الفهيم البسائل)

^{2 (}سان ايوداؤد، كتأب اللياس بأب في اساساس عند 1870، حيوه 3575 شياء القرآن ياسل كيشاز الاهور

^{3 (}صبح اليماري، كتاب اللياس بإب البنشوين بالنساء ، ج3. ص 362. حديث 6886 ، فريد يك سنال الأهور)

اور مر دول سے مشابہت کرنے والی عور تیں صبح شام اللہ تعالیٰ کی ناراضی اور اس کے غضب میں ہوتے ہیں"۔(1) ہوتے ہیں"۔(1) اور اور مرحمہ آری فیشن کر جمعی عصر جمہ اصل کر نی جا سرحہ آری فیشن کر نام میں زنانہ ا

اِن احادیث سے اُن لوگوں کو بھی عبرت حاصل کرنی چاہیے جو آئ فیش کے نام پر زنانہ یا مر دوانہ (خلاف جنس) لباس پہنتے ہیں یا سوشل میڈیا پر (funny videos) وغیرہ بنانے کے حار توں کی سی مشابہت بھی اختیار کرتے ہیں۔ گویا کسی کو دنیا میں ہنسانے کی خاطر اپنی آخرت خراب کرتے ہیں۔

آ قا کریم مَثَلَّ الْیُکُومِ کَ ارشاد فرمایا: "لوگوں میں سب سے بڑا بد بخت وہ مخص ہے جو کسی کی دنیا کے لیے اپنی آخرت کوبر باد کر دے "۔(2)

تکلیف ده نذاق:

اس طرح اُن لوگوں کو بھی اپنی آخرت کی فکر کرنی چاہیے جو اپنے (rating) کی (youtube channels) کی خاطر ویڈیوز ریکارڈ کرتے ہوئے لوگوں کواذیت دینے والا نداق کرتے ہیں اور بعد میں رسی معافی مانگ لیتے ہیں اور وہ لوگ جو دو سرول کو متوجہ کرنے کے لیے ویڈیوز پر جھوٹے (title) لگا کرلوگوں کے وقت کاضیاع کرتے ہیں۔اس سے متعلق دو حدیث مبارکہ ملاحظہ ہوں:

(1) حضور اکرم نور مجسم منگافیز نے ارشاد فرمایا: "قیامت کے روز لوگوں کا خداق اڑائے والے سے سامنے جنت کا ایک دردازہ کھولا جائے گا اور کہاجائے گا کہ آؤ! آؤ! تو وہ بہت ہی اپنے چینی اور غم میں ڈوباہو ااس دردازہ کھولا جائے گا اور کہاجائے گا کہ آؤ! آؤ! تو وہ بہت ہی گا وہ دردازہ بند ہو جائے گا۔ پھر جنت کا ایک دوسر ادردازہ کھلے گا ادر اس کو پکارا جائے گا کہ آؤ! چیا نی پہنے چینی ادر رخی وغم میں ڈوباہو ا اس دردازے کے پاس جائے گا تو وہ دردازہ بھی بند جوجائے گا۔ اس طرح اس کیساتھ معاملہ ہو تارہے گا یہاں تک کہ جب دردازہ کھلے گا ادر پکار

^{1 (}شعبالایمان،بابشرمگاهون کی عرمت اور پاکنامتی کاوجوب،ج4،ص289، حدیث385 دار الاشاعت، کر اچی) 2 (شعبالایمان، باپاخلاص عمل اور ترك ریا، ج5،ص 316، حدیث893، دار الاشاعت، کر اچی)

پڑے گی تووہ نہیں جائے گا اور (1)

(2) اور امام الا نبیاء مُنَافِیَّتِمْ نے ارشاد فرمایا:"بیشک آدمی ایک بات کہتاہے جس میں کوئی حرج نہیں سجھتا حلائکہ اس کے سبب ستر سال جہنم میں گرتا رہے گا"۔(2)

اس کے برعکس الیی خوش طبعی اسلام میں محبوب ہے جس سے دوسروں کو تکلیف نہ ہو اور اس میں جھوٹ وغیرہ نہ ہو، آقا کر یم مَا کُلیکُمُ اور آپکے اصحاب دھی الله عنهم اجمعین بعض او قات خوش طبعی فرمایا کرتے ہتھے۔

زیورات اور مرد وغورت

مرد حضرات : اسلام میں مرد کے لیے ساڑھے چار ماشے سے کم چاندی کی ایک انگوشی ایک گئیند کے ساتھ جائزہداس کے علاوہ سونے، پیتل، تانب کی انگوشی یا چاندی کی ایک سے ذائد انگوشیاں یا ایک انگوشی دو نگوں کے ساتھ یا خالی چھلہ حرد کے لیے ناجائز وحرام ہے۔ اس طرح ہاتھ یا خالی محمد دکے لیے جائز نہیں۔ ان تمام حالتوں میں نماز مکروہ تحریمی واجب الاعادہ ہوگی۔

حدیث پاک بیں: "حضرت سیدنا بریده دخو الله تعالی عنه سے مروی ہے کہ ایک مختص نے پیتل کی انگو تھی پہنی ہوئی تھی۔ تورسول اکرم مَنالِقَیْمُ نے اسے قرمایا: "کیابات ہے تجھ سے بتوں کی بُو آئی ہے؟ "اس نے وہ انگو تھی چینک دی۔ پھر وہ اوہ کی انگو تھی پہن کر آیاتو آپ نے پھر فرمایا ،" کیابات ہے بین دیکھتا ہوں کہ تم جہنیوں کا زیور پہنے ہوئے ہو؟"اس مخص نے وہ انگو تھی جھی چینک دی اور عرض کی،" یارسول الله مَنالِقَیْمُ ایکس چیز کی انگو تھی بنواوں ؟"ارشاد فرمایا: "چی چینک دی اور عرض کی،" یارسول الله مَنالِقَیْمُ ایکس چیز کی انگو تھی بنواوں ؟"ارشاد فرمایا: "چاندی کی بناواور ایک مثقال (ایدی ساڑھے چارماشے) پورانہ کرو"۔(3)

^{1 (}موسوعة ابن ابى النديا، كتأب الصبت حديث 287 المكتبته العصرية/مكاشفته القلوب، ص160 مكتبة البديده، كراجئ) 2 (ترمذي، كتأب الزهدياب مأجامس تكلم ، ح 2، ص 95 حديث 195، قرين بالنسئال الأهور)

^{3 (}سان افيداود، كتاب الخاتم باب ماجا في عالم الحديد، ج3، ص227 مديدة 3687 شياء القرآن بيلي كيشاز الاهور)

﴿ آج كُل مر وحضرات كَنَّ الْكُوشِياں ﷺ پھرتے ہیں اور الگوشیوں کے متعلق عجیب و غریب نظریات رکھتے ہیں کہ فلاں پھر پہننے سے یہ ہوجاتا ہے وہ ہوجاتا ہے وغیرہ۔یا در کھیں گلینہ پہننے سے نقذیر نہیں بدلتی۔البتہ دواء کی طرح بعض گلینوں کی تا ثیرات ہوتی ہیں۔یہ ایکے خواص سے ہے۔(1)

بر ایک مزید مسئلہ یادرہے کہ بے زنجیر (بغیر زنجیر کے) بٹن سونے چاندی کے مرد کو جائز ہیں اور زنجیر دار منع ہیں۔(2)

خوا تین : عور توں کے لیے سونا چاندی کے ساتھ ساتھ دیگر آر ٹیفیشل جیولری کا استعال بھی جائز ہے۔ عورت یہ زیورات پہن کر نماز پڑھے تواس کی نماز ہوجائے گ۔ زیور کے سونا چاندی کا استعال مر دوعورت دونوں کے لیے ناجائز ہے۔ سونا چاندی کے برتن میں کھانا پینا، سونے چاندے کے چیچے سے کھانا،ان کی سلائی یا سرمہ دائی سے سرمہ لگانا۔ سونا چاندی کے آئینہ میں دیکھنا، ان کی قلم دوات سے لکھنا،ان کی کرس پر بیشنامر دوعورت دونوں کے لیے ممنوع ہے۔ (3)(4)

جسم گدوانا :

ایک اور گناہ مجرا کام جس بیں ہمارے نوجوان جانے انجائے میں مشنول ہیں وہ اے جہم گدوانا (اس سے مر ادموئی سے جسم میں جھیدلگا کراس بیں رنگ یاسر مہ بھرناہے)۔
بازو پر نام کھدوانا یا ہاتھ کی پشت پر کوئی ڈیزائن (tatto) بنوانا شرعانا جائز و ممنوع ہے کہ یہ اللہ کی بنائی ہوئی چیز میں تبدیلی ناجائز و حرام ہے۔ نیز یہ نام اور کی بنائی ہوئی چیز میں تبدیلی ناجائز و حرام ہے۔ نیز یہ نام اور ڈیزائن عمو آمشین یاسوئی کے ذریعے کھدوایا جاتا ہے، جس سے کافی تکلیف ہوتی ہے اور الپ

^{1 (}ماغوذرسم ورواح كي شرعي حيثيت ص531 مكتبه اشاعت الإسلام الزهور)

^{2 (}احكامرشريعت، ص197، كتب عاله امامر احمد رضاً الأهور)

⁽ماخوذرسم ورواج كهرعى حيثيت، ص532 مكتبه اشاعت الاسلام الاهوز)

^{4 (}ماغود مختصر فتأوي اهل سنت، ص 66 مكتبة البديدة، كراجي)

آپ کوبلاوجہ شرعی تکلیف پہنچانا بھی جائز خہیں اگر کسی شخص نے اپنے بازوپراس طرح نام لکھوایا ہے تواس پر توبہ لازم ہے اور اگر دوبارہ تغییر کے بغیراس نام کو ختم کرناممکن ہوتواس کو ختم کر وے اور اگر تغییر کے بغیر ختم کروانا ممکن نہ ہو بلکہ ختم کروانے کے لیے دوبارہ ای طرح کا (خود کو اذیت دینے والا) عمل کرنا پڑے جیبا نام لکھواتے وقت کیا تھا تواس کواس حال میں رہنے دے اور توبہ واستغفار کر تارہے۔ (1)

طیت یاک میں ہے:

" حضور رحمۃ للعالمین، جنابِ صادق و امین منگالی کے سو دلینے اور دینے والی عور توں، دینے دالوں، اس کے گواہوں، سودی دستاویر لکھنے والوں اور گودنے والوں، اور حلالہ کروانے والوں (جبکہ نکاح میں حلالے کی شرط رکھی ہو)ان سب لوگوں پر لعنت قرمائی ہے"۔(2)

 $^{\wedge}$ $^{\wedge}$

 ^{[(}مأخوذاتههيم المسأل، ج11، ص 518 شياء القرآن يبلي كيشاز الأهور)
 (جهنم مين لحجالم الحال، ج1، ص 45، مكتبة المدينة، كو الجهالم وج السابق)



تحسيم بالعناں Sex Education



اسلام کمل ضابطہ حیات اور دین فطرت ہے۔ دین اسلام جہاں اپنے مانے والوں کو عبادات و معددات و معددات و معددات فراہم کر تاہے، وہیں اللہ رب العزت نے قرآن مجید معدولات ذر گی سے متعلق تفصیلی احکامات فراہم کر تاہے، وہیں اللہ رب العزت نے قرآن مجید میں انسان کے اپنے وجود میں ہونے والی قدرتی تبدیلیوں (physical change) ،جسمانی عوارض سے متعلق احکامات بھی بہت وضاحت کے ساتھ بیان کر دیے ہیں، اور صرف بھی نہیں بھد اپنے پیارے نی مُرافیز کی حیاتِ مبارکہ ، آپکے اقوال و افعال کے ذریعے ہماری کمل رہنمائی فرمادی ہے۔

یورپ میں تعلیم بالغال کے لیے (sex education) کی اصطلاح استعال کی جاتی ہے۔ دیگر فدام سب بالغال سے متعلق اپنے ہے۔ دیگر فدام سب باطلہ اسلام پریہ احتراض اٹھاتے ہیں کہ اسلام تعلیم بالغال سے متعلق اپنے مائے والوں کی رہنمائی نہیں کرتا جس وجہ سے مسلمان نوجوانوں کی اکثریت بلوخت پر ان جیجیدہ مسائل میں گھری پریٹان نظر آتی ہے۔ یہ اعتراض درست نہیں۔

اگر آپ تمام غداہب کی کتب کا شریعت محمد سے تقابل کریں تو یہ بات روز روش کی طرح واضح ہوجائے گی کہ سوائے اسلام کے دنیا کا کوئی ایسا فد ہب نہیں جس میں مسائل بالغال (حیض و نفاس ، احتکام ، منی ، فدی ، ودی یہال تک کہ مباشرت و غیرہ) سے متعلق احکامات کو بہیں سیکھتا اور لیٹی بہت تفصیل کے ساتھ بیان کر دیا گیا ہے۔ اب اگر کوئی مسلمان ان احکامات کو نہیں سیکھتا اور لیٹی اولا دول کو یہ تعلیم نہیں دلوا تا یا سیکھا تا ، تو اس میں تصور اُن مسلمانوں کا ہے نہ کہ اسلام کا۔ قر اُن مجید ، احادیث نبوی منافی تقد میں تو ان سے متعلق احکامات شرعیہ کو بہت تفصیل سے بیان کیا گیا ہے، لہذا وین اسلام پر بیدا عتراض قطعاً باطل ہے۔

ہاں یہ بات درست ہے کہ جمادے معاشرے میں علوم بالغاں سے متعلق بچوں کی تعلیم و تربیت کا اہتمام شہونے کے برابر ہے۔ اُس کی ایک اہم وجد سے کہ برصغیر پاک وہند یا مشرق میں رہنے والے مسلمانوں کے قلوب اذبان میں تعلیم بالغاں کولے کر حیاء کا عضر ہے۔

اس بات میں کوئی شک نہیں کہ اسلام دین حیاء ہے، اور حیاء ہمارے ایمان کا حصہ ہے۔ لیکن اس معاطع میں اپنے ذاتی خیالات و کیفیات کی بناپر والدین کا پچوں کی علوم بالغال سے متعلق تربیت کا اہتمام نہ کرنا اور اسے حیاء سوز سمجھنا بالکل درست نہیں۔ یہ طرزِ عمل بہت سے دینی واخلاقی نقصانات کا سبب بن رہاہے اور یہ رکن حقیقیت حجٹلائی نہیں جاسکتی۔

والدين كى ذمه دارى

بیٹے بیٹیوں کا زمانہ بلوغت قریب آتے ہی والدین پر بیالام ہے کہ وہ اپنے پچوں کی بنیادی تعلیم بالغاں کا اہتمام کریں۔ اگر والدین بیر کام خود نہیں کریں گے تو اولاداس کے متعلق جانے کے لیے اُن حلقوں میں بیٹے گی جہاں اُسے نہیں بیٹھنا چاہیے۔ اور اس کے متعلق وہ پچھ نے گی اور معاواللہ دیکھے گی جو اُسے نہیں سُننا اور دیکھنا چاہیے، جو شر عاً اور اخلاقا بھی درست نہیں۔ فی زمانہ انٹر نیٹ اور سوشل میڈیا کی وجہ نے نوجو ان جس آفت میں گر فار ہو کر اخلاقی پستی کا شکار ہیں، وہ سب کو معلوم ہے۔ اگر والدین از خود اولاد کو اس متعلق کے تعلیم ویں تو انہیں معلوم ہوگا کہ جس قدر ہم پر جاننا لازم تھا، ہمارے والدین نے اس سے متعلق ہماری رہنمائی فرما دی، اب مزید پچھ جانے کی ضرورت نہیں۔ ایسا کرنے پر اولاد ہمیشہ حیاء کا دامن تھا ہے رکھے گی اور انشاء اللہ حدے تعاوز نہیں کرے گی۔

بینی کی تربیت:

کُتب فقہ بیں لکھاہے اور سائنس اعتبار سے بھی یہ بات ثابت ہے کہ لڑی و سال سے 12سال، اور لڑکا 12 سے 15سال کی عمر میں بلوغت کو پڑنی جا تاہے۔

اس کو چاہیے کہ جیسے ہی بیٹی و سال کی عمر کو پہنچے تو وہ اُسے بہت دوستانہ اور محبت بھرے انداز میں علوم بالغال سے متعلق بنیاوی تعلیم سکھائے۔ اُسے بتائے کہ اب آپ اس عمر کو پہنی چی ہیں کہ کسی بھی وقت آپ کے جسم سے حیض کا خون (periods) شر ورج ہو سکتاہے۔ اُسے بتایا اور سکھایا جائے کہ ایس صورت میں اُسے کیا کیا کرنا ہے وغیرہ۔ ایسے ہی اُسے بتایا اور سکھایا جائے کہ ایسی صورت میں اُسے کیا کیا کرنا ہے وغیرہ۔ ایسے ہی اُسے

احتلام (wet dream) کے احکام بتائے جائیں کہ اس حالت میں اُس نے کو نسی عبادت
کرنی ہے اور کو نسی نہیں کرنی۔ اُسے اس سے متعلق ہمت و حوصلہ ولایا جائے کہ اس میں
کوئی شر مندگی والی بات نہیں، یہ تو ہماری ماؤں، واد پول حتیٰ کہ انبیاء علیہ السلام کی ازواج کے
ساتھ بھی ہوتا آیا ہے۔ جب یہ بنیادی تعلیم لڑک کو مال یا گھر کی کی بڑی عورت سے طے گی تو بگی
الی صورت میں بالکل مطمئن رہے گی۔ بر عکس اس کے کہ اُسے یہ با تمیں معلوم نہ ہو اور اس
کم سنی میں دماغی طور پر پریشان اور احساسِ کمتری کا شکار ہوجائے، جیسا کہ عمومی طور پر دیکھا گیا
سے۔

بینے کی تربیت :

اسی طرح باپ کو چاہیے کہ جب بچہ 12 سال کی عمر کو پہنچ ، توباپ مناسب انداز میں أسے بتائے کہ أسلے جسم میں جو تبدیلی (physical change) آربی ہے ، ایسا کیوں ہے ؟۔ جسم پرجوزیر ناف ، زیر بغل بال آرہ ہیں ، یہ کیوں آرہ ہیں ؟۔ اس سے گھبر اٹا نہیں ۔ یہ باپ آپ کے دادااور انبیاء کرام علیہم السلام کو بھی تھی۔ اور سب مر دول کو ہوتے ہیں۔ اس میں کوئی شرم والی بات نہیں ، اسے صاف کیسے ، اور کب کرنا ہے وغیرہ ۔ اس مطرح والد دوستاند انداز میں ، یچ کو یہ بھی بتائے کہ اب آپ عمر کے اس صے کو بہنی چکے ہیں کہ طرح والد دوستاند انداز میں ، یچ کو یہ بھی بتائے کہ اب آپ عمر کے اس صے کو بہنی چکے ہیں کہ آپ کو کسی بھی دن احتمام ہو سکتا ہے۔ اگر احتمام ہو جائے تو پائی کا اہتمام کیسے کرنا ہے وغیرہ۔ اگر باپ موجود نہیں تو گھر کے کسی دو سرے مر دکو چاہیے کہ بچے کو ان احکاماتِ شرعیہ کی تعلیم اگر باپ موجود نہیں تو گھر کے کسی دو سرے مر دکو چاہیے کہ بچے کو ان احکاماتِ شرعیہ کی تعلیم وے۔

جبوالدین اس طریقے سے اپنے بچول کو تعلیم دیں گے اور غلط چیز وں کو دیکھنے اور شننے پر قرآن واحادیث میں بیان کی گئ و عیدوں (سزاول) کا مناسب انداز میں اُن سے ذکر کرتے رہیں گے تو بچے بھی ہمیشہ نہ صرف ان پیچیدہ مسائل کو بغیر کسی نثر مندگی کے والدین سے بیان کریں گے بلکہ انشاء اللہ باحیاء اور باکر دار بھی رہیں گے۔

ہمارے ہاں اپنے بچوں کی دیگر اُمور میں تربیت کے ساتھ ساتھ اس عنوان (تعلیم بالغاں) پر بات اس لیے نہیں ہوتی کہ لوگ شرم محسوس کرتے ہیں۔ کسی فرد کا اس چیز کو قبول نہ کرنا، یا کسی کے ول کا اس بات پر راضی نہ ہونے ہے دین کے احکامات کو تبدیل نہیں کیا جاسکتا۔ عرب میں شروع سے اس عنوان پربات ہوتی آئی ہے۔اور عرب اس حوالے سے اپنے بچوں کی تربیت کرتے رہے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ عربوں کے ہاں کم عمر میں شادیاں بھی ہو جایا کرتی تھیں۔ تاریخ اسلام اور دور نبوی مَنَّا اَلْیَٰ اِلْمَا کُلُمْ کِ مِنْعَاق کُتب کے مطالعہ پر یہ بات اچھی طرح واضح ہو جاتی ہے۔ مسلمانوں کو چاہیے کہ وہ اپنے گھروں، مساجد و جامعات کے ذریعے نوجوانوں کو بنیادی علوم بالغاں کی تعلیم دیں۔

بوں سارے استان کا خیال رکھنا ہے حد ضروری ہے کہ لمبرل وسیکولر نظریات کے حاملین انتہاہ : ہاں یہاں اس بات کا خیال رکھنا ہے حد ضروری ہے کہ لمبرل وسیکولر نظریات کے حاملین ،ائل بورپ کے طرز پر جس بے باکانہ انداز میں سکولوں اور سوشل میڈیا کے ذریعے تعلیم بالغال (sex education) یا آزادی اظہار رائے کے نام پر جو بے حیائی اور فحاشی پھیلانا چاہتے ہیں، اس کی اسلام قطعاً اجازت نہیں ویتا۔ اس تعلیم کو شریعت کے دائرہ کار میں رہتے ہوئے ہی سکھانے کی اجازت ہے۔

مسائل النساء مين سے يجھ:

جمارے ہاں خواتین کاعلم دین حاصل کرتے کے لیے وین مدارس جانے کارواج بہت کم ہے۔ اس لیے عمر کا ایک حصد گررنے کے باوجود خواتین طہارت کے بنیادی احکام و مسائل (علوم بالغال) سے لاعلم ہوتی ہیں۔ جبکہ مرد حضرات کی ایک تحداد مساجد ودیگر دینی محافل وغیرہ میں شرکت کرکے علمائے دین سے طہارت کے احکام ومسائل شنتے اور سیکھ لیتے ہیں۔

ای کی کو محسوس کرتے ہوئے اس عاجزنے طہارت کے احکام ومسائل پر "مسائل النساء" کے نام سے خواتین کے لیے جامع اور آسان فہم انداز میں ایک رسالہ مرتب کیا ہے جو کہ مارکیٹ میں اور انٹرنیٹ پر (soft copy) کی صورت میں دستیاب ہے۔خواتین کے لیے اسکا مطالعہ بے حدمفید ہے۔

مسائل النساء میں ہے ایک سوال (من گھڑت باتیں):

سوال: کیا حالتِ ناپاکی (جنابت، حیض، نفاس) میں کسی جگہ بیٹھنے یا کسی چیز کو چھونے سے وہ جگہ ناپاک ہوجاتی ہے؟ کیا حیض و نفاس والی عورت کے برتن اور دیگر استعمال کی چیزیں الگ کر منابعا سد ؟

دی چہہے ؟

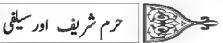
جو اب: یہ زمانہ جاہلیت کا دستور تھا کہ عورت کو ایام مخصوصہ بیں بخس چیز سمجھا جاتا اور ہر کام
کرنے سے روک دیاجاتا تھا۔ لیکن اسلام نے ان تمام بری رسموں کو ختم کر دیا۔ شریعت اسلامیہ
بیں حیض و نفاس کی وجہ سے صادر ہونے والی ناپا کی بیں عورت نماز، روزہ، طواف کعبہ، مسجد بیس
جانے، مباشرت (ہمبستری، صحبت) کرنے اور تلاوتِ قر آن مجید کے علاوہ تمام امور انجام دے
سکتی ہے۔ اس کے لیے باتی تمام امور جائز ہیں، یہاں تک کہ اللہ کاذکر اور دروو شریف اور دیگر
دُواکیں پڑھ سکتی ہے۔ لہذا حیض و نفاس والی عورت ہو یا بحنب، اس کوساتھ کھلانے، اس کا جو ٹھا
کھانے، اس کے ہاتھ کا لگا ہوا کھانے، اس کا گھریلو خدمات بحالانا جائز ہے، انکی استعمال کی چیزیں
استعمال کرنے، ان کے ساتھ سلام ومصافحہ کرنے بیں کوئی حرج نہیں۔ اِس کے کسی چیز کوہاتھ
لگانے یا کسی جگہ بیضے سے وہ چیز و جگہ ناپاک نہیں ہوتی۔ بعض خوا تین ان کے ساتھ کھانے اور
ان کا جو ٹھا کھانے وغیرہ کو ہرا شمجھتی ہیں، ایسی خلار سموں سے اچتناب لازم ہے۔
ان کا جو ٹھا کھانے وغیرہ کو ہرا شمجھتی ہیں، ایسی خلال سموں سے اچتناب لازم ہے۔

حضرت عائشہ صدیقتہ دخی الله تعالى عنها بيان كرتی ہيں: "كر رسولَ الله مَالَّلَٰهُ عَلَيْهُمُ فِي مَعِد ش سے مجھے فرمایا: "مصلی (جائے نماز) اٹھاكر مجھے دے دو، بس فے عرض كياكہ ميں حاكفہ موں۔ آپ مَالِّلْهُ عَلَمُ فِي فَي مِايا تمہاراحيض تمہارے ہاتھ ميں تونبيں ہے۔ (سيح مسلم) (1)

(طبارت کے احکام ومسائل برائے خواتین سے متعلق مزید معلومات کے لیے رسالہ "مسائل النساء" کامطالعہ کیجیے)

444





د نیا بھر کے مسلمان ہر سال جج و عمرہ کی ادائیگی ، مقاماتِ مقدسہ کی زیارت اور بار گاور سالت مُنَافِیْنِ کی حاضر کی ومژوہ شفاعت کے لیے حریبین شریفین تشریف لے جاتے ہیں۔

ان مقدس مقامات سے فیوض و برکات حاصل کرنے کے لیے یہ لازم ہے کہ زائزین دورانِ سفر ان مقامات کا اوب ملحوظ رکھیں اور کسی بھی قسم کے خلاف اوب کام سے بچتے رہیں۔ دورانِ سفر ان مقامات کا اوب ملحوظ رکھیں اور کسی بھی قسم کے خلاف اوب کام سے بچتے رہیں۔ اپنے گناموں کی معافی کے لیے رب تعالی کے حضور پُر خلوص دعائیں کریں اور سرور کا کنات امام الانبیاء سکی تیجاری کی مفارش اللہ الانبیاء سکی تیجاروں کی سفارش اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں اس نیت سے حاضر ہوں کہ پیارے آتا ہم گنجاروں کی سفارش اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں کریں اور رب کریم ہمارے گناہ معاف فرمادے۔ ارشادِ باری تعالیٰ ہے:

وَلَوْ ٱلَّهُمْ إِذْ ظَّلَكُوا ٱلْقُسَهُمْ جَأَءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ

وَاسْتَغُفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا (1)

ترجمہ کنزالعرفان: " اور اگر جب وہ اپٹی جانوں پر ظلم کر بیٹے تھے تو اے حبیب! تمہاری بارگاہ میں حاضر ہو جاتے پھر اللہ سے معافی ما تکتے اور رسول (بھی)ان کی منفرت کی دعافر ماتے تو ضرور اللہ کو بہت تو بہ قبول کرنے والا،مہر بان پاتے "

لیکن آج مکہ و مدینہ میں گئے زائرین کو دیکھ کر دِل ذکھتا ہے۔ گنہگار اپنی جانوں پر ظلم کرکے آتا کریم مکانٹیٹل کی بارگاہ میں اپنے گناہوں کی بخشش کے لیے گیا تھا اور اِسے سیلی (seifi) نے آلیا !۔ کوئی خانہ کعبہ کا غلاف پکڑ کر سیلنی بنار ہاہے تو کوئی دورانِ طواف اپنی دیڈ ہو بنانا لازم سمجھے ہوئے ہے۔ اور کوئی تورسول اللہ متالٹیٹل کی سنہری جالیوں کے سامنے کھڑے ہو کر، جالیوں کو پیٹر کر کے سیلنی ایلوڈ کر رہا!۔ اے عزیز! تم جانتے ہو یہ کوئی بارگاہ کا اور اس بارگاہ کا ادب کیاہے ؟

1 (النسامايية)

ادب گاہیست زیر آساں اذعرش نازک تر لفس مم کردہ ہے آید جنید وبایزید ایں جا (اے جانے والے سُنو! رسول الله مُثَلِّقَیْمُ کی بار گاواقدس آسان کے پنچے ایسامقام ہے کہ عرش سیست سیست سیست کے سیست

سے بھی زیادہ نازک ہے کہ جنید و ہایزید جیسے اللہ تعالیٰ کے ولی بھی اپناسانس روک کر آتے ہیں، کہ کہیں رسول اللہ مَثَلَّ الْتُیْمَا کی یار گاہ کی بے ادبی نہ ہو جائے)

یہ تو وہ بارگاہ ہے کہ جہاں افضل الخلق بعد از انبہاء سید ناصدیق اکبر رہی الله تعالی عند جیسی ہستی حاضری کے وقت اپنے منہ میں پیتھر رکھ لیتے تاکہ رسول اللہ مَثَّالِیْکُوْمُ کہ بارگاہ میں او نچا بولنے سے بے ادبی نہ ہو جائے۔ یہ تو وہ بارگاہ ہے کہ جہاں بے ادبی کے ڈرسے حضرت عمر فاروق رہی الله تعالی عند جیسی ہستی اتنا آہستہ بولتے کہ رسول الله مَثَّالِیْکُومُ ووبارہ پوچھتے ہیں کہ "عمر! پھر بولو، کیا کہا تم آئے ؟" یہ تو وہ بارگاہ تھی کہ صحابہ کرام کاشانہ اقد س مَثَّالِیُکُومُ کے دروازہ پر وستک اپنے ناختوں سے دیتے کہ کہیں جھیلی سے دستک و سینے پر او پچی آواز و دھک کی وجہ سے اس بارگاہ اقد س کی بے ادبی نہ ہوجائے۔

بیران بستیوں کا ادب اور خوفِ خدا باحاضر خدمت حضور خیر الوری سکا الیکی تھا کہ جنہیں اس ڈیا میں ہنت کی بیار نقل کہ جنہیں اس ڈیا میں جنت کی بشار تنبی ملیں، تواہے دوست تھے کس چیز نے دھوکے میں ڈال رکھا ہے؟ کہ توا تن بے باک سے رسول اللہ سکا لیکی کم طرف پیٹھ کر کے سنہری جالیوں کے سامنے سیلنی بنانے اور فضول باتوں میں معروف ہے، کیاتواس غرض سے اس بارگاہ میں حاضر ہوا تھا؟، ادب نہ رہا تو پھر کیا ہیا! خدارا خوش کے ناخن لو۔۔۔۔

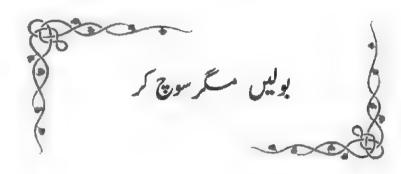
الله تعالى في السيخ حبيب مَثَلَّ لِنَيْزُ كَلَّ بِاركَاه كا وب بتاتے موے ارشاد فرماتا ب : يَنَا يُنِهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْ الاَ تَدُوْ فَعُوَّا أَصُوَا تَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَتْجَهَرُوْ الَّهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْدٍ بَعْضِكُمْ لِبَعْضِ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ (1) ترجمہ کنزالحرفان: " اے ایمان والو! اپنی آوازیں نبی کی آوازیر ادیٹی نہ کرو اور ان کے حضور زیادہ بلند آوازے کوئی بات نہ کہو جیسے ایک دوسرے کے سامنے بلند آوازے بات کرتے ہو کہ کہیں تمہارے اعمال برباونہ ہو جائیں اور تمہیں خبر نہ ہو"

> بابِ جبریل کے پہلومیں ذرا دھیرے سے چل فخر جبریل کو بوں کہتے ہوئے پایا گیا اپنی پککوں سے در یار پہ دستک دینا او پچی آواز ہوئی عمر کا سرمایہ گیا

اے زائر طیبہ سوچ تو سہی! کیا کبھی کوئی فوجی یا پولیس ملازم اپنے افسر کے پاس جاکر اس طرح کرے گا؟ جو تورسول اللہ منگافتیز کے سامنے کھڑے ہو کر کر تا ہے!۔ سٹہری جالیوں کے سامنے دعا کے لیے ہاتھ بلند کر کے تصاویریں کچھوانا اور شور مچانا! اس سے بڑاادب کو چھوڑنے والاکون ہوگا؟، بید دکھاوا (ریاکاری) نہیں توادر کیا ہے؟۔

افسوس کدفی زماندیدالی بری بدعت ہے کہ جس میں مجھوٹے، بڑے، بوڑھے سب شامل بیں، ہم نے صرف توجہ مبذول کرانے کے لیے مید چند جملے لکھ دیئے بیں۔اللہ عزوجل ہم سب کوحرمین شریفین کی باادب حاضر کی تصیب فرمائے۔ آمین!

كفربيه كلمات كى بيجان سے متعلق مخضر وجامع رساله



ٱڵٙڂؠؙۮؙڸڷ۠ۼڔٙڹؚٵڵۼڵؠؽؽۅؘالصَّلوةُ وَالسَّلامُ عَلْ سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۗ ٱمَّا بَعْدُ فَاَعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ ۖ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْلْنِ الرَّحِيْمِ ۗ

حرام الفاظ اور کفرید کلمات کے متعلق علم سیمنا فرض ہے (فادی شای)

الله عروجل كى ذات كاجم پريد احسانِ عظيم ہے كه أسف جميس انسان بنايا، ايمان كى دولت عطا فرمائى اور اپنے حبيب مرم مَنَّ اللَّيْ كَا أَمَّى كيا۔ دولتِ ايمان كس قدر برلى تعت ہے إس كے متعلق جهته الاسلام حضرت سيدنا امام محد غزالى دحدة الله عليه فرماتے ہيں كه:

" میں (محمہ غزالی) کہتا ہوں اس نعمت (ایمان) کی قدر سے متعلق جتنامیر اعلم ہے،اگر میں اس کے بارے میں دس لاکھ صفحات بھی لکھ دول تب بھی میر اعلم اس سے زیادہ ہے، اِس اعتراف کے ساتھ کہ میر ااس بارے میں علم ایک قطرہ اور لاعلی سمندر کی حیثیت رکھتی ہے۔ تعمیر ایس بارھ کر نعمت ہے۔ (1)

نعت ایمان کی اِس عظمت کی وجہ بیہ کہ اِس فائی دنیا میں اللہ کی رضا، تمام نیک اعمال کی قبولیت اور بمیشہ کی جنت میں داخلے کے لیے ایمان پر خاتمہ شرط ہے۔ الحمدُ بللہ ہم مسلمان توہیں لیکن اس بات کی کسی کے پاس کوئی شانت نہیں کہ وہ مرتے دم تک مسلمان ہی رہے گا یعنی اُسکا ایمان مرتے وقت سلامت رہے اور جو ایمان سے پھر کر لیعنی مرتد ہو کر مرے گاوہ کفار کی طرح ہمیشہ ہمیشہ کے لیے دوزخ میں رہے گا۔ ارشاو باری تعالی ہے:

وَمَنْ يَرْتُابِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهِ فَيَهُتْ وَهُو كَافِرٌ فَأُولِيكَ حَبِطَتْ

آعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْأَخِرَةِ * وَأُولِيكَ أَصْحَبُ النَّارِ * هُمْ فِيْهَا خُلِدُونَ (2)

ترجمہ کنزالعرفان: "اور تم میں جو کوئی اپنے دین سے سرتد ہوجائے پھر کافر بی سر جائے تو ان لوگوں کے تمام اعمال دنیاد آخرت میں برباد ہوگئے اور وہ دوزخ والے بیں وہ اس میں ہمیشہ رہیں

 ⁽منهاج العابدين، ص433 مكتبة البديعه، كراچى)

^{2 (}البقرة،آيت217)

مسلماں ہے عطار تیری عطاسے ہو ایمان پر خاتمہ یاالی

افسوس! کہ جن علوم کا حاصل کرنا ہر مسلمان پر فرض ہے آج مسلمانوں کی اکثریت

یونیور سٹی و کالج کی ڈگریاں لینے کے باوجود اُن بنیادی اسلامی علوم سے لاعلم نظر آتی ہے اور اِن

علوم میں بھی عقائد کے وہ بنیادی علوم جن کے اعتقاد سے آدمی مسلمان ہو تاہے اور اِنکے انکار

سے کافریا گر ادہوجاتا ہے، اِن مسائل کا سیکھناعبادت کے مسائل سے اہم اور فرضِ عین ہے، پر
افسوس کہ ہم دورکی گر اہی میں پڑے اپنی عاقبت سے بے پر داد ہیں۔

آج سے کچھ عرصہ پہلے مختلف فداہب کے سکالرز کا اجلاس ہوا تا کہ یہ دیکھاجائے کو نسا
ایسا فدہب ہے جس پر چل کر ہم دنیا کو امن کا گہوارہ بناسکتے ہیں۔ ہر سکالر نے اپنے فدہب کی
اچھائیاں بیان کیں، لیکن آخر میں یہ فیصلہ ہوا کہ اس دنیا میں سب سے بہترین فدہب ہو وہ
اسلام ہے۔ لیکن آگلی بات بڑی کڑوی کردی کہ اس دنیا میں بدترین قوم ہے قو وہ مسلمان ہے جو
اسلام ہے۔ لیکن آگلی بات بڑی کڑوی کردی کہ اس دنیا میں بدترین قوم ہے قو وہ مسلمان ہے جو
اسپنے فدہب کو چھوڑ کر اغیار کے چیچے بھاگ رہے ہیں۔اللہ عزوجل ہمیں سمجھ عطا فرمائے

(آمین) (1)

اعلی حضرت امام ابل سنت امام احمد رضاخان دحمة الله عليه فرماتے جيں: "علائے كرام فرماتے ہيں، جس كوسلي ايمان (ايمان پرخاتمہ) كاخوف (فكر) نه بونزع (موت) كے وقت أس كا ايمان سلب بوجانے كاشد يدخطره ہے "(2)

اولیائے کرام عمر پھر اللہ عزوجل کی عبادت اور اسکی جنتو میں ریاضت کے باوجود ایمان چھن جانے کے خوف سے لرزال وترسال رہا کرتے تھے چنانچہ حضرت سیدنالوسف بن اسباط دحمد الله علیه فرماتے ہیں: "میں ایک وفعہ حضرت سیدناسفیان توری دحمة الله علیه کے پاس حاضر ہوا۔ آپ دحمة الله علیه سادی دات روتے دہے۔ میں نے وریافت کیا: کیا آپ

^{1 (}خوشحال گهرانه كيسے هو،ص 19. يوتيك پر تثرز . لاهور) 2 (ملفوظات اعلى حدرت، ص 495 مكتبة المدينه .لاهور)

رحمة الله عليه كنابول ك خوف سرور بين ؟ توآب رحمة الله عليه في ايك تكالها العالياور فرمایا کہ گناہ تواللہ عزوجل کی بار گاہ میں اس تنگے سے بھی کم حیثیت رکھتے ہیں ، مجھے تواس بات کا خوف ہے کہ کہیں ایمان کی دولت نہ چھن جائے"۔ ⁽¹⁾

آج اِس نفسائنسی کے دور میں ہر طرف ایمان کی بربادی کا خطرہ ہے کہیں فلمول ڈراموں میں کفر بیہ اشعار و کلمات کی بھر مار ہے ، کہیں جہالت کی وجہ سے آلیں کے معاملات میں لوگ تُفريه كلمات بكتے نظر آتے ہیں تو كہیں معاذ اللہ ، الله عزوجل كے حبیب مَالْتُلْيَامُ كَي شان ميں گستاخانہ عقیدے رکھے ہوے ہیں۔ اب اگر! اِن کفریات کاعلم نہ ہو توہم کیسے اِن کی نشاندہی کر سکتے ہیں۔اس لیے ضروری ہے کہ ہم اپنے ایمان کی سلامتی کے لیے حرام الفاظ اور کفریہ کلمات کے متعلق علم حاصل کریں۔ تاکہ لاعلمی میں معاذاللہ کسی کفر کا اِر تکاب نہ کر بیٹھیں۔ جیسا کہ حدیث پاک میں فرمانِ عبرت نشان ہے، حُصْورِ اکرم نُور مجسم مُثَافِیْتُمُ نے ارشاد فرمایا : " ان فتنول سے پہلے نیک اعمال میں جلدی کرو! جو تاریک رات کے حصول کی طرح ہو تگے۔ ا یک آدمی صبح کومومن ہو گااور شام کو کا فرہو گا اور شام کومومن ہو گا صبح کو کا فرہو گا۔ نیز دین کو دُنیاوی سازوسامان کے پدلے قروخت کر دیے گا"۔⁽²⁾ اور آقا كريم مَنَا لِيُنْظِمُ فِي إِنهُ الرشاد فرمايا: " لو كول يرايك ايبازمانه بهي آئے كا كه أس دفت لو كول کے در میان اپنے دین پر صبر کرنے والا، آگ کی چنگاری پکڑنے والے کی طرح ہو گا" ⁽³⁾

لہٰڈ ااس دورِ فتن میں ضرورت اس امر کی ہے کہ ہم ان فرض علوم کوخود بھی سیکھیں اور لیٹی اولاوں کو بھی سکھانے کا اہتمام کریں۔اللہ عزوجل سے دعاہے اس سعی کو لیٹی بار گاہ میں قبول فرمائے اور ہمیں دیارِ حبیب مُنَافِقِیْم میں ایمان پر موت نصیب فرمائے۔ آمين بجاه النبي الامين مَنَا النَّيْمُ

^{1 (}منهاج العابدين. ص169 مكتية المدينه. كراجي)

^{2 (}صيح مسلم، كتأب الإيمان بأب الحدة على البيادرة بالإعمال . ج1، ص133، حديث 309. قريد بالتسلال الأهور)

^{3 (}ترمذاي، كتأب الفتن، بأب الصابر على ديمه ج2 ص75، حديث 141 فريد بك ستأل الأهور)

چبنداہم اصطلاحات

مطالعه سے قبل چند ضروری اصطلاحات پڑھ کیجے۔

ایمان کے کہتے ہیں:

ا يمان تقديق قلى كانام ہے ، يعنى أن ياتوں كى سيج دل سے تقديق كرنا

جن کا تعلق "ضروريات وين" ہے ہے "ايمان" ہے۔ (1)

كفرك كبت بين:

ضروریاتِ وین " میں سے کسی تھی ایک ضرورتِ دینی کا اٹکار " گفر "

کہلاتا ہے۔ اگر چید باقی تمام ضرور یاتِ دین کی تصدیق کر تاہو۔(²⁾

ضروريات وين كس كهتي بين

ضرور یاتِ دین،اسلام کے وہ احکام ہیں ، چن کوہر خاص وعام سر

جانتے ہوں ، جیسی اللہ عزوجل کی وحدانیت (یعنی اس کا ایک ہونا)، انبیائے کرام عکیٹیھٹر الصّلوقاً وَالسّلام کی نبوت، نماز، روزہ، حج، جنت، دوزخ، قیامت میں اٹھایا جانا، حساب و کتاب لینا وغیر صا۔ مثلاً یہ عقیدہ رکھنا (بھی ضروریات دین میں سے ہے) کہ حُمُور خاتم النبیین مَنَّالِیُّیْمُ بیں ، حضور مَنَّالِیُّمْمُ کے بعد کوئی نیا نبی نبیں ہو سکتا۔

ضروريات مدمب الل سنت كس كمت بين:

وہ عقائد جن کے ماننے سے بندہ اہل سنت و

جماعت کے گروہ بیں واقل ہو جائے اور اس کے انکارے اہل سنت وجماعت کے گروہ سے خارج ہوجائے ضرور یات فراس نے والا" اہل سنت کہلاتے ہیں۔عقائد اہل سنت کا مانے والا" اہل سنت

^{1 (}ماخوۋارېپارۋىرىعت،حصە1، ص172مكتىةالىدىنە، كراچى) 2 (ماخوۋارېپارۋىرىعت،حصە1، ص172مكتىةالىدىنە، كراچى)

^{3 (}ماغوذبهار شريعت،حصه1، ص172ملغصاً مكتبة البدينه. كراجي)

یا سی "اور انکار کرنے والا " گراہ یا بدند بہب" کہلاتا ہے۔(1) مر تد سے کہتے ہیں :

ر مرتد وہ شخص ہے کہ اسلام کے بعد کسی ایسے امر کا انکار کرے جو ضرور پات دین سے ہو۔ یعنی نہو (اور ضرور پات دین سے ہو۔ یعنی زبان سے کلمہ گفر کے جس میں تاویل صحیح کی گنجائش نہ ہو (اور کافر ہوجائے)۔ یو ہیں بعض افعال (کام) ایسے ہیں جن سے کا فر ہوجا تا ہے۔ مثلاً: بُت کو سجدہ کرنا، قرآن پاک کو نجاست کی جگہ چھینک دینا (وغیرہ)۔(2) کلماتِ گفرکی اقسام:

كلمات كفركى دونشمين بين: (1) التروام كفر (2) لزوم كفر

| محم | التزامِ كفركى تعريف |
|--|---|
| التزام كفر كا ارتكاب كرنے والا دائرہ | ضروریات دین میں سے کی ایک چیز |
| اسلام سے خارج ہو کر کافرومر تد ہو جاتا | کے بھی خلاف کرنا (لیعنی انکار کرنا)۔ |
| ہے۔اس کے تمام نیک اعمال اکارت ہو | چاہے وہ خلاف کرنے (انکار کرنے) والا |
| گئے لیتن پچھل ساری نمازیں ،روزے، جج | بظاہر اسلام کا کیساہی شیدائی بنتا ہو اور بے |
| وغيره تمام نيكيان ضائع هو حمكين ـ شادي | شک کفر کے نام سے چڑتا ہو، مگراس پر |
| شُده نَعَا تُو نَكَاحَ مِنْ نُوثُ كَايِدِ الرَّسَى | تھم کفر ہے اور وہ اسلام سے خارج |
| كامريد تھاتو بيعت بھي ختم ہو گئي۔ | (3) |
| اليے شخص كو دوبارہ كلمہ پڑھ كرمسلمان | |
| مونامو گا_دوباره تكاح كرنامو گا_(⁴⁾ | |

^{1 (}ابو مهدعار قين القادري، عقائد توثس، ص2)

^{2 (}مأخوذبهارغريعت، حمه 9، ص455 مكتبة البدينه، كراچي)

³⁽كفريه كلمات، ص51مكتبة المدينه، كراجي)

^{4 (}كفريه كلمات، ص524 مكتهة المديده، كراجي)

| تخم | لزُومِ كفرى تعريف |
|---------------------------------------|--|
| ایسا مخض اسلام سے خارج نہیں ہوتاء | لزدم كفرعين كفرتونبيس موتا مكر كفرتك |
| اس کا تکار تھی نہیں ٹوٹنا اس کی بیعت | لے جانے والا ہوتا ہے۔ اس میں کفر کے |
| مجى بر قرار رہتى ہے اور اس كے سابقہ | ساتھ کسی معتی تھیج کا بھی پہلو ٹکلتا ہے۔ |
| اعمال بهي برباد نهين هوتے۔ | لزُوم كفر كى صورت ميں مجى فقهائے كرام |
| البتة ال كيلئ تجديد ايمان وتجديد نكاح | وَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلامِ فِي حَمْمٍ كَفُر ويا مَّر |
| كانتكم ہے۔(2) | متكلمين رَحِمَهُمُ اللَّهُ النَّهِين الله على |
| | سکوت کرتے (لینی خاموثی اختیار فرماتے) |
| | ہیں ۔ اور فرماتے ہیں جب تک اِلتِرام کی |
| | صورت ندہو قائل کو کا فر کہنے سے سکوت |
| | کیا جائیگا اور احوط(کینی زیاده مختاط) یمی |
| | ندبب متكلمين رَحِمَهُمُ اللَّهُ المُبِين |
| | (1) |

چنداصولی باتیں پڑھ کیجیے

کا فر کو کا فر کہنا ضروری ہے:

کافر کو کافر کہنانہ صرف جائز بلکہ بعض صور توں میں فرض ہے۔ سے۔ صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی دھیۃ الله علیہ ہیں:"ایک بیہ وہا بھی پھیلی ہوئی ہے کہتے ہیں کہ ہم تو کافر کو بھی کافرنہ کہیں گے کہ ہمیں کیا معلوم کہ اس کا خاتمہ کفر پر ہوگا۔" یہ غلط ہے۔ قرآنِ پاک نے کافر کوکافر کہااور کافر کہنے کا تھم دیا۔ چنا ٹچہ ارشادِ باری تعالیٰ ہے:

^{1 (}قتازى امجىيە. ج، 4س513.512 مكتبەر شويە، كراچى) 2 (كفريە كليات، ص53 مكتبة البنينة، كراچى)

قُلُ لَيَالَيْهَا الْكُفِرُونَ (1) ترجمه كنزالعرقان: "تم فرماؤ ال كافرو!"

قطعی کا فرکے کفریس شک کرنے والا بھی کا فرہو جاتا ہے:

یاد رہے! مسلمان کو

مسلمان، کا فرکو کا فرجاننا ضروریات دین میں سے ہے۔ اور کسی ایک ضروریاتِ دین کا اٹکار گفرہے۔ مثلاً مرزائیوں (قادیانیوں) کے کفر پر مطلع ہو کر اِنہیں کا فرنہ سجھنے والاخود کا فر مت صحیا برگا (2)

مر تدہوجائے گا۔ (2) اس میں قادیانیوں کے تمام گروہ شامل ہیں۔ وہ قادیانی بھی جو مرزاغلام احمد کو نبی مانیں اور وہ بھی جو مرزا کو مجد دیا مسیح مانیں اور وہ بھی جو ان میں سے تو پھے شمانیں مگراس کو محض مسلمان مانیں بلکہ وہ بھی کافرومر تدہیں جو اس کے عقائد کو جانئے کے باوجو داسکے کافر ہونے پر شک کریں۔(کیونکہ نبوت کا دعویٰ کرنے والے کو صرف مسلمان ماننا بھی کفر ہے)۔(3)

تعلم كفرالكانا

قول يافعل كأكفر ہونا:

وں یا فعل کے کافرہونے میں فرق ہے۔ - قول یا فعل کا گفرہونا ایک علیحدہ بات ہے اور کسی معین (مخصوص) شخص کو کافر قرار دینا علیحدہ بات ہے۔مثلاً کسی مسلمان کوبت کے آگے سجدہ کرتے ہوے دیکھا تواس عمل کو تو گفر کہیں گے لیکن اِس شخص کو فی الفور کافر نہیں کہیں گے جب تک وجو ہات سامنے نہ آ جائیں، ہو سکتا ہے وہ جان سے مار ڈالنے کی صبحے دھمکی کی وجہ سے سجدے میں گراہواور دل ایمان پر قائم ہو۔لیکن اگر

^{1 (}بهاردريعت حقه .9.ص 455 مكتبة البدينه كراجي)

^{2 (}ملغصاً فتاؤى رضويه ج14 ص 321 رضا فاؤنليشن، لاهور) 3 (ايمان كيحفاظت، ص55)

ثابت ہو جائے کہ بخوشی بت کو سجدہ کر رہاہے تو کا فر قرار دیاجائے گا۔ (مفتیانِ کرام جب سی قول کو کفریہ قرار دیتے ہیں ، تو عموماً لزوم گفر ہو تاہے ، جب تک قائل پر اِتمام حجت نہ کر لی جائے ،التزام گفرسے گریز (کرنا)لازم ہے) (1)

بے خیالی میں کفر بک دیٹا:

اگر کسی کے مند سے بے خیال میں کفرنکل گیامثلاً:" کہنا چاہتا تھا،

الله مالك ہے، مگر معاذالله منه سے نكل كيا الله مالك نہيں اس صورت ميں قائل كا قول تو يقينًا كُفر ہے مگر اس كى تكفير نہيں كى جائيگى كہ بے خيالى ميں كلمه صادر ہوا ۔

" کہنا کچھ چاہتا تھااور زبان سے کفر کی بات نکل گئی تو کا فرند ہوالیتی جبکہ اِس امرے اظہارِ نفرت کرے سننے والوں کو بھی معلوم ہو جائے کہ غلطی سے بید لفظ نکلاہے اور اگر بات کی آگی کی (لیعنی جو کچھ مندسے نکلااس پر اڑار ہا) تواب کا فرہو گیا کہ گفر کی تائید کر تاہے "۔(2)

كياعام آدمي تهم كفرالگاسكتا؟

جب سی بات کی گفرہونے کے بارے میں یقینی طور پر معلوم

ہو مثلاً کسی مفتی صاحب نے بتایا ہو یا کسی مُعتبر کتاب "بہارِ شریعت" یا "فاؤی رضوبہ شریف" وغیرہ شن پڑھا ہوت او اس گفری بات کو گفر ہی سمجھے ورنہ صرف لبتی انگل سے ہر گز ہر گز کسی مسلمان کو کافر نہ کہے۔ کیوں کہ کئی جملے ایسے ہوتے ہیں جن کے بعض پہلو گفر کی طرف جارہ ہوتے ہیں جن کے بعض پہلو گفر کی طرف جارہ ہوتے ہیں جن کے ایمن معلوم نہیں ہوتا کہ اس خارہ ہوتے والے کی نیت کا بھی معلوم نہیں ہوتا کہ اس نے کونسا پہلو سراد اولیا۔

اعلی حضرت امام الل سنت امام احمد رضاخان دحدة الله عليه فرمات إلى:" بمارے أحمد دحدة الله عليه من علم ويا ب كراكى كلام ميس 99 اختال تفرك بول اور ايك اسلام كاتو

^{1 (}اصلاح عقائد واعمال، ص35دار العلوم نعيميه، كراجي)

^{2 (}بهار شريعت، حصه 9، ص456 مكتبته البديده. كراجي)

واجب ہے کہ اختِال اسلام پر کلام محمول کیا جائے جب تک اس کا خِلاف ثابت نہ ہو "(1)

بغیر علم کے فتوی دینا یا غلط مسکلہ بتانا:

نی زمانہ ایک الی غلط روش چل نگل ہے کہ جس

مخض کو شریعت کا پچھ علم نہ ہو وہ بھی کسی دین مسئلہ پر اپنی رائے ضرور دے دیتا ہے۔ ایسا

کرنے والے اِن احادیث سے عبرت پکڑیں ۔ فرمانِ مصطفیٰ مَثَالیْمَا ہے:

روب سے الجیر علم کے فتویٰ دیاتو آسان و زمین کے فرشتے اُس پر لعنت سمیعیے ہیں "_⁽²⁾

اور بیارے آ قامناً لینے کے ارشاد فرمایا :

" جس نے بغیر علم کے فتویٰ دیاتواس کا گناہ فتویٰ دینے والے برہے "_(3)

^{1 (}فتأوى رضويه ب 14، ص 604 رضافاؤنليش الاهور)

^{2 (}الجامعُ الصغير، ص517. حديث 8491دار الكتب العلبية بيروت)

^{3 (}سان) في داؤد، كتاب العلم ، بأب التوثُّ في الفتيا ، ج 3 ص 48 حنيث 3172 قيماً - القرآن يبلي كيشاز ، لاهور)

كفربيه كلبات

ذیل میں فلموں، ڈراموں اور باہمی معاملات و مختلف مواقع پر سکے جانے والے چند کفریہ کلمات کا ذکر ہے، انہیں پڑھنے سے نہ صرف آگی آگاہی ہوگی بلکہ دوسرے گفریات کی نشائد ہی کے متعلق بھی انشااللہ ذہن میں ایک زاویہ تھکیل پا جائے گا۔

ذات الی عزوجل کے بارے میں:

(1) الله عزوجل ك وجود كا الكاركرف والى كو دبريه (atheist) كبتة بي وجود اللى كا الكاركرف والا كافروس تذم وا

ا فار و صفح الا من مرو سر منتها و منتها که الله عزوجل موجود نهیں ہے، یا الله عزوجل سنتا

(2) مصائب ومشکلات نے وقت یہ کہد دینا کہ القد عز و جس موجود عمیں ہے، یاالقد عز و جس سما (دیکھتا) نہیں ہے۔ابیا کہنے والا شخص کہتے ہی کا فرہو گیا۔ ⁽²⁾

(3) الله تعالى جِبت (direction)، مكان وزمال (time & place), حركت وسكون

(rest & motion) ، صورت (body) وجمح حوادث مياك ہے۔

تقصیل: (الله عزوجل کے لیے مکان، سَت، جسم ثابت کرنا گفرہے۔الله عزوجل کو "اوپر والایا آسان پر رہناہے یا ہر جگہ ہے " کہنا گفر لزومی ہے۔ ایسا کہنے والا اگرچہ علمائے متعلمین دحمة الله علیهم کے نزدیک اسلام سے خارج نہیں ہوتا تاہم فقہائے کرام دحمة الله علیهم کے نزدیک اسلام ہے خارج نہیں ہوتا تاہم فقہائے کرام دحمة الله علیهم کے نزدیک اس پر حکم گفرہے۔ لہذا اس پر لازم ہے توب، تجدید ایمان و تجدید تکاح کرے۔

یوں کو بھی اللہ عزوجل کے متعلق مید نہ کہیں کہ اللہ اوپر ہے یا اللہ ہر جگہ ہے (کہ اللہ جگہ لیدی کوٹ کی اللہ عزوجل اور اسکی صفات کے علاوہ ہر چیز حادث ہے، حادث لیتی مکان سے پاک ہے۔ اللہ عزوجل اور اسکی صفات قدیم ہیں (لیعن ہمیشہ پہلے موجود نہ تھی بعد میں وجود میں آئی، جبکہ اللہ عزوجل اور اسکی صفات قدیم ہیں (لیعن ہمیشہ

^{[(}كفريه كلبات ص 96مكتبة البديعه كراجي)

^{2 (}كفريه كليات ص96 مكتبة المدينه كراجي) 3 (جارش يعت حصه 1،ص19 مكتبة المدينه كراجي)

ہمیشہ سے ہیں))۔ پچوں کو یوں سکھائے کہ اللہ عزوجل ہماری جان سے بھی قریب ہے۔ اللہ عزوجل کی قریب ہے۔ اللہ عزوجل کی رحمت ہر جگہ ہے۔ اللہ عزوجل ہمیں دیکھ رہاہے، اللہ عزوجل کے ملے میں مرچیز ہے۔ (1)

الد مروب کے میں ہر پر ہے۔ است مفتی مذیب الرحمٰن دام ظلہ لکھتے ہیں: "اللہ تعالی کی ذاتِ اقد س جہت، ذمان و مکان، حرکت و سکون، شکل وصورت، الغرض جسم و جسمائی تقاضول اور ہر قسم کے عوارض سے پاک اور مُنزہ ہے۔ لہٰذا اللہ تعالی کو اوپر والا اور آسان والا کہنا درست تہیں ہے۔ "اوپر والے سے عظمت وبزرگی رفعت شان کے معنی مر اولیے جاسکتے ہیں۔ لیکن ان کلمات کے استعال سے اجتناب کرنا چاہیے۔ قر آنِ مجید اور احادیث مبارکہ ہیں جن مقامات پر اللہ تعالیٰ کی استعال سے اجتناب کرنا چاہی کمات آئے ہیں، اُن کے قطعی معنی و مصداق کے تعین کے ابنے رائد تعالیٰ کی بنیر اُن پر ایمان لانا فرض ہے۔ اُن کے معانی و مطالب و مصداق کے بارے میں بحث کرنا عام مسلمانوں کے لیے نہ مناسب ہے اور نہ ضروری ہے۔ الی تمام آیات و حدیث متشا بہات میں سے ہیں "۔ (2)

(4) کسی مصیبت و پریشانی پر الله عزوجل کو ظالم کہنا، یابیہ کہنا کہ الله عزوجل ظالموں کاساتھ دیتا ہے۔ ایسا کہنا گفر ہے کہ ان جملوں بیس رب تعالیٰ کو ظالم اور ظالموں کاساتھ دینے والا قرار دے کر اللہ عزوجل کی توہین کی گئے ہے۔(3)

راللہ مروس کی دات پر اعتراض کرنا تعلق گفر ہے اور مُعتر ض کا فرومر تد ہوجاتا ہے۔ (4)
تفصیل : (اللہ عزوجل پر اعتراض کرنے سے بچنے کا شریعت میں تھم ہے اور ہر مسلمان کا تھم
شریعت کے آگے سر تسلیم خم ہے۔ اللہ عزوجل خالق ومالک ہے۔ اُس عزوجل کے پیدا کردہ
بندے کا اُسی عزوجل پر اعتراض کرنا اُس عزوجل کی شدید ترین توہین ہے (اور اللہ عزوجل کی
توہین گفر ہے)۔ معاذاللہ عزوجل اگر اعتراض کی اجازت دے دی جائے تو پھر جس کی سمجھ

^{1 (}ماغوذ كفريه كلبات، ص99- 111/103 -113 مكتبة البدينه، كراجي)

^{1 (}تفهيد السائل ج7، ص33 شياء القرآن يبني كيشار الأهور افتاوي قيض الرسول حصه 1)

^{3 (}كفريه كلمات، ص116مكتية المديده، كراجي)

^{4 (}كفريه كليات، ص141 مكتبة البديده، كراجي)

میں جو کچھ آئے گا وہ کہتا چرے گا کہ مشلآ: الله عزوجل نے فُلال کام کیوں کیا؟ فُلال کام کیوں تہیں کیا ؟ اِس کو یوں نہیں اور یوں کرنا چاہیے تھا وغیرہ وغیرہ۔ بہرحال مسلمان کو چاہیے کہ اللہ عزوجل کے ہر کام کو ہنی بر حکمت ہی یقین کرے خواہ اس کی ابتی عقل میں آئے یا نہ آئے۔زبان پر آنا گیادل میں مجی اعتراض کو جگدنہ دے)۔ (6) الله عزوجل ہر ممكن ير قادرہ اور ہر أس چيزے جس ميں عيب و نقصان ہے پاك ہے، لینی عیب و نقصان کا اُس میں ہونا محال ہے ، بلکہ جس بات میں نہ کمال ہو ، نہ نقصان ، وہ بھی اُس کے لیے محال، مثلاً حجموث، دغا، خیانت، ظلم، جہل، بے حیائی وغیر ہاعیوب اُس پر قطعاً محال ہیں اورب کہنا کہ جموث پر قدرت ہے بایں معنی کہ وہ خود جموث بول سکتا ہے، محال کو ممکن تظہر انا اور خدا کو میبی بتانا بلکه خداسے انکار کرناہے اور بیہ سمجھنا کہ مُحالات پر قادر نہ ہو گاتو قدرت ناقص جو جائے گی باطل محض ہے، کہ اس میں قدرت کا کیا نقصان! نقصان تو اُس محال کا ہے کہ تعلق قدرت کی اُس میں صلاحیت تہیں۔(1)

قرآنِ مجید کی توہین کے بارے میں:

- (1) قرآنِ كريم يامسجد يا اس طرح كى وه چيزين جو شرعاً معظم (ديني شعار) بين ان كى جس نے توہین کی اُس نے کفر کیا۔ (2)
- (2) رشوت کے ملنے والے پسیے پرخوش ہو کر لھذا ون فَصْلِ رَقِيْ (بد میرے الله كا فضل
 - ہے) کہنا لیعنیاس حرام تطعی کواللہ کا نضل قرار دینا گفرہے۔⁽³⁾
- (3) آگربے خیالی میں قرآن شریف ہاتھ سے چھوٹ کریاالماری سے سرک کرزمین پر تشریف لے آئے (یعنی گر جائے) تونہ گناہ ہے نہ ہی اس کا کوئی کفارہ ۔ کیکن معاذ اللہ جان ہو جھ کر قر آنِ
 - مجید کوزمین پری خویناس کی توہین ہے اور یہ گفرہے۔ (⁴⁾

^{1 (}بهارهريعس حصه 1. ص محكتية البدينه، كراهي)

^{2 (}كفريه كلبات، ص 194، مكتية البدينه، كراجي امنح الروض الازهر للقارى)

^{3 (}كفرية كلمات ص181مكتية المنيته، كراجي)

^{4 (}كفريه كليات ص182 مكتبة البدينه، كراجي)

(4) ولیدنے علطی کی، اِس پر نویدنے اُس کی اصلاح کیلئے آیات کریمہ و احادیث مبارکہ سنائیں اس پرولید آیات واحادیث کے بارے میں پولا: " بیر (قرآن و حدیث) کوئی چیز مہیں ہے"۔ایسا کہنے پر ولید مسلمان ندرہا۔ (1)

(5) ہنسی ندان کی نیت سے بے موقع آیاتِ قرآنیہ پڑھناگفر ہے۔ ⁽²⁾ نبی کی گستاخی کے بارے میں:

(1) نبي كي او ٺيٰسي گتا خي كرنے والا فخض كافرومر تد ہے۔ ⁽³⁾

(2) سرکار دوعالم مَلَا لَيْنِيَّمُ ہے نسبت رکھنے والی کسی بھی چیز کی گنتا فی گفر ہے۔⁽⁴⁾

تفصيل:(صدرالشريعه مفتى امجد على اعظى دحه قالله عليه فرمات بين: جو فمخض حضور مَّاللَّيْظِ كو تمام انبیاء میں آخری نی نہ جانے یا حضور منگافین کی کسی چیزی توہین کرے یا عیب لگائے، آپ سَالِیُکُمُ کے موئے مبارک (بال مبارک) کو شخفیر (یعنی حقارت) سے یاد کرے۔ آپ سَالْٹُکِیُمُ کُ کے لباس مبارک کو گندہ اور میلا بتائے ، حضور مَلَافِیْنِ کے ناخن بڑے بڑے کہے سے سب گفر ہے۔ یا کسی سنت کی تحقیر کرے مثلاً داڑھی بڑھانا، مو چھیں کم کرنا، عمامہ باندھنا یا شملہ الحانا، ان کی اہانت (لیعنی توہین) گفرہے، جبکہ سُنت کی توہین مقصود ہو)۔

(3) جو نبوت کا دعوی کرنے والے سے معجزہ طلب کرے وہ کا فرہے۔البتہ اگر اُس کے عجز (لینی بے بسی) کے اظہار کے لئے ہو تو گفر ٹہیں۔ (لینی اُس کو یقینی طور پر جھوٹا نبی مانتے ہوئے

محض اُس کی رسوائی کی خاطر معجزہ طلب کرنا گفر نہیں کہ نبوت کا جھوٹا دعویٰ کرنے والا تبھی معجزه ظاہر نہیں کر سکتا)_⁽⁵⁾

(4) یہ کہنا کہ محمد رسول منگائی کا طرف نماز میں خیال لے جانا اپنے بیل یا گدھے کے تصور میں ہمہ تن ڈوب جانے سے بدر جہابد ترہے۔گفرادر سخت گستاخی ہے۔⁽⁶⁾

^{1 (}كفريه كلماسص 193 مكتبة المديده، كراجي/فتاوى رضويه)

^{2 (}كفريه كلمان سو 196/بهار شريعت حصه 9، س 464 مكتبة المديده. كرايي)

^{3 (}كفريه كلمات، ص199، مكتبة المذينه، كراجي/الشفاء)

^{4 (}كفريه كلبات ص 207/ بهار شريعت حمه 9 ص 463 مكتبة البديدة كراجي)

^{5 (}كقريه كلمات، ص222، مكتبة المدينة، كو اجي/اليعرُ الواتع/عالمكرري)

 ^{6 (}كفريه كليات: ص223. مكتبة البنينه. كراچى/فتاوى رضويه)

(5) شیطان لعین کاعلم نمی کریم مُلَّالِیُّیُلُم کے علم غیب سے زیادہ ماننا خالص کفرہے۔حضور مُلَّالِیُّیُلُم

کے علم شریف کو بچوں، جانوروں اور پاگلوں کے علم کی طرح کہناصر سے گفرہے۔(1)

(6) میہ عقبیدہ رکھنا کہ سرکار مَنَالْقِیْمُ کو الله عزوجل کی عطائے بغیر علم غیب حاصل ہے۔ایسا

عقیدہ رکھناصر تے گفرہے۔ یو نبی اللہ عزوجل کی عطاکے بغیر کسی کے لئے آیک ڈرے کاعلم یا ایک

ذر ہے کی ملکیت ثابت کرنے والا کا فرہے۔ اہلِ سنت کا یہی عقیدہ ہے کہ انبیاء واولیاء کوجو غیب کا علم ہے پاان میں ویگر جو بھی صفات پائی جاتی ہیں وہ سب اللہ عزوجل کی عطاسے ہیں۔(2)

(7) غیر انبیاء کے لئے وحی نبوت ماننا کفرہے۔ ⁽³⁾

(8) جو کیے کہ نبوت عبادت وریاضت کرکے حاصل کی جاسکتی ہے وہ کا فرہے۔(4)

(9) جوغیرنی کونی سے افضل یا اُس کے برابرمانے وہ کافر ہے۔ ⁽⁵⁾

(10) آئمدائل بيت كوانبيائ كرام سے افضل جاناكفر ہے۔(6)

کو جونبیوں سے افضل بابر ابر بتائے وہ کا فرہے۔ ⁽⁷⁾

(12) میہ کہنا کہ کوئی چھوٹا ہو یابڑا اللہ عزوجل کی شان کے آگے پھارے بھی ذلیل ہے۔ یہ کلمہ

کفر ہے۔ (8) فرشتوں کی توہین کے بارے میں:

(1) فرشتوں کے دجود کااٹکار کرنا کفر ہے۔ ⁽⁹⁾

(2) کسی بھی فرشتے کوعیب لگاتایااس کی توہین کر ناگفر ہے۔ (10)

1 (كفريه كلمات، ص223/بهار شريعت حصه 1. ص233. مكتبة المديده. كراجي) 2 (كفريه كلمات، ص221 مكتبة المدينة، كراهي)

3 (كفريه كلمات ص273/ بهارش يعت، حصه ا، ص35، مكتبة المدينه. كراهي)

4 (كفريه كلبات، ص273/بهار فريعت، صه، ص36. مكتبة البنينه، كراچي) 5 (كفريه كلبات، 470/ بهار شريعت، مصه ١٠٥١ مكتبة المدينه. كراي)

6 (كفريه كلمات ص274/بهار شريعت، حصه، ص210، مكتبة المنينه، كراجي)

7 (كفريه كلمات، ص274مكتبة المدينه، كراجي/بهارشريعت، حصه، ص 47مكتبة المدينه، كراجي)

8 (كفريه كلمات، ص274 مكتبة البدينة. كواجي فتأوى الجدية. ج 4 ، ص 411 تورية رضوية كراجي)

9 (كفريه كلمات ص299/ بهار شريعت حصه ٥٠١ ص95 مكتبة المديده كراجي)

10 (كفريه كليات، ص 299/بهار غريعت، حصه 9، ص 464، مكتبة البديده، كراجي)

(3) الله عزوجل في كسى اوركى روح قبض كرفي كا تحكم ديا تفااور ملك الموت فلطى سے دوسرے کی روح قبض کرنے بیٹنے گئے۔ کہنا گفرہے۔ (۱) (معاذاللہ اکثر ڈراموں میں یہ گفریکا جاتا)۔ (یا و رہے! فرشتے صرف وہی کرتے ہیں جو تھم البی ہوتا ہے،اس کے خلاف ہر گز نہیں کرتے)۔ جنات کے بارے میں:

(1) جنات کے وجود کا اٹکار گفرہے۔ اِ تکا وجو و قر آن و حدیث سے ثابت ہے۔ قر آن مجید کی کم و

بیش 25 شور توں میں جِنات کا تذکرہ ہے۔⁽²⁾

(2) جن غیب سے زیے (یعنی مکمل طور پر)جابل ہیں۔ ان سے آئندہ کی بات پوچھن عقلاً حماقت اور شرعاً حرام ہے۔اور ان کی غیب وانی کا اعتقاد ہو تو (بعنی ہیر عقیدہ رکھنا کہ جن کو علم

غیب ہے۔) گفرہے۔ (3)

قیامت کے بارے میں: (1) قیامت کامذاق اُڑانا گفرہے۔⁽⁴⁾

(2) مطلقابس طرح كهنا: " من قيامت سے نبيس ورتا " بي كفريه قول ہے۔ (5) شریعت کی توہین کے بارے میں:

(1) شریعت کانداق اُڑانا یا توہین کرنا گفرہے۔ (6)

(2) اگر کسی نے حدیث پاک یا تفسیر کی کتابوں کو توہین اور حقارت کی نیت سے پھینکا یا چھاڑویا

(3) اگر کوئی خالص دینی تعلیمات کے بارے میں کم : "مسلمان ترقی اُسی وقت کر سکتے ہیں

جب كه اپنى دىنى بوسيده تعليمات كو چپوژ دىي " ايسا كينے والا كا فرہے۔⁽⁸⁾

1 (ماخوداز قتاوى رضويه ج14،ص602، رضافاؤننيشن، الأهور) 2 (كفريه كليات بص313 مكتبة البديده كرايق)

^{3 (}كفريه كلمات، ص317 مكتبة المدينه، كرايي/فتأوي افريقه)

^{4 (}كفريه كلمات، ص327 مكتبة المدينه. كراچي/منح الروض)

^{5 (}كفريه كلمات بص328 مكتبة المدينه كراجي/الفتاوى البزازية على هامش الفتاوي الهندية) 6 (كفريه كليات ص 337/ بهار شريعت حمه 9. ص465 مكتبة اليدينه. كراجي)

^{7 (}كفريه كليات ص339 مكتبة البديعه، كراجي)

^{8 (}كقريه كلبات ص339 مكتبة البديده كراجي)

(4) کس سے کہا گیااللہ تعالی نے ئیک وقت چار ہویاں رکھنا حلال کی ہیں۔اس نے کہا جھے یہ تھم پیند نہیں۔ یہ کلمہ گفر ہے۔(1)

(5) کی سے کہا گیا شریعت پر عمل کرو۔ اس نے کہا " کیا شریعت پر عمل کر کے بھو کا مرول

گا!" - إسكااييا كهنا كفر ہے - (2)

(6) جو هخص مطلقاً حديث كامنكر بواور كهتا بويس صرف قرآنِ مجيد كومانتا بول حديث كاكوئي

اعتبار نہیں۔ایسے منگر حدیث کے بارے میں اعلیٰ حضرت امام اہل سنت امام احمد رضاخان دھمة

الله عليد فرمات بين: "جو هخص حديث كامكر به وه في مَنَّا يَنْ عَلَيْ كَامْكر به اورجو في مَنَّا لَيْكُمْ كا مكر به وه قرآن مجيد كامكر اورجو قرآن مجيد كامكر به الله واحد قهار كامكر به اورجو الله كامكر

متحرہے وہ فران بجیر کا مسر اور جو فران جیر 6 سرہے اللہ واحدِ جہارہ سرہے اور ہو اللہ ہ ہے صریح کا فرومر تذہے"۔(3)

(7) عالم دین سے اِس کے علم دین کی وجہ سے بغض رکھنا گفر ہے۔ بینی اِس وجہ سے کہ وہ عالم دین ہے۔(4)

۔ . (8) اذان شعار اسلام میں سے ہیں، کسی بھی شعار اسلام کی توہین گفر ہے۔ (6)

(9) بِلا عُذر جان بوجِه كر بغير وضوك نماز پڙهنا گفر ج حبك اسے جائز سمجھے يا إستهزاء (يعني

مراق اڑاتے ہوئے) یہ فعل کرے۔(⁶⁾

(10) یہ کہناکہ" نمازول کی ہوتی ہے ظاہری نماز میں کیاد کھاہے۔ یا یہ کہ ہم فقیرلوگ ہیں ہم

پر نماز معاف ہے۔ بیہ دونوں گفریہ کلے ہیں۔⁽⁷⁾ (1.1) غیر ش اکا جارت کی نہ در سے سے یک ڈاگھ ہے۔ (8)

(11) غیر خدا کوعبادت کی نیت سے سجدہ کرنا گفرہ۔ (8)

(12) حرام قطعی فعل کرتے وقت بسمدالله پر هناگفر ہے۔(1)

1 (كفويه كلمات، ص337. مكتبة المدينه، كراجي/عالمكيري)

2 (كفريه كلمات، ص329 مكتبة المدينه. كراجي)

3 (فتوى دهويه، ج14، ص312، رضافاؤنليشن، لاهور)

4 (كفريه كلمات، ص358 مكتبة المدينه ،كراجي/ايمان كي حفاظت ص103)

5 (كفريه كلبات ص359 مكتبة البدينه كراجي)

6 (كفريه كلمات،ص 362، مكتبة المدينه كوابق/منع الروض الازهر للقادري)

7 (كفريه كليات ، 373 مكتبة البديعه كراجي)

8 (كفريه كليات، ص376 مكتبة البديده، كراجي/عالبكيري)

(13) جس نے حرام اجماعی کی محرمت (حرام ہونے) کا انکار کیایا اس کی محرمت میں شک کیا

ا تو کا فرہے۔ جیسے شراب (خمر)، زنا ، لواطت ، سود وغیر مه (²⁾ حدید میں آباد کی میں میں ظلام میں ہفتھ میں میں میں آباد کی ظلام میں ایسان سال میں

(14) قربانی کو جانوروں پر ظلم کہنے والا تخص کا فرہے۔ قربانی کو ظلم کہنامعاذاللہ، اللہ کو ظالم کہنے کے متر اوف ہے۔(3)

(15) مروك ليے ريشم كے حرام ہونے كا افكار كفرى _(4)

(16) کفار کے میلوں، تہواروں میں شریک ہو کر ان کے میلے اور جلوسِ مذہبی کی شان و

شوکت برهاناگفر ہے۔ (5)

(17) مذاق میں کلمہ کفر مکنا بھی کفرہے۔⁽⁶⁾

(18) عام تغطیل کے روز ایک مخص نے کہا آؤ نماز پڑھیں تو دو سرے نے نداق میں جواب دیا

آج تو تماز کی بھی چھٹی ہے ، یہ جواب دینے والے پر تھم گفرہے جبکہ وہ عاقل ہالغ بھی ہو۔ ⁽⁷⁾ ۱۵ میں میں میں تروی سے میں تعدید کا تعدید کا تعدید میں انہوں کا تعدید کا اس کی تعدید اور کا

(19) کفار کے تہوار ول کے موقع پر ان کو تخفہ دینا حرام ہے۔ اور اگر ان کے تہوارول کی تعظیم کی نیت ہوتو گفرہے۔ (8)

۔ ہن کے مسلمان دیزہ ایجینٹ (visa agent)ئے کسی مسلمان کودیزا فارم پر اپنے آپ کو غیر

مسلم (کر پیچن، یبودی، قادیانی وغیرہ) لکھوانے کامشورہ دیاتومشورہ دینے والے پر تھم گفرہے ۔خواہ جس کو تھم پامشورہ دیا گیاہے وہ مشورہ قبول کرے بانہ کرے۔(ادر اگر جس کو تھم پامشورہ

دیاً گیاہے وہ مشورہ قبول کرے تو دونوں پر تھکم گفرہے)۔ (⁹⁾

(21) ایک محض نے اپنی بیوی سے کہا : " خُدا بھی اب تم کو مجھ سے عُدا نہیں کر سکتا، تمہیں

^{1 (}كفريه كلبات ، ص 407 مكتبة البديد، كراجي/عالبكيري)

^{2 (}كفريه كلمانت، ص416 مكتبة المدينه، كراچى/منځ الروض) 3 (كفريه كلمات، ص 413 مكتبة المدينه، كراچى/فتاوكر دويه)

^{4 (}كفريه كلمات ص 416 مكتبة المدينه، كراجي امتح الروض)

^{5 (}بهار شريعت حصه 9.0 مكتبة المديده كراجي)

^{6 (}كفريه كلمات، ص 496 مكتبة المديعه كرايق/اليحر الواتق)

^{7 (}كفريەكلىئات،ص503،مكتبةالىدىينە،كراچ) 8 (فتوڭارنبويە،ج14،ص73،رئيافاۋدلۇيشن،لاھور)

^{8 (}فتوی رضویه, ج14،ص73ه رضات وسیسی، ر مون 9 (کفریه کلبات، ص453 مکتبهٔ البدینه، کراچی/عالبگیری)

ہر حال ہیں ہیبیں رہناہے۔اس طرح کہنے والا شخص کا فرو مرتدہ، کہ اس نے اللہ عروجل
کی فگدرت کا انکار کیا۔(ای طرح کسی زبان دراز آدمی سے بیہ کہنا کہ" خداعر وجل تہاری زبان
کامقابلہ کرئی نہیں سکتا ہیں کس طرح کروں! "بیہ گفر ہے)۔(1)
کامقابلہ کرئی نہیں سکتا ہیں کس طرح کروں!" بیہ گفر ہے)۔(1)
کا بیان جاتارہا۔(کیونکہ پر دے کا مطلقا انکار کرے اور کیے کہ" صرف دل کا پر دہ ہونا چاہیے" اس
کا بیان جاتارہا۔(کیونکہ پر دے کا مطلقا انکار اُن قرآئی آیات کا انکار ہے جن ہیں ظاہری جسم کو
پر دے میں چھپانے کا تھم دیا گیاہے)۔(2)

پر دے میں چھپانے کا تھم دیا گیاہے)۔(2)
کام ہیں نہیں گوئی شخص کیے "اللہ عروجل جاتا ہے بیہ
کام ہیں نہیں نہیں نہیں کہا ہے اللہ عروجل جاتا ہے بیہ

(23) الله عجمه وفي بات پر الله عزوجل كو كواه بنانا يعنى كونى حص كميم" الله عزوجل جانتا به يه كام ميس في كبيا ب حالا نكه وه كام اس في خبيس كبيا ب "تواس في گفر كبيا - (3)

(24) حضرات شيخين (ابو بكر صديق وعمر فاروق) دخي الله تعالى عنهها كى شان پاك ميس سب و شتم كرنا (لعن طعن كرنا)، تبرا كبنا (بعني اظهار بيزاري كرنا) يا حضرت صديق اكبر دخي الله تعالى عنه كى صحبت با امامت و خلافت سے انكار كرنا كفر ب - أم المومنين حضرت عائشه صديقه دخي الله تعالى عنها كي شان پاك ميس قذف جيسي ناپاك تبهت لكانا يقينا قطعاً كفر ب - (4)

(25) حائفنہ عورت سے ہم بسری (صحبت) کو حلال سجھنا فقہاء کرام کی ایک جماعت کے

زویک کفر ہے۔(⁵⁾ (19)جس طرح کفریہ اتوال ہوتے ہیں اِسی طرح کفریہ افعال <u>کبمی ہوتے ہیں</u>۔

(19) بس طرح تفرید الوال ہوئے ہیں! فی سرے انعال میں جو ہیں۔ تفصیل : صدر الشریعہ مفتی امید علی اعظمی دھیۃ الله علیه فرماتے ہیں : عمل جوارح (لیتی علیم معظمہ کی در الشریعہ مفتی امید علی اعظمی دھیۃ الله علیہ فرماتے ہیں : عمل جوارح (لیتی علیم منافی ایمان (لیتی یقینی طور پر ایمان کے الک) دول اُن کے مر تکب کو کافر کہا جائیگا۔ جیسے منافی ایمان (لیتی یقینی طور پر ایمان کے اُلٹ) ہوں اُن کے مر تکب کو کافر کہا جائیگا۔ جیسے بُت یا چاند سورج کو سجدہ کرتا اور قتل نبی یا نبی کی توہین یا مصحف شریف (لیتی قر آن پاک) یا کعب معظمہ کی توہین اور کسی سنت کو ہلکا بتانا سے باتیں یقیناً گفر ہیں۔ یوہیں بعض اعمال گفر کی

^{1 (}كفريه كلمات من 526/بهار شريعت حصه 9. ص 461 مكتبة المديده كراجي)

^{2 (}كفريه كلبات، ص580 مكتبة البديعه، كرايق)

^{3 (}كفريه كلمات،ص 581 مكتبة البديده، كراجي امتح الروض)

^{4 (}بهار شريعت، حقه وص 463، مكتبة المدينه، كراجي/عالمكيري وغيرة)

^{5 (}كفريه كلبات،ص527/بهارِ شريعت،حصه2ص382مكتبة البدينه. كراجي)

علامت بیں جیسے زُنار باند هنا، سر پر (پنارتوں کی طرح) پھٹیار کھنا ، قشفہ (یعنی ہندووں کی طرح پیشانی پر مخصوص قتم کاٹیکا) نگانا۔ ایسے افعال کے مر تکب کو فقہائے کرام دھیۃ اللہ علیہم کا فرکہتے ہیں۔ توجب ان اعمال سے کفرلازم آتا ہے توان کے مرتکب کو از سر نواسلام لائے اور اس کے بعد اپنی عورت سے تجدیدِ نکاح کا تھم دیاجائےگا۔ (1)(2)

غیر مسلموں وغیرہ کے بارے میں:

(1) یہو دبوں اور عیسائیوں کو اہل ایمان کہنا کفرہے کیونکد یہ دونوں کا فر ہیں اور کا فر کو کا فرجائنا

مفروریات دین میں سے ہے۔

تنفصيل : يبود و نساري الركتاب توبين مكراس بنا پراخبين الل ايمان خبين كها جاسكتا، في الوقت ان کے مذاہب باطل ہیں اور وین اسلام کے سواکوئی اور دین قابل قبول نہیں۔ ارشادِ بارى تعالى ٣ : وَمَنْ يَّبُتَعْ غَيْدَ الْإِسْلَامِ دِينَا فَكَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ "وَهُوَ فِي الْأَخِرَةِ مِنَ الْحُسِرِيْنَ ترجمہ کنزالعرفان: " اور جو کوئی اسلام کے علاوہ کوئی اور دین چاہے گاتو وہ اس سے ہر گز قبول نه کیاجائے گا اور وہ آخرت میں نقصان اُٹھانے والوں میں سے ہو گا"۔⁽⁴⁾

(2) جو کیے: " میں نہیں جانتا، کا فر جنت میں جائے گا یا جہنم میں " یا کیے " میں نہیں جانتا کہ كافركا مهكاناكيا ہے۔" يه دونول باتيل كفريه بين ارشادِ بارى تعالى ہے:

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِأَيْتِنَآ أُولَيِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ *هُمُ فِيْهَا لَحٰلِدُونَ * _ ⁽⁵⁾

1 (كفريه كلمات ص 471/ جار شريع عد عصه 1. ص 176 مكتبة المديده، كراجي)

² اس میں مزید تفصیل ہے ہے کہ علاء قرماتے ہیں: اگر ایک مسلمان فقط دو مروں کو دکھانے کے لیے کفار کا طریقتہ لقل کر تاہے تا کہ لوگوں کو پیندھلے کے کفار کمیا کرتے ہتے ، تواس سے وہ مسلمان کا فرنہیں ہو گا۔ مزید تفصیل کے ليے ورج ذيل كش كى طرف رجوع كريں: 🌣 (ترك ڈراھے، ص 13، دار الكلام، تجرات) 🌣 (فآوي المك العلماء، ص222، بريلي شريف) 🌣 (تقهيم المسائل، ت 8 من 442، ضياء القرآن بهل كيشنز الامور) (فَأُونُ رَضُوبِهِ ، ج24 ، ص530 ، رضا فاؤتذ يثن ، لا بور)

^{3 (}أل عمر أن. آينت 85)

^{4 (}كقرية كلبات، ص 537 مكتبة المدينة، كراجي/اصلاح عقائدوا عمال، ص 36دار العلوم تعيمية، كراجي)

^{5 (}البقرة. آيت39)

ترجمہ کنز العرفان: "اور وہ جو کفر کریں گے اور میری آیتوں کو جیٹلائیں گے وہ دوزخ والے ہوں گے، دہ ہمیشہ اس بیں رہیں گے "_(1)

(3) انسان بلکہ ہر جاندار صرف ایک ہی بار پیدا ہو تاہے۔ مرفے والے کی روح کسی جسم میں داخِل ہو کر دوبارہ جنم لیکر دنیا میں نہیں آتی۔ ابساعقیدہ رکھنا کفرہے۔ (آکٹر انڈین فلموں ڈراموں میں بید کفریہ عقیدہ دکھایاجا تاہے)۔(2)

گانوں کے کفریداشعار کے بارے میں:

ویکھا گیا ہے آج کل اکثر فلموں ڈراموں میں گانوں کے ایسے کفریہ اشعار ہوتے ہیں کہ الامان الحفیظ، اور ہمارے نوجوان ان گانوں کو سنتے

گنگناتے نظر آتے ہیں۔ ایمان کی بربادی :

سیاں کے ماتھ ایک میں کے ساتھ اور کھنے اقطعی کفر پر مبنی ایک بھی شعر جسنے وکچیں کے ساتھ پڑھا، سنایا گایا وہ کفریش جاپڑااور اسلام سے خارج ہو کر کافروشر تدہو گیا، اس کے تمام نیک اعمال اکارت ہو گئے یعنی پچھلی ساری نمازیں ، روزے ، آج وغیرہ تمام نیکیاں ضائع ہو گئی۔ اس پر فرض ہے کہ شادی شدہ تھاتو تکاح بھی ٹوٹ گیا اگر کسی کا مرید تھاتو بیعت بھی ختم ہو گئی۔ اس پر فرض ہے کہ اس شعر میں جو کفر ہے اس سے فوراً توبہ کرے اور کلمہ پڑھ کرنے سرے سے مسلمان ہو۔ مرید ہونا چاہے تو اب نئے سرے سے کسی بھی جامع شرائط پیر کا مرید ہوا گر سابھ بیوی کور کھنا چاہے تو دوبارہ نئے مہرے ساتھ اس سے نکاح کرے۔ جس کویہ شک ہو کہ آیا ہیں نے اس طرح کاشعر و کپی کے ساتھ گایا، سنایا پڑھا ہے یا نہیں جھے توبس یوں ہی فلمی گانے سنے اور گئانا نے کی عادت و کپی کے ساتھ گایا، سنایا پڑھا ہے یا نہیں جھے توبس یوں ہی فلمی گانے سنے اور گئانا نے کی عادت ہے تو ایسا شخص بھی احتیا طا توبہ کرکے نئے سرے سے مسلمان ہوجائے ، نیز تجدید بیعت اور تجدید نکاح کرلے کہ اس میں ودنوں جہال کی بھلائی ہے۔ ہم یہاں عبرت و فسیحت کے لیے چند

^{1 (}كفرية كلبات ص 568 مكتبة البدينة كراجي/ مجمع الانهر)

^{2 (}كفرية كلمات، ص578/ بهار شريعت، حصه 1، ص103. مكتبة البدينة. كراجي)

گفرىيە اشعار كى نشاندىق كرتے ہيں۔(1)

(شعر 1)

خدائجی آسال سے جب زمیں پر دیکھتا ہو گا مرے محبوب کو کس نے بنایا سوچتا ہو گا

اس شعر میں کئی کفریات ہیں:

[1] جب ديكمتا بو گاإس كامطلب بيد مواكه الله عزوجل هروفت نهيس ديكمتا_معاذالله

2} اِس بے حیا کے محبوب کو اللہ عزوجل نے نہیں بنا یا معاذ اللہ اُس کا کوئی اور خالق ہے۔ {3} کس نے بنایا ہے بھی اللہ عزوجل کو نہیں معلوم۔

[4] سوچتاہو گا [5] الله عزوجل آسان سے دیکھتا ہو گاحالانکہ الله عزوجل مکان اور

ست سے پاک ہے۔ بدسب قطعاً اجماعاً کفریات ہیں۔

(شعر2)

ستم ہے خدایا

كيول بيار بنايا

[1] ستم ہے خدایا۔ اِس میں معاذاللہ ، اللہ عزوجل کی طرف ظلم کی نسبت کی گئی۔

2} کیوں پیارینایا۔اس میں معاذ اللہ عزوجل کی ذات پر اعتراض کیا گیا کہ اللہ عزوجل ٹنڈیان سے معہدی نے سام

نے انسانوں کے مابین صفت پیار کیوں پیدا کی۔ یہ دونوں یا تیں گفر ہیں۔

(شعر 3) جبے ترے نینال مرے نینوں سے لاگے دے تب سے دیوانہ ہوا سب سے بیگانہ ہوا

رب مجھی دبوانہ لاگے رہے

اس شعر کے اس جھے "رب بھی دیوانہ لاگے رہے" میں شاعر بے بصیرت کے دعویے کے مطابق اس کو خداعز وجل معاذاللہ و لوانہ لگ رہاہے یقیبتاً بیان اللہ عزوجل کی شان عالی میں کھلی گالی اور تھلم کھلا گفر وار تداوہے۔

زبان کی حفاطت سے متعلق فرمان عبرت نشان

نى رحمت حضور خاتم النبيين مَكَّ الْيُكِمُّ نِي ارشاد فرمايا:

" بیٹک آدمی ایک بات کہتا ہے جس میں کوئی حرج نہیں سمجھتا حالا نکہ اس کے سبب ستر سال جبتم من گرتارے گا"۔(1)

اللهُ عرّوجل بميں زبان کی حفاظت کی توقیق عطافرمائے، جماراخاتمہ ایمان پر فرمائے، آمین۔

کفر پر مجبور کئے جانے کے بارے میں:

اگر کوئی مخص قتل کر دینے یا جسم کا کوئی عُضو کاٹ ڈالنے یاشد بدمار مارنے کی صحیح و همکی دے کر گفر کرنے کا تھم دے اور جس کو د همکی دی گئی وہ جانتا ہے کہ بیہ ظالم جو کچھ کہہ رہاہے کر گزرے گا۔ تواب ظاہری طور پر کلمہ کفر بکنے یا بُت کو سجدہ دغیرہ کرنے کی رخصت ہے اور دل حسب سابق ایمان پر مطمئن ہونے کی صورت میں کا فر

^{1 (}ترمذى،ايواب الزهر،ياب ماجاء من تكلم، ج 2. ص95 حديث 195، فريد يك سئال، لاهور) 2 (كفريه كليات، ص622 مكتبة البديعه، كراجي/ در محتار، ردالبحتارر)

ارشادِ باری تعالی ہے: مَنْ کَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْ بَعْدِ إِیْمَائِهَ إِلَّا مَنْ أُكْدِ لَا وَ قَلْبُهُ مُطْمَینٌّ بِالْإِیْمَانِ ترجہ کزالعرفان: "جو ایمان لانے کے بعد اللّٰہ کے ساتھ کفر کرے سوائے اس آدمی کے جے (کفریر) مجود کیاجائے اور اس کاول ایمان پرجہاہواہو " (1)

تجديدا يمان كاطريقه

جس گفرے توبہ مقصود ہے وہ آی دقت مقبول ہوگی جبکہ وہ آس گفر کو گفر تشلیم کر تاہواور دل
میں اُس گفرے نفرت و بیزاری بھی ہو۔ جو گفر سرزو ہوا توبہ میں اُسکا تذکرہ بھی ہو۔ مثلاً جس
نے ویزافارم پر اپنے آپ کو کر پچن لکھ دیا وہ اِس طرح کیے "یااللہ عزوجل میں نے جو ویزافارم
میں اپنے آپ کو کر پچن ظاہر کیا ہے، اس گفرے توبہ کر تاہوں۔ لَا َالله اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُول بِیں الله (الله عزوجل کے رسول بیں)"
الله (الله عزوجل کے سواکوئی عبادت کے لا کُل نہیں محمد منگالی کے اللہ عزوجل کے رسول بیں)"
۔ اِس طرح مخصوص گفر سے توبہ بھی ہو گئی اور تجدید ایمان بھی۔ اگر معاذاللہ عزوجل کی
مورات کے ہوں اور یاد نہ ہو کہ کیا کیا بکا ہے توبوں کیے: "یااللہ عزوجل! مجھ سے جو جو
کفریات سے ہو ہوتے ہیں میں ان سے توبہ کر تاہوں" پھر کلمہ پڑھ لے۔ (اگر کلمہ شریف کا ترجمہ
معلوم ہے تو زبان سے ترجمہ دُہرانے کی حاجت نہیں) اگر یہ معلوم ہی نہیں کہ گفر بکا بھی ہے یا
معلوم ہے تو زبان سے ترجمہ دُہرانے کی حاجت نہیں) اگر یہ معلوم ہی نہیں کہ گفر بکا بھی ہے یا
معلوم ہے تو زبان سے ترجمہ دُہرانے کی حاجت نہیں) اگر یہ معلوم ہی نہیں کہ گفر بکا بھی ہے یا

" باالله عروجل! اگر مجھ سے کوئی گفر ہو گیا ہو تو میں اُس سے توبہ کر تا ہوں " بیہ کہنے کے بعد کلمہ پڑھ لیجئے۔(2)

احتیاطی تجدیدِ ایمان کب کریں؟

احتياطي تجديد ايمان ون مين جب چابين جتني بار چابين

کر سکتے ہیں۔مشورہ ہے روزانہ کم از کم ایک بار مثلاً سونے سے قبل (یاجب چاہیں) اِحتیاطی توبہ و

1 (محل،آيت 106)

تجدیدِ ایمان کرلیجے اور اگر بآسانی گواہ دستیاب ہوں تومیاں ہوی توبہ کرکے گھرکے اندر ہی بھی کبھی احتیاطاً تجدیدِ نکاح کی ترکیب بھی کرلیا کریں ۔ ماں ، باپ ، بہن بھائی اور اولا دوغیر ہ عاقل وبالغ مسلمان مر دوعورت زکاح کے گواہ بن سکتے ہیں ۔ احتیاطی تجدیدِ نکاح بالکل مفت ہے اس کے لئے مہرکی بھی ضرورت نہیں۔ (1)

تجديد نكاح كاطريقه

تجدید نکاح کا معنی ہے: " سے مہر سے نیا نکاح کرنا۔ " اس کیلئے لوگوں کو اکٹھا کرناضروری نہیں۔ نکاح نام ہے ایجاب و قبول کا۔ ہاں بوفت تکاح بطور گواہ کم از کم دومر د مسلمان یا ایک مر د مسلمان اور دو مسلمان عور توں کا حاضر ہونالازی ہے ۔ خُطبِرُ نگاح شرط نہیں بلکہ مستحب ہے۔ خُطبہ یادنہ ہوتو آئوڈ دُبالله اور بسیر الله شریف کے بعد سورہ فاتحہ بھی پڑھ سکتے ہیں ۔ کم از کم دس درہم مینی وو تولہ ساڑھے سات ماشہ چاندی (موجودہ وزن کے حساب سے 30 گرام 618 ملی گرام چاندی) یا اُس کی رقم مهرواجب ہے۔ مثلاً آپ نے پاکستانی4000 روپے اُدھار مهر کی نتیت کرلی ہے (مگریہ دیکھ لیجئے کہ مہر مقرر کرتے وقت ند کورہ چاندی کی قیمت 4000 پاکستانی روپے سے زائد تو نہیں) تو اب مذکورہ گواہوں کی موجود گی بیں آپ " ایجاب" سیجئے لینی عورت سے کہيے: " ميں نے 4000 پاکستانی روپے مبر کے بدلے آپ سے تکاح کیا"۔عورت كے: " مين في قبول كيا" ، تكاح بو كيا۔ يہ بھى بوسكتاہے كه عورت بى خطبه ياسور وفاتحه براه كر "إيجاب" كرم اور مر دكي: " من في قبول كيا"، فكاح مو كيا ليعد فكاح الرعورت جام تو مہر معاف بھی کر سکتی ہے۔ مگر مر و بلاحاجت شرعی عورت سے مہر معاف کرنے کا سوال نہ

کفریہ کلمات کے متعلق مزید معلومات کے لیے مکتبۃ المدینہ دعوتِ اسلامی کی مطبوعہ 692 صفحات پر مشتمل (گفریہ کلمات کے بارے میں سوال وجواب) اور بہارِ شریعت حصہ 1 اور حصہ 9 کامطالعہ کیجے۔

^{1 (}كفريه كلمات، ص626، مكتبة المدينه. كراچى) 2 (كفريه كلمات، ص622، مكتبة المدينه، كراچى)

ایک اہم مسئلہ

وعائے مغفرت:

جب كوئى شخص اس دارِ فائى (و نياوى زندگى) سے دارِ بقاء (أخروى زندگى) كو جاتا ہے تو د نيا و د نيا و الے أس شخص اس مخص كے بارے بيں فطرى طور پر بيہ خواہش ركھتے ہيں كہ وہ جانے والا شخص اس عارضى د نيا بيں اگرچہ گنبگار تھا، مگر أسے ہميشہ كى زندگى بيں سكون (جنت) نصيب ہو مگر بحيثيت مسلمان ہم اپنے ہر كام اور خواہش كى بحيل بيں حكم اللي كے پابند ہيں۔ چونكہ ہمارے بال عام عوام اس مسئلے سے ناوا قف ہيں اور كافر كے بارے بيں مجى دعائے مغفرت كرنے كو اچھا كمان كرتے ہيں۔ ذيل بيں دعائے مغفرت كرنے كو اچھا كمان كرتے ہيں۔ ذيل بيں دعائے مغفرت سے متعلق حكم شريعت ملاحظہ ہو:

مسلمان کے لیے وعائے مغفرت کرناکیسا:

قر آنِ باک میں اللہ تعالیٰ نے مسلمانوں کے

کیے دعائے مغفرت کا تھم ارشاد فرمایا ہے ، فرمایا: جنہ یہ الّذائیہ سے آئ فرمائی ہے اور کا انتہاں کا ا

﴿ وَ الَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِإِخْوَائِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْإِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلُ فِي قُلُوبِنَا غِلَّالِيْنَ امْنُوْارَبَّنَا الْخَفِر لَنَا وَ لِإِخْوَائِنَا الَّذِيْنَ الْمَنُوْارَبَّنَا الْخَفِر لَنَا وَلا تَجْعَلُ فَا قُلُوبِنَا غِلَّالِيْنَ الْمَنْوَارَبَّنَا اللَّهِ لَنَا وَلا تَجْعَلُ فَى وَعُمْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالَّالِي اللَّاللَّالِي اللَّالِمُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالَّا اللَّهُل

ترجمه كنز العرفان : " اور ان كے بعد آئے والے عرض كرتے ہيں : اسے ہمارے رب! جميں

اور ہمارے ان بھائیوں کو پخش دے جو ہم سے پہلے ایمان لائے ادر ہمارے دل بیں ایمان والوں کیلئے کوئی کینہ ندر کھ، اے ہمارے رب! بیشک تونمہایت مہریان، بہت رحمت والاہے "۔

المنطقة المُفِورُ فِي وَلِوَ الِدَى وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَرَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ (2)

"اے ہمارے رب! مجھے اور میرے مال باپ کو اور سب مسلمانوں کو بخش دے جس ون حساب

قائم ہو گا"

ا (الحفر آيت 10)

اور کثیر احاویث مبار کہ میں رسول الله منگافیزم کا اپنے صحابہ اور اُمت کے لیے وعاکر تامنقول ہے۔ بہذامسلمان فوت شدگان کے لیے دعائے مغفرت کرنامسخب (باعث ثواب)عمل ہے۔

كافرك ليه دعائے مغفرت كرناكيسا:

غیر مسلم کے لیے دعائے مغفرت لینی قرآن پاک کی تکذیب (حمِثلانا)ہے۔ آج کل ایک جدید فتنہ یہ اٹھاہے کہ بعض مسلمان کہلانے والے مغرب کے (propaganda) ہے متاثر ہو کر کہنے لگے ہیں کہ آخرت میں بخشش کا دارد مدار صرف اعمال پر ہو گاء اعمال کی اچھائی اور انسانیت کے ساتھ اچھاسلوک کرنے کی وجہ سے کا فرنجھی جخشا جائے گا: بیالوگ کہتے ہیں بیا کیے ہو سکتاہے کہ نیوٹن جیساعظیم سائنس دان جہنم میں جائے اور سيكسپير جيبااديب جنهم ميں جائے؟ ،اسي طرح پچھ مسلمان جب كسى غير مسلم كوكوئي اچھاساجي كام (مثلاً غريبول كي مدد كرناوغيره) كرتے ديكھتے ہيں تو يچھ نادان بيد كہد اٹھتے ہيں كہ بيد شخص تو جنتی ہے اور اُسکی وفات کے بعد اُسکے لیے وعائے مغفرت مجھی کرتے ہیں اور (status) کے (RIP/rest in peace) وغیرہ بھی لگاتے ہیں۔ گویایہ اللہ تعالیٰ سے محالِ شرعی کا سوال کرتے ہیں کیونکہ جو ہخص کافر کی مغفرت طلب کرتا ہے وہ قرآنِ مجید کی تکذیب کرتا (جھٹلاتا)ہے۔ جی ہاں قرآنِ پاک میں رب تعالی نے یہ فیصلہ فرمادیا کہ جنت میں داخلے اور نیک اعمال کی قبولیت کے لیے ایمان شرط ہے ،اور قرآن پاک میں جابجا (ایمان پر فاتے) کی شرط بیان فرمائی ہے، چنانچہ ارشاد باری تعالی ہے:

﴿ وَالَّذِيْنَ الْمَنُوا وَعَيِلُوا الصّٰلِخَتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّأْتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي اللّٰهِ عَنْهُمْ سَيِّأْتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي اللّٰهِ عَلَيْهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْبَلُونَ (1)

ترجمہ کنزالعرفان: "اور چولوگ ایمان لائے اور انہوں نے ایٹھے کام کئے توہم ضرور ان سے ان کی برائیاں مٹادیں گے اور ضرور انہیں ان کے اچھے اعمال کابدلہ دیں گے "

﴿ وَأُدْخِلَ الَّذِيْنَ الْمَنْوَا وَعَمِلُوا الصّْلِحْتِ جَنَّتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهُ وُ خُلِدِيْنَ فِيْهَا

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ " تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلَّمٌ (1) ترجمه کنزالعرفان: " اور وہ جو ایمان لائے اور اچھے کام کئے وہ جنتوں میں داخل کیے جائیں گے جن کے یٹیجے شہریں جاری ہیں، اپنے رب کے تھم سے ہمیشہ ان میں رہیں گے، وہاں اُن کی ملا قات کی وعاء سملام ہے "

اور کفار کے لیے وعائے مغفرت کی ممانعت اور ابدی جبہم کا تھکم ارشاد کرتے ہوئے فرمایا: الله مَاكَانَ لِلنَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ أَمَنُوٓا أَنْ يَّسْتَغْفِرُ وَالِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوٓا أُولِي قُولِي مِنْ بَعْدِمَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحُبُ الْجَحِيْمِ (2)

ترجمہ کنزالعرفان: نبی اور ایمان والول کے لاکق نہیں کہ مشرکوں کے لئے مغفرت کی دعاما تگیں

ا گرچہ وہ رشتہ دار ہول جبکہ ان کے لئے واضح ہوچکا ہے کہ وہ دوز خی ہیں "

انَ الَّذِينَ كَفَرُوْا وَ مَا تُوْا وَ هُمْ كُفَّارٌ فَكَنْ يُتُقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْأَرْضِ دَهَبًا وَّلَو

افْتَلَى بِهِ * أُولَٰہِكَ لَهُمُ عَلَاكٖ ٱلِيُمَّ وَمَالَهُمْ مِّنُ نُصِرِيْنَ * (3) ترجمہ کنز العرفان : " بیپیک وہ لوگ جو کا فرہوئے اور کا فرہی مر گئے ان میں سے کوئی آگرچہ اپٹی

جان چھڑانے کے بدلے میں پوری زمین کے برابر سونا بھی دے توہر گزاس سے قبول ند کیاجائے گا۔ان کے لئے در دناک عذاب ہے اور ان کا کوئی مدو گار شمیس ہو گا"

🖈 وَ مَنْ يَدُوْتَدِهُ مِنْكُمْ عَنُ دِيْنِهِ فَيَئْتُ وَ هُوَكَافِرٌ فَأُولَإِكَ حَبِطَتْ آعْمَالُهُمْ فِي الذُّنْيَا وَ

الْأَخِرَةِ * وَأُولَٰبِكَ أَصْحُبُ النَّارِهُمْ فِيْهَا لَحَلِدُونَ (4) ترجمه كنز العرفان: " اورتم ميں جو كوئى اپنے دين سے مرتد ہوجائے چر كافر ہى مرجائے تو ان

لو گوں کے تمام اعمال دنیاو آخرت میں برباد ہو گئے اور وہ دوزخ والے ہیں وہ اس میں ہمیشہ رہیں

1 (ابراهیم،آیت23)

^{2 (}توپه،آيت:113)

^{3 (}العران،آيت29)

^{4 (}الهقرة،آيت217)

﴿ وَ مَنْ يَكُفُوْ بِالْإِيْمَانِ فَقَلَ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُو فِي الْأَخِرَةِ مِنَ الْخُسِرِيْنَ ' (1) ترجمه كنزالعرفان: اورجو ايمان سے چھر كركافر ہوجائے تواس كاہر عمل برباد ہو گيا اور وہ آخرت پس خسارہ پانے والول بيس ہوگا"

میں خسارہ پانے والوں میں ہوگا" توٹ: یاد رہے! جن روایات میں ہے کہ رسول اللہ مَنَّالَّیْنِمْ نے کفار کے لیے دعائے مغفرت فرمائی، اُن روایات کا تعلق(فہ کور بالا آیاتِ قرآئی کے نزول سے پہلے کا ہے ، بعد میں اس سے منع فرمادیا گیا)۔لہذا جب قرآنِ پاک (نصِ قطعی) سے بیہ بات واضح ہوگئی کہ کفار ہر گزجنت میں داخل نہ ہونگے۔ تو اس قطعی تھم پر ایمان ضروریاتِ دین میں سے ہو گیا اور کسی بھی ایک ضروریاتِ دین کا انکار گفرہے۔ (2)

عقيده و هم :

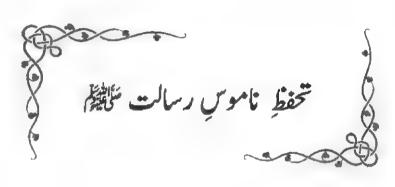
صدر الشريعه مفتی امجد علی اعظمی دهدة الله عليه لکست إي : "جو شخص کسی كافر كے ليے اُسكے مرنے كے بعد مغفرت كی دعا كرے ياكسی مرتد (كافر) كو مرحوم (رحمت كيا جائے) يامغفور (مغفرت كياجائے) ياجنتی كے دہ خود كافر ہوجائے گا"۔ (3)

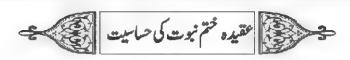
یا و رکھیں! کافر جونیک اعمال اس دنیا میں کرتے ہیں اُسکابدلہ اُنہیں ای دنیا میں پید، عزت، شہرت کی صورت میں وے دیا جاتا ہے، لیکن ان کے لیے جہنم سے نجات ہر گزنہیں، لہذا مسلمانوں کو چاہیے کہ لیک آخرت کی فکر کرتے ہوئے ہر گز ہر گز کسی کافر کے لیے دعائے مغفرت نہ کریں۔ ہاں کافر و بدند ہوں کے لیے (ان کی زندگی میں) ہدایت کی دعا کرنا جائز

^{1 (}البائنة، آيت5)

^{2 (}ملغصاً فعاوى رضويه ج14، ص321، رضافاؤدليشن الاهور)

^{3 (}بهار شريعت، حصه 1, ص185، مكتبة المدينه. كراچى)





الله تعالی نے بن نوع انسان کی ہدایت ور منمائی کے لیے انبیاء کرام کو دنیا جس مبعوث فرمایا، یہ سلسلہ حضرت آدم علیہ السلام سے شروع فرما کر جمارے آقاوم ولی امام الا نبیاء حضرت مصطفیٰ منگاہی کی براللہ تعالی نے متم نبوت کا تاج عطافر ماکر حتم فرما دیا اور دین اسلام کی جمیل کا اعلان فرما دیا۔ اس لیے آپ منگاہی کا ماک تاجی عطافر ماکر حتم فرما دیا اور آپے بعد کوئی نبی پیدا نہیں ہو سکتا۔ قیامت تک دیا۔ اس لیے آپ منگاہی کی مرداری اللہ تعالی نے اپنے مجبوب کریم منگاہی کی موداری اللہ تعالی نے اپنے مجبوب کریم منگاہی کی موداری دوسوے زائد احادیث مبارکہ ہیں، سحابہ کرام سے آخری نبی ہوئے پر متعدد آیات طیبات اور دوسوے زائد احادیث مبارکہ ہیں، سحابہ کرام سے لے کر یوری امت مسلمہ کا آج تک اس پر اجماع ہے۔ (۱)

چو ککہ رسول اللہ مظالفتاً کے بعد اب قیامت تک کمی نی نے تبیں آناللذااب کمی فضی کا در گی نبوت ہونا اسلام کی بنیادوں کو ڈھا دینے کے متر ادف ہے ، محافظ ناموس رسالت شیخ الحدیث و التقسیر علامہ خادم حسین رضوی دھمة الله علیه اس بات کو ان لفظوں بی بیان فراتے ہیں کہ: "عقیدہ فتم نبوت اسلام کا صرف ایک جز نبیں ہے ، بلکہ اس عقیدہ پر پورے اسلام کی عمادت قائم ہے اور اس عقیدہ فتم نبوت کی حفاظت میں بیشک سادے جہان جل جائیں ،اس کے مقابلے بیس کمی چیز کی کوئی حیثیت نبیس ہے "۔

تی ہاں ایکی وجہ ہے کہ اہل اسلام کی چودہ سوسالہ تاریخ اس پر گواہ ہے کہ مسلمانوں نے عقیدہ محتم نبوت کے تحفظ کے لیے اپنا جان، مال، اولا وسب کچے قربان کیالیکن اس پر ذرہ برابر بھی آٹی نبیس آنے دی، یکی وجہ ہے کہ صحابہ کرام دھی الله تعلق عندہ اجمعین نے اس مسئلہ پر سب سے بڑی قربانی بیش کی کہ: جب مسیلمہ کذاب نے نبوت کا وعویٰ کیا تو خلیفہ اول سیدنا صدایت اکبر دھی الله تعلق عند نے باجود اِسکے کہ مرتدین کا فتنہ مکرین زکوۃ کا فتنہ سر اٹھا چکا تھا

^{1 (}قادياتيس كيطلان كالكشاف، صفه، والضي يمل كيشار. الإهور)

، لنگرِ اُسامہ رسول اللہ مَنَّائِلِیَّمْ کے تھم پر شام جا چُکا تھا، آپ دھی اللہ تعالی عندنے حضرتِ خالد بن ولید دھی اللہ تعالی عند کی قیاوت میں 24 ہز ارافراد پر مشتمل ایک لئکر جرار مسیلمہ کذاب کی سرکوئی کے لیے روانہ فرما یا جس نے مسیلمہ کذاب کے 40 ہز ارکے لئکر کو گھنسان کی جنگ کے بعد شکست فاش کیا۔ ختم نبوت پر الری جانی والی اس "جنگ بیامہ" میں پچھلی تمام جنگوں کے مقابلہ میں تناسب کے اعتبارے کی گمنا زیادہ صحابہ شہید ہوے جن میں سے بری تعداد حفاظ صحابہ کرام کی تقی ۔ ایک ہی جنگ میں قتل کیے جانے والے کفار (منکرین ختم نبوت) کی تعداد محابہ کرام کی تھی۔ سے زیادہ تھی۔

| قل کیے جانے والے کفار کی تعداد | شہید ہونے والے صحابہ کرام کی تعداد | |
|-----------------------------------|---------------------------------------|---------------------|
| (1) 900 | ⁽²⁾ 259 | تقريباً 83جنگون میں |
| ⁽³⁾ 21000 | ⁽⁴⁾ 600 | صرف جنگ بمامه میں |

ا یک ہی جنگ میں 600سے زائد صحابہ کرام کا شہید ہوجانا اور 21000سے زائد منکرین ختم نبوت کاسر قلم کر دینا، ان اعداد و شارکے بعد آپکواس مسئلہ کی حساسیت کا بقین علم ہو گیا ہو گا، بہی وجہ ہے کہ علمائے اُمت اس مسئلہ پر شدت اختیار کرتے ہیں اور مسئلہ ختم نبوت پر کسی قسم کی کوئی مداہنت قبول نہیں کرتے۔

مسلم والدین پر بھی لازم ہے ایسے وقت میں کہ جب سکول وکا لجول کے نصاب میں سے آئے روز بیر دنی فنڈنگ کے زور پر ختم نبوت کا لفظ تک حذف کیا جارہا ہو، والدین اپنے بچول کو ختم نبوت کے معنی و مفہوم سمجھائیں اور اس مسئلہ کی حساسیت سے متعلق اولا دول کی تربیت فرمائیں۔جب تک مسلمان اس مسئلہ کی حساسیت سے آگاہ ہوئے، تو پھر جنگ بمامہ کامیدان ہویا

^{1 (}اذان جاز، پاپغیر خونی انقلاب، ص 557، مکتبه طلع الیدر علیما، از هور) 2 داذار حال بازید بر بازید از برجر سجع کرم طلع البیر می ایک در م

^{2 (}اذان جاز،بابغيرخوني انقلاب، ص567 مكتبه طلع البدرعليدا، الاهور)

^{3 (}تاریخ این کثیریج 6. ص432 نفیس اکیدهی، کراچی/عدرةالفاری)

^{4 (}تاريخ اين كفيرج 6.ص432 نفيس اكيلهي، كراجي)

1953 کا (1953 کی تحریک ختم نبوت میں تقریباً وس ہزار مسلمان شہید اور ایک لاکھ گر فتار ہوئے) ،1974 میں قادیانیوں کو کافر قرار دلانے کی قانونی کاروائی ہویا 2017 میں فیض آباد کامیدان ،مسلمان اپنے آخری دم تک متکرین ختم نبوت کی سازشوں کو بے نقاب کر کے ،انہیں ذلیل وخوار کرتے رہیں گے۔

الله عزوجل جمیں عقیدہ ختم نبوت کے پہرہ داروں میں شامل فرمائے، حضور خاتم النبیین مَا اللّٰهِ عَلَى صدیقے، جارا خاتمہ ایمان پر فرمائے، آمین۔

قادیانیوں اور دیگر غیر مسلم (اقلیتوں) میں کیافرق ہے

شاید آ کیے ذہن میں بیہ سوال ہوجو اکثر کالج ، پونیورٹی کے طلباء وغیرہ کرتے ہیں کہ قادیا نی بھی عیسائیوں ، ہندوں کی طرح غیر مسلم ہیں تواِ کو بھی اقلیتوں میں شامل کرکے اقلیتوں والے حقوق کیوں نہیں دینے چاہیے ؟

جواب پڑھ لیجیے: بحیثیت مسلمان ہمیں میات معلوم ہونی چاہیے کہ کفار کی چاراقسام ہیں:

| کفار کی اقسام ⁽¹⁾ | | | |
|---|----------------|---|--|
| يه وه كا فرہے جو على الاعلان اسلامي كلمه كامنكر موب | كافراصلى مجاهر | 1 | |
| جیسے: دہریہ ، مشرک، مجوی ، کتابی (یبودونصاریٰ)۔ | | | |
| جوبظاہر اسلامی کلمہ پڑھتا ہو گرول سے اسلام کامتکر ہو۔ | كافراصلى منافق | 2 | |
| جو پہلے مسلمان تھا گر بھر علی الاعلان اسلام سے بھر جائے۔ | كافرمر تذمجابر | 3 | |
| جواسلامی کلمه پژهنتا بولیکن ساتھ ہی کسی ضروریاتِ دین کا انکار | كافرمر تدمنافق | 4 | |
| بجى كر تابو، جيسے قادياني۔ | (زيرين) | | |

اسلام میں اِن چار قسم کے کا فرول کے لیے احکامات بھی الگ الگ ہیں، کتب فقہ میں انکی تفصیل موجو و ہے۔ یاد رکھیں! قادیاتی عام (کا فر اصلی مجاہر) نہیں بلکہ بدترین (کا فر مرتد منافق) لیتی "زندیق" ہیں۔ اسلامی ریاست میں رہنے والے (کا فر اصلی مجاہر) کے اسلام میں حقوق ضرور ہیں ، شریعت ِ اسلام پر کے قاطت کی پابند ہے ، شریعت ِ اسلام پر کی تعلیمات کی روسے اسلامی ریاست اسکے جان ومال کی حفاظت کی پابند ہے اور انکو اپنی عبادت گاہوں میں فر ہبی آزادی مجی حاصل ہے لیکن (کا فر مرتد منافق) لینی " نزدیق" کا اسلام میں کوئی حق نہیں۔

"زنديق" كے كہتے ہيں ؟

" زندیق ایسے مخص کو کہتے ہیں جو اپنے کفریہ عقائد کو اسلام کے، لوگوں میں اپنے باطل نظریات کی تشہیر اسلام کے نام سے کرے، یعنی لہتی جماعت کو مسلمان ظاہر کرے اور پوری اُمت کے مسلمانوں کو کا فر کیے ، زندیق کے لیے اسلام میں بہت سخت سزا متعین ہے "۔

مر زا قادیانی نے بھی عقیدہ ختم نبوت کو غیر اسلامی عقیدہ قرار دے کر نبوت کا دعو کی کیا، اپنے باطل مذہب کو اسلام کہا، اپنے مانے والوں کو مسلمان کہااور باتی سب مسلمانوں کو اپنی کتب میں کا فرولد الحرام، بدکار عور توں کی اولا و، جہنمی خنز پر کہا۔

اسی طرح مر زائیوں میں وقت کے ساتھ کھے فرقے ہو گئے ،ان میں سے اکثریت مر زا قادیانی کو نبی اسے جاور کھے نبی تو نہیں مانے مگر مجدو ، مسیح ،مبدی کہتے ہیں۔لیکن یہ تمام لوگ کا فر اور دائرہ اسلام سے خارج ہیں ، کیونکہ مدعی نبوت کو مسلمان مانے والا بھی دائرہ اسلام سے خارج ہیں ، کیونکہ مدعی نبوت کو مسلمان مانے والا بھی دائرہ اسلام سے خارج ہیں ، کیونکہ مدعی نبوت کو مسلمان مانے والا بھی دائرہ اسلام سے خارج ہیں ، کیونکہ مدین نبوت کو مسلمان مانے والا بھی دائرہ اسلام سے خارج ہیں میں مناز کے ملاء کا بیا متفقہ فتوئی ہے کہ :

"مر زا قادیانی کو تبی مانٹا کفرہے ،اس کی پیروی کر نا کفرہے ،اسے مسلمان سمجھنا کفرہے ،اس کے کا فرہونے میں شک کرنے والاخو د کا فرہے " _ (1)

بحیثیت مسلمان ہمارا فرض اولین ہے، ہم عقیدہ ختم نبوت کے تحفظ کے لیے ہر وتت کوشال رہیں، کہ اس عقیدہ پر اسلام کی عمارت قائم وائم ہے۔

قرآن وحديث اور عقيده ختم نبوت

قرآن پاک کی متعدد آیات اور تقریباً 200 سے زائد احادیثِ فتم نبوت کے موضوع پر گتبِ احادیث میں موجود ہیں۔ ذیل میں چیش کی گئیں چند روایات پڑھ کر اپنے قلوب واذہان منور کریں اور ان احادیث کوا چی طرح ذہن نشین کرکے ختم نبوت سے متعلق اپناعقیدہ پختہ کیجے۔ چنانچہ ارشاوباری تعالی ہے:

مَا كَانَ مُحَدَّدً اَبَا آحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَّسُوْلَ اللهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيِّنَ * وَكَانَ اللهُ بِكُلِّ فَيْءً عَلِيْمًا * (2) فَيْ رَجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَّسُوْلَ اللهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيِّنِيَ * وَكَانَ اللهُ بِكُلِّ فَيْءٍ عَلِيْمًا * (2)

سب نبیوں کے آخر میں تشریف لانے والے ہیں اور اللہ سب کچھ جانے والاہے۔" سابقہ انبیاء علیہم السلام میں اکثر ایساہو تار ہاہے کہ باپ کے بعد اُ نکابیٹیا نبی ہو اکر تا تھا۔اللہ

تعالی نے آپ مُنالِقَیْم کے سی بیٹے کو جوانی تک نہیں پہنچایا تاکہ آپ مُنالِقِیم کے بعد اجرائے

^{1 (}الانعهاء،ص 203 رحةللعالدين پيليكيشاز،سر گودها)

⁽⁴⁰ سيآيت) ²

نبوت کے وہم کی بھی تفی ہو جائے۔ حدیث پاک میں یہاں تک وضاحت موجو دہے کی حضرت ابن الی اوٹی: دخی الله تعالیءند فرماتے ہیں کہ: " اگر محمر کریم سَکَالْتُنْکِمُ کے بعد نبی آنا ہو تا تو آپ مَنَالْتُنْکِمُ کے بیٹے ابراہیم زندہ رہتے لیکن آپ سَکَالْلِیُمُ کے بعد کوئی نبین "۔(1)

یہ بات اچھی طرح یادر کھیں کہ قرآن کہ معنی و مفاہیم نبی کریم منگالی کی احادیث کی روشی میں ہوں کے جاسکتے ہیں۔ ہر زبان میں ایک ایک لفظ کے کئی کئی معنی ہوا کرتے ہیں۔ عربی زبان میں ایک ایک لفظ کے کئی کئی معنی ہوا کرتے ہیں۔ عربی زبان میں سے احتمال اور زیادہ ہوا کرتا ہے، خصوصاً قرآن میں تو زبر دست احتمالات ہوا کرتے ہیں۔ اب رب تعالیٰ نے قرآن پاک میں کوئی لفظ نازل قرما کر کیا کہنا چاہا؟، اسکا فیصلہ لغت ہیں۔ اب رب تعالیٰ نے قرآن پاک میں سے نبی کریم منگالی کی ارشادات سے بہی ہو سکتا ہے۔ اس لیے کہ آپ منگالی کا ترجہہ لغت کے اس لیے کہ آپ منگالی کا ترجہہ لغت کے اس لیے کہ آپ منگالی کا ترجہہ لغت کے اعتبادے کرکے لوگوں کو گمر اہ کرتے ہیں۔ لہذا یہ بات یادر کھنی چاہیے۔ (2)

ختم نبوت سے متعلق احادیث نبوی سَاللَّیْمُ

- (1) آقا كريم مَنَّا الْيُغِيَّم نے ارشاد فرمايا: "رسالت اور ثبوت منقطع ہو چكى ہے۔اب ميرے بعد نه كو كَار سول ہو گا اور نه كو كَى ثبى "_(3)
- (2) اور رسول الله مَنْكَ الْمُنْتَعِمُ فَيْ ارشاد فرما يا: "مِن محمد موں اور مِن احمد موں اور مِن مثانے والا موں، ميرے ذريعے الله تعالى كفر كو منا تا ہے اور مِن اٹھانے والا موں لوگ ميرے بيچھے بيچھے المُنْسِ كے اور مِن عاقب موں اور عاقب وہ مو تاہے جس كے بعد كوئى نبى نہ ہو"۔(4) (3) اور امام الانبياء مَنَّا الْفِيْرَا نے فرما يا:"اگر ميرے بعد كوئى نبى مو تا تو عمر بن خطاب ہوتا"۔(5)
 - 1 (صحبح البخارى، كتاب الادب، بأب من سمى بأسماء الانبياء ج1. ص 459 مديد 1946، قرين بك ستال الأهور) 2 (ما خوذ الانجاء، ص12 برحة للعالمين يمليكيشنز، سر كودها)
 - 3 (ترماى، كتاب الرويا، بأب فهيت النبوة، ج2، ص79، حديث 154قريد بالمستأل (هور)
 - 4 (صحيح المفارى، كتاب المعاقب، بأب ماجاء في اسماء . ج2، ص 366 ، حديث 3532 فريد بالتستال الدهور)
 - 5 (ترملني، كتاب البداقب، بأب عربي خطاب، ج 2 ص 297 مدين 1620، قريد بالتستال، الاهور)

(4) اور نبی رحمت مَنَّا اَلْیَمْ نِے ارشاد فرمایا: " مجھے انبیاء پر چھ چیز وں سے فضیلت دی گئی ہے، مجھے جامع کلام عطا ہوا ہے اور مجھے رُعب کے ذریعے مدودی گئی ہے اور میرے لیے غیمت کے مال حلال کر دیے گئے ہیں۔ اور میرے لیے ساری زمین مسجد اور پاک بنادی گئی ہے اور میں تمام علاق کی طرف بھیجا گیا ہوں اور میرے لیے ساری زمین مسجد اور پاک بنادی گئی ہے اور میں تمام علاق کی طرف بھیجا گیا ہوں اور میرے فرایین میں امت کو نہ صرف انبیاء کا سلسلہ ختم ہونے (5) حضور خاتم النبیین مَنَّا اللّٰہ آنے والے وقت میں اُن جھوٹے مدعیانِ نبوت سے متعلق بھی آگاہ کر ویا جو عنظریب نبوت کا دعوی کرنے والے وقت میں اُن جھوٹے مرمایا: "قیامت اُس وقت تک قائم نبیں ہوگ عنظریب نبوت کا دعوی کرنے والے سے ، چنانچہ فرمایا: "قیامت اُس وقت تک قائم نبیں ہوگ جب تک تیں کے قریب جھوٹے فر بی پیدانہ ہوں گے ، ان میں سے ہر ایک رسالت (نبوت) کا دعویٰ کرے اللہ میں آخری نبی ہوں ، میرے بعد کوئی نبیں ہے "۔(2)

اس حدیث میں تیس کذابوں (جموٹوں) کا بیہ مطلب نہیں کہ مطقاً نبوت کا دعویٰ کرنے دالوں کی تعداد تیس بوگ اس لیے کہ آئی تعداد کا توصاب بی نہیں، حتی کہ خود مرزا قادیانی کے بیروکاروں میں سے حدیث کا مطلب بیروکاروں میں سے حدیث کا مطلب بیروکاروں میں جموٹے مدعی ہوں گے جولوگوں کو بے و قوف بنانے میں اور شکوک وشبہات میں مبتلا کرنے میں کامیاب بوجائیں گے۔(3)

نزول عيسى عليه السلام / امام مهدى / دجال:

قر آن مجید کی متعد د آیات، متواتر احادیث

اور اہماعِ امت سے ثابت ہے کہ سیدناعیسیٰ علیہ السلام آسمان پر زندہ موجود ہیں اور قیامت کے قریب نزول فرمائیں گے۔ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کورب تعالی نے زندہ آسانِ ونیاکی طرف اٹھا لیا اور قرب قیامت امام مہدی دھی اللہ تعالی عند کے زمانہ میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا نزول اس دنیا میں ہوگا، آپ علیہ السلام دجال کو قمل کریں، یاجوج ماجوج کا ظہور بھی آپی موجودگی

^{1 (}معيم مسلم. كتاب البساجدومواضع الصلوة بأب جعلت الرض ج1 ص391 منيه 1167 فرينهك سثال الاهور)

^{2 (}معين البغارى، كتأب البناقب، بأب علامات النبوة ج 2، ص 391 حديث 3609 قريد بك سئال الاهور)

^{3 (}مأخوذالانجاء،ص 16 رحة للعالمين يبليكيشاز ،سر كودها)

میں ہی ہو گا اور پھر کچھ عرصہ اس دنیامیں گزارنے کے بعد آپ وفات پائیں گے اور بہیں آپکا مد فن ہو گا۔

قربِ قیامت کے ان واقعات پر قرآن کی بہت می آیات شاہد اور کثیر احادیث موجو دہیں اور تمام مفسرین قرآن، محدثین عظام اور صوفیائے کرام کانزول عیسیٰ علیہ اسلام پر اجماع ہے (۱)۔ لیکن فی زمانہ مکرین حدیث اور دیگر الحادی نظریات کے حامل سکالر زان تمام باتوں کو لغو قرار وے کر بدعقیدگی کی نئی راہ ہموار کیے ہوئے ہیں۔ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے دوبارہ اس دنیا میں تشریف لانے کا محکر گر او وبد خرجب ہے۔ نزول عیسیٰ علیہ السلام سے متعلق رب تعالیٰ صورۃ النساء کی آیت 157 - 159 میں ارشاد فرما تاہے:

ومَا قَتَلُونُ لَيَقِينُنَا بَلُ وَفَعَهُ اللّٰهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْرًا حَكِيمًا وَإِنْ مِّنْ

و ما معنو الميريك بن رك المسام المسام المير المن المسام المير المسام المير المسام المير المسام المير المار (2) المير ال

اس آیت کی تفییر میں بخاری، مسلم سمیت بے شار کتابوں میں یہ حدیث موجود ہے کہ حفرت ابو ہریرہ دخی الله تعالی عند فرمائے ہیں: "کہ رسول الله منگالی فی فرمایا فتم ہے اس ذات کی جس کے قبضے میں میر کی جان ہے۔ وہ دن دور خبیں کہ عیسلی بن مریم تم میں نازل ہوگا، فیصلے کرے گا، عدل کرے گا، صلیب کو توڑوے گا اور خزیر کو قتل کر دے گا۔ پھر حضرت ابو فیصلے کرے گا، حوال النساء، آیت 159) آیت پڑھ لو "۔(3)

^{1 (}نزول حضرت عیسی علیه السلام پرمفسر قرآن علامه غلام رسول سعیدی علیه رحمه نے تفییر تبیان القرآن ،20 مس 862 پر کشب صحاح سنه ، مسانید اور معاجم سے 40 صحیح احادیث جمع کی بین وہال ملاحظہ ہوں)

^{2 (}اللساء،آيت157-159)

^{3 (}صحيح البغاري، كتاب احاديث انبياء، يأب نزول عيسى، ج2، ص338 حديث 3448 قريد بك سفال الاهور)

قربِ قیامت کے ان واقعات پر حدیث نبو کی ملاحظہ سیجیے:

حضرت نواس بن سمعان دمى الله تعالى عند فرمات بي كدرسول الله مَكَ يُكُوم في ارشاد فرمايا: " د چال کے علاوہ دوسرے فتنوں سے مجھے زیادہ خوف ہے۔اگر میری موجودگی میں د جال لکلا تو تمہارے بجائے میں اس سے مقابلہ کروں گااور اگر میری غیر موجود گی میں فکلاتو ہر مختص خود مقابلہ کرے گا اور ہر مسلمان پر اللہ میر اخلیفہ اور نکہبان ہے۔ د جال ٹوجوان اور تھنگریالے بالوں والا ہو گا۔ اس کی آنکھ پھولی ہوئی ہوگی۔ میں اس کو عبد العزی بن قطن کے مشابہ قرار دیتا ہوں۔ تم میں سے جو مخص اس کو یائے وہ اس کے سامنے سورہ کہف کی ابتدائی وس آیتیں پڑھے۔بلاشبہ شام اور عراق کے در میان سے اس کا خروج ہوگا، وہ اپنے دائیں بائیں فساد پھیلائے گا۔ اے اللہ کے بندو ثابت قدم رہنا۔ ہم نے کہا: یار سول اللہ! وہ زمین میں کب تک رہے گا؟ آپ مَلْ ﷺ نے فرمایا چالیس دن تک۔ایک دن ایک سال کے برابر ہو گا، ایک دن ایک ماہ کے برابر اور ایک دن ایک ہفتہ کے برابر اور باتی ایام تمہارے عام دنوں کی طرح ہوں گے۔ ہم نے عرض كيا: يارسول الله متَّالِيَّيْمُ ! پس جو دن ايك سال كي طرح ۾و گا كيا اس مِس جميس ايك دن كي نماز پڑھنا کافی ہو گا۔ آپ مَنْافِیْزُم نے فرمایا: نہیں، تم اس کے لیے ایک سال کی نمازوں کا اندازہ كرلينا بم في عرض كيا: يارسول الله متَّاليَّيْظُ ! ووزين يرئس قدر تيز چلے كا_ آپ مَثَالَيْظُ في فرمایا:اس بارش کی طرح جس کو پیچھے ہے ہوا د تھکیل رہی ہو۔وہ ایک قوم کے پاس جا کر ان کو ا بمان کی وعوت دے گا وہ اس پر ایمان لے آئیں گے اور اس کی دعوت قبول کر لیں گے۔وہ آسان کو تھم دے گا تو وہ پانی برسائے گا اور زشن کو تھم دے گا تو وہ سبز ہ اگائے گی، ان کے چے نے والے جانور شام کو آئیں کے توان کے کوہان پہلے سے لمبے ، تھن بڑے اور کو تھیں وراز ہول گی۔ پھر وہ دوسری قوم کے پاس جاکر ان کو دعوت دے گا۔وہ اسکی دعوت کو مستر د کریں گے ،وہ ان کے پاس سے لوٹ جائے گا۔ان پر قبط اور خشک سالی آئے گی اور ان کے پاس ان کے مالوں سے کچھ نہیں ہے گا، پھر وہ ایک بنجر زمین کے پاس سے گزرے گا اور زمین سے کجے گا اپنے خزانے نکال دوء تو زمین کے خزانے اس کے پاس ایسے آئیں گے کہ جیسے شہد کی تھیاں اپنے سر داروں کے پاس جاتی ہیں۔ پھر وہ ایک کڑیل جو ان کو بلائے گا اور تلوار مار کر اس کے وو ککرے کرویے

گا۔ جیسے نشانہ پر کوئی چیز لگتی ہے۔ پھر وہ اس کوبلائے گاتو وہ (زندہ ہو کر) دکتے ہوئے چرے کے ساتھ ہنستا ہوا آئے گا۔ د جال کے اسی معمول کے دوران اللہ تعالیٰ حضرت (عیسیٰ) مسیح ابن مریم کو بھیج گا،وہ دمش کے مشرق میں سفید مینار کے پاس دو زرد رنگ کے محلے بہنے دو فرشتوں کے کندھوں پر ہاتھ رکھے ہوئے نازل ہوں گے ۔جب حضرت عیسیٰ علیہ السلام اپناسر جھکائیں گے تو اس میں سے قطرے گریں گے اور جب سر اٹھائیں گے تواس میں سے لعلوں جیسے موتی جھڑیں گے ، جس کا فر تک بھی ان کی خوشبو پہنچے گی اس کا زندہ رہنا ممکن نہ ہو گا اور ان کی خوشبو منتہائے نظرتک پہنچے گی، وہ د جال کی تلاشی کریں گے حتیٰ کہ باب ِلُدیراس کوموجود پاکر قتل کر دیں گے _ پھر حضرت مسے ابن مریم (عیسیٰ علیہ السلام) کے پاس ایک الیی قوم آئے گی جس کو اللہ تعالیٰ نے د حال سے محفوظ رکھا تھا، وہ ان کے چہروں پر دست ِشفقت پھیریں گے اور انہیں جنت میں ان کے درجات کی خبر دیں گئے ۔ انجی وہ اس حال میں ہول گئے کہ اللہ تعالیٰ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی طرف وحی فرمائے گا، میں نے اپنے کچھ بیںدوں کو ٹکالا ہے جن سے لڑنے کی کسی میں طاقت نہیں ہے،تم میرے ان ہندوں کو طور کی طرف اکٹھا کرو، اللہ تعالیٰ یاجوج اور ماجوج کو جیسیع گاء اور وہ ہریلندی سے بہ سرعت چھسکتے ہوئے آئیں گے ان کی پہلی جماعتیں بحیرہ طبرستان سے گزریں گی اور وہاں کا تمام پانی بی لیں گی، پھر جب دوسری جماعتیں وہاں ہے گزریں گی تووہ کہیں گی یہال پر کسی وقت پائی تھا۔اللہ کے نبی حضرت عیسنی اور ان کے اصحاب محصور ہو جائیں گے حتیٰ کہ ان میں سے کسی ایک کے تزدیک بیل کی سری بھی تم میں سے کسی ایک کے سودینار سے افضل ہو گی۔ پھر اللہ کے نبی حصرت عیسیٰ اور ان کے اصحاب دعا کریں گئے ، تب اللہ تعالیٰ بیاجوج اور ماجوج کی گر د ثوں میں ایک کیڑا پیدا کرے گا تو صبح کووہ سب یک لخت مر جائیں گے ، پھر اللہ کے نبی حضرت عیسیٰ اور ان کے اصحاب زمین پر انزیں کے مگر زمین میں ایک بالشت برابر بھی جگہ ان کی گند گی اور بدبوے خالی نہیں ہو گی، پھر اللہ کے نبی حضرت عیسیٰ اور ان کے اصحاب اللہ تعالی ہے دعاکریں گے تو اللہ تعالی بختی او نٹوں کی گر دنوں کی مانند پر ندے بھیجے گا، یہ پر ندے ان کی لاشوں کو اٹھائیں گے اور جہاں اللہ تعالٰی کا حکم ہو گاوہاں چیپنک دیں گے ، پھر اللہ تعالٰی ایک بارش بھیجے گا جو زمین کو دھو دے گی اور ہر گھر خواہ وہ مٹی کا مکان ہو یا کھال کا نیمہ وہ آئینہ کی طرح صاف ہو جائے گا، پھر زمین سے کہا جائے گاتم اپنے پھل اگاؤ اور اپنی ہر کتیں لٹاؤ، سواس

دن ان کی جماعت ایک انار کو (سیر ہو) کر کھالے گی، اور ایک دودھ دینے دالی گائے لوگوں کے ایک قبیلہ کے لیے کافی ہوگی، اس ایک قبیلہ کے لیے کافی ہوگی، اس ایک قبیلہ کے لیے کافی ہوگی، اس دوران اللہ تعالیٰ ایک پاکٹرہ ہو ابھیج گاجولوگوں کی بغلوں کے بنچ لگے گی اور وہ ہر مومن اور ہر مسلم کی دور قبیض کرے گی، اور برے لوگ باتی رہ جائیں گے جو گدھوں کی طرح کھلے عام جمائ کریں گے اور انہیں پر قیامت قائم ہوگی "۔(1)(2)(3)(4)

الله بیات بھی یادرہے کہ دجال قربِ قیامت کی انسان سے پیدا نہیں ہوگا بلکہ دجال پہلے ہی سے دنیا بیس موجودہے اور قربِ قیامت اُسے نکلنے کی اجازت ہوگی۔احادیث میں ہے رسول الله منگانی کی اجازت ہوگی۔احادیث میں ہے رسول الله منگانی کی محابی حضرت تمیم داری کا چندا شخاص کے ساتھ دجال سے ایک جزیرہ پر سامنا ہوا تھا اور وہ دہال مضبوطی سے بندھا ہوا تھا (5)۔ لہذا سوشل میڈیا پر جو مختلف قدرتی معذور (ایک اور وہ دہال مضبوطی سے بندھا ہوا تھا (5)۔ لہذا سوشل میڈیا پر جو مختلف قدرتی معذور (ایک آئادی نہیں کرنی چیلا کر کسی کی ویڈیوز گروش کرتی ہیں ، کہ اُن سے متعلق جھوٹی افواہیں پھیلا کر کسی کی دل آزاری نہیں کرنی چاہیے۔

کے ایک اعتراض کا جواب: مظرین حدیث میہ اعتراضات اٹھائے ہیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا اس دنیامیں دوبارہ نزول ختم نبوت مُنَالْتُنِیْمُ کے معداب دوسراکوئی ہی نہیں آسکتا۔

اس کا جواب سے ہے کہ واقعی حصرت محمد مُثَلِّ اللَّهُ کَلِی آمدے بعد اب کسی بھی محض کو نبوت نہیں مل سکتی لیکن حضرت عیسیٰ علیہ اسلام کی اس دنیا میں ووبارہ تشریف لانا ختم نبوت مُثَالِیَّ کُلِم کے منافی ہر گزنہیں، کیونکہ آپ علیہ السلام کو نبوت پہلے ہی مل چکی، اب آپ جب اس دنیا میں ووبارہ تشریف لائمیں کے تورسول اکرم مُثَالْتُنْ کُلِم کے اُمتی ہی کی حیثیت سے تشریف لائمیں گے اور

^{1 (}صحيح مسلم، كتاب الفتن واشراط الساعة بأب ذكر الدجال، ج 3 ص654 مديده، 7299 قريد باعستال الاهور)

^{2 (}سان ترمذى، كتاب الفتن بأب ماجام في قتنة المجال ع 2 ، ص 63 مديد 121 فرين بات سفال الأهور) 3 (سان الي داؤد، كتاب الملاح ، بأب خروج الدجال ع 3 ص 265 مديد 3764 منيا مالقر أن يعلى كيشاز الأهور)

^{4 (}سان اين ماجه، كتاب القتن بياب قتنة الديشال ... ، ج2. ص607 مديث 4064 .هياء القرآن إيدان كيشاز الاهور)

^{5 (}صيح مسلم، كتاب، بأب قصته الجساسة، ج3،ص662 مدين 7312 فريد بك ستال، الأهور)

شریعت محمدید ہی کی تبلیغ کریں گے، چنانچہ حدیث پاک میں ہے: حضور اکرم نور مجسم خاتم النبیبین مَنَّالَیْکُلِم نے ارشاد فرمایا: " تمہاری شان اس وقت کیا ہوگی، جب تم میں ابن مریم (عیسیٰ طیہ السلام) نازل ہوگا اور تمہاری راہنمائی تمہاری شریعت کے مطابق کرے گا "۔(1)

اسى طرح امام مهدى دهى الله تعالى عنه كى آمدى متعلق رسول الله مَنْ اللَّهُ عُلَيْدُمُ ارشاو قرمايا:

(1) "تمہاری شان اس وقت کیا ہوگی جب تم میں ابن مریم (میسی علیہ السلام) نازل ہوگا اور تہمارا امام (امام مبدی رضی اللہ عنہ) تم میں سے ہوگا"۔(2)
(2) اور آقا کریم سائلین کے فرمایا: "ونیا اس وقت تک ختم نہیں ہوگی حتیٰ کہ میرے اہل ہیت میں سے ایک آومی عرب کامالک بن جائے، اس کانام میرے نام سے مطابق ہوگا"۔(3) میں سے ایک آومی عرب کامالک بن جائے، اس کانام میرے نام سے مطابق ہوگا"۔(3)
(3) اور حضور خاتم النبیین مَنَّا لَیْنِیْمُ نے ارشاد فرمایا: "مہدی مجھ سے ہوگا۔ کھلی پیشانی والا، بلند بنی والا، زمین کوعدل وانصاف سے اسی طرح بھر دے گا جس طرح وہ ظلم وستم سے بھری ہوئی ہوئی۔سات سال حکومت کرے گا ا۔(4)

🖈 تاجدارختمنبوت زندهباد 🖈

^{1 (}مفيح مسلم، كتاب الإيمان، بأب في نزول اين مويمر، ج1، ص159، حديث 392 قويد بالمستأل الأهور)

^{2 (}صيح البغاري، كتاب احاديث الإنبياء بأب تزول عيسي مريد . ج 2 ص 339 . حديث 3449 . فرين بك ستال الأهور)

^{3 (}ترمذى، كتأب الفتن بإب ماجاء في امام مهدى ج 2 ص 59 مدين 111 فريد بك سفال الاهور)

^{4 (}سان الإداؤد، كتأب البهرى، ج3:ص252 حديث 3736، شيأء القرآن (١٩٥٠ كيشاز الأهور)



ا قانون ناموس رسالت



فی زمانہ ناموسِ رسالت منافیقیم (رسول اللہ کی عزت وناموس) کے خلاف با قاعدہ ایک عالم گیر مہم چلائی جارہی ہے۔جس میں میدودونصاری سیت دنیا بھر کے لبرل وطحدین شامل ہیں۔ ازادی واظهارِ رائے کے نام پر فرانس و ہالینڈ ہیں گتاخانہ خاکوں کے مقابلے، بلا کرز کا فتنہ ، قانونِ ناموس رسالت (295C) کو ختم کرنے کے لیے تمام بورٹی پار لیمینٹ کا مسلمان ممالک پر زور ویناسب ای سلسله کی کڑی ہے۔ اور پھر مسلمان حکر انوں کے دل دوماغ پر ماڈرن اور لبرل بنے کا جو خبط سوار ہے تاکہ اہلیانِ مخرب کے حلقوں میں ان کو پڑیرائی ملے ، یہ تحفظ ناموس رسالت یس سب سے بڑی رکاوٹ ہے۔ان حکمر اثول کا یکی رویہ گشاخانِ رسول کو جرت دیتا ہے۔

295 C

الله تعالى ، أسك حبيب مَنْ اللِّيمُ ، قر آنِ مجيد اور ديكر شعائرِ دين كي حرمت مسلمانوں کے لیے انتہائی حماس مسلم سیدان مقدسات دینیہ کے تحفظ کے لیے قرآن و احادیث اس ہاری رہنمائی کی گئے ہے۔ پاکستان کے آئین میں اس کے متعلق توانین شامل ہیں۔ جس میں سے ایک قانون (295C) کا ہے۔جس کے مطابق رسول الله سکا الله علی شان اقدس میں گستاخی کرنے والے تختص کو سزائے موت دی جائے گی۔ گستاخانِ رسول سے متعلق ہے سزائے موت كا قانون خود تاجدار دوجهال حضور رحمته للعالمين كابنا يابواسهد حضرت على المرتضى دعى الله تعالى حدد سروايت ب ، رسول الله مَا الله عَلَيْ فَي فَر الرسّاد فرماياكه: مَنْ سَبَّ لَهِيًّا فَاقْتُلُوهُ (1)(2)(3) "لین جو کسی بھی نی کی گتافی کرے اُسے قل کر دیاجائے"

^{1 (}معهم الصفور ، منيس 499 مؤسنة الكتب الفقائيته ، يبر وساليمان)

^{2 (}الفقايتعريف، السمرجهارم، بأب اول. ج2، ص587 مكتبه معفيه الأهور) 3 (جُمِع الرواثيدج 6.ص 260 دار الكتب العربي، يهرو سالمدان)

آپ منافظ کی حیات مبار کہ میں اس کے متعلق جمیں گیارہ سے زائد فیصلے ملتے ہیں۔جس میں آ قاکریم مَنَا لِیُنْظِم نے خود اپنے گتاخوں کو قمل کرنے کا تھم ارشاد فرمایا گتائے رسول کو عمل کرے آنے والے صحابی پرخوش ورضامندی کو اظہار فرمایا (1)۔ آج بور پی ممالک اور پاکستان میں موجود سیکولر و کبرل طبقه قانونِ ناموسِ رسالت C 295 کوختم کرنے کے لیے ہر ممکن حربہ اپنائے ہوئے ہے۔ مجھی فنڈ ڈسیاست دانوں، اور مجھی سیکولر نظریات رکھنے والے دینی سکالرزکے ذریعے عام عوام کے وہنوں میں شکوک و شبہات پیداکیے جاتے ہیں۔ قانون تحفظ ناموسِ رسالت 295 C میں کسی بھی قشم کی ترمیم کی نه صرف ہر سطح پر مذمت اور مزاحمت ناگزیرہے بلکہ اس کوغیر موٹر بنانے کے لیے ضابطہ تعزیرات میں جو قانونی یا انظامی اقدامات کیے جاتے ہیں ان کی مُدمت اور مز احمت ضروری ہے۔ ہمارے ہاں بہت سے قوانین صرف د کھادے کے لیے اور عوام کے جذبات ٹھنڈ اکرنے کا ایک حربہ ہیں۔ آج یاکتان کو معرض وجود میں آئے 70 سال سے زائد عرصہ ہو گیا۔ ہمارا سوال ہے کہ کیوں آج تک سمی گنتاخ ر سول کو جرم ثابت ہونے کے باوجو و قانون ناموس ر سالت 295 C کے تحت سز انہیں دی گئی۔ سمسی گستاخ رسول کو سزاسنا بھی دی جائے توہیر ونی مداخلت پر اُسے کچھ عرصہ قید میں رکھنے کے بعد ملک سے فرار کروادیا جاتا ہے۔ پہلے ایسی فضاء پیدا کرتے ہیں کہ مسلمان مستعل ہوں اور پھران پرانتہاء پسندی اور جذباتیت کی چھاپ لگاوی جاتی ہے۔

اب اگر کوئی مسلمان خود کسی گنتاخِ رسول کو کیفرِ قردار تک پہنچائے یا کوئی محض کسی ذاتی غرض پر کسی (بیٹیائے میں کو قتل کرے گنتاخی رسول کا الزام اُس پرلگا دے تو اِن سب واقعات کا اصل ذمہ دار حکومتی احکام اور وہ اوارے ہیں جو یوں مسلمانوں کے جذبات سے کھیلتے ہیں اور 70سال سے 295 کو نافذ العمل بنانے میں رکاوٹ بنے ہوئے ہیں۔ جب کلمہ گو مسلمانوں کورسول اللہ منگائیڈیم کی عزت و ناموس پر ان اواروں سے کوئی اُمید نظر نہیں آئی تب

^{1 (}اس موضوع مفتی ضیاء اجمد قادری حفظہ اللہ کی تصنیف "گتاخ رسول کے خلاف رسول اللہ مثاقیۃ کے گیارہ فیصلے "کا مطالعہ سجیجے، جس میں آپ نے 150 سے زائد کتب احادیث وکتب سیرت وغیرہ کے حوالہ جات کے ساتھ الن واقعات کو نقل کیاہے)

ہی ایسے واقعات رو نماہوتے ہیں و گرنہ کوئی شخص کیو تکر قانون اپنے ہاتھ میں لے گا۔اس موقع پر بہت سے کلمہ کو حضرات کا ان اواروں کے خلاف آ واز اٹھانے کے بجائے علاء ہی کو تقید کا نشانہ بنانا ان لوگوں کی باطنی خباشت و منافقت ظاہر کر تاہے، ویسے تویہ لوگ مسکلی اختلافات پر شور شرابا کرتے ہیں لیکن جب تمام مسالک کے علاء ناموس رسالت جیسے حساس معاطے پر ایک ہی موقف پر نظر آتے ہیں تویہ مغرب زدہ وانشور بجائے خوش ہوئے کے مزید بچر جاتے ہیں، یہ لوگ ورحقیقت (پس پردہ) اسلامی سزاؤں کا انکار کرنے والے ہیں۔ جب یہ احکام دین کا آزادانہ طور پر انکار کرنے کی راہ نہیں پاتے تو علاء کرام کو حرف تقید کا نشانہ بنا کر ول شعند اس کرتے ہیں۔ یہ لوگ اپنی جداگانہ راہ اختیار کیے ہوئے ہیں کیونکہ تاجدر رسالت ول شعند اکر بین کی وکٹہ تاجدر رسالت حضور خاتم النہیین منافیتی نے ارشاد فرمایا:

"میری ناموس کے مسئلہ میں مجھی دو بکر یاں بھی اختلاف نہیں کریں گی"⁽¹⁾ (بعنی اس میں گستاخ رسول کے قتل کے سواکوئی دوسری رائے ہے ہی نہیں)۔

" ہمارے ہاں اگر کسی حساس اوارے کے بارے میں کوئی اس طرح کی حرکت کر بیٹے تو اُسے غائب کر ویاجاتا ہے۔ لیکن ناموس رسالت مآب منافیق ہن پر ہمارے مال باپ اور ہم سب کی جائیں قربان ہوں، کے حوالے سے اواروں کو بھی کسی کاروائی کی توفیق نہیں ہوتی، ہماری اعلیٰ عدلیہ آئے دن بعض معاملات پر ازخود ٹوٹس لیتی ہے لیکن ان حساس اُمور پر اُن کا (سوموٹو) ٹوٹس کبھی علم میں نہیں آیا، کیا ہماری لائق صداحر ام عدلیہ اور فاضل جج صاحبان کے نزویک مقدسات وین کی حرمت ان امور کے برابر بھی نہیں جن پر وہ آئے دن نوٹس لیتے رہے ہیں؟ " (2)

^{1 (}البغازي، ج1، ص173/تقسيرنا موس رسالت، ج1، ص632) 2 (اصلاح عقائدوا همال، ص33، دار العلوم، كراچي)

خلق عظیم اور <u>295</u> :

محدین ولبرل طبقه قانون ناموس رسات 295C سے متعلق عام

عوام کے زہنوں میں شکوک وشبہات پیدا کرنے کے لیے ایک یہ اعتراض اٹھاتا ہے کہ دیکھیں رسول الله مَا اللّٰیْظِم تو خلق عظیم کے مالک ہیں، ہمیں بھی گتناخانِ رسول مَا اللّٰیْظِم کے بارے میں

اس قدر سخت روبه نهیں ر کھنا چاہیے۔

لبرل حضرات کی جانب سے تعلق عظیم کی الیی تشر سے کرنا قر آن پاک، سنت رسول مَثَالَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ مسنت صحابہ کے خلاف اور گستاخان رسول مَثَالِقَائِم کو اہانت رسول مَثَالِثَائِم پر جرت دینے کے

متر اون ب- الله رب العزت في قر آنِ بِأَك مِن النِيْ حبيب مَثَلِيْدُ كَلَ كَان مِن فرمايا: وَإِنَّكَ لَعَلْي خُلُقٍ عَظِينُهِ (1)

ترجمه كنزالعرفان: (اوربيتيك تم يقيبناً عظيم اخلاق يربو-)

اور حضرت سعد بن مشام دخی الله تعالی عند فرماتے بیں: میں فے حضرت عائشہ صدیقہ دخی الله منافقی معدیقہ دخی الله منافقی کیا : اے ام لموسنین!، مجھے رسول الله منافقی کے اخلاق کے بارے میں بتایئے۔ حضرت عائشہ صدیقہ دخی الله تعالی عنها نے فرمایا: "کیاتم قرآن نہیں بار سے بی بنے عرض کی: کیوں نہیں! تو آپ نے ارشاد فرمایا: "رسول الله منافقی کا خلق قرآن بی تو ہے "۔(2)

توپیۃ چلا کہ جارے نبی اکرم مُنَافِیْتُمْ کے اخلاقِ مبار کہ عین قر آنِ پاک کامظہر اور آپ کا ہر ہر قول و فعل خلقِ عظیم ہے۔ اور آپ مُنَافِیْتُمْ کے صحابہ جنہوں نے ہراہ راست رسول الله مَنَافِیْتُمْ کی صحبت اختیار کی اُن سے بڑھ کر کون خلق عظیم کے معنی کو سیجھنے والا ہو گا۔ اب بیہ ملاحظہ سیجیے: اللہ تعالیٰ نے قرآنِ پاک میں اپنے حبیب مَنَّافِیْتُمْ کے گتان ولید بن مغیرہ کو حرامی فرمایا: عُمُّلِ بَعْفَد ذٰلِكَ زَنِیْهِدِ (3)

ترجمہ کنزالعرفان: (سخت مزاج،اس کے بعد ناجائز پیداوارہے)

^{1 (}القلم، أيسه)

^{2 (}مخيح مسلم، كتاب صلاقالمساقرين وقصرها، بأب جامع صلاقالليل، ج1،ص532 مديث 1736 قريد بالتسلال الاهور)

^{3 (}القلم. آيت13)

اور الولهب جو الله ك حبيب مناطق كواذيتين ديتا تفااس ك متعلق فرمايا:

تَبَّتْ يَكَا آلِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ (1)

ترجمه كنزالعرفان: (ابولهب كے دونوں ہاتھ تباہ ہوجائيں اور دہ تباہ ہوہ كيا)

اور فرمايا :

إِنَّ هَانِئَكَ هُوَ الْاَبُئَّرُ ⁽²⁾

ترجمه کنزالعرفان: (بیشک جو تمهارادهمن ہے وہی ہر خیرے محروم ہے)

یہ تمام آیات اللہ تعالیٰ نے اپنے حبیب مَاللّٰیٰ کے وسمُنوں کی فرمت میں اور رسول اللہ

منافیق کی عزت وناموس پرلب واچیہ کی تعلیم وینے کے طور پر ارشاو فرمائیں۔

آج ہماری قوم نے صرف معاف کرنے کو خلق عظیم سمجھ لیاہے، نہیں بھائی! رسول الله منگالٹیکٹر کا جہاد کرنا بھی خلق عظیم ہے اور کا فرول پر سختی کرنا بھی خلق عظیم ہے۔حضرت مجدو

الف ثاني دحية الله عليه ارشاد فرمات بين: "الله تعالى تي السيخ حبيب مَثَالِثَيْرُ كُو فرمايا:

لَآيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَاغْلُطْ عَلَيْهِمْ (3)

(اے غیب کی خبریں دینے والے نبی! کا فروں اور منافقوں سے جہاد کرو اور ان پر سختی کرو)

توالله تعالیٰ نے اپنے حبیب منگاتی کی جو حسن خلق کے ساتھ موصوف ہیں کا فروں پر جہاد اور ان پر

سختی کا حکم دیااس سے معلوم ہوا کا فرول پر سختی کرنا خلق عظیم میں داخل ہے "_(⁴⁾

جہاں رسول الله مظَّافِیْظِم کی کمی زندگی دیکھیں وہاں پیارے آ قاحضور رحمۃ للعالمین مَلَّافِیْظِم کی مدنی زندگی بھی دیکھنی چاہیے۔

🛠 امام الانبیاء حضور رحمته للعالمین منگافیکی نے جحرت کے بعد 10 سالوں میں 27 غزوات میں بنفس نفیس شر کت فرمائی اور تقریباً 56 سر ایاروانه فرمائے۔

^{1 (}الهب،آيسا)

^{2 (}الكوثر،آيت3)

^{3 (}التوية، آيىت:73)

(سرایا بعنی صحابہ کرام کو جنگی کاروائیوں کے لیے روانہ فرمایا)۔ بیہ بھی رسول اللہ منگافینی کے خلق عظیم کابی حصہ ہے۔ خلق عظیم کابی حصہ ہے۔

الم حبیب کریا حضور رحمته للعالمین مَثَالِتُهُمَّا كا بنو قریظه والے دن یهودیوں کو " بندرول اور الله عظم الله ا

خزیروں کے بھائیو ، شیطان کے پجاریو! " کہنا بھی خلق عظیم ہے۔(۱)

ہے جان جانال حضور رحمتہ للعالمین منافیق کا بنو قریظ کے 600 سے زائد یہودیوں کو عہد فنکی کرنے پر ایک ہی دن میں قتل کرنے کی اجازت دینا اور فرمانا :" آسان پر رب تعالی کا فیصلہ بھی کہے ہے۔ (2)

بہ تاجدارِ دوجہاں حضور رحمتہ للعالمین مَالِیْظِیم کا مُنلف مواقع پر کفار کے خلاف دعائے ضرر فرمانا بھی خلق عظیم ہے۔

رمانا الله المرور عالم حضور رحمة للعالمين مَنَّالَيْنَمُ نَ جب عقبه بن الى معيط (جس نے حالت نماز ميں أَن مِن الله عنور رحمة للعالمين مَنَّالَيْنَمُ نَ جب عقبه بن الى معيط (جس نے حالت نماز ميں آپ مَنَّا الله عَنْ الله عَا الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ الل

الله معرّب ابو بكر صديّ وهى الله تعالى عند كاصلح حديديدك موقع يرعروه بن مسعود (جوابجى مسلمان نبيس موئ عنه كلو اللّه مَنَّ اللّهِ مَنَّ اللّهِ عَلَى الله مَنَّ اللّهِ عَلَى الله مَنَّ اللّهِ عَلَى الله مَنَّ اللّهِ عَلَى الله مَنْ اللّهِ عَلَى الله مَنْ اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللهِ عَلَى عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى اللهِ عَلَى عَلْمَ اللهِ اللهِ عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى عَل

حضرت عمر فاروق رض الله تعالى عند كارسول الله منافير في محل كرف كى نيت ب آفے والے مختص كو "بير كاالله كادهمن كسى الحي عليہ بير آيا" كہنا بھى خلق عظيم ہے۔ (6)

^{1 (}سبل الهدى والرشاد. يأب بعوقريضه كي طرف روانكي ج5. ص29 [اويه پهلشر ز. الاهور)

^{2 (}المواهب الدديلية بأب غزولابدو قريضه ، ج1، ص 331 فريديك ستال ، الاهور)

^{3 (}قال فيخ الحديث والتنسير علامه خادم حسين رضوى عليه رحمه)

^{4 (}سان الإداؤد، كتأب الجهاد، بأب في قتل الاسير مباراً، ج 2ص 271 حديث 2311 ضياء القرآن يعلى كيشاز، لاهور) 5 (صيح البغاري، كتأب الشروط، بأب هروط في الجهاد، ج2، ص31 حديث 2731 قريد بلنسد الدهور)

^{6 (}اذان، جاز، ص378 مكتبه طلع الهدار عليدا، الاهور)

الله على المرتضى شير خدا دهى الله تعالى عنه كوجب رسول الله سَكَافِيَّةُ في حَيْد صحابك الله سَكَافِيَّةُ في حَيْد صحابك الله سَكَامِ ورت في الله سَكَاور وحد الله الله على المرتضى دهى الله تعالى عنه في المرتضى دهى الله تعالى عنه في مرك باس خط خبيس تو حضرت على المرتضى دهى الله تعالى عنه في مران بر كر غلط خبيس بوسكايا تو خط نكال يابم تجفي بربنه كرك خط نكواكيس ك الله الله حلال عبد ري الله الله على المرتضى حيدرى المية بالله على عظيم ہے ۔ (1)

ی معرت عبد الله دهن الله تعالى عند كارسول الله مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهُمْ كى عزت ناموس كے دفاع ميں اپنے اپنے عبد الله بن افی سینے پر چڑھ كر تلواد سيد هى كر لينا بدخلقی نہيں بلكه الله كے حبيب مَنَّ اللَّهُمُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْ

اپ معرت ابوعبیدہ بن جراح دض الله تعالى عند كارسول الله كے خلاف آئے والے اپن باپ كوجنگ أحديث قبل كروينا بريد خلقى تبيل بلك خلق عظيم ہے _(4)

نہیں بلکہ عین خلق عظیم ہے۔(۵) ﴿ غرزوہ خندق کے موقع پر عیبینہ بن حصن کے رسول اللہ متابیع کی طرف ٹا تگیں پھیلا کر بیٹھنے

ر حضرت اسيد بن حفير دهى الله تعالى عند كا انبيس بيه كهناكه "اب بندركى آتكه والع! الدى المكليس ميث الدين المكليس سيث لو، يخدا! اگر حضور اكرم مناطقة ميهال تشريف فرماند موت تويس بيرة تيرب

^{1 (}صحيح البعاري، كتاب المعاري باب قضل من شهديد أج2. ص537 حديث 3983 فريد بك ستال الأهور)

^{2 (}اذان جاز، ص296مكتبه طلع البدر عليماً، الأهور)

^{3 (}معیمرالکیور،قشائل امیرجزی، ج2، ص433، مدینه285، پرو گریسویکس، ((هور) 4 میر میراند با مادار تا ایار تا بیکاری مص

^{4 (}تقسير مر اقالجنان، سور قالمجاحله تحته الايت 22) 5 (سيل الهدى والرشاد بإب غزو تحديبية، ج5، ص67، زاويه يهلشرز، لاهور)

خصیوں میں سے نکال دیتا " _ بیہ بدخلقی نہیں بلکہ خلق عظیم ہے۔ (1) اور بیہ تمام اوب و تعظیم مصطفیٰ مَالطِیْتُلِ پر افضل ترین لو گوں کی اعلیٰ ترین مثالیں ہیں، سجان اللہ عزوجل _

کیا قرآن و حدیث میں رسول اللہ مَا لَیْنَا کُلُم کِنا مِیں ان نہ کور بالا آبات و احادیث پڑھنے کے بعد کوئی مسلمان یہ کہہ سکتا ہے کہ گنتاخانِ رسول مَا کَالِیُّا کُلُم کے ساتھ سختی والا معاملہ کرنا درست نہیں؟۔ہاں کیے گا مگر وہی جو جس کے سر پر بدیذ ہی کا خبط سوار ہے۔

ایک صحابہ کرام نے جو رسول اللہ منگائی کی طرف ہاتھ کا اشارہ کرنا بھی ہرواشت نہ کرتے تے اور ایک آج کے مسلمان ہیں جن کے دل فرانس وہالینڈ ہیں سرکاری سطح پر ہونے والے رسول اللہ منگائی کی خاکول کے مقابلے کے بعد بھی نہیں دُکھتے ، اِنہیں اب بھی خصہ نہیں آتا، یہ طافت کا استعال اللہ کے حبیب منگائی کی عزت و ناموس کے لیے بھی نہیں کرتے بلکہ جولوگ فرانس کا سفارتی و تجارتی بایکاٹ کرنے کا مطالبہ کریں یہاں اُلٹا اُن مسلمانوں کو بی شہید کر دیا جاتا ہے۔ یہ صرف اسلامی ممالک پر قابض بے دین یہود و نصاری کی دلالی کرنے والے حکم ان ٹولے کی ہزدلی و بے حسی ہے کہ آج یورپ کو سرکاری سطح پر امام الانبیاء کرنے والے حکم ان ٹولے کی ہزدلی و بے حسی ہے کہ آج یورپ کو سرکاری سطح پر امام الانبیاء منا اللہ بھر کی گرت ہو گرت مند مسلمان آج چودہ سوسال بعد بھی منا گئی گئی کی عزت و ناموس کی حفاظت کے لیے اپناسب کچھ قربان کرنے کے لیے اپناسب پچھ قربان کرنے کے لیے اپناسب پچھ قربان کرنے کے لیے تیارہ۔۔

کروں تیرے نام پہ جاں فدا نہ بس ایک جاں دو جہاں فدا دوجہاں سے بھی نہیں جی بھرا کروں کیا کروڑوں جہاں نہیں (حدائق بخش)

مذموم (برا) غصه كونساسې؟

ہمارے ہاں ایک طبقہ کہتاہے کہ غصہ کرناحرام ہے جبکہ بیہ

بات ورست نہیں۔ یہ بات عموماً یہ لوگ اُس وقت کرتے ہیں جب وہ ویکھتے ہیں کہ اللہ اور اُسکے ر سول منگافینظم کے دعممنوں کے خلاف غصہ کیا جارہاہے۔ادر جب ان لوگوں کا کوئی ذاتی معاملہ مو کوئی ان کاحق مارے یا ان کے مال باپ کو گالی تکالے تو یہی لوگ آگ بگولہ ہوئے نظر آتے میں۔ حالانکہ شریعت کا تھم توبہ تھا کہ آگر آپ پر کوئی زیادتی کرے، تواپنے حت کومعاف کر دیا جائے (لوگوں کومعاف کرنے اور غصر پر قابوپانے وغیرہ سے متعلق احادیث ای پرہیں) جبکہ الله تعالی اور اس کے حبیب مظافیظ کے وشمنوں کے ساتھ سختی سے پیش آنے کا تھم ہے لیکن مید لوگ اس کے بر عکس کرتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ اوراس کے حبیب مَثَالِثَیْمَ کے لیے غصہ کرنا جبکہ اس میں اللہ تعالیٰ کی نافرمانی نہ ہو ، بیر بداخلاقی نہیں بلکہ عین ایمان کی نشانی ہے۔ مذموم غصہ وہی ہے جواپنے نفس کی تسکین اور ناحق کے لیے ہو۔

دین کے لیے عصبہ کرنا:

الله تعالی نے قرآنِ پاک میں اپنے بیارے صبیب مَالَّ لِیُمُنَّمُ کو کفار

یر غصه و سختی کرنے کا حکم خود ارشاد فرمایا:

يَّأَيُّهَا النَّيِّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَاخْلُطْ عَلَيْهِمُ

وَمَأُوْمِهُمْ جَهَنَّمُ * وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (1)

ترجمه کنزالعرفان: " اے غیب کی خبریں دینے والے نبی! کا فروں اور منافقوں سے جہاد کرواور

ان پر سختی کرواور ان کاٹھ کانا جہنم ہے اور کنٹی بری پلٹنے کی جگہ ہے "

اس طرح حديث پاك ميں جانِ جانال حضور رحمت عالم مَثَّ الْفِيْمُ لِنَهُ الرشاد فرمايا:

(1) "دین کے لیے عصر میری امت کے بہترین اور نیک لوگوں کوہی آتاہے "۔ (²⁾

^{1 (}التوية، آيت 73)

(2) حضرت جابر بن عبد الله دهی الله تعالی عند ارشاد فرماتے بیں: "رسول الله مَنَا اللهُ عَلَيْهُمُ جب خطب ارشاد فرماتے تو آپ کی آئکھیں سرخ ہوجا تیں (ایک روایت میں ہے دخسار مبارک سرخ ہوجاتے) اور آواز بلند ہوجاتی اور جلال بہت زیادہ ہوتا اور یوں لگنا جیسے آپ کسی ایسے لشکر سے وُراد ہوں جو جو بوٹ اور جو جو باشام میں حملہ کرنے والا ہو"۔(1)

روار مساول الله! وعظ و نصيحت كے وقت بيہ جلال بھى ہمارے آقاد مولا مَنْ اللّٰهِ أَمْ كَى سنت مباركہ ہے، آج اگر كوئى عالم دين دشمنانِ دين كے خلاف بھى سخت بات كرے تو لبرل لوگ كہتے ہيں كہ مولانا صاحب كو آرام سے بات كرناچاہيے تقى، ايسے لوگوں كو اپنا قبلہ درست كرناچاہيے)۔

(3) دین کے لیے غصہ نہ کرنے والا اللہ تعالیٰ کی ناراضگی میں رہتا ہے، چنانچہ حدیث پاک میں ہے کہ: "اللہ تعالیٰ نے ایک فرشتہ کو بنی اسرائیل کی ایک قوم کو اُلٹنے (عذاب نازل کرنے) کا تھم ارشاد فرمایا توسب سے پہلے اُس شخص کوعذاب میں مبتلا کرنے کلا تھم فرمایا جوعیادت گزار تو تھالیکن اُسے اللہ تعالیٰ کی خاطر مجھی غصہ نہیں آیا تھا۔ (2)

ند کور بالاکلام سے بیدیات بلکل واضح ہوگئ کہ لبرل یاسیکولر حضرات جوبظاہر دین اسلام کی محبت کا دم ہمرتے ہیں وہ خلق عظیم کے معنی و مفہوم اپنے مز ان کے مطابق اخذ کر کے لوگوں کو گراہ کرنے والے ہیں۔ دین کی خاطر غصہ آنا نقص ایمان خہیں بلکہ اصل ایمان ہے۔ ہمارے آتا و مولا منافظ کی ہر ہر اوا آپ کا ہر قول و فعل ہی خلق عظیم ہے، ای طرح فتنے کو ختم کرنے کے مطابق عظیم کے مطابق کا ہر تھا گائے کا ہر قول و فعل ہی خلق عظیم ہے، ای طرح فتنے کو ختم کرنے کے ایمان سے ذائد کے حضور رحمتہ للعالمین منافظ کی ایمان حیات مبارکہ میں گستاخوں کے خلاف گیارہ سے ذائد فیصلے فرمانا اور صحابہ کرام کا گستاخی کے مرکتب شخص کو قتل کرنے پر اجماع ہونا بھی خلق عظیم کی اعلیٰ ترین مثال ہے۔

 ⁽صيح مسلم، كتأب الجيعة، بأب رفح الصوت... ج1، ص610، حديث 2002 فريد بالاستأل، لا هور)
 (تفسير تبيان القرآن ج3. ص235 فريد بك ستال، لا هور / البعجم الاوسط)

رسول الله مَنَا لِيُرَامُ كالبيد وشمنون كومعاف فرمانا:

گستاخی ء رسول مَلَاثِيْتُومُ ہے متعلق جب کوئی واقعہ پیش آتاہے تولبرل حضرات ہے کہناشر وع کر دیتے ہیں کہ رسول اللہ تواپنے و مثمنوں کو معاف فرہادیا کرتے متھے۔ایسے لوگوں کو یہ بات یادر کھنی چاہیے کہ بلاشبہ آپ مَاللَّیْمُ اُنے اپنی جان ومال اور اُن قول و تعل کا بدلہ نہیں لیا جن کا تعلق سوء اوب یا معاملات سے ہے، جس سے فاعل کامقصد اذبیت و گالی نہیں تھاجو اہل عرب کی سابقہ عادت کی بناء پر تھی کہ وہ ظلم وجھاد نادانی میں رہے بیے منصے - جبیبا کہ بدوی کا قصہ جس نے چاور آپکی گرون مبارک میں ڈال کر تھیٹھا یا اُس محض کا قصہ جس نے گھوڑا فروخت کرنے سے اٹکار کر دیا تھا جے آپ مَٹَالِیُّنِمُ نے خرید لیا فقاله (الثفاء شريف)

ليكن گتاخانِ رسول كو نبي اكرم مَنَّاليَّيْمَ قَلَ كروايا كرتے تھے ، كيونكه بيه حرماتِ البيه ميں سے ہے اور حرمات البیرسے متعلق أم المومنين حضرت عائشه دخوالله تعالى عند صديقه فرماتي بير ك : " رسول الله مَنَا لِللَّهِ مَنَا لِللَّهِ مَن كُلِي اللَّهِ عَلَى اللَّهِ وَاتْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مَن اللَّهِ مَن اللَّهُ مَن اللَّهِ مِن اللَّهِ مِن اللَّهِ مَن اللَّهُ مَن اللَّهُ مِن اللّهُ مِن اللَّهُ مِن الللَّهُ مِن اللَّهُ مِن الللّ الله عزوجل كى حرمت كو پامال كرتاتوآپ مَكَالْتُكِمُ اس سے اس كابدلد ليت "-(1) (روایات میں گیارہ سے زائد آپ مَلَالْیُکُمُ کے نیصلے موجود ہیں جس میں آپ مَلَالْیُکُمُ نے گشاخوں کے قتل کرنے کا تھم ارشاد فرمایا یا قتل گستاخ پر خوشی ور ضامندی کا اظہار فرمایا) البیته ابتدائے اسلام میں چندایسے بے ادب لوگ جوبظاہر مسلمان تھے، تمازیں اور دیگر شر کی احکام کی پابندی بھی کرتے تھے، بعض دفعہ نی اکرم مَنافِیکا نے وقق طور پران کے قتل سے روک دیا۔ اس کی ایک وجہ میہ تھی کہ رسول اللہ مَنَا ﷺ کی میہ آرزو تھی کہ وہ مسلمان ہو جائیں اسی لیے رسول الله مُنَالِيُّكِيمُ ان كي ابانتول اور تكاليفول يرصبر فرماياكرتے تھے۔ تأكہ جولوگ اسلام قبول كر چكے تھے، يا قبول كرنا چاہتے تھے وہ يہ نہ كہيں كہ محمد مَثَالْتُنْتِمُ اپنے ساتھيوں كو قتل كرواتے ہيں ، منافقین کی حالت چونکہ عام لو گول سے مخفی تھی اور آپ ظاہر پر ہی تھم لگا یا کرتے تھے۔ جیسا کہ ایک مخف نے مالِ غنیمت کی تقتیم پر کہا"اللہ کے نبی انصاف سے کام کیجیے "اس پر حضرت عمرِ

^{1 (}صحيح الهغارى، كتاب المعاقب باب صقة التي ج2 ض373 منيث 3560. فريديك سأل الأهور)

قاروق دهی الله تعالی عنداور حضرت خالد بن ولید دهی الله تعالی عند جلال میں آئے اور اس مخض کو قتل کرناچا بالیکن رسول الله منگاللی فی است من خرمایا۔
اس طرح فی کمہ کے دن وہ چار مر و اور دوعور تیں جن کے قتل کرنے کا آقا کریم منگاللی فی ارشاد فرمایا تھا لیکن ان میں سے بعض لوگوں نے کسی صحابی رسول سے امان لے کریا کسی دوسرے طریعے سے آقا کریم منگاللی فی فی بارگاہ میں حاضری اور معافی کی درخواست کا ایک موقع چاہا تو اگر چہ کہ حضور رحمتہ للعالمین منگاللی کی بہی خوائش تھی کہ انہیں قتل کر دیا جائے لیکن آپ منگالی کی ایک موایت ش ہے کہ:

حضور مَنْ عَيْدُمْ كَي جِارِت:

حضرت سعد دمن الله تعالى عنه بيان كرتے بيں كد: " فتح كمد ك ون ر سول الله مُثَاثِّتُهُمُّ نے چار مر دوں اور دوعور توں کے سواسپ کوامان دے دی، وہ چار مر دیہ ہتھے عكرمه بن ابي جہل، عبدالله ابن خطل، مقيس بن صبابہ اور عبدالله بن سعد بن ابي مراح۔ آپ منافیظ نے فرمایا اگرید لوگ تعبہ کے پردول سے مجمی لنکے ہوئے ہول تو ان کو قتل کر دینا ۔عبداللہ بن خطل کیسے کے یر دول میں چھپاہوا پکڑا گیا، حضرت سعد بن حریث نے اس کو تملّ کر ویا۔مقلیس بن صابیہ کولو گوں نے ہازار میں پکڑ کر قتل کر ویا۔عکر مہ سمندی طوفان میں پھنس گئے اور اللہ تعالیٰ کی بار گاہ میں وعاکی کہ اے اللہ اگر تونے مجھے اس گر واب سے بچالیا تور سول الله مَعَ اللهُ عَلَيْهِ عَلَى بار كاه ميس جاكر توبه ومعافى كاطلبگار جول كاءوه بار كاه رسالت ميس آت اور مسلمان ہو گئے (مخصاً)۔ اور رہے عبد اللہ بن الي سرح تو وہ حضرت عثمان بن عفان کے پاس ح<u>ي</u>ب گئے۔ حصرت عثان ان كورسول الله مَنَا لِيُعِيمُ ك بار كاه ميس لي سكت اور كها يارسول الله مَنَا لَيْنِيمُ عبد الله كو بیعت کر کیجے۔ آپ نے تثین بار اس کی طرف دیکھا اور ہر بار اٹکار کیا۔ پھر تین بار اٹکار کے بعد آپ نے بیعت کر لیا پھر آپ نے اپنے اصحاب کی طرف متوجہ ہو کر فرمایا: کیاتم میں اتناسمجھ دار ھخض کو ئی نہ تھا؟ کہ جب اس نے ویکھا کہ میں اس کو بیعت کرنے سے ہاتھ تھینچر ہاہوں تووہ اس کو قتل کر دیتا۔ انہوں نے کہا یار سول اللہ مُنَافِیْتُرُ مہیں کیا پیۃ تھا کہ آپ کے دل میں کیا ہے؟ آپ نے ہماری طرف آ تکھوں سے اشارہ کیوں نہ کر دیا؟ آپ مَالَّلْیُکُمْ نے فرمایا ٹی کے لیے ہیے

جائز نہیں ہے کہ اس کی آنکھ خیانت کرنے والی ہو"۔(1) اى طرح مشهور حديث ياك ين ب حضرت عائشه صديقه دهى الله عنها فرماتى ين: "رسول الله مَنَا لِيُنْظِمُ نے (صحابہ کرام ہے) فرمایا: قریش کی جو کرو، کیونکہ اُن پر ججو تیر کی بوچھاڑ ے زیادہ شاق گزرتی ہے (لیتن میرے دعمنوں کو اشعار کے ذریعے جواب دو)۔ پھر آپ مُنَافِينَمُ نے حضرت ابن رواحہ رہی اللہ تعالیٰءنہ کو طلب کر کے فرمایا: ان (کفار) کی ججو کروسو انہوں نے اُن کی ہجو کی کیکن آپ مَٹَائِیْٹِ کو اطمینان نہ ہوا۔ پھر آپ نے کعب بن مالک دھی اللہ تعالى عنه كوطلب كيا يهر حمان بن ثابت دهى الله تعالى عنه كوطلب كياء سوجب حفرت حمان آپ کے پاس آئے توانہوں نے عرض کی: اب وقت آگیا ہے آپ نے اُس شیر کو طلب فرمایا ہےجو (وطمن کو)این دم سے مار تا ہے، پھر حضرت حسان بن ثابت ایتی زبان نکال کر اُسکو ہلانے لگے اور عرض کی : اُس ذات کی قشم جس نے آپ مُنْالَّيْنِيُّم کو حَنْ کے ساتھ بھیجاہے، میں ان کو اینی زبان (کی کاٹ) سے اس طرح چیر پھاڑ دوں گا جس طرح چیڑے کو پھاڑا جا تا ہے۔ حضرت عائشہ صدیقتہ دخی الله عنها بیان کرتی ہیں میں نے سنا رسول الله مَثَلِّ اللَّهُ مُثَالِثَيْمُ فرمارہے تھے: (اے حسان !) جب تک تم الله اور اس کے رسول (کی ناموس) کا دفاع کر رہے تھے روح القدس (چبریل این) مسلسل تمهاری تائید کررہے تھے۔ اوررسول الله مَثَّالْقِیْمُ نے فرمایا: حسان نے اُن کی ججو کرے مسلمانوں کے ول کو ٹھنڈک پہنچائی اور کفار کے دل کور ٹجیدہ کہا" (مخضاً)_⁽²⁾

سبحان الله! ان روایات سے پید چلاحضور رحمتِ عالم منگالیکی خود اس بات خواہش رکھتے سے کہ میرے قلام میرے و شمنول کو بڑھ چڑھ کر جواب دیں اور میری شان میں خوب مبالغہ کریں۔اور اس روایت میں ور بارِ رسالت کے شاعر حضرت حسان بن ثابت کے جملے معترضین (لبرل وسیکولر حضرات) کے اعتراضات کو چربھاڑ کرنے کے لیے کافی ہیں۔

وہ لوگ جو یہ کہتے ہیں رسول الله مَنْ اللهِ عَنْ اللهِ مَنْ اللهِ مِنْ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ اللهِ اللهِ مَنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ اللهِ مَنْ اللهِ مَنْ اللهِ اللهِ مَنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ مَنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ مَنْ اللهِ اللهُ اللهِ الل

^{1 (}سان الإحاؤد، كتاب الجهاد، باب قتل اسير . ج2، ص269 مديد 2308/ كتاب الحدود مديد 3793 قريد بالتسفال الأهور) 2 (صحيح مسلم . كتاب افضائل الصحابة ، باب فضائل حساب بن قابت . ج3، ص361 مديد 345 قريد بالتسفال الأهور)

تمہارے لیے سنت بن گئ تم بھی اپنے دشمنوں کو معاف کیا کرو، تم اپنے ساتھ زیادتی کرنے والوں کو معاف کیوں نہیں کرتے ؟۔ اور یہ بھی بتاو! کہ رسول الله مَنَّالَیْمُ نِیْ نے اپنے دشمن کو معاف کیا ہے؟ رسول الله مَنَّالَیْمُ نے اپنے دشمن کو معاف کیا ہے؟ رسول الله مَنَّالَیْمُ نے اپنے دشمن کو معاف کیا ہے؟ رسول الله مَنَّالَیْمُ نے اپنے دشمن کو معاف کیا ہے تو کیا صحابہ کرام دض الله عندهم اجمعین نے بھی رسول الله مَنَّالَیْمُ کے گستان کو معاف کیا؟، اگر کیا ہے تو ثبوت دیا جائے۔

تمہارے والد کا اپنے دشمن کو معاف فرمانا کرم ٹو ازی اور تمہارا اپنے والد پر ظلم وستم کرنے والے شخص کو معاف فرمانا کرم ٹو ازی اور تمہارا اپنے والد پر ظلم وستم کرنے والے شخص کو معاف فرما کر اُسے دوست بنالیا غداری کہلائے گا۔ای طرح رسول اللہ مَا اللّٰهِ عَلَیْ اَلْمِیْ کُلُو کُلُ

کسی ظالم کو اُس کے کیے پر سزانہ دیناظلم ہے ، جبکہ اسے جرم ثابت ہونے پر سزادینا نیکی ہے۔ کسی قاتل کو چھوڑ دینا بھی ظلم ہے اور قاتل کو قصاص میں قبل کرنا نیکی ہے۔ بلکل اسی طرح کسی گستاخ کو سزادینا عین نیکی ہے جبکہ اس کو کھلا چھوڑ دینا ظلم عظیم ہے۔

مذکور بالا کلام سے رسول اللہ مُنَاقِیْتِمْ کے لوگوں کومعاف فرمانے سے متعلق حقیقت واضح ہوگئی، حضور رحمت عالم مَنَاقِیْتِمْ کی خواہش ظاہر ہوگئی اور لبرل و قادیانیوں کی جھوٹی ساز شیں و منافقت بے نقاب ہوگئی۔الحمدُ لللہ۔

وہ لوگ جوچندروایات کو بنیاد بنا کر اپنا مدھا پیش کرتے ہیں اُنہیں چاہیے کہ اُن احادیث پر مجھی نظر رکھیں جن میں اللہ تعالیٰ اور اُس کے حبیب مُنَافِیْتِمْ کے دستمنوں پر سختی کا حکم ملتاہے۔ اے عزیز! ایک قسم کی احادیث کو بیان کرنا اور دوسر می روایات کو ہالکل چھوڑ دینا آپ کوزیب نہیں دیتا۔

¹ نبی پاک مَنَّالَیْمَنِّمُ کی عزت وناموس کامسکلہ حرمت البیدیش سے ہوا لیے شخص کی مزا خود شرع نے مقرر کر دی ہے م وشاکو کیا اختیار جواس میں خودسے معانی تامے بالنٹے بھریں۔

كتاخ رسول كوماورائ عدالت قتل كرنا

کتبِ احادیث وسیرت وغیرہ کا مطالعہ کیا جائے تو گنتاخانِ رسول کی سزاسے متعلق تین قتم کی احادیث ہمارے سامنے آتی ہیں۔

اول قدمه ملیہ بیان فرمایا کہ جو شخص کسی الله مُنافِیج نے ایک قاعدہ کلیہ بیان فرمایا کہ جو شخص کسی مجمعی فرمایا:

مَنْ سَبَّ لَبِيًّا فَاقْتُلُوهُ (1)(2)(3)

"لیتی جو کسی بھی نبی کی گشاخی کرے اسے قتل کر دیا جائے"

دوسوی قسم کی روایات دہ ہیں جن میں نی کریم مُنَّالِیْنِم نے گَتَانُوں کو قُل کروائے کے لیے نور ایک مُنَالِیْنِم نے گتَانُوں کو قُل کروائے کے لیے خود اپنے صحابہ کرام دی الله عنهم اجمعین کوروائہ فرمایا یعنی تھم ویا کہ فلال فلال گتاخ کو قُل کرے آؤ۔ (جیسے حضرت فیروز الدیلی کو مدعی ثیوت اسود عنسی کی طرف جیجنا یا ابورافع، کعب بن اشرف، ابن خطل، عصماء بئت مروان کو قُل کرواناد غیرہ)۔

کتب میں موجود ان روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ گنتائے رسول مباح الدم ہوتا ہے۔ اسلامی ریاست میں گنتائے رسول کو سزادینا حکومت کی ذمہ داری ہے،عام آدمی قانون اپنے ہاتھ

^{[(}معجم الصغير,حديث 499،مؤسته الكتب الثقافية، يبروت لبدأن)

^{2 (}الشفابتعريف،قسم چهارم،باب اول،ج2، ص587،مكتبه حنفيه الاهور)

^{3 (}مجمع الزوائد، ج 6،ص 260، دار الكتب، العربي، بيروت ليدان)

میں نہ لے۔لیکن اگر کسی شخص نے قانون اپنے ہاتھ میں لے کر کسی ایسے گتاخ رسول کو قتل کر دیا جس کی گتاخ رسول کو قتل کر دیا جس کی گتاخی ہالکل واضح بھی لینٹی اس میں کسی تاویل کی گنجائش نہ تھی اور وقت کے جید مفتیانِ کرام اُس کے گتائے رسول ہوئے پر فتوی دیتے تھے توایسے شخص کواگر کوئی قتل کر دیے تو اُس پر کوئی قصاص یا تاوان نہیں ہوگا، کیونکہ گتائے رسول مباح الدم (اس کاخون معاف اور پید واجب القتل) ہوتا ہے۔لیکن چاہیے بہی تھا کہ حکومتِ وقت خود اس گتائے کو قتل کرواتی، تاکہ معاشرے میں کوئی انتشار نہ تھیلے۔

معاشرے ہیں کوئی انتشارتہ تھیلے۔

یہاں یہ بات بھی یاور کھیں کتب احادیث اور سیرت کی کتابوں ہیں گتائی رسول منگالی کی الیوں ہیں گتائی رسول منگالی کی الیوں ہیں گتائی رسول منگالی کی الیوں ہیں گتائی متعافر حسین قاوری کے قتل سے متعلق تمام واقعات ہیں جس میں اہائت رسول واضح طور پر دھبة الله علیها کا گتائوں کو قتل کرنا ہے تمام وہ واقعات ہیں جس میں اہائت کا وقوع یقینی تھا یا ثابت شدہ تھی اور اس میں کوئی دو سری رائے نہ تھی، گواہوں سے جرم اہائت کا وقوع یقینی تھا یا وتی کے ذریعے رسول اللہ منگالی کی اس کی تصدیق کروگ کی تھی (جیسے حضرت عمر کا گتائے کو قتل کرنے کا واقعہ)۔ اس بناء پر ہے امر واضح رہنا چاہیے کہ اگر صریح اور مسلمہ تو ہین رسالت موجو دہواور اس کے ثبوت میں کوئی کلام نہ ہو تو تب ہی ان واقعات سے استدلال کیا جاسکتا ہے۔ آج بعض لوگ حضور تاجدالِ ختم نبوت منگالی کی فات گرامی کے بارے میں بعض نظری (نطنی) اختلاف کو ناموس رسالت کا مسکلہ بنا کر اگر ان سے استدلال کرنا شروع کر دیں تو ہے رویے قانون و شرع کی نظر میں کسی رعایت کا مستحق نہیں ہوگا۔ علماء کو چاہیے کہ گتائی رسول کی سزا قانون و شرع کی نظر میں کسی رعایت کا مستحق نہیں ہوگا۔ علماء کو چاہیے کہ گتائی رسول کی سزا قانون و شرع کی نظر میں کسی رعایت کا مستحق نہیں ہوگا۔ علماء کو چاہیے کہ گتائی دسول کی سزا

احادیث پس موجود واقعات سے پنہ چاتا ہے کہ توہین رسالت کا مقدمہ ہویا کوئی اور تنازعہ ہو یہ امور اسلامی عدالت سے بالاتر نہیں کہ جو شخص بھی چاہے تو توہین رسالت کا دعویٰ کر کے قانون سے بالاتر ہو کر رعایت کا مطالبہ کر سکتا ہے۔ بلکہ ان احادیث سے سنت نہویہ دراصل یہ معلوم ہوتی ہے کہ ایسے واقعات ہونے پر شرعی عدالت پس ان کی باز پرس کی جائے، امر واقعہ کا بوری طرح جائزہ لیا جائے اور شریعت کے نقاضوں کو پورا کیا جائے۔ اگر امر واقعہ میں اہانت رسول کا ارتکاب نہیں ہواہے توالیے مجرم کو مزاسے معافی دی جائے اور اگر در حقیقت ایسے ہوا سے رایعن گتا نی گارت ہوئی) تو پھر ملزم پر شرع و قانون کے نقاضے پورے کیے جائیں تا کہ سے (ایعن گتا فی بورے کیے جائیں تا کہ

لوگوں کے جان ومال ایمان محفوظ رہے اور بالفرض کی نے تو بین رسالت کی آڑ میں اپنا غصہ و انتقام پورا کیاہے تو اس کوجو ابا قصاص میں قتل کیاجائے گا۔(1)

انسانی جان کی حرمت / عبرت حاصل سیجیے:

سمسی مسلمان کا گنتاخ رسول کو ماورائے

ی سلمان کا سنان رسوں تو ہورائے عدالت قتل کر بنیاد پر گستاخی کا الزام لگا کر دوسرے کو قتل کر دیسے ہو آتی رخش کی بنیاد پر گستاخی کا الزام لگا کر دوسرے کو قتل کر دیسے جیسے واقعات سے ہمارے حکومتی اداروں کو اپنی آ تکھیں کھولنی چاہیے اور سوچناچاہیے کہ آخر کیوں عوام کا اُن سے اعتماد اُٹھ رہاہے۔ یقینا اس کی وجہ یہی ہے کہ پاکستان میں گستاخی ثابت ہوئے کے باوجود قانونِ ناموسِ رسالت 295 کے تحت سز انہیں دی بلکہ بیرونِ ملک بھیج دیا جاتا ہے۔

بغیر کسی شرعی دلیل، واضح ثبوت کے صرف اپنی عقل یا ذاتی زنجش کی بناء پر کسی مسلمان یا غیر مسلم کو قتل کرنے والا مختص بہت سخت گناہ و سز اکا مر تکب و مستحق ہے۔ ہمیں درج ذیل روایات سے غبرت حاصل کرنی چاہیے۔

قرآنِ بإك مين الله تعالى ارشاد قرماتا ب:

مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَالُّمَا

قَتَلَ النَّاسَ جَمِينَ عَاوَمَنُ أَخْيَا هَا فَكَالَّمَا أَخْيَا النَّاسَ جَمِينَ عَا (2)

ترجمہ کنزالعرفان: "جسنے کسی جان کے بدلے یازین میں فساد پھیلانے کے بدلے کے بغیر کسی شخص کو قتل کیا تو گویا اس نے تمام انسانوں کو قتل کر دیا اور جس نے کسی ایک جان کو (قتل سے بچاکر) زندہ رکھااس نے گویاتمام انسانوں کو زندہ رکھا۔

اورامام الانبياء حضور رحمته للعالمين مَالِينَيْمُ ن ارشاد فرمايا:

(1) "كسى مومن كو (ب كناه) قتل كرنے ميں اگر زمين و آسان والے شريك موجاكي توالله

^{1 (}ماغوذ تفسير ناموش رسالت، 15، ص644 مكتبه طلح البدر عليدا. لأهور) 2 (البعائدة، آيت 32)

تعالی ان سب کو جہنم میں و تھیل وے "_(1)

(2) اور نبی رحمت مَنَالِيَّيْمُ فِي ارشاد فرمايا: " الله تعالی کے نزویک و نیا کا ختم ہو جانا ایک مسلمان کے ظلما قل سے زیاوہ سہل ہے "۔(2)

(3) اور حضور خاتم النبيين مَنْ اللَّيْمَ فِي ارشاد فرمايا: "آگاه ربو! جو كسى معاہد كو قتل كرے جس كے ليے اللہ اور رسول كا ذمه بو (يعنى جو كسى غير مسلم شهرى جس سے معاہدہ بو كو ناحق قتل كرے) اس في اللہ تعالى كا ذمه توڑ ديا وہ جنت كى خوشيو منبيں پائے گا حالا تكه جنت كى خوشيو ستر

کریے) اس نے اللہ تعالی کا ذمہ توڑ د سال کی مسافت سے آتی ہو گی"۔⁽³⁾

 $^{\diamond}$

--- حن آخر ---

ختم نبوت وناموسِ رسالت مَنَّافِيَةُم پراس قدر تاویل کلام کا مقصد، بالخصوص یو نبور سٹی دکارلج کے نوجو انوں اور بالعلموم ہر خاص و عام کے قلوب و اذھان ہیں مسلہ ناموسِ رسالت مَنَّافِیْقُم سے متعلق لبرل حضرات اور میڈیا کے پیدا کئے شبہات کو دور کرنا اور قانونِ ناموس رسالت و عقیدہ ختم نبوت مَنَّافِیْنِم کی حساسیت کو واضح کرنا تھا۔ اللہ تعالیٰ کی بارگاہ ہیں وعاہے کہ اللہ رب العزت کے پیارے حبیب مَنَّافِیْنِم کی عزت و ناموس کے تحفظ کے لیے میری اِس کاوش کو اپنی بارگاہ ہیں شرف قبولیت عطا فرمائے۔ جھے ، میرے عزیز و اقرباء اور اس کتاب کے قار مین کو بروزِ محشر حضور جانِ رحمت مَنَّافِیْم کی عزت و ناموس کے محافظوں میں اٹھائے۔ آئین

^{1 (}ترمدّى، كتأب الديات، بأب الحكم في الذماء. ج1. ص701، حديث 1421. فريد بالتستال، لاهور) 2 (ترمدّى، كتأب الديات، بإب ما جاء في تشد، ج1. ص700، حديث 1412 فريد پائستال، لاهور)

^{3 (}ترمذي، كتاب الديات، بأب ماجاء فيس يقتل، ج1، ص703، حديث 1426 فريد بالمستال، الأهور)

صلاح عقائد و رسو



أقامت ولين

مریدِ ہندی (علامہ اقبال) کا سوال پیرروی (مولاتا جلال الدین رومی) کا جواب

> مرید ہندی کار دبارِ خسر وی یا راہی کیا ہے آخر فایت دین بی؟

ترجمہ: یہ فرمایئے کہ پیغیبر اسلام حضور سرور کا کنات مُنَّالِیُکُم جودین لے کر آئے،اس کی بنیادی طور پر غرض وغایت کیاہے ؟ کیااس سے اللہ کے دین کو پوری و نیا پر غالب کرنااور حکر انی مر اوہ یا ترک دنیا اور رہانیت اس کا مقصو دہے ؟

> پیرردی مصلحت در دین ماجنگ د شکوه مصلحت در دین عیسی غار د کوه

ترجمہ: جارے دین میں جنگ (جہاد) شوکت اسلام کا ذریعہ ہے۔ اور عیسیٰ علیہ السلام کے دین کا مکن غار اور پہاڑ ہے دین کا مک دمعاشرے پر غلبہ ہونے دین کا مکک دمعاشرے پر غلبہ ہونے سے ہی امت اور اسلام کی نجات وشوکت ہور نہ بے دین لوگ جب حاکم ہوں گے تو چنگیزی ہی ہوگی۔ ترک دنیالین معاشرتی ذمہ دار یوں سے فرار کے متر ادف ہے۔



Complete code of life



تمل ضابطه حیات:

"اسلام ایک کمل ضابط حیات اور دین فطرت ہے۔" یہ جملہ ہم نے اپنے مسکول وکائی کے نصاب میں بارھا پڑھا ہے۔ لیکن تج یہ ہماری اکثریت اس جملے کے اصل مستی و مفہوم سے ناوا قف ہے۔ تی ہاں ! ہم ایک آزاد اور خود مختار ریاست (اسلامی جمہوریہ پاکستان) میں قورہے ہیں ، جو اسلام کے نام پر لا کھول لوگوں کی قربانیوں کے ثمرہ میں محرض وجود میں آیا۔ اور یقینا یہ آزادی بہت بڑی فعت ہے ، اس کی سبی قدر قوکسی اسیر سے بی پوچی جا سکتی ہے۔ لیکن بحیثیت مسلمان ہماری قوی آزادی ہے کہ ہم دین اسلام پر عمل کے معاملے میں مکس طور پر آزاد ہوں مگر اس آزادی سے ہنوز ہم محروم ہیں۔ آئ ہماری نہ ہی آزادی محدود میں آزادی پابئیر سلاسل ہے۔ ہم نے دین اسلام کو مساجد ، مدارس اور خانقا ہوں تک محدود کرے اسلام کے اسلام کو ساجد ، مدارس اور خانقا ہوں تک محدود کرے اسلام کے اس عالمگیر نظام کو داہیائیت میں تبدیل کردیا ہے۔ علامہ اقبال کہتے ہیں:

منزل دمقعود قرآن دیگراست رسم و آئین مسلمان دیگراست

(قرآن كامقعد اور حاصل كيحد اور چيز ب مسلمانول كي رسميس اور قانون كيحد اور مو كتي بين)

🖈 يادر تعين مذهب تين جزول كالمجموعه 🖈

(1) اعتقادات (2) عبادات (3) رسومات

🖈 اور دین جور سول الله منافقه کا جمیس دے کر گئے وہ چھ چیز ول کا مجموعہ 🔑

(1) اعتقادات (2) عبادات (3) رسومات (4) معاشرت (5) معیشت (6) سیاست

جارے اسلامی معاشرت،معیشت،سیاست سے کوئی مجمی آزاد خیر ہے"۔(ملاسالفان شار حدالله)

ہے ممکستِ ہٹدیش اک طرقہ تماشہ اسلام ہے تکوم مسلمان ہے آزاد (علامہ اتال)

ہم اسلامی جمہوریہ پاکستان میں رہنے کے وعوید ار تو ضرور ہیں لیکن افسوس جس حقیقی اسلامی مملکت کا تصور قائد اعظم اور علامہ اقبال نے پیش کیا تھا، جہاں نظام مصطفیٰ قائم ہو، ہم اس سے آج بھی محروم ہیں۔ارشاد باری تعالی ہے:

لَقَدُ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُوْلِ اللهِ أَسْوَةً حَسَنَةً (1) (بِينِك تمهار مے لئے اللہ كے رسول ميں بہترين نموند موجود ہے)

ربیت موند موبود ہے اسلام نے زندگی کے ہر معاطع میں ہماری رہنمائی فرمائی ہے۔ رسول اللہ منگائی کی حیاتِ مبارکہ اور آپ کے خلفائے راشدین رض اللہ عنہم کے اووار میں عبادات کے ساتھ ساتھ اسلامی معاشرت، معیشت، سیاست کاکامل ترین نمونہ ماتا ہے۔ ان سنہری اصولوں پر چلناہی تھا کہ اسلام معاشرت، معیشت، سیاست کاکامل ترین نمونہ ماتا ہے۔ ان سنہری اصولوں پر چلناہی تھا کہ اسلام چند ہی سالوں میں آدھی و نیا پر چھاگیا۔ آج بعض کم فہم لوگ جنہوں نے اسلام کا بغور مطالعہ نہیں کیا ہوتا، وہ سیکولر اذم کے والی اسلام کے ان پہلوؤں (معاشرت، معیشت، سیاست) کاہی انکار کر دیتے ہیں، گویاوہ دین کے بنیادی مقصد کا انکار کر نے والے ہیں۔ علامہ اقبال کہتے ہیں: انکار کر دیتے ہیں، گویاوہ دین کے بنیادی مقصد کا انکار کرنے والے ہیں۔ علامہ اقبال کہتے ہیں: میں میٹ تو حید کو آسکتا ہے

حكومت رسول اللدكي:

سے موں التجائیں کیں ہار آقا کریم منافیظم کو یہ التجائیں کیں کہ آپ ہمارے دین (بت پرسی) کو پچھ نہ کہیں، ہم آپ کو عبادات کے معالمے میں ننگ نہ کریں گے۔لیکن وہ نبی خاتم النبیین منافیظ کسی صورت کفار کی اس پیش کش پر راضی نہ ہوہے، مصائب و تکالیف کے پہاڑ سے لیکن وین اسلام کو پوری ونیا پر غالب کر نے اور ظالم تھمرانوں کے ظلم و جبر سے انسانیت کو آزاد کروائے کے عظیم مقصد پر کار فرمال رہے اور بالآخر ایک اسلامی ریاست کی تشکیل کے لیے اپنے آبائی شہر مکہ تمرمدے ہجرت کر کے مدینہ پاک تشریف لے گئے۔

مدیرتہ! ایک نیاشہر،نہ ہی کوئی نظام مملکت! نہ نظام عدل، نہ نوح بلکہ یہاں یہودیوں کے قبائل میں دہائیوں سے جنگیں جاری ہیں، چرچندہی دنوں میں ایسا کیاسیای شاہ کار معائدہ ہوا! كه يهودي سب تابع ہو گئے! نظامِ مملكت قائم ہو گيا، نظامِ عدل قائم، مدينة العلم (صفه يونيور سي) قائم ، آخر إس يونيور سلى كے طلباء (اصحاب رسول سَلَطَيْنَ) نے ابياكيا سبق پرُها اور اليي كونسي تربیتی نظام تھا کہ 1 جمری سے 11 جمری تک اوسطاً روزانہ (274 square miles)زین فْتِي بِهِ فِي حِلْ كَنْ، اور جب آقاكر يم سَلَا لِيُنْظِمُ كَ وفات ، و فَى تو (10 lac square miles) ير مسلمانوں کی حکومت تھی ۔اور پھر اگلے 15 سالوں میں یہ ایشیاء ، یورپ ، افریقہ (تین براعظموں) تک بیرسلطنت بھیل گئی اور پھر کئی سالوں تک مزید فقوحات ہوتی چلی کئیں۔ یہ رسول الله مَنَا ﷺ کا پیش کروہ نظام مصطفیٰ(لیتن سیاس نظام) ہی تو تھا کہ جس نے معاشرے کے ہر ہر پہلو(اعتقادیات ،عبادات ، رسومات ، معاشرت ،معیشت ،سیاست) میں

مسلمانوں کی ایسی تربیت کی کہ کئی صدیاں مسلمان دنیا پر حاکم رہے اور ایکے عدل وانصاف

جر 'ت د بهاوری کی مثالیں دی جاتی رہیں۔ تو پینة چلااسلام صرف عبادات در سومات کا نام نہیں ملکہ بدرب تعالیٰ کی طرف سے دیے گئے نظام کو پوری و نیا پر غالب کر دینے کی جدوجہد اور کوشش کا

آج ہمارے لوگ جمہوری وصد ارتی نظام کی بات تو کرتے ہیں لیکن کوئی نظامِ مصطفیٰ مَثَلَ لَیُجُمُّ کا نام لینے کو تیار نہیں ہے ۔اگر آج بھی مسلمان امن وسلامتی چاہتے ہیں اور ونیامیں عروج حاصل کرنا چاہتے ہیں تو اِنہیں چاہیے کہ آقا کریم مَلَی اللّٰی کے دین (نظام مصطفیٰ) کو اپنی ذاتی و ا چھا کی زندگی ہر ہر پہلو میں نافذ کریں ، انشاء اللہ قرون اولی کی طرح آج بھی کامیابی ایکے قدم چوہے گی۔ ہر مسلمان کو اعتقادات و عبادات و غیرہ کے معملات کے ساتھ ساتھ رسول اللہ مَنَّا الْيَهِمُ كَ سيرتِ طيبهِ كے پہلو نظامِ مملکت ونظامِ عدل وغير و کو مجی ضرور پڑھنا چاہيے۔ اے رب عزوجل! وه دن جلد و کھا کہ جارادين اسلام بي پوري و نياپر غالب جوء آين!

سودی نظام اور پا کستان :

ہم بحیثیت مسلمان اپنے عقیدہ وایمان کے حوالہ سے اس بات کے

پابند ہیں کہ سود کی لعنت پر استوار نظام معیشت سے چھٹکارا حاصل کریں اور قرآن و سنت کے فطری اصولوں کے مطابق ملک کا معاشی و اقتصادی نظام استوار کریں۔ لیکن ستر سالوں سے زیادہ و نت گزر جانے کے باوجو دہم مغرب کے سودی معاشی نظام کے شکنج میں نہ صرف حیکڑے ہوئے ہیں بلکہ قومی معیشت پر سودی نظام کی حکر بندی دن بدن سخت ہوتی جارہی ہے، عوام کا استحصال دن بدن بھر تا جارہا ہے اور بدقستی ہے ہمارے حکمران اس کے ساتھ مسلسل چیٹے ہوئے ہیں ،ادر اب بھی اس نظام میں اپٹی فلاح سیجھتے ہیں۔ سود کی بہت سی دنیاوی و آخردی آفات ہیں۔رب تعالی قرآن پاک میں ارشاد فرماتا ہے:

لَيَايُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّهَوا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ - فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَأَذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَ رَسُولِهِ ۚ وَ إِنْ تُنبُتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ آمْوَالِكُمْلَا تَظلِيُونَ وَ لَا ثَقَلَتُنَ (1)

ترجمه كنز العرفان : " اسے ايمان والو الله سے ذرو اور جھوڑ دوجو باتی ره گياہے سود اگر مسلمان جو۔ پھر آگر ایسانہ کر د تو یقین کر نواللہ اور اللہ کے رسول سے لڑائی کا اور اگر تم توبہ کر د تو اپنااصل مال لے لونہ تم کس کو نقصان پہنچاؤنہ تمہیں نقصان ہو"

قر آن کریم میں سود خوروں کے خلاف اللہ اور اس کے رسول منگ فیکٹر نے اعلان جنگ کی وعید سنائی ہے ، اِسکے باوجو د کوئی مسلمان پر کیسے گمان کر سکتاہے کہ وہ اس نظام کے ساتھ ہاتی رہتے ہوئے ترقی کی منازل طے کر سکتے ہیں۔ علمائے اُمت نے اسلامی معاشی نظام پر بہت سی تُتب تحریر قرمائی ہیں ، ان اسلامی اصولوں کو اپنا کر ماضی کی طرح ہم آج بھی اپنے ملک کے نظام معیشت و بینکی نظام کویقییا سود کی لعنت سے پاک کرسکتے ہیں۔

سیکولر اور لبرل حضرات اسلام کے معاشی نظام پر ہمیشہ تنقید کرتے نظر آتے ہیں اور اسے کسی صورت بھی نافذ العمل نہیں سمجھتے۔ جبکہ حقیقت رہے کہ یہ اعتراضات کرنے والے اسلامی معاشی نظام سے متعلق بالکل لاعلم ، اسلام کے ساتھ باطنی عداوت ظاہر کرنے والے ہیں۔ ان لوگوں سے پوچھناچاہے کہ بتاؤتم نے اسلام کے معاشی نظام پر کون کون کی کتاب پڑھی ہے؟ کیا تم نے ابوعبید کی کتاب الاحوال، قاضی ابویوسف کی کتاب المخواج، پخی بن آدم کی کتاب المخواج ، بخی بن آدم کی کتاب المخواج ، جدید معاشیات پر امام احمد رضاخان بر یلوی علیہ الرحمہ کی کتاب کفل الفقیده ، مفتی غلام سرور قاوری کی معاشیات اسلاھ ، علامہ غلام رسول سعیدی علیہ الرحمہ کے علام سرور قاوری کی معاشیات اسلاھ ، علامہ غلام رسول مفالات اور شروح (جس میں اسلامک بینکنگ کا عمل ضابط موجود ہے) ، علامہ غلام رسول قائی کی کتاب السلاھ کا معاشی ضابطه وغیرہ وغیرہ ، اور حدیث کی کتابوں میں مثلاً بخاری شریف میں کتاب المبیوع اور مسلم شریف میں کتاب المبیوع اور مبیناری وغیرہ پر مفصل بحث موجود ہیں کتاب المبیوع اور مسلم شریف میں کتاب المبیوع اور مبین آپ نے ان تمام کتابوں میں موجود ہیں کہ نہیں ؟ اگر مطالعہ کیا ہے تو کیا تمہارے سارے سوالوں کے جواب ان کتابوں میں موجود ہیں کہ نہیں ؟ ایک بی سوال کوبار بار دہر اناشر ادت ہے کہ نہیں ؟ اگر آپ نے ان کتابوں کو نہیں پڑھاتو پھر پڑھے بغیر سوال دونے دیناجہالت ہے کہ نہیں؟ اگر آپ نے ان کتابوں کو نہیں پڑھاتو پھر پڑھے بغیر سوال درغ دیناجہالت ہے کہ نہیں؟ ۔

یہ لوگ (capitalism) یا (communism) کو کالت کرنے والے ہیں۔ (communism) کو گول کر دیتا ہے اور سماری عوام کو مخض کرنے والے ہیں۔ (communism) لوگوں کو بے دخل کر دیتا ہے اور سماری عوام کو مخض حکومت کامعاثی غلام بنادیتا ہے۔ اور (capitalism) امیر کو امیر تراور غریب کو غریب تربنا دیتا ہے۔ جب کہ اسلامی کی معیشت اعتدال کی راہ پر قائم رکھتی ہے۔ (communism) کی نتائج امریکہ بھگنے لگ پڑا محوست سے بی روس کے مکڑے ہوئے اور (capitalism) کے نتائج امریکہ بھگنے لگ پڑا ہے ، پور واور ڈالر نے اس کی کمر توڑ دی ہے۔ یہ چند سطرین ذہین لوگوں کے لیے کافی ہیں۔ مگر جہالت کے ساتھ شرارت جب جمع ہوجائے اور بدعقیدگی کا خول مضبوط ہوجائے تو پچھ سمجھ میں جہالت کے ساتھ شرارت جب جمع ہوجائے اور بدعقیدگی کا خول مضبوط ہوجائے تو پچھ سمجھ میں آسکیا۔ (1)

^{1 (}ماغودمقالارسة اسمى ج1, ص70، رجة للعالمين پبليكيشان الاهور)

مجابد كالكورُا:

-علامه لقمان شاہر حفظہ اللہ سود کی دنیادی آفت سے متعلق <u>کھتے ہیں</u>:

ایک دوست پوچھ سے تھے۔اسلامی ممالک کے پاس اتنے ٹینک، توپیں، میز ائل، بارود اور جہاز بیں۔ پھر بھی میدان جہاد کی طرف (ونیا کے مظلوم مسلمانوں کی مدد کے لیے) اُرخ کیوں نہیں

مرتے؟؟ میں نے اٹھیں کہا، غالباً حافظ ابن کثیر علیہ رحمہ نے لکھاہے:

سلطان رکن الدین بیبرس کے زمانے بیس کی مجاہد کے پاس ایک گھوڑا تھا، جو میدان جنگ سلطان رکن الدین بیبرس کے زمانے بیس کی مجاہد کے پاس ایک گھوڑا تھا، جو میدان جنگ بیس خوب بھاگ دوڑ کر تا۔ ایک د فعہ لڑائی کے دوران وہ سُت پڑگیا تو مجاہد نے اسے آگے بڑھتے کے لیے ہارا، لیکن وہ آگے نہ بڑھا، چیچے بی چیچے ہٹا گیا۔ مجاہد کواس کی حرکت پر بہت غمہ آیا اور جیرائی بھی ہوئی۔ وہ رات کو سویا تواس نے خواب بیس اپنے گھوڑے کو دیکھا اور اُسے میدان جہاد میں سستی کرنے پر ملامت کرنے لگا۔ اِس پر گھوڑے نے کہا: بیس دشمن پر کیسے چڑھائی کر تا، بیس سستی کرنے پر ملامت کرنے لگا۔ اِس پر گھوڑے نے کہا: بیس دشمن پر کیسے چڑھائی کر تا، جب کہ تم نے میرے لیے کھوٹا ور ہم دے گئے تھے اِ۔

یاس گیا، تو چارہ فروش نے اسے دیکھتے ہی کہا: کل تم جھے کھوٹا ور ہم دے گئے تھے اِ۔

میدانِ جہادیس آگے نہیں بڑھتا تو وہ ٹینک، گاڑیاں ، اور جہاز کیسے آگے بڑھیں گے جن کی پرورش میں سود کا پییہ بھی شامل ہے۔ اِٹھیں "جہاد فی سبیل اللہ" کی طرف لے جانا ہے توان کی پرورش پاکیزہ مال سے کرنی ہوگی، نیز اخیس میدان جہاد میں لے جائے والے فوجیوں کی غذا بھی سود وغیرہ سے پاک کرنی ہوگی۔ اللہ عزوجل جہادے ملک کو سود کی اِس لحنت سے پاک فرمائے۔ علامہ اقبال نے بچ کہا ہے:

اب آپ خو د ہی غور کرلیں کہ جس گھوڑے کو ایک بار کھوٹے پیسے کا چارہ کھلا یا جائے جب وہ مجھی

بیر علم، بیر حکمت، بیر تدرم، بیر حکومت پیتے ہیں لہو، دیتے ہیں تعلیم مساوات ظاہر میں تجارت ہے، حقیقت میں جوا ہے سودایک کا، لا کھوں کے لیے مرگ مفاجات وہ قوم کہ فیضانِ سماوی سے ہو محروم حدائی کے کمالات کی ہے برق د بخارات



Western ideologies



مغربی نظریات:

فى زمانه مسلم ممالك بين كچه مغربي نظريات لبرل ازم، سيكولر ازم، ايتحيزم و غیر ہ زور پکڑ رہے ہیں ، جو دین اسلام کی بنیاووں کو دیمک کی طرح چاشتے ہوئے ، نوجو انوں کو اسی بمنور میں لے رہے ہیں۔ یہاں ان سے متعلق مخفر أذكر كرتے ہیں۔

يه يهل بيان كما كياب دين اسلام چه چيزول كو مجوعه :

(1) اعتقادات (2) مبادات (3) رسومات (4) معاشرت (5) معیشت (6) سیاست

سيولرازم (secularism):

"دین کوساتی،معاشی،سای زندگی سے تکال دیے کانام سیکولرازم ہے اور الیک ریاست جس ش درج بالا چیزوں سے دین کو بے و خل کر دیا جائے اُسے سيكولراسليث (secular state) كتي إلى "_

فى زماند سيكولر ولبرل حضرات جارے حكر ان ملك إلىتنان كو ايك سيكولر استيث وكليتر کرنے اور اسلام کو دیس نکالا دینے کے لیے ہر قسم کا حزبہ اپنائے ہوئے ہیں۔ یہ کہنا کہ قائم اعظم وعلامدا قبال اور آپ کے رفقاء کی جدوجہد صرف ایک زمین کے گرے کے لیے مقی اس میں دو قومی نظریه کا کوئی عمل دخل نبیش تھااور آپ پاکستان کوایک سیکولر اسٹیٹ بنانا چاہتے تھے، ابیابیادید أن لا كول مسلمانول كی قربانیول كانداق أزانے كے متر ادف ہے جن كاخون ايك الگ اسلامی ریاست کی جدوجهد میں بہر گیا۔

مارے بال اوجوانوں کی کالجوں اور بونیورسٹیوں میں ذہن سازی کر کے جس طرح سيكولرازم كويروموث كماجا رما بهيد انتبائى قابلي تشويش بات بدرين كو صرف مساجد و مدارس سك محدود كروينا اوريه اعلاميه كدوين كاسياست اور رياتى معمولات سے كوئى تعلق

نہیں، یہ قیام پاکستان کے مقاصد اور اسلام کے عالمگیر نظام سے انحراف و بغادت کے متر اوف ہیں، یہ قیام پاکستان کے مقاصد اور اسلام کے عالمگیر نظام سے انح ہمیں نوجوانوں کو یہ بات باور کروانے کی بے حد ضرورت ہے کہ اسلام وین رببانیت بالکل نہیں۔ہمارے پیارے نبی حضور رحمت عالم مُنَافِّیْقِم کی حیاتِ مبارکہ ہمارے لیے عبادات و رسومات کے ساتھ ساتھ معاشرتی، سیاسی، عسکری اُمورے متعلق بھی مکمل راہنمائی فراہم کرتی ہے۔پیارے آقا حضور خاتم النبیین مَنافِقِیم نے خود بھی سیاست فرمائی اور آکھ خلفاء نے بھی اسلامی سیاس ، عدالتی ،معاشی، عسکری نظام کا جو عملی نمونہ پیش کیا وہ قیامت تک کے مسلمانوں کے لیے مشعل راہ ہے۔لہذا ہمیں عقائد و عبادات کے معمولات قیامت کے ساتھ اسلام کے ان پہلوؤں کا انکار کے ساتھ اسلامی سیاست و معاشرت کا بھی مطالعہ کرناچاہیے، اسلام کے ان پہلوؤں کا انکار بی سیولرازم کی بنیاد ہے۔ آن بھی مسلمان اگر ان سنہری سیاسی اصولوں کو اپنائیں تو کامیابیاں انکی قدم چو بیں گی ، پر افسوس آج اس قدر تباہی و ذلت کے باوجود ہم اغیار کے نظام کو ہی لینی فلان کاؤر یعد سیجھتے ہیں۔

: (liberalism) لبرل انم

"جب دین کوسیای، ساجی، معاثی زندگی سے بدوخل کر دیا جائے تو پھر دین کی صرف انفرادی حیثیت رہ جاتی ہے اور خود کو انفرادی زندگی میں بھی دین (ندہب) سے آزاد سجھنے کانام لبرل ازم ہے۔ "بیدلبرل ازم، سیکولر ازکی انتہاء ہے "۔

: (atheism) ديريت

"خدا تعالیٰ کی جستی کا مطلقاً انکار کر دینا (لیتن پیه کہنا کہ کوئی خدا خبیں ہے، پیہ دنیاکا نظام خو دیخود چل رہاہے) اتھیزم کہلا تاہے۔اس نظریے کے حامل انسان کو ملحد (دہریہ) کہتے ہیں۔ دیکھا گیاہے کہ جب انسان انفرادی (ذاتی) زندگی ہے دین کو نکال ہاہر کرتاہے تو جلد دہریت میں جاگر تاہے "۔

ہمارے سننے میں یہ بات بھی آئی کہ لبرل گھر انوں کے بہت سے پاکستانی طلباء جو علم دین اور رب تعالی کی ذات وصفات سے متعلق علم نہ رکھتے تھے انہوں نے بور پی ممالک میں پڑھنے کے دوران وہاں موجود طحدین کی باتوں میں آکر دہریت اختیار کرلی، معاذاللہ۔والدین پر بدلازم ہے کہ دنیاوی تعلیم کے ساتھ ساتھ وہ لیٹی اولا و کو بنیادی علم دینیہ سکھانے کا مناسب بندوبست کریں تاکہ وہ ان بے دینوں کی باتوں میں آگرائیان سے نہ ہاتھ دھو بیٹھیں۔(1)

الحادى فتنه :

"الحادیا الحادی فتول کی اصطلاح (term) فی زماند ایک اور بہت اہم فتنے کے لیے استعمال کی جاتی ہے اور وہ ہے دین اسلام کی بنیادی عقائد واساس کے بر خلاف کوئی نیاطریقہ ، نیاعقیدہ، کوئی ایک نتی چیز گھڑلینا جس کی مثال پچھلے اسلامی تاریخ میں ندملتی ہویا یہ مسلمانوں کے اجماع وجہور کے خلاف ہو"۔ (یہاں الحادے مراد لمحد (دہریہ) نہیں)۔

جهارے معاشرے میں عقائد و نظریات و ترجیحات کے اعتبارے طرح طرح کے لوگ پائے جاتے ہیں، بعض صرف دنیا داری کو ترجیح دیتے ہیں تو بعض نسبتاً ند ہی علماء کی صحبت میں بیٹھنے والے ہوتے ہیں، بعض لوگ صرف نماز و جھہ تک وینی اعتبارے ول چیس لیتے ہیں اور بعض لوگ مرشد و تنظیم کے غالی پیر وکار ہوتے ہیں۔

ائبی مختلف طبقات میں سے ایک طبقہ ان لوگوں گاہے جو آج کے دور میں چل پھر کر دینی علم حاصل کرتے ہیں، ایجاع وجہور کے خلاف تحقیقات پیش علم حاصل کرتے ہیں، ایجاع وجہور کے خلاف تحقیقات پیش کر دیتے ہیں ایسے آدی میں اگر بولنے کی صلاحیت بھی ہویا وہ کسی طرح میڈیا پر آجائے تو عجیب تماشے کر تاہے ، ایسا آدی لبنی محدود معلومات کی روشن میں نہایت خوبصورت بات بنالیتا ہے جو بہت سی بنیاوی شرعی تعلیمات کے منافی ہوتی ہے اور اہل علم اپنا سر پکڑ کر بیٹر جاتے ہیں، مگر عوام کی بلاجائے، کسی اصول کے پابند نہ ہونے کی دجہ سے ایسے لوگوں کی باتیں آئیں میں متضاد ہوتی ہیں ، اپنی اس کمزوری پر پردہ ڈالنے کے لیے ایسے لوگ دوسروں کو وسعت قلبی کا درس ویے ہیں۔ (2)

^{1 (}ایتھیز م سے متعلق مزید معلومات اور لمحدول کے اعتراضات کے جوابات جانئے کے لیے مقالاتِ سعیدی ، مقالاتِ قائمی کامطالعہ کیجیے۔)

^{2 (}ماعود مقالات قاسمي . ج 2 . ص 417. رحة للعاليين پهليكيشاز . سر كودها)

امت کی اصلاح کے لیے کوئی ایسالا تحہ عمل ترتیب دینا یا کوئی ایسی تحقیق پیش کرنا یا کوئی الی نٹی بات کرنا کہ امت کی اکثریت اس کی مخالفت پر اثر آئے بیہ اصلاحی کارنامہ نہیں بلکہ کور باطنی اور ناعاقبت اندیش کا ثبوت ہے۔

> سوناجنگل ، رات اند حیری ، چھائی بدنی کالی ہے سونے والو! چاگتے رہبو، چوروں کی ر کھوالی ہے آ نکھے کا جل صاف چرالیں، یاں وہ چور بلاکے ہیں تیری مخصری تاکی ہے اور تُونے نیند نکالی ہے (حدائق تبخشش)

سوشل میڈیا کے نقصانات ہیں ہے ایک بڑی تناہی دورِ حاضر میں الحادی فتنوں کا سر اٹھانا ہے اور نوجوان نسل کو اپٹی لیپیٹ میں لیتا ہے ،اسکی اصل وجہ یہی لبرل ازم کی ویاء ہے ، کہ اِن

لبرل نظریات کے مارے ایسادین چاہتے جو اِنکی عقل وخواہشاتِ نفس کے عین تابع ہو۔ احادیث میں سے اپنی مرضی کامطلب اخذ کرنااور صحیح روایت کوضعیف اور ضعیف کو موضوع بناکر عام

عوام کو گمر اه کرناان کاشیوه ہے۔ تحریف دین کا تحقیق اسلام اور الحاد فی الدین کا نام اظہار حقیقت

ان الحادى فتول كى برى وجه اولادكى كمرسه وين لحاظ سے تربيت نه مونا، علم دين سے دوری ، بے جا آزادی ، مغربی تہذیب سے متاثر ہونا اور سب سے بڑھ کر کالجوں و یونیور سٹیول کا تعلیمی نظام وغیرہ ہے۔اور پھر ستم ظریفی ہے ہے کہ فزیس ، تیمسٹری، میتھس ، انجینیرنگ و ڈاکٹری وغیرہ سمیت ہزارول دنیادی علوم میں ایک علم دین (اسلامیات) ہی ہے جس کے متعلق ہر شخص اپنی رائے پیش کرتا ہے۔کیا مجھی آپ نے دیکھا کوئی ڈاکٹر انجینیرنگ سے متعلق مشورے دے رہاہو؟ یا کوئی انجینیر طبی مسائل کاحل بتا رہاہو؟ ، بالکل نہیں۔ او پھر یہ کتنی بے باک ہے کہ جس شخص نے علم دین سوائے سکول کی بنیادی اسلامیات کی کتابوں میاسوشل میڈیا پر ویڈیوز دیکھنے کے علاوہ مجھی پڑھاہی نہیں، وہ دیثی معاملات میں اپنی قیاس آرائیال کرے اور تمام اصولِ تفسیر وحدیث وفقہ اور اجماع وجہورِ اُمت کو بکسر نظر

انداز کر کے لین رائے وے۔ایسے ناعاقبت اندیشوں کو اپنی اصلاح کرنی چاہیے اور اُمت میں یوں فتنے پھیلانے سے بازر ہناچاہیے۔

پھراس کی ایک بڑی وجہ مشنری سکول ہیں۔ غیر مسلموں کے مشنری سکولوں میں مسلمان پچوں کو تعلیم دلانا سراسر غلط ہے۔ امام محمد بن سیرین دحمة الله علیمه فرماتے ہیں کہ " میہ علم دین ہے خوب غور کرلیا کروکہ تم اپنادین کس شخص سے سکھ رہے ہو"۔ (1)

اور رسول الله مَثَالِيَّةِ أَلَمُ عَدَّالِيَّةِ أَلَمُ اللهُ عَلَيْنِ اللهُ مِثَالِيَّةِ أَلَى اللهُ عَلَيْنِ اللهُ مَثَلِّيْنِ أَلَّهُ عَلَيْنِ اللهُ عَلَيْنِ اللهُ عَلَيْنِ اللهُ الل

الہذامان باپ کے لیے ضروری ہے کہ اپنے پچوں کے لیے مناسب علوم اور مناسب تعلیمی اداروں کو ترجیح دیا کریں۔ ہمارے ملک پر حکومت کرنے والوان کی اکثریت عیسائی مشنری سکولوں اور آکسفورڈ وامریکہ سے پڑھ کر آتی ہے یہی قساد کی جڑے۔ (آزاد خیالی اور اجماع و جمہور کا انکار کرنے کی سوچ و فکرانہی اداروں سے پروان چڑھ رہی ہے) (3)

خوش توہیں ہم بھی جو انوں کی ترقی ہے گر لبِ خنداں ہے نکل جاتی ہے فریاد بھی ساتھ ہم سجھتے تھے کہ لائے گی فراغت تعلیم کیا خبر تھی کہ چلا آئے گا الحاد بھی ساتھ

(علامه اقبال)

اولمبیاء الله: ان نظریات کے حامل لوگ! کشر اسلاف اُمت، بزر گانِ دین پر اعتراضات کرتے نظر آتے ہیں اور اولیاء الله کی کر اہاات کو اپنی عقل و ظاہری اسباب کے تناظر میں پر کھ کر اولیاء الله پر طعن کرتے ہیں اور عام عوام کو ان ہستیول سے بد ظن کرتے ہیں۔ یہ لوگ اختیاراتِ انبیاء

^{[(}صحيح مسلم، مقدمه صحيح مسلم، يأب بيان الاستاد. ج1، ص 39، فريدبات سال الاهور)

^{2 (}ترمثی، کتأبالزهد، بأباجهه دوست کی تلاش، ج2. ص116، حدیث 261 فریدیات ستأل الاهور)

^{3 (}مقالات قاصى . ج 2 . ص 350 رجة للعالمين بمليكيشاز . سر كودها)

واولیاء کا انکار کرنے والے ہیں۔ ایسے لوگوں کے بارے میں ججۃ الاسلام امام محمد بن غزائی دحمة الله علیه فرماتے ہیں:

"کمزور اور محروم کے لئے مناسب نہیں کہ توی لوگوں کے احوال کا اٹکار کرے اور گمان
کرے کہ جس یات سے میں عاجز ہوں اس سے اولیاء بھی عاجز ہیں۔ اور فرماتے ہیں: اگر ہم اس
طرح کے دل اور الی روح سے محروم ہوں تو مناسب نہیں کہ جو لوگ اس کے اہل ہیں ان کے
لئے اس کے ممکن ہونے پر ایمان نہ رکھیں۔ لہذا جو اللہ عزوجل کا ولی نہ بن سکے اسے چاہئے کہ
اللہ عزوجل کے اولیا کو مانتے ہوئے ان سے محبت رکھے۔ امید ہے جس سے محبت کر تا ہے اس

حدیث پاک میں پیارے آقا مکی گئی آئے اولیاء اللہ کا مقام و مرتبہ بیان کرتے ہوئے ارشاد فرمایا: "اللہ تعالیٰ فرماتا ہے: جو میرے کی ولی سے دھمنی رکھے میں اس کے خلاف اعلانِ جنگ کرتا ہوں اور فرائض سے بڑھ کرکوئی ایک چیز جھے محبوب نہیں جس کے ذریعے بندہ میرا قرب حاصل کرتا ہے، یہاں تک کہ میں اس کے کان بن جاتا ہوں جس سے وہ سنتا ہوں۔ پس میں اس کے کان بن جاتا ہوں جس سے وہ سنتا ہوں جس سے وہ دیکھتا ہے۔ میں اس کے ہاتھ بن جاتا ہوں جس سے میکڑ تا ہے، میں اس کی ٹانگ بن جاتا ہوں جس سے چلتا ہے۔ اگر وہ مجھ سے سوال جس سے گئر تا ہے، میں اس کی ٹانگ بن جاتا ہوں جس سے چلتا ہے۔ اگر وہ مجھ سے سوال کرے تومیں اس کو خر در عطافر ہاتا ہوں اور کس شے سے پناہ مانگے تومیں اس کی ٹانگ بن جاتا ہوں اور کس سے پناہ مانگے تومیں اس کی ٹانگ بن جاتا ہوں اور کس شے سے پناہ مانگے تومیں اسے پناہ و بتا ہوں "۔ (2)

شرح: اس حدیث قدی میں الله رب العزت نے اولیاء الله کے متعلق جو ہاتیں ارشاد فرمائی بیں ان میں سے دوباتیں خاص طور پر قابلِ غور ہیں۔

ہے پہلی بات ہیر کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: جو میرے کسی ولی سے دھمنی رکھتاہے میں اس کے خلاف اعلانِ جنگ کر تاہوں۔معلوم ہوا خدا تعالیٰ ولیوں کے ساتھ ہے لیڈ اولیوں کو چھوڑ کر اور کوئی دین ومذہب اختیار خہیں کرنا چاہیے۔ یہ اُن لوگوں کے لیے خاص طور پر توجہ طلب ہے

^{1 (}احياء العلوم، ج5، ص175، 202، مكتبة المدينه كراجي)

^{2 (}صحيح البشاري، كتاب الرقاق بأب التواضح ج 3. ص 569، حديث 6502. فريد بالمستأل الاهور)

جونئے نئے فرتے بناکر اپنی علیحدہ علیحدہ ڈیڑھ اینٹ کی مسجد بناکر اولیاءاللہ کے قربب کو چھوڑے ہوئے ہیں۔ بلکہ اس برحق مذہب اور اسلام کی صبح ترین تصویر کو بر بلویت تھم را کر مطعون کرتے اور اس کے خلاف لوگوں کے ولول میں نفرت کے جذبات بھرتے ہیں۔ بیہ اولیاءاللہ سے مخالفت بلکہ خدا تعالیٰ سے مخالفت اور و مثمنی ہے جس میں آخرت کی کوئی بھلائی نہیں۔

ک متعبد مداس کے اللہ تعالی نے جو فرمایا کہ رب تعالی بندہ کے آنکھ کان ہوجاتا ہاس کے متعلق امام رازی علیہ اللہ تعالی نے جو فرمایا کہ رب تعالی بندہ کے متعلق امام رازی علیہ الرحمہ فرمائے ہیں کہ بندہ جب عبادت پر دوام کر تاہے تو وہ اس مقام پر پہنچ جاتا ہے جس کے متعلق اللہ تعالی نے فرمایا ہیں اس کی آنکھ ہوجاتا ہوں اور اس کا کان ہو جاتا ہوں۔ لیر جب اللہ کا نور اس کا کان ہوجاتا ہو وہ قریب اور دور ہے من لیہ ہے۔ اور جب اس کا اور جب اس کا گور اس کا گان ہوجاتا ہے تو وہ قریب اور بعید کو دیکھ لیتا ہے اور جب اس کا فور اس کے ہاتھ ہوجاتا ہے تو وہ قریب اور بعید کی چیز وں کے تصر ف پر قرر اس کے ہاتھ ہوجاتا ہے تو وہ مشکل اور آسان چیز دل اور قریب و بعید کی چیز ول کے تصر ف پر قادر ہوجاتا ہے (۱)

اور پھریہ مقام اولیاء اللہ کا ہے۔ جب اولیاء اللہ کے افعال عام لوگوں سے ممتاز ہیں تو یقینا انبیائے کرام کے افعال اولیاء اللہ سے پدر جہا افضل واعلی اور بلند وبالا ہوں گے کیونکہ خدا کی جو تائید و جمایت حضرات انبیائے کرام علیم السلام کے ساتھ تھی اور ہے وہ غیر انبیاء کے ساتھ خبیں ہوسکتی۔ اس سے معلوم ہوا کہ عوام الناس اور انبیائے کرام کے حواس وافعال میں اتنافرق ہے جس کا اندازہ نہیں لگایا جاسکتا۔ وہ لوگ جو انبیائے کرام کو فرول و تی سے جٹ کر عام لوگوں کی طرح ہی باور کرانے پر زور لگاتے ہیں (یعنی ہے کہتے ہیں کہ انبیاء ہمارے جیسے ہی ہیں)، یہ اس کی طرح ہی باور کرانے پر زور لگاتے ہیں (یعنی ہے کہتے ہیں کہ انبیاء ہمارے جیسے ہی ہیں)، یہ اس یات کی دلیل ہے کہ وہ حضرات مقام نبوت ہی سے نا آشاہیں۔

صوفیاء کی شطحیات کا محمل: اور الی خلاف شرع باتیں جوبزرگانِ دین کی طرف منسوب بیں، جن کو بنیاد بناکر بدمذ ہب بزرگانِ دین کے خلاف زبان ورازی کرتے بیں۔ اُس کے متعلق مفسر قرآن شارح بخاری ومسلم علامہ غلام رسول سعیدی قادیانیوں کے اعتراضات کا جواب ویے ہوئے فرماتے ہیں: "اس بات کاسب سے پہلا اور آخری جواب بیہ کہ قر آن وحدیث
کی صرح عبارات کے بعد ہمیں ان مہم اقوال میں الجھنے کی ضرورت نہیں۔ یہ اقوال ضرور یاتِ
وین میں سے نہیں ہیں۔ ان میں سے جو چیز قر آن وسنت کے مطابق ہے وہ مقبول ہے، اور جو چیز
کتاب وسنت کے مطابق نہیں اس کے بارے میں خسن ظن یہی ہے کہ یہ بعد کے لوگوں کا الحاق
ہے، ان کی اصلی عبارت نہیں ہے۔ جس طرح زنادقہ نے رسول اللہ شکا گیا تیم کی احادیث میں اپنی
طرف سے گھڑ کر کلام طاویا اس طرح الماحدہ نے اکا برصوفیاء اور علاء کی عبارات میں مختلف با تیں
وضع کر کے شامل کر دیں۔ "(۱) (اور یہ اُن بزرگانِ دین سے متعلق ہے جن کی ساری زندگی
وین اسلام کی خدمت کرتے ہوئے عین شریعت کے مطابق گزری ہے)۔ (2)

بزرگانِ دین اور اکابر مفسرین و محدثین کرام کوطعن و تشنیج کانشاند بنانا قیامت کی نشانیول شی سے ہے۔ آقا کریم مُلَّالِیْنِ نے قربِ قیامت کے انبی فتوں کا ذکر کرتے ہوئے ارشاو فرمایا:
"قربِ قیامت بعد والے لوگ پہلوں پر لعن طعن کریں گے "۔ (بعنی کہیں گے انہیں وین سے متعلق کی علم ند تھا) (3) میسے آج بہت سے گر اولوگوں نے سوشل میڈیا پر اس کو وطیرہ بنار کھا ہے اور چار کتب پڑھ کر اکابرین پرچڑھ دوڑے ہیں۔

ایک حدیث پاک میں آقا کریم منگاللی نے فرمایا: "آخر زمانے میں وجال کذاب لوگ ہوں گے کہ وہ باتنی تمہارے پاس لائیں گے جونہ تم نے سٹیں نہ تمہارے باپ دادانے، توان سے دور رہو اور انہیں اپنے سے دور رکھو کہیں وہ تمہیں گمر اہند کر دیں کہیں تمہیں فتنہ میں نہ ڈال دیں "۔(4)

^{1 (}مقالانيسعيدي، ص72. قريديك ستال، لاهود)

ر المراس متعلق مزید تفصیل کے لیے مقالات قائمی جلد 2کا مطالعہ کیجے۔ اللہ تصوف ورزر گانِ دین پر ہونے والے احتراضات کی تفصیلی جوایات کے لیے مفتی انس رضا قادری کی لاجواب تصنیف بہار طریقت کا مطالعہ بے حد مقید ہے۔

^{3 (}ترمذی، کتاب الفتن، بآب سامان هلا کت، ج 2.س 52 من 83 هر پر پاتستال الاهور)

^{4 (}صعيح مسلم مقدمة باب النبي الرواية عن الطبعقارج 1. ص 36 مديدة 16 فريد بك سابال الاهور)

فتنہ ار تدہے بچنے کے لیے اقد امات :

اسلام کے نام پر اسلام کو ڈسنا ، اس پر تحریفی نشتر لگاٹا

اس پر جرح و تنقید کی مشق کرنااور مخص مفروضات سے اُس کے تطعی مسائل کو پایال کرنا، ہر دور کے ملاحدہ وزناد قد کا طرہ امتیاز رہاہے۔ پہلی صدی کے خوارج ہوں یا مابعد کے باطنیہ، تیسری صدی کے اصحاب العدل والتوحید ہوں یا دور حاضر کے ارباب فکر و نظر، ماضی قریب کے سرسید احمد خان، غلام احمد پرویز، مرزاغلام احمد قادیانی بون یا جارے دورکے جاوید خامدی، یا مرزا محمد

على انجيئير_سب اى الحادى فقنے كى كڑياں ہيں۔ان سب كامشتر ك مقصد، مشتر ك نقطه نظر اور مشترک سرماییه اسلام کی چار دایواری میں رخته اندازی کرناہے اور لوگوں کو اسلام اور بزر گان وین سے بد ظن کرناہے۔

خار جی وداخلی فتنوں ، آپس کے خلفشار اور ہاہمی تنازعات سے حفاظت کے لیے ہمیں جو اقدامات كرنے جا تبيل وہ يہ ہيں:

(1) اكابراسلام پرمضبوط اعتماد

(2) علماء فقہاء اور الل دین سے حسن ظن

(3) کسی صاحب نصب عالم دین (جویہو دیت اور نصرانیت کی اسلام کے خلاف دسیسہ کارپول

ہے آگاہ ہونہ کہ یہود ونصاریٰ کا نما ئندہ) ہے گہر العلق

(4) رجوع الى الله كااستمام

(5) اہل خیر وصلاح سے مشورہ

(6) اعتدال پیندی

(7) بلا تحقیق بات قبول کرنے یا پھیلانے سے احتراز

(8) أكرام واحترام مسلم

(9) باہمی انتلاف وانتشاریااس کے اسباب سے کلی پر ہیز۔(1)

تواتر، اجماع اورجمهور كايشه

الله تعالى في تمام مخلوقات من سے انسان كو فضيلت دى (وَلَقَلُ كُرَّمُنَا بَنِيَ اَدْمَ) (1) اور انسانوں من سے مسلمانوں كو فضيلت دى ہے (إنَّ اللّهِ فَنَ عِنْدَ اللّهِ الْإِسْلَامُ) (2) اور مسلمانوں من سے الل سنت كى فضيلت دى ہے (آيت: سَبِيْلِ الْمُؤْمِدِيْنَ (3) اور مديث: مسلمانوں ميں سے الل سنت كى فضيلت دى ہے (آيت: سَبِيْلِ الْمُؤْمِدِيْنَ (3) اور مديث: مَنَا اَنَا عَلَيهِ وَ أَصِحَالِي)-

ان تینوں سطحول پر آزاد خیالی انسان کی سب سے بڑی دشمن ہے جو شخص اہل سنت کی سطح پر آزاد خیال ہواوہ اجماع اور جمہور کا منکر ہوا اور قر آن دسنت میں من مانی تاویلیں کرنے لگا، جو شخص اسلام سطح پر آزاد خیال ہوا وہ مسلمان کا فربھائی بھائی کہنے لگا اور جو شخص انسانی سطح پر آزاد خیال ہوا وہ مسلمان کا فربھائی بھائی کہنے لگا اور جو شخص انسانی سطح پر آزاد خیال ہوا وہ کتیوں (جانوروں) سے شادی کرنے لگا اور لباس اتار کر ڈیول چرچ میں جا پہنچا۔

مسلمانوں میں تواتر اور اجماع کا انکار اس آزاد خیالی کا نتیجہ ہے، نیٹ پر غیر مسلم پوچھ رہے بیں کہ موجودہ قرآن کے اصلی قرآن ہونے کا کیا ثبوت ہے اس کا حتی جواب تواتر اور اجماع ہے ۔ تواتر اور اجماع ہی ہے دین کی بقاء ہے اور قرآن و اسلام کا محفوظ ہونا ہم تواتر اور اجماع کو ہی ولیل بناکر ثابت کرتے ہیں۔

قادیانی اور دیگر کفار اپنے راستے ہیں سب سے بڑی رکاوٹ تواتر اور مسلمانوں کے اجماع کو ہی سجھتے ہیں، معتزلہ، خوارج وروافض بھی اجماع کے منکر ہیں۔ آزاد خیال لوگ اور مشنری طلباء بھی اپنے قائدین کی ہاتوں کو پر وان چڑھانے کے لیے اجماع کا اٹکار کر رہے ہیں۔

مشنری طلباءے ہماری مر ادالیے طالب علم ہیں جو پہلے ہی کسی شظیم سے وابستہ ہوتے ہیں۔ اور اپٹی شظیم کے مقاصد کو پروان چڑھائے کے لیے ایک خاص مشن کے تحت مدارس میں داخلہ

^{1 (}ہنی اسر اثیل، آیت 70) / ترجہ: اور پینک ہمنے اولادِ آدم کوعزت دی 2 (ال عران، آیت 19) / ترجمہ: پینک اللہ کے نزدیک وین صرف اسلام ہے

^{3 (}الله، آیت 115) / ترجمہ: اور (جو) مسلمانوں کی راہ ہے جدا راہ پلے تو ہم اسے ادھر ہی پھیر دیں گے

جدهروہ چرتاب اوراے جہنم میں داخل کریں گے۔

لیتے ہیں ایسے طلباء قائد یامر شد کے تھم کے سامنے اجماع اور جمہور کو پھی نہیں سمجھتے گو یا منکرین اجماع کی مندرجہ ذیل چھ اقسام ہیں: کفار، معتزلہ، خوارج، روافض، آزاد خیال لوگ، مشنری طلباء۔

یاد رکھے! شاذ متر وک اور مر دود اقوال ہر موضوع پر ٹل سکتے ہیں ایسے اقوال کو غنیمت سیجھنے والا انسان دشمنانِ اسلام کابدترین ایجنٹ ہے، تواتر اجماع اور جمہور کامکر اگر خود کو مسلمان کہتا ہے تو وہ غیر مسلموں کے اعتراضات کی تاب نہیں لاسکتا غیر مسلموں کی تر دید میں کامیاب ہونے کے لیے اہل سنت وجماعت ہوناضروری ہے۔

ہر باطل فرقے نے بہیں سے تفوکر کھائی ہے یا جان بوچھ کر فراڈ چلایا ہے کہ محکمات اور تصریحات کے محکمات اور تصریحات کے ہوئے ہوئے مثابہات بشمول موضوعات ،اسر ائیلیات اور تواری کا سہارالیا ہے یا اجماع کے مقابلے پر شاذ اور مر دود اقوال پر اپنی خرافات کی بنیاد رکھی ہے یا قرآن وسنت اور اجماع کے خلاف اجتہاد کیا ہے۔(1)

شیخ الحدیث والتفیر علامہ غلام رسول قاسی وام ظلہ لکھتے ہیں: "اجماع (مسلمانوں کی ہڑی جماعت (لیعنی اہل اسنت)) کے الکارے بے شار مفاسد لازم آتے ہیں۔ اجماع کامکر علی توازن تو کجا اپنا وماغی توازن بھی درست نہیں رکھ سکتا۔ اس کی مثال اس شخص جیسی ہے جو ٹریفک توانین کی پابندی کیے بغیر چو کول میں سے گزر رہا ہے۔ اور اسے قدم قدم پر آگے ، پیچے ، دائیں اور بائیں سے مختلف گاڑیوں کے ساتھ کر ا جانے کا اندیشہ ہے ۔۔۔ آگے لکھتے ہیں: "متھابہ (جن باتوں میں شبہ ہو) کو محکم (جو بالکل واضح ہو) کی طرف لوٹانا ضروری ہے" یا و رکھیئے کہ واضح الفاظ کے مقابلے پر مر دودا قوال بھی ہر موضوع پر ال سکتے ہیں۔ اگر ہمارے بیان کردہ قاعدے کو مد نظر ندر کھا گیا تو دین کی دھیاں بھر جائیں گی۔معافراللہ"۔(2)

مبلغین اسلام پر لازم ہے کہ اجماع کے وجو دیااس کی جمیت کا ہر گز انکار نہ کریں۔اجماع اور تواتر پر بھ دین کی بقاء کا داو مدار ہے۔(الانتہاء)

^{1 (}مقالات قاسمى ج2. ص 345/303 رجة للعاليون پيليكيشاز، سر گودها) 2 (مقالات قاسمى ج2. ص 30/40 رحة للعاليون پيليكيشاز، سر گودها)

تو اے مخاطب! اس دور پر فتن میں تم پر لازم ہے کے مسلمانوں کے اجمائی چودہ سوسالہ عقائدو نظریات کو چھوڑ کر تم ہر گز کسی دین دائیمان کے لٹیرے کی چکنی چپڑی باتوں میں نہ آؤاور اپنے دماغ میں کسی تشم کے شبہات کو جگہ نہ دو۔ شبہات سے متعلق ازالے کے لیے علاء اہل سنت کی طرف رجوع کرنا چا ہیں۔ دنیا کا ہر فرقہ پرست یہی سمجھتا ہے کہ سورج صرف اس کی سنت کی طرف رجوع کرنا چا ہیں۔ دنیا کا ہر فرقہ پرست یہی سمجھتا ہے کہ سورج صرف اس کی کھڑکی ہے نکاتا ہے، لہذا تمہمیں چاہیے کہ شختیق کرو اور اجماع امت سے انحراف ہر گزنہ کرو، اس میں دنیاو آخرت کی بھلائی ہے۔ علامہ اقبال کہتے ہیں:

ند جب میں بہت تازہ پینداس کی طبیعت کرلے کہیں منزل توگزر تاہے بہت جلد محقیق کی بازی ہو توشر کت نہیں کر تا ہو کھیل مریدی کا تو ہَر تاہے بہت جلد تاویل کا پھندا کوئی صیاد لگا دے یہ شاخ نیمن سے اُتر تاہے بہت جلد

جديد منافقين كي علامات:

محفوظ رکھنے پر توجہ دیں۔ ٹی زمانہ یہود و نصاری اور ان سے بڑھ کر مسلمانوں کی صفوں بیں چھپے
محفوظ رکھنے پر توجہ دیں۔ ٹی زمانہ یہود و نصاری اور ان سے بڑھ کر مسلمانوں کی صفوں بیں چھپے
ان کے آلہ کار (لبرل وسیکولر طبقہ) کی سازشوں سے چو کنار ہنے کی ضرورت ہے۔ موجودہ نظام
تعلیم ، سوشل میڈیااور ٹی دی چینلز وغیرہ پر د کھائے جانے والے پر وگرام کو دیکھ کر انسان یہ
بات سوچنے پر مجبور ہو جاتا ہے کہ کیا ہے کسی ایسے ملک کامیڈیااور تعلیمی اوارے ہو سکتے ہیں جو
ملک اسلام کے نام پر وجود بیس آیا ہے۔ گویالا دینیت ، الحاد ، سیکولر ازم اور دین سے دوری کی جتنی
مکنہ صور تیں ہیں کفارنے مسلم ممالک بیس موجود فنڈ ڈ تھکمر انوں ، میڈیا چینلز ، مغرب کے درآ مد
شدہ اسلامی سکالرزاور این جی اوز وغیرہ کے ذریعے نافذ کرر کھی ہیں جو جارے نوجوانوں کی سوچ
و گرکو احکام اسلام سے بیز اد کرنے اور صرف مغربی نظام کو اپنی قلاح کے لیے ضروری سیجنے کا
سبب بن ر بی ہیں۔ ان کا واحد مقصد مسلمانوں کو اللہ تعالی اور اس کے حبیب منافی ہے دور

کرناہے اور دہ اس کو مشش میں دن رات ایک کیئے ہوئے ہیں۔ وضع میں تم ہو نصاریٰ تو تدن میں ہنود بیر مسلماں ہیں! جنسیں دیکھ کے شر مائیں میہود (علامہ اقبال)

یہ لبرل وسیکولر نظریات کے مارے لوگ نام نہاد اصلاح کے پروے میں مفسدانہ طرز عمل اپنانے کے باوجو دخو د کوصالح اور اپنے سواسب لو گوں کو بیو قوف سیجھتے ہیں۔ یہ لوگ مسلمانول کی اکثریت کو گمراه کهه کر، سوادِ اعظم، اجهاع امت کا انکار کرتے ہیں اور نہ صرف انکار کرتے ہیں بلکہ ان پر طنز ، طعنہ زنی کو اپنا فرض سیجھتے ہیں۔ اسلام کی راہ میں پیش آنے والی مشکلات کو میر وہمت سے ہر داشت کرنے اور اس کامقابلہ کرنے کے بچائے اسلامی احکامات کو طعن و تشنیع کانشانہ بناکر فرار گی راہ اختیار کرتے ہیں۔اسلامی شعائر کی بے حرمتی پر خاموشی اور جو لوگ اسلامی شعائر دفاع میں بولیس ان کے خلاف زبان دراز کرتے ہیں۔ کرکٹ چی کے لیے راستے اور مساجد بند ہونے سے ان کو تکلیف نہیں ہوتی البتہ وہی راستہ اگر ناموس رسالت اور سُسْتَاحِ رسول مَنْكَافِیْتُمْ كو مزادلوانے کے لیے احتجاج و حکومتی اداروں پر پریشر ڈالنے کے لیے بند کیا جائے تو بیہ لوگ علماء کو معاذاللہ بر ابھلا کہتے ہیں۔ ہر غیرت کی بات پر غصہ کرتے ہیں اور یے غیرتی کی بات پر خوش ہوتے ہیں۔ رسول الله منگافیکٹی کی عزت وناموس کے دفاع، مساجد ہیں قلم کی شو نٹگ وغیرہ کے خلاف سخت روپیہ اختیار کرنے کو انتہاء پیندی اور اپنی ذات کے لیے دوسرے کو گالیاں دینے کو اپناحق سیحتے ہیں۔حضور جانِ رحمت سُکُالِیُنِمُ کے گساخوں کے ساتھ قلبی لگاؤ اور گستاخی کو (freedom of speech) کہتے ہیں جبکہ ناموس رسالت کے پہرہ دارول کے ساتھ رنجش رکھتے ہیں۔ یہ لوگ برابری اور آزادی کی بات کرتے ہیں جب کہ اسلام عدل وانصاف اور احکام الی کی پابندی کا تھم دیتا ہے۔ یہ لوگ قادیا ثیوں (زندیقوں) سے متعلق نرم لہجہ رکھتے ہیں اور اسلامی سزاؤں کو کسی خاطریش نہیں لاتے بلکہ اسے انسانیت پر ظلم قرار دیتے ہیں۔ محبت کا درس دیتے ہوئے یہ کہتے ہیں سبھی انسان برابر ہیں سس سے نفرت جائز نہیں اور یہ(love for all haterd for none) جیسے نعرے

لگاتے ہیں، حالاتکہ اسلامی تعلیم یہ ہے کہ الحنبُ فی الله وَالْبُغُضُ فِي الله (يعنی الله کی خاطر محبت اور الله کی خاطر بغض) (1)۔ یہ پاکستان جیسے ملک میں نے مندروں کی تعمیر کی حمایت کر کے رسول اللہ مُناکیکی کی سنت کا صاف اٹکار کرتے ہیں⁽²⁾ اور قرآن و حدیث کی واضح تصریحات کا انکار کرے گانے باجے ،ویکن ٹائن ڈے ادر اس جیسے دیگر فحاشی کے پروگر امز کو یروموٹ کرتے ہیں اور ان کے خلاف بولنے والے علاء کامیہ کہ کر رد کرتے ہیں کہ "بیہ مولوی حضرات نے لوگوں کی زندگی پھیکی بنا کر ظلم کرر کھاہے"۔ یہ لوگ جان بوجھ کر دین سے متعلق ایسے پہلوؤں کا ذکر کرتے ہیں جس سے غیر مسلموں کو اسلام پر تنقید کرنے اور بد مذہبوں كومنت كاموقع ملے اور بيا علمائ كرام، مدارس دينيه پر تنقيد كرتے اور علم دين پڑھنے والول كو جال سجھتے ہیں۔ ایسے لوگوں کو اس حدیث پاک سے عبرت حاصل کرنی چاہیے: حفرت سيدنامعا وين جبل رهى الله تعالى عنه فرمات بين: "الله ك محبوب مَنَا الله عنه ارشاد فرمايا" میری پیروی کرواگرچہ تمہاراعمل ناقص ہی کیوں نہ ہواور قر آن کے محافظین (لیتن علاء، قراءاور حفاظ) کے معاملے میں پڑنے سے اپنی زبان قابو میں رکھواور اپنے گناہ اٹھاؤ، دوسروں کے گناہ اپنے سرنہ لو اور ان کی مذمت کر کے خود کو پاک ظاہر نہ کرو، کہیں جہنم کے کتے قیامت کے دن حمهیں جہنم میں چیر پھاڑنہ دیں "_⁽³⁾

وطن پرستی : وطن کے لیے محبت، ہر قوم وملت کے لیے جذبہ و تحریک کاسامان ہے اس میں حرج نہیں۔لیکن اگر جذبہ حب الوطنی کو اس قدر بڑھا دیا جائے کہ مذہب چیچے رہ جائے اور وطن کی محبت پہلی ترجیح بن جائے تو یہ چیز رفتہ رفتہ آدمی کو الحاد کی طرف لے جانے کا سبب بنتی

^{1 (}مراقالمدناجیہ صرح مشکوق باب الحب فی الله و من الله القصل الفالمدہ جوہ ص 417 حدیث 479 حسن پیدلیشر فرالا هون)
2 (عظم / ، شر کی ہیہ ہے کہ در الاسلام ہونے کے بعد ذی اب شے گر ہے اور بت خانے اور آتش کدے نہیں پناسکتے اور ہہلے جو بیل وہ باقی رکھے جائیں کے لیے بہار شریعت حصہ جو بیل وہ باقی رکھے جائیں کے لیے بہار شریعت حصہ 9 مسلم شریع اللہ کی است میں غیر مسلم شہر ایوں کی فر ہی آزادی "کا مطالعہ کچھے)
مطالعہ کچھے)
3 رائسوق کا دریا جس 262/احیا مالعلوم کا خلاصه ، ص 280 مکتبہ المدیده کو اجی الترخیب والترمیب)

ہے اور امت کی جعیت کو پاش پاش کر ویتی ہے۔ بیدلبرل و سیکولر لوگ ہر وفت مذہب کے بجائے خطد کے گیت گاتے ہیں ، امت مسلمہ کے بارے میں سوچنے کے بجائے صرف اپنے وطن کے وفاع کو ترجیج ویتے ہیں اور اسے ہی اپٹاوین وایمان سجھتے ہیں۔جولوگ مسلم حکمر انوں سے و نیا بھر کے مظلوم مسلمانوں کی مدو کے لیے عملی اقدامات کرنے کا مطالبہ کرتے ہیں یہ لبرل و سیکولر لوگ انہیں یہود و نصاریٰ کے دشمن ہے زیادہ اپنی سلامتی کا دشمن تصور کرتے ہیں،راجہ وہر اور رنجیت سنگھ جیسے ظالم حکمرانوں کو بیہ گخر سندھ اور شیر پنجاب جیسے القابات سے نواز تے بیں لیکن محد بن قاسم و محمود غرنوی جیسے اسلام کے مجاہدین کو انسانیت کا دهمن تصور کرتے ہیں۔ماضی قریب میں مسلمانوں کی سلطنتِ عثانیہ جو تین براعظموں تک پھیلی تھی وہ اِنہیں لو گوں (جدید منافقین) کی سوچ و فکر اور سازشوں سے پارہ پارہ ہو ئی۔ماضی میں ایک مسلم خلیفہ کے تحت ،شان وشوکت سے رہنے والے تمام مسلم ممالک آج اپنے اپنے وطن کی سلامتی کی جنگ لڑتے ہوئے، تباہی کے دہانے کھڑے اپنی باری کا انتظار کر رہے ہیں کہ کب کوئی عسکری طانت رکھنے والا ملک ظلم پر اُترے اور انہیں عراق ،شام ،افغانستان وغیرہ ممالک کی طرح اپنے ياؤل تلے روند كر چلاجائے۔

مسلمان اگر آج بھی متخد ہو کر اسلامی احکامات پر تھیجے معتوں میں عمل کریں اور وطنیت کے بجائے اُمت مسلمہ کے بارہے میں مشتر کہ جدوجہد کریں، تو بیہ وہی شان و شو کت اور اپنا کھویاہوامقام حاصل کرسکتے ہیں۔علامہ اقبال اپنے درد کو بوں بیان کرتے ہیں:

اس دوریس ہے اور ہے، جام اور ہے جم اور ساتی نے بنا کی روشِ لطف و ستم اور مسلم نے بھی لتمبیر کیا اپنا حرم اور تہذیب کے آزر نے ترشوائے صنم اور ان تازہ خداوں میں بڑاسب سے وطن ہے جو پیر بن اس کا ہے، وہذہب کا گفن ہے اتو سے اقوام میں مخلوقِ خدا بھتی ہے اس سے قومیت اسلام کی جڑ کٹتی ہے اس سے

بازو ترا توحید کی توت سے قوی ہے اسلام تر ادیس ہے ، تو مصطفوی ہے

مذہب انسانیت: ایک ہتھکنڈ اجوبہ لبرل وسکولر حضرات مسلمانوں کو دین سے بد ظن کرنے کے لیے اپناتے ہیں وہ ہانسانیت کو اسلام پر ترجیح دینا، اسے ایک مستقل مذہب ماننا ہے اور ہوں کہنا کہ "انسانیت کا کوئی مذہب نہیں ہو تا" یا یہ کہنا ہے "میر امذہب انسانیت ہے اسلام نہیں "۔
ان بے دین لوگوں کا یہ قول صرف لوگوں کو اسلامی احکامات سے متنظر کرنے اور احکام شریعہ پر شقید کرنے کی راہ ہموار کرنے کے لیے ہے۔ یہ لوگ دنیا کو یہ باور کروانے کی کوشش کرتے ہیں کہ مذہب صرف انسانیت کی خدمت کا نام ہے اور دیگر احکامات خداوندی (عبادات، رسومات و معاشرتی احکامات) کا اس میں کوئی عمل دخل نہیں۔

سی در مراد کامات کے ساتھ ساتھ انسانیت کے حوالے سے الی جامع ہدایات و تعلیمات موجو و
میں دیگر احکامات کے ساتھ ساتھ انسانیت کے حوالے سے الی جامع ہدایات و تعلیمات موجو و
ہیں جو کسی اور مذہب کے پاس جہیں۔جو لوگ اسلام اور انسانیت کو الگ الگ ذکر کرتے ہیں ،
حقیقتا یہ لوگ اسلامی تعلیمات کا صبح معنوں میں علم نہیں رکھتے۔اسلام ہی ہے جس نے مسلمان ،کافر ذمی ، جانور وں ، پر ندوں تک کے حقوق ارشاد فرمائے ہیں۔اسلام ہی ہے جو ایک انسان کے بیان ان آلی کو ساری انسانیت کا قتل قرار دیتا ہے۔اسلام ہی ہے جو کسی غیر مسلم شہری (معائد) کو بے گناہ قتل کو ساری انسانیت کا قتل قرار دیتا ہے۔اسلام ہی ہے جو کسی غیر مسلم شہری (معائد) کو بے گناہ قتل کرنے پر جنت کی خوشہو تک حرام فرما دیتا ہے۔ یہ اسلام ہی ہے جو ایک پیاسے کتے کو بانی پلانے پر جنت کا مثر دہ اور ایک بلی کو پیاسار کھنے پر جہنم کی و عید دستا ویتا ہے۔ یہ اسلام کی ہی تعلیمات ہیں کہ جانور پر ظلم کرنا ڈی کا فریر ظلم کرنے سے زیادہ پر اسے اور ذمی پر ظلم کرنا دہرا ہے۔
پر ظلم کرنے سے بھی زیادہ پر اسے۔

اس طرح مید لوگ عام مسلمانوں کا کفار سے موازنہ کرتے ہوئے میہ کہتے نظر کہتے ہیں کہ دیکھیں کا فر مسلمانوں سے زیادہ سیچے اور دیانتدار ہیں، مسلمانوں کی اکثریت دھوکا دہی اور دیگر اخلاقی برائیوں میں مبتلا ہے وغیرہ۔ دراصل حقیقت میہ ہے کہ اسلامی طور پر اخلاقی تربیت کا دارومدار الْأَمْوِ بِالْمَعُدُوْفِ وَالنَّهْيِ عَنِ الْمُنْكُو (نَيَلَى كَا تَكُم ويِيْ اور برائے سے روك) ير مشتمل ہے۔ کسی بھی ملک میں کسی بھی مذہب سے تعلق ریکھنے والے لو گوں میں اخلاقی اعتبار سے ہمیشہ ایکھے اور برے لوگ پائے جاتے ہیں۔ وہ لوگ جو اپنی ان بری خصلتوں میں رائخ نہیں ہوتے اُنگی اصلاح کا ذریعہ علماء کے وعظ و نصیحت بن جاتے ہیں لیکن بعض وہ لوگ جو اپٹی بر می عادات میں رہے بسے ہوتے ہیں انہیں برائی ہے رو کنے کے لیے سخق وطاقت کی ضرورت پروتی ہے، جس کے لیے اسلام نے مختلف سزائیں متعین کی ہیں۔مثلاً جب کوئی کسی کا ناحق مال لینے کا سوہے گا تو سزاکے طور پر اُس کے ہاتھ کا نے جانے کا خیال اُسے اس برائی سے روکے گا، اس طرح زنا پر کوڑے یاسنگسار کیے جانے کا خیال اُسے اِس زنا کرنے سے روکے گا۔ لیکن ہماراحال ہے ہے کہ ہماری اکثریت اب علائے کرام کی صحبت اور علم دین سے بہت دور ہوتی چلی جار ہی ہے۔ اور ہمارے ملک میں نہ ہی اسلامی قوانین و سزائیں رائج ہیں اور نہ موجو وہ آئین و قانون کی بالا وستی ہے، بلکہ ہر طرف رشوت عام اور سیاستدان بددیانت ہیں، مقولہ ہے یانی اوپر سے بینچے آتا ہے۔ توایسے میں مجرتی اخلاقی برائیوں کی وجہ سے اسلام پر اعتراضات اٹھانا کہاں کی دانشمندی ہے؟، ملکہ حقیقتاً بیہ اِس نظام کی خوست ہے۔ آج بھی وہ اسلامی ممالک جہاں آئین و قانون کی بالا وستی ہے اور مجر موں کو سزائیں دی جاتی ہیں وہاں جرائم کی تعداد نہ ہونے کے برابر ہے۔ (بیہ ایک اہم پہلوہ بقیناس کے علاوہ بھی دجوہات ہو سکتی ہیں)۔

۔ مگر سے ہے کہ جب عقل کی دشمنی کے ساتھ بدند ہی کاخول سوار ہو تو کھ سمجھ نہیں آتا۔علامہ اقبال کہتے ہیں:

اپنی ملت پر قیاس اقوام مغرب سے نہ کر خاص ہے ترکیب میں قوم دسولِ ہاشی اُن کی جعیت کا ہے ملک ونسب پر انحصار قوتِ مذہب سے مستقلم ہے جمعیت تری دامن دیں ہاتھ سے چھوٹا توجمعیت کہاں اور جمعیت ہوئی زخصت توملت بھی گئی قیمینزم: ای طرح بید لوگ عورت کی آزادی اور برابری (feminism) کے نام پر " میرا جسم میری مرضی" جیسے بیبودہ نحرہ (slogan) لگاکر ہماری پردہ دار خواتین کی عصمت کا خداق اڑاتے ،ہماری نوجوان بیٹیوں کو گراہ کرنے کی ناپاک کوشش کرتے ہیں، جبکہ ایک کلمہ گو مسلمان کے لیے لازم ہے کہ جس مالک نے بیہ جسم وجان دیا ہے اُس رب کریم کے احکامات کی بیروی کرے بیباں اُس مالک کی مرضی کے علاوہ کوئی چارہ نہیں۔ ایک طرف بید لوگ قوم لوط کے عمل کو اپنا انفرادی حق سمجھ کر اِسے ملک پاکستان میں قانونی طور پر جائز قرار دینے کا مطالبہ کرتے ہیں اور دوسری طرف بی لوگ سڑکوں پر نگل کر زنابالجبر کرنے والے کے خلاف سخت تو تیں اور دوسری طرف بی لوگ سڑکوں پر نگل کر زنابالجبر کرنے والے کے خلاف سخت قانونی کاروائی کا مطالبہ کرتے ہیں اور پھر جب ان مجر موں کو اسلامی سز ایس دینے کی بات کی جاتی ہے تو سب سے پہلے بہی لیرل حضر ات اس کے خلاف مز احمت کرتے و کھائی دیتے ہیں، یہی ان لوگوں کی منافقت ہے، حقیقتا بے لوگ مادر پیر آزادی کے خواہاں ہیں۔

قیمینزم اور علامہ اقبال: علامہ اقبال کھتے ہیں: "اسلام میں عور توں کا جو درجہ ہے اس پر تفصیلی دائے زئی کرنے کی بہاں عنجائش نہیں، البتہ کھلے لفظوں میں اس امر کا اعتراف میں ضرور کروں گا کہ بغوائے آیت اگر بھال قوْمُون عَلَی البِّسَآءِ (۱) (مردعور توں پر تکہبان ہیں)۔ میں مرووعورت کی مساوات مطلق کا حامی نہیں ہو سکتا۔ بیہ ظاہر ہے کہ قدرت نے ان دونوں کے تفویض جداجد اخد متیں کی ہیں اور ان فرائض جداگانہ کی صحح اور با قاعدہ انجام وہی خانوا وو انسانی کی صحت اور فلاح کے لیے لاڑی ہے۔ مغربی و نیاش جہاں نفسانفسی کا ہنگامہ گرم ہے اور غیر معتدل مسابقت نے ایک خاص فتم کی اقتصادی حالت پیدا کر دی ہے، عور توں کا آزاد کر دیا جانا ایک ایسا تجربہ ہے جو میری دانست میں بجائے کا میاب ہونے کے الثانقصان رسا ثابت ہو گا اور نظام معاشرت میں اس سے بے حد و پیچید گیاں واقع ہوجائیں گی۔ (2)

النساء، آیت 34) (اَلزِ جَالُ قَوْمُونَ عَلَ النِسَاءِ بِمَا فَضَلَ اللهُ بَعْضَهُمْ عَلى بَعْضِ) رَجمه: (مرد مود اول پرتگببان بین اس وجه الله فی الله این این این ایک کود مرے پر فضیلت دی)۔

^{2 (}مقالات قاسمى ج2، ص 288 رحة للعالمين يبليكيشاذ سر كودها/مقالات اقبال ص177 مرتبسيد عبدالواحد معيى)

سر کار منافیقیم کی طرف سے اُمت محمد بیرے علماء کی ڈیوٹی اور لبرل حضرات کی بغاوت

امر بالمعر وف اور نهي عن المنكر:

نوجوالو نسل کو گمر اہ کرنے اور ملک میں فحاشی و عریانی عام کرنے کے لیے لبرل حضرات کا ایک طریقہ یہ ہے کہ جب بھی کوئی پخض اعلامیہ کسی گناہ کا ار تکاب کرتا ہے تو یہ لوگ اُس کی حمایت میں اُٹھ کھڑے ہوتے ہیں اور اسے اُس مخض کا ا نفرادی حقّ اور آزادی اظہارِ رائے اور پاکستان ایک سیکولر اسٹیٹ ہے وغیرہ جیسی باتوں کوزیر بحث لاتے ہوئے علمائے دین کو تنقید کا نشانہ بناتے ہیں۔اسلامی ریاست میں رہتے ہوئے یہ کہنا کہ "جو مخص جہاں بھی اعلانیہ جس بھی گناہ میں مشغول ہے اُسے کرنے دیاجائے اور اُس کی ذاتی زندگی میں دخل اندازی نہ کی جائے اور ہر ایک کو تھمل آزادی حاصل ہے " یہ قر آن دحدیث کی تعلیمات کے بالکل خلاف ، معاشرے میں فحاشی و عربانی کا سمیسز پھیلانے اور عذاب الہیہ کو وعوت دینے کے متر ادف ہے۔ کتنی ہی قومول کے نیکو کار صرف اس لیے عذاب میں مبتلا کیے گئے کہ وہ نہ نیکی کا تھم دیتے تھے اور نہ برائی سے روکتے تھے۔

(1) حدیث پاک میں ہے: اللہ تعالیٰ نے حضرت یوشع بن نون علیہ السلام کی طرف بیروحی جیجی کہ" میں تمہاری قوم کے ایک لا کھ افر اد کو ہلاک کرناچا ہتا ہوں، ان میں سے اس ہز ارپا کباز (نیکو کار) ہیں جبکہ بیس ہز ار گناہ گار ہیں "۔حضرت یوشع بن نون علیہ السلام نے عرض کی پرورد گار! تو ٹیک لوگو ں کو کیوں ہلاک کرنا چاہتا ہے اللہ رب العزت نے فرمایا " اس لیے کہ وہ دوسرول (گناه گارول) سے عدادت ندر کھتے تھے۔ اٹھنے ، بیٹھنے ، کھانے ، پینے اور معاملات کرنے

میں ان سے سے اجتناب نہ کرتے تھے۔⁽¹⁾

(2) اسى طرح أيك روايت مين بر رسول الله مَنَافِينَ إِنْ فِي ارشاد فرمايا: "جس قوم مين كناه كيئ جائیں وہ زیادہ اور غالب ہو پھر بھی مداہنت کرے اور خاموش رہے اور بر انی کو بدلنے کی کوشش

نه کرے تو پھران سب پر عذاب آئے گا"۔⁽²⁾

^{1 (}كيبيات سعادت،بأب امر معروف اور على مدكر، ص368 شياء القرآن پيلي كيشاز، لاهور) 2 (تفسير تبيأن القرآن ج3. 236 فريديك ستال، لاهور /البعجم الكهير)

(3) حضرت سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی الله تعالی عند بیان کرتے ہیں کہ رسول الله مَنْ اللهُ عَلَيْهِمُ اللهِ عَلَى اللهِ مَنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ عَلَى اللهِ اللهِ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ عَلَى اللهِ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ ال

(4) قرآن اور حکمران: حضرت سیدناهام عبدبن حمید حضرت سیدنامعاؤین جبل دهی الله تعالی عنه سے روایت کرتے ہیں کہ رسول الله مَنْ اللهُ عَلَیْمُ نے ارشاد فرمایا: جب تک تحفہ ، تحفہ ہولے لوجب تم کودین سے دور کرنے کے لیے بطور رشوت (تحفہ) دیاجائے تواسے ہر گرنہ لینااور پیسے لے کرتم دین کوہر گزنہ چیوڑنا، اس امرسے خوف اور فقرتم کورو کے گا، بی یاجون وہاجون آپی ہیں ، اسلام کی چی گروش کرے گی، جہاں قرآن کریم گھومے تم بھی گھوم جانا (لینی جو قرآن کریم کھومے تم بھی گھوم جانا (لینی جو قرآن کریم تھم دے اِسی پر عمل کرنا) عنقریب بادشاہ (حکم ان) اور قرآن آپس میں جھڑ پڑیں گے اور دونوں مختلف تھم دیں گے، تم پرالیے بادشاہ مسلط ہونے کہ ان کے لیے الگ قانون ہوگا اور تم ہاں شیریا کی پیروی کرو کے تو تم کو گر اہ کر دیں گے اور اگر تم اِنی ہیں جان کے اور اگر تم اِنی میں مال نہیں ملاؤ کے تو تم ہیں گل کر دیں گے ۔ صحابہ کرام نے عرض کی :

^{1 (}سأن افيداؤد، كتاب الملاح، بأب الامرو التهي، ج3. ص 271، حديث 3774. شياء القرآن يمل كيشتز الاهور / ترمذى البن ماجه)

"یارسول الله منگالیم ایکی جمر جمارا کیا حال ہوگا اگر ایسے حالات پیدا ہو جائیں تو؟ " _ رسول الله منگالیم ایکی الله منگالیم ایکی الله علیه السلام کے ساخیوں کی طرح ہوجا و جن کو آریوں سے چیر دیا گیا، سولی پر الکا دیا گیا، الله تعالی کی اطاعت میں موت کا آجاتا نافر مانی میں زندگی گرارتے سے بہتر ہے (۱)

گرارتے سے بہتر ہے (۱)

اس روایت سے پیتہ چلا کہ اگر کوئی حاکم وقت احکام الہید کے خلاف تھم دے تو علائے وقت پر لازم ہے کہ راہِ عزیمت اختیار کرتے ہوئے ایسے ظالم حکمران کے سامنے ڈٹ جائیں اور کلمہ حق بلند کریں، یکی افضل جہاد ہے۔ لیکن فی زمانہ حکمرانوں کی دینی احکامات سے بخاوت و بیز ای کے باوجو دامت کی امامت کا دم بھرنے والے بڑے بڑے علاء ومشائ آپ نے آستانے اور نذرانے بچانے کی خاطر ظالم حکمرانوں کا طواف کرتے اُن کے قصیدے پڑھتے نظر آتے ہیں۔ جب قوم کے دینی پیشواؤں کا کر دار بیہ ہوگاتو قوم میں ملی غیرت ودینی حمیت کا ختم ہو جانا کوئی تجب کی بات نہیں۔ انہیں قربِ قیامت کے علائے سوء کے متعلق فرمایا گیاہے کہ "بیدر ترین مخلوق ہیں "(2) فتی طب بینا ہے امامت اُس کی جو مسلماں کو سلاطیس کا پرستار کرے!

(علامداقبال)

الله تعالى في أمت محمريك كالل ايمان والول كى تعريف كرتے موئ ارشاد فرمايا: يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْأُخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِوَ يُسَادِعُونَ فِي الْمُنْكِورَ اللّٰهِ فِينَ - (3)

ترجمہ کنزالعرفان: " بیداللہ پر اور آخرت کے دن پر ایمان رکھتے ہیں اور بھلائی کا تھم دیتے اور برائی ہے۔ منع کرتے ہیں اور نیک کامول میں جلدی کرتے ہیں اور پہلوگ (اللہ کے) خاص بندوں میں ہے ہیں۔"

^{1 (}مسئلة نأموس رسالت پر جعلى مشائخ كى غير ما ته عناموشى . ص26/ الدر المتثور (124:3))

^{2 (}احياءالعلوم،علم كابيان، ج1،ص146،مكتبة المدينه، كراجى)

^{3 (}العمران،آيت 114)

لبذاید چلا کہ نیکی کا تھم دینا اور برائی سے روکنا یہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک بندوں کے لیے محبوب ترین افعال بی سے اور بھی تمام انبیاء علیم اسلام کی سنت مبار کہ رہی ہے۔ اور اب چو تکہ قیامت تک کسی نئے نبی نے اس دنیا بیں تشریف نبیس لانا (بجر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اور آپ کو نبوت پہلے ہی عطا ہو چک ہے) اور ہمارے پیارے نبی محمہ منا اللہ نیا تا اللہ المت محمدیہ آخری اُمت ہے لبذاہم پر بدر چہ اولیٰ یہ واجب ہے کہ ہم اپنے اپنے مقام و منصب اور اختیارات کے مطابق نیکی کا تھم دیں اور برائی سے روکیس ، معاشرے بیل ہے حیائی کا کینر تھیلے گا تو اُسے ہر شخص کو لین حیثیت کے مطابق (sanitize) کرنا ہوگا۔ جو شخص اس کے بر عکس قو اُسے جمل کردے گا وہ رب تعالیٰ کے حقور سزاکا مستحق ہے۔ حاکم وقت پر یہ لازم ہے کہ وہ اپنے وقتیارات (طاقت) سے اسلامی مملکت میں ہونے والے غیر شرعی افعال کا خاتمہ یقینی بنائے۔ چنانچہ فتنہ و فساد کے تدارک کے لیے امیر المومنین حضرت عرفاروق دھی اللہ عند کردادِ جبانچہ فتنہ و فساد کے تدارک کے لیے امیر المومنین حضرت عرفاروق دھی اللہ عند کے کردادِ

عمر کی چیزی سے دماغ کا خمار جاتارہا:

دار می نے جہ بیل، ابن عساکر نے تاریخ بیل سلیمان بن سارے روایت کیا کہ: "بنو تمیم کا ایک شخص تھا جس کانام صبیغ بن عسل تھا۔ وہ مدینہ آیااس کے پاس کچھ کتب تھیں۔ وہ قر آن کے متھا بہات کے بارے بیں پوچھتا تھا۔ اس بات کی اطلاع حضرت عمر کو پنچی تو آپ نے اسے بلایااور اس کے لیے مجور کی دو چیڑیاں تیار کیں، وہ آیا تو آپ نے بوج بیان تو کون ہے؟ اس نے کہا: بیل اللہ کا بندہ صبیغ ہوں۔ آپ نے فرمایا: بیل اللہ کا بندہ عمر موں۔ اس کے بعد آپ نے اس کی طرف اشارہ کیا اور ان دو چیڑیوں کے ساتھ اسے ماراحتی کہ وہ رخی ہوگی دو تی کی گئی ہے دور خی میرے دماغ میں (خمار) تھاوہ جا تاریا۔ (1)

^{1 (}سان دار مي، بأب من هاب الفتياكرة التنطع والتبدى . ج1. ص51 مطبوعه تقر السنة ملتان)

بہا کر اپنے ہا ک سروب و پروان پر سامے ہے واسم دار رہے ہیں۔ ب یہ ہو کہ اپنے ان استخدد کہد دیں گے۔
ہانک دیں وہ شخقیق کہلائے گا اور جو ان کی تر دید کرے گا اے متشد د کہد دیں گے۔
یاد رکھیے کہ غلط کو غلط کہنا علماء پر واجب ہو تاہے۔ صرف مثبت انداز کا ڈھول پیٹنے والے
آدھی تبلیغ کے متکر ہیں۔ دین کی چکی امر بالمحر وف اور نہی عن المنکر دونوں پر گھومتی ہے۔ امر
بالمعر وف مثبت تعلیم ہے اور نہی عن المنکر باطل کی تر دید کا نام ہے۔ ہر زمانے کی باطل قو توں کو
امر بالمعر وف پر کوئی خاص اعتراض نہیں رہازیادہ تر فساد نہی عن المنکر پر پیدا ہوا "۔(1)

الله تعالیٰ سے دعا ہے کہ رب عزوجل ہمارے نوجوانوں کوان (لبرل وسیکول) لوگوں کے شر سے محفوظ فرمائے اور اسلامی جمہوریہ پاکستان کو کوئی نیک عادل تحکمران عطا فرمائے جو اس ملک میں نظام مصطفیٰ مَثَافِیکُمْ نافذ کرکے ہمارے ملک کوان جراثیموں سے پاک فرمائے۔ آمین۔

فتنوں فرقوں کے وقت اُمت کیا کرے؟

کتب احادیث کے باب الفتن میں مخبر صادق حضور خاتم النبیین مَنَا اللّٰیَّمِ نے قرب قیامت سے متعلق جو با تیں ارشاد فرمائی ہیں، اُن میں مسلمانوں کے فرقوں میں بیٹے اور اند هیری رات جیسے فتنوں کے سراٹھانے کے فرامین موجود فتنوں کے سراٹھانے کے فرامین موجود ہیں۔

آئ آمتِ مسلمہ کی حالت بہت نازک ہے، مسلمان فرقہ داریت کا شکار بیل ، نے نے فرقے وجود میں آرہے ہیں۔ کوئی احادیث کا منکرے تو کوئی فقہ اسلامی کا منکر، کوئی رسول اللہ منالی ہیں زبان درازیاں کرتا نظر آتاہے، تو کوئی صحابہ دالجبیت کرام ادر ادلیاءاللہ کا دھمن ہے اور کچھ لوگ فرقہ داریت سے تنگ آکریہ کہتے ہیں ہمارا کی سے کوئی تعلق نہیں ہم صرف مسلمان ہیں۔ ایسا کہنے دالوں کو بھی سجھنا چاہیے کہ خود کو مسلمان تو ہر گر وہ کہتاہے ، یہ مسلمان ہو نا دراصل ادبیانِ باطلہ (دوسرے فداہب) کے مقابلے میں ہے۔ آپ کے اردگرد رسول اللہ منالی ہی نشان میں زبان درازیاں کرنے والے اور اصحابِ رسول منالی ہی نو کو کو الیاں مخوظ رکھنے کے لئے کوئی الی پیچان ضروری ہے جس سے بدنہ ہوں اور اہل حق میں فرق داضح معطوظ رکھنے کے لئے کوئی الی پیچان ضروری ہے جس سے بدنہ ہوں اور اہل حق میں فرق داضح معالی (بزرگانِ دین وادلیائے آمت) نے ان باطل فرقوں کے مقابلے میں مسلمانوں کی جماعت حق کی پیچان کرواتے ہوئے خود کو "اہل سنت وجماعت " میں شارکیا مسلمانوں کی جماعت کے عقائد پر رہے ہیں۔ ای کوراہ صراط مشقیم جانے اور اس پر چلنے کی تاقید کرتے دے ہیں۔ ای کوراہ صراط مشقیم جانے اور اس پر چلنے کی تاقید کرتے دے ہیں۔

الل سنت وجماعت سے مرادہے:"نبی کریم مَلَّالْتِیْمُ کی سنت اور جماعت ِ محابہ و اجماعِ امت کی راوپر چکنے والے "۔⁽¹⁾

^{1 (}مقالات قاسمى، ص24، ج2رحة للعالبين، ببليكيشنز ,سر كودها)

الل سنت (سنیت) کسی شخص یا کسی فرقے کانام نہیں، بلکہ یہ ایک عقیدہ ہے ، عقائدِ قرآنی و حدیث نبوی اور عقائد صحابہ والجبیت کی صحیح تعبیر کانام سنیت ہے۔
چنانچہ صحیح مسلم میں ہے ، حصرت ابن سیرین دصة الله علیه جو اجلہ تابعین میں سے بیل آپ دحدیث کی شخیق نہیں کرتے ہے (بیخی آپ دحدیث کی شخیق نہیں کرتے ہے (بیخی یہ نہیں دیکھاجاتا تھا کہ کس راوی سے مروی ہے بس حدیث لے جاتی تھی)، لیکن جب وین میں بدعات سے اور فتہ (فرقے) داخل ہوگئے تولوگ سند احادیث کی شخیق کرنے کے اور جس میں بدعات سے اور فتہ (فرقے) داخل ہوگئے تولوگ سند احادیث کی شخیق کرنے کے اور جس مدیث کی سند میں اہل بدعت (بدحدیث کی سند میں اہل بدعت (بد

پیارے آتا مدینے کے تاجدار حضور رحمت العالمین منافیقی نے زندگی کے ہر معاملہ کی طرح اِن فتوں سے بچنے کے لیے مجمی اُمت کی رہنمائی فرمائی ہے، چنا ٹیم مسلمانوں کے حق مگروہ کی بیجان کرواتے ہوئے فرمایا وہ ہمیشہ تعداد میں زیادہ ہونگے:

- (1) چنانچہ آ قاکریم مَنَافِیْزُم نے ارشاد فرمایا: "میری اُمت گر ابی پر (کبھی) جمع نہ ہوگی، اور جب تم (لوگوں میں) اختلاف دیکھو تو تم پر لازم ہے کہ سواد اعظم (لیتی مسلمانوں کی بڑی جماعت) کے ساتھ ہوجاؤ"۔(2)
- جماعت) کے ساتھ ہوجاؤ"۔ رہے (2) اور رسول اللہ مَنَّافَیْنَمُ نے ارشاد فرمایا: "اللہ تعالیٰ میری اُمت کو گمر اہی پر جمع نہ کرے گا اور اللہ تعالیٰ کادستِ رحمت جماعت پر ہے۔ اور جو جماعت سے جد اہو اوہ دوزخ میں گیا"۔ (3) (3) اور جانِ جاناں مَنْ اللّٰیٰ َ نُمُ اللّٰہ اللّٰہ

^{1 (}معيح مسلم مقدمه صيح مسلم .ج1.ص39. مديث 27 قريد بالتستال الاهور)

^{2 (}سان ابن ماجه كتاب الفتن باب السواد الإعظم ، ح2، ص560 حديث 3939 شياء القرآن يبلي كيشار الاهور)

^{3 (}ترمذى، كتاب الفتن، بأب ماجاء في الزوم الجباعة، ج 2 ص 33، حديث 38 فريد بك ستال الأهور)

ایعنی سنت کے پیروکار۔ دوسری روایت میں ہے "هُمُّ الجماعة" (وہ جماعت ہے) اینی مسلمانوں کابڑا گردہ جسے سوادِ اعظم فرمایا اور فرمایا جواس سے الگ ہوا جہنم میں الگ ہوا، ای وجہ سے اس ناجی فرقہ کانام اہل سنت وجماعت ہوا۔ (1)

(4) اور نبی رحمت مَنَالِّيُنَّا أَلِي ارشاد فرمايا: "جس نے ايک بالشت بھی جماعت کو چھوڑا اور اسی حال میں مرسکیاتو دہ جہالت کی موت مرا"۔(2)

(5) اور امام الأنبياء مَنَّ اللِيَّا فِي ارشاد فرمايا: "جس في ايك بالشت بهى جماعت كو چهورًا اس في اسلام كي رسي اپني كرون سے وكال دى "۔(3)

کیونکہ شیطان اکیلے کے ساتھ ہو تاہے اور وہ دوسے دور رہتاہے "۔(4)
(7) اور حضور خاتم النبیین مَا اللّٰی کے ارشاد فرمایا: شیطان انسان کا بھیڑیاہے جیسے ایک بھیڑیا کہریوں کا ہو تاہے۔ وہ اس بکری کو پکڑلیتاہے جو اکبلی بھاگ جائے یا ریوڑ سے دور ہو جائے یا کنارے کنارے چی ہو۔ تنگ راہوں اور گھاٹیوں سے جی کے رہو۔ اور جماعت وجہور کا ساتھ مت چھوڑو"۔(5)

کے اس طرح کثیر احادیث میں مسلمانوں کی جماعت سے جداہونے کی سختی سے ممانعت فرمائی گئ ہے اور اختلاف کے مواقع میں صاف صحیح اور صریح ہدایت صرف حضور مناہ آئیم کی سنت اور جماعت صحابہ کی اتباع اور پیروی میں منحصر ہے۔اللہ عزوجل جمیں اہل سنت و جماعت کے عقائد پر استقامت دے ، یہی وہ عقائد ہیں جو صحابہ و تابعین و آتمہ سے لے کر آج تک پاکانِ

^{1 (}بهار شريعت معه 1. ص188 مكتبة البديده. كراجي)

^{2 (}صفيح البغاري كتاب الإحكام باب السبع والطاعته جد ص 804، صديمة 714 فرينيات سنال الدهور)

^{3 (}سان اليحاؤد، كتاب السنة بأب في الخوارج، ج3، ص 450 حديث 4131 هياء القرآن يعلى كيشان الأهور)

^{4 (}مراة المناجيح غرح مشكاة، كتاب مناقب صابه، القصل الثاني، جه. ص295، حديث 5751، حسن پيليشرز، لاهور) 5 (مراة المناجيح شرح مشكاة، كتاب الاعتصام، القصل الثالث، ج1، ص166، حديث 174، حسن پېليشرز، لاهور)

مقالات قاسی پی مسلم الثبوت کے حوالے سے کھا ہے: "اس موضوع پر دلائل کثرت سے موجود ہیں جن کی روشنی بی علاء نے کھا ہے: اجماع (اہل سنت وجماعت کے عقائد و نظریات) تمام اہل قبلہ کے نزدیک جمت قطعی ہے اور اس سے بقینی علم حاصل ہو تا ہے۔ یہاں مشی بھر خارجی اور رافضی احمقول کی بات کی کوئی اہمیت نہیں ہے (جو اجماع کے مشر ہیں)۔ یہ لوگ صحابہ کا اجماع منعقد ہو جانے کے بعد پیدا ہوئے ہیں اور ضروریات وین بی شکوک و شبہات پیدا گرتے رہے ہیں "۔ (1)

﴿ ابتدائے اسلام سے آج تک پوری دنیا میں تمام فر قول سے تعداد میں بڑھ کر اہل سنت ہی ہیں۔ اہل سنت وجماعت میں پوری دنیا کے کروڑوں حنفی ، شافعی ، مالکی ، حنبلی و تصوف کے سلاسل قادری ، چشتی ، نقشبندی ، سہر وردی ، اولیی وغیرہ سب شامل ہیں۔ اہل سنت وجماعت کوئی فرقہ نہیں یہ صراط مستقیم پر گامزن عظیم "جماعت" ہے جیتئے بھی

^{1 (}مقالات قاسمي ج2. ص26. رحة للعالدين پيليكيشنز سركودها)

فرقے بے وہ اہلسنت و جماعت سے جدا ہو کر بے ، جماعت پر سایر رحمت ہوتا ہے ، جماعت سے مجھی بھی الگ نہیں ہونا چاہیے۔ سے مجھی بھی الگ نہیں ہونا چاہیے۔ نوٹ: یادر ہے خود کو اہل سنت کہنا مسلمانوں کے باطل فرقوں کے مقابلے میں ہے۔ ہم بلاشبہ اہل سنت ہیں لیکن غیر مسلموں (یہودونسادیٰ ، ہندوں، قادیانیوں دغیرہ) کے مقابلے میں خود کو مسلمان کہنا چاہیے۔

الل سنت وجماعت کے پیشواء:

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ نِصِرَاطَ الَّذِيْنَ ٱلْعَمْتَ عَلَيْهِمُ (1) "جميس سيد هـ راسة يرجلا-ان لو گول كاراسته جن ير توت احسان كيا"

ہم ذیل میں اہل سنت وجماعت کے پیشواؤں میں سے چند علاء و مشاک دحمة الله علیهم کے نام کستے ہیں تاکہ آپ پر مزید واضح ہوجائے کہ ہیشہ سلف صالحین، مفسرین و محد ثین نے اپنی پہچان اس جماعت حقہ "اہل سنت وجماعت" کے نام سے ہی کروائی ہے۔ ہمارے زمانے میں بہت سے باطل گروہ بھی نمووار ہوئے ہیں جو اپنا تعارف اہل سنت ہی کے نام سے کرواتے ہیں لیکن حقیقت میں یہ لوگ اہل سنت وجماعت کے اہما می حقائد و نظریات کی مخالفت کرنے والے ہیں۔ اِن بزرگانِ دین کی کتب و تعلیمات کی طرف رجوع کرنے سے انشاء اللہ حق کے متلاشیوں پر حقیقت واضح ہوجائے گی۔ (متونی ہون وفات ہجری)

﴿ تابعی حضرت ابن سیرین (متونی 110هـ) ﴿ حضرت سفیان توری (متونی 161هـ) ﴿ امام اعظم ابو حنیفه (متونی 150هـ) ﴿ امام مالک (متونی 179هـ) ﴿ امام شافعی (متونی 204هـ) ﴿ امام احمد بن حنبل (متونی 241هـ)

اے عزیز تم نے ملاحظہ کیا! وہ بزرگان دین جن کا ذکر تم بچپن سے سُنتے آئے ہو وہ سب ہمیشہ سے اہل سنت وجماعت کے عقائد و نظریات پر قائم رہے اور اپنا تعلق "اہل سنت وجماعت" سے بتاتے ہیں تو تم کہا بھکتے جاتے ہو!۔ یہ وہ ہستیاں ہیں جن کی علمی صلاحیت اور بارگاو الہیہ میں مقام و مرتبہ پر امت متفق ہے۔ امت کے تمام اولیاء نے ہمیشہ اہل سنت سے بی ہونے کا اعلان کیا۔ آج اگر کوئی شخص ان پر طعن کرے تو یہ اُس بد بخت بی کی محرومی ہے۔ اگلے لوگوں کا ادب واحر ام بعد والوں پر لازم ہے۔ بعد والوں کا اگلے لوگوں پر لعنت بھیجنا قیامت کی نشانیوں میں سے ہے۔ (1)

صحابی رسول حضرت این مسعود رهی الله تعالی عنه فرماتے ہیں: "تم میں سے جو بھی کسی طریقے پر چلنا چاہتا ہو تو اسے چاہیے کہ ان لوگوں کہ راستے پر چلے جو وقات پاچکے ہیں، اس لیے کہ زندہ آدمی فتتے سے محفوظ نہیں ہوتا "_(2)

^{1 (}ترملك، كتاب:الفتن،بأبسامان،هلاكت،ج 2،ص 52،حديث 89، قريزيك ستأل، لاهور) 2 (مراة الباجيح شرح مشكوة، كتاب الايمان،يأب الاعتصام،القصل الفائدة، ج1،ص169،حديث182،حسن پمليشر (لاهور)

مثلاً: مؤطا امام ماك (متونى 179هه)، كتاب الآثار وكتاب الخراج از امام ابوبوسف (متوفى 182 هه)، كتاب الآثار ومؤطا امام محمد (متوفى 189هه) وغيره-

اس کے بعد اہل سنت کے محال ستہ کی باری آتی ہے۔ امام بخاری (متوفی 252ھ)، امام مسلم (متوفی 261ھ)، امام تر مذی (متوفی 279ھ)، امام ابوداؤد (متوفی 275ھ)، امام نسائی (متوفی 303ھ)، امام این ماجہ (273متوفی ھ)۔

جبکہ اس کے برعکس روافض کی چار احادیث کی مشہور کتابوں میں سے وو کتابیں چو تھی صدی میں اور دو کتابیں پانچویں صدی میں کھی گئیں۔

Do You Know?

ہم برصغیر اور دنیا ہمرے کروڑوں (حقی) امام اعظم ابوصنیفہ دحمۃ الله علیه کے مقلد ہیں۔
آپ (امام اعظم ابو حقیفہ دحمتہ الله علیه) تابعی ہیں ، تابعی وہ ہوتا ہے جس نے حالت ایمان میں کسی صحابی کی زیارت کی ہو، آپ (امام اعظم ابو حقیفہ) نے 7سے ذائد صحابہ کرام کی زیارت کی ہو، آپ (امام اعظم ابوحلیف) نے 7سے ذائد صحابہ کرام کی زیارت کی (1) اور صحابہ کرام دھی الله تعالی عنهم اجمعین سے احکام دین سکھے ، اب آپ ورا سوچیں ! ، دین کی شمیک ترجمانی ایک الی ستی کرے گی جنہوں نے صحابہ کرام کو دیکھا اور ان سے دین سکھا یا آج 1400 سال بعد کوئی شخص کرے گا؟۔ یقیبنا امام اعظم ابوحتیفہ ، امام مالک، امام احمد بن حنبل دحمة الله علیهم جیسے ہستیوں کو چھوڑ کرا گر کوئی شخص

^{1 (}تزهة القارى شرح صحيح البخاري، ج1، ص170 قريد بك ستال الاهور)

آج 1400 کے بعد کسی نیم محقق خطرہ ایمان کی نت نئی تحقیقات کی پیروی کرے گا اُس سے بڑا ا احتی اور لبنی دین و دنیا کا دشمن کوئی نہ ہو گا۔ قوائے دوست! جب تم ان حقائق کو جان چکے اور اہماع اُمت پر فرامین مصطفیٰ مَا اللّٰیمُ کو پڑھ چکے ، اور قربِ قیامت کے ان جدید فتنوں کی نشانیاں بھی معلوم کرچکے تو اب تمہیں اختیار

ہے کہ اپنے نفس کا کحاظ کرتے ہوئے اسلاف کی بیروی کرواور مسلمانوں کے چورہ سوسالہ عقائدو نظریات کو اپنا کران بزرگوں کے ساتھ ایک صف میں کھڑے رہویاالحاد کے گھوڑے پرسوار ہو

کر چھلے لوگوں کی طرح د حوے کی ری سے لئکے رہو۔

مذاهب إربعه بربدمذهبون كاايك اعتراض

بدند ب غیر مقلدین حضرات عام عوام کوائل سنت سے متنظر کرنے کے لیے ایک د جل و فریب یہ کرتے ہوئے نظر آتے ہیں "کہ دیکھیں سنی حضرات قرآن وحدیث کو ماننے کے بجائے مذاہب اربعہ (حنفی ، مالکی ، شافعی ، حنبلی) پر عمل پیراہیں، یعنی یہ امام اعظم الوحشفہ ، امام مالک، امام شافعی، امام احدین حنبل دحدة الله علیهم کی تقلید کرتے ہیں اور تقلید شخص کرنا حرام وشرک وغیرہ ہے۔

غیر مقلدین کا ایسا کہنا سوائے و حوکا دہی کے اور پکھ نہیں۔ یہ بات کسی بھی صاحب عقل شخص پر مخفی نہیں کہ جس سائل اخذ شخص پر مخفی نہیں کہ ہر شخص اس بات کی اہلیت نہیں رکھتا کہ وہ قر آن وحدیث سے مسائل اخذ کر سکے۔اس لیے اللہ تعالیٰ نے قر آن پاک میں ارشاد فرمایا :

فَسْطَلُوا آهُلَ الذِّكُو إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (1) " تواكلو كواعلم والول سي لوجهوا كرتم نهيں جائے"

علامہ محمد ظفر قادری لکھتے ہیں : "اس آیت کریمہ میں رب تعالیٰ خود ارشاد فرمارہا ہے کہ وہ مسائل جن کو سیجھنے یا قرآن سے اخذ کرنے کی تمہارے اندر صلاحیت نہیں اہل علم و مجتهدین سے بوچھو کیونکہ عام آدمی میں اننی استعداد نہیں ہوتی کہ وہ ہر مسئلہ قرآن وحدیث سے آسانی کے ساتھ مستنبط کر سکے لہٰذا اسے چاہیے کہ وہ کی قرآن وحدیث کے اندر کامل مہارت رکھنے والے کلام اللی اور فرمان رسول منافینی کی کے رموز واسر ارسے واقفیت رکھنے والے مجتبد کی بارگاہ میں حاضر ہوکران کی اتباع دپیروی کرے اس کانام تقلید ہے۔"

علیم الامت مفتی احمد یارخان نعیمی علیه الرحمه اس آیت کے تحت فرماتے ہیں کہ " اس آیت سے تحت فرماتے ہیں کہ " اس آیت سے تقلید کا وجود ثابت ہوا کیونکہ جوچیز معلوم نہ ہو وہ جانے والے سے پوچھنا لازم ہے۔ لہذا غیر مجتمد کو اجتها دی مسائل مجتمدین سے پوچھنا اور ان پر عمل کرنا ضروری ہے انہیں خوو اجتهاد کرناحرام ہے"

ہم اہل سنت اسی لیے شرعیہ احکام جیسے وضوو عسل، نماز و روزہ، نکاح وطلاق کے مسائل میں ان مجتبدین کی اطاعت (لینی تقلید کا عام رواج تھا اور عام لوگ اپنے متعمد فقیہ صحابی کے قول کو دو سرے صحابی کے قول پر ترجیح دے کر اس کی اطاعت و پیروی کرتے۔ اہل مکہ حضرت ابن عباس کے قول کو ترجیح دیتے اور اہل مدینہ اس کی اطاعت و پیروی کرتے۔ اہل مکہ حضرت ابن عباس کے قول کو ترجیح دیتے اور اہل مدینہ اسی اسی مسلم و غیرہ مقلدوں کے تقلید کیا کرتے تھے۔ اسی طرح محدثین کرام امام ترخدی، امام ابو داؤد، امام مسلم و غیرہ، حضرات بھی مقلد ہیں اور امام بخاری و غیرہ مقلدوں کے شاگر دکیونکہ یہ تمام محدثین مثلاً امام بخاری، امام مسلم، امام ترخدی، امام ابوداؤد و غیرہ سب کے سب شافتی ہیں اور امام شافعی کی تقلید کرتے ہیں۔

شخ الحدیث والتغیر علامہ غلام رسول قاسی وام ظلہ مقالات میں "عقد الجیدومرام الكلام"

عوالے سے لکھتے ہیں: " ندا ہب اربعہ میں سے کسی نہ کسی کو اختیار کرنا لازم ہے، ندا ہب اربعہ میں سے کسی نہ کسی کو اختیار کرنا لازم ہے، ندا ہب اربعہ سے خروج سواد اعظم (اہل سنت وجماعت) سے خروج ہاس پر پوری امت كا اجماع معقد ہو چكا ہے "۔(1)

ضروری وضاحت: جو مخض جس امام کی تقلید کرتا ہے اسے اس بات کو پیش نظر رکھنا ضروری ہے کہ ہم حقیقت میں قرآن و سنت پر ہی عمل کر رہے ہیں اور اپنے امام کی تقلید اس

^{1 (}مقالات قاسمي، ج2، ص27 رحة للعالبين پمليكيشائر الاهور)

لیے کرتے ہیں کہ اس نے اللہ تعالی اور اس کے رسول مَنْ اللّٰجُرُم کے احکامات کو منظم اور آسان قہم كركے ہم تك پہنچائے، كيونكم شريعت نافذ كرنے والا تو الله تعالى اوراس كے رسول مَكَاللَّيْظُم ہیں امام توایک مبلغ ہے۔ای لیے عقائدو صرت احکامات میں کسی کی تقلید جائز نہیں۔لہذا ہر ننص کے لیے ضروری ہے وہ کسی امام کی تقلید و پیروی کرے کیو نکہ زمانے وحالات کے بدلنے ے نت نے مسائل پیش آتے رہتے ہیں جن کا قر آن وحدیث سے صراحت کے ساتھ ثبوت نہیں ملتا اور ایسے مسائل کے حل کے لیے قر آن وحدیث کے رموز واسر ارسے وا تفیت ر کھنا ہر مخض کے لیے ممکن نہیں۔للبذاعوام الناس پرلازم ہے کہ وہ مجتہدین کی تقلیدو پیری کریں۔ فقہاء کرام کا اس بات پر اہماع ہو گیاہے کہ اصول اجتہاد وضع کرنے کی ضرورت ختم ہو كتى ہے لبندااب اگر كوئى تخص اجتهاد كرناچاہے گاتو أئمه اربعہ امام اعظم ابو حنيفہ ، امام شافعی ، امام مالك اورامام احدين حتبل دحمة اللهعليهم ميس سي كى امام ك اجتهادى اصولول كوسامة ر کھ کر اجتہاد کرے گا۔ (کیونکہ اگر آج ہر دو سرا شخص اپنے اصولِ اجتہاد وضع کرنا شروع کر دے توہر کوئی لین تحقیق پیش کرے گااور اس سے (discipline) قائم شدرہ سکے گااور امت میں انتشار تھیلے گا۔ جیسے فی زمانہ بہت سے نام نہاد مجتبدین منظر عام پر آئے ہیں اور بہت سے دیثی احكامات كااتكار كربيقي بي)_ (1)

آئمه اربعه كااختلاف:

غیر مقلدین کے ساتھ لبرل حضرات جن کا وطیرہ ہی اہل اسلام پر طنزو مذاق کرناہے۔ ہمارے نوجوانوں کو دین سے بیز ار کرنے کے لیے ایک اعتراض سے اٹھاتے ہیں کہ جب اہل اسلام ہی اپنے دینی معمولات میں ایک طریقے پر متفق نہیں تو ہم کیسے کسی کی بیروگ کرسکتے ہیں۔ ان کا میہ اعتراض لاعلمی وجہالت پر مبنی ہے اور ان کی باطنی خوانت ظاہر کر تاہے۔ کیونکہ یہ بات تو بلکل واضح ہے جیسے چیچے بیان ہوا کہ عقائد وصر تے احکامات میں نہ اہل اسلام (سوادِ اعظم) کا اختلاف ہے اور نہ ہی اس میں کسی کی تقلید جائز ہے۔ اور بات رہی لعض فقہی مسائل میں اختلاف کی توبہ اہل اسلام کے لیے رحت ہے۔

مفسر قرآن شارح بخاری و مسلم علامہ غلام رسول سعیدی علیہ رحمہ لکھتے ہیں: یہ بات بھی یا ور کھنی چاہیے کہ آئمہ اربعہ یعنی "امام اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت ، امام مالک ،امام شافعی ،امام احمد بن حنبل دحمة الله علیهم یہ تمام آئمہ کرام مسلک ابلسنت و جماعت کے حامل شخے۔ سواد اعظم کی اکثریت انہیں کے ساتھ تھی۔اصول و فروع میں یہ تمام آئمہ منفق شخے، بعض فقبی جزئیات میں ان آئمہ کرام کا اختلاف تھا۔یہ اختلاف بالکل دیک بیتی کے ساتھ تھا۔یہ وہی اختلاف بالکل دیک بیتی کے ساتھ تھا۔یہ وہی اختلاف ہے جس کے بارے میں حضور منافی تی فرمایا:

" اختلاف احتى رحمة" (ميرگ امت كا اختلاف دحمت ہے)

اس اختلاف کا ایک عام سبب بیر تھا کہ ہر امام کا ایک الگ اصول تھا۔ مثلاً ایک مسئلہ میں اگر متعدد ، مختلف اور متعارض احادیث وار وہوں تو اس صورت میں ہڑا مام شافعی قوت سند کے اعتبار سے فیصلہ کرتے ہیں۔ ہڑا مام مالک اس حدیث پر عمل کرتے ہیں جس پر اہل مدینہ کا تعامل ہو۔ ہڑا مام احتمام الک اس حدیث پر عمل کرتے ہیں جس پر اہل مدینہ کا تعامل ہو۔ ہڑا مام احتمام الی صورت میں متعارض احادیث کی اکثریت کا لحاظ کرتے ہیں ہڑا اور امام اعظم الی حنیفہ الیسی صورت میں تمام متعارض احادیث ترحی ہو جائیں اور جہاں تک ممکن ہو ایس صورت اختیار کرتے ہیں جس میں تمام متعارض احادیث جمع ہو جائیں اور ہر حدیث کا الگ الگ محل متعین ہو جائے "۔ (1)



آئے کے اس بے راہ روی کے دور پس جہاں مسلمان علمی وعملی طور پر کمزور ہو بچے ہیں، وہیں دورِ حاضر کے الحادی فتے ، سیکولرازم ولبرل ازم کی وہامسلمانوں کی ایمانی حرارت کو سرو کرنے کے لیے ہر حمکن حربہ لینائے ہوئے وین اسلام کی حقیقی صورت مسٹے کرنے کے لیے کوشاں ہے۔ ایسے بیں اگر والدین لیٹی نسلوں کی تعلیم و تربیت کا مناسب بند ویست نہ کریں کے تویقیتا ہے اولاد نہ صرف و نیایش والدین کی ٹافر مائی و بے راہ روی کا شکار ہوگی بلکہ بروز قیامت بھی رب تعالی کی بارگاہ بی تھرات و حرب کا سمامنا ہے۔ لہذ اوالدین کے لیے لازم ہے کہ وہ و نیاوی تعلیم کے ساتھ ساتھ اپنے بچوں کی ویٹی تعلیم و تربیت کا مناسب بند وبست کریں تا کہ جارے بیچ و نیایش سماتھ ساتھ و اپنے بچوں کی ویٹی تعلیم و تربیت کا مناسب بند وبست کریں تا کہ جارہ ہے د نیایش سماتھ ساتھ و اپنے بچوں کی ویٹی قعلیم و تربیت کا مناسب بند وبست کریں تا کہ جارہ ہے جو دنیایش میں مرخر وہو سکیس۔

پروفیسر ڈاکٹر محمد اسلعیل بدایونی حفظہ اللہ پچوں کی دین تربیت کی اہمیت کا ذکر کرتے ہوئے اپنے مخصوص انداز ٹیں " ڈاکٹر اور نورال کامقالمہ" لکھتے ہیں:

" بیں کوئی ویکسین وغیرہ نہیں لگواؤں گی اپنے بیچے کو، ٹورال نے اپنے بیچے کو سینے سے لگاتے اویے کہا۔

دیکھوٹوران! یہ خسرہ، ٹی بی جمونیہ یہ سب بیاریاں بچکے لیے سخت نقصان دہ ایل بلکہ بچکی جان کو خطرہ بھی ہو سکتا ہے۔ لیڈی ڈاکٹر جمیر انے ٹورال کو بیارے سمجھاتے ہوئے کہا۔
ارے میر امر دکہتا ہے یہ سب ڈاکٹر نیوں کی ڈراے بازی ہے۔ ٹورال بے چاری کا بھی کمیا تھسور! دہ گاؤں سے پچھ دن پہلے ہی شہر آئی تھی اور یہاں بھی بھاڑیوں کی بستی بیں ایک جمو نہری بیں رہتی تھی۔ جس نے جو نہرا یا ہو۔

لوران ایک بات بناؤ! ڈاکٹر حمیر انے مسکر اتے ہوئے ہو چھا۔ میسک ن

بى دُاكْرْنى صاحبە بوچو<u>۔</u>

اچھاچلو نہیں لگاتے تمہارے بیٹے کو کوئی ویکسین اب اگریہ بیار ہو گیاتو پھر کیا کر وگی؟ نوراں کو پچھ اطمینان ہوا کہ اب ڈاکٹر اس کے بیٹے کو ویکسین نہیں دے گی تواس نے بیچے پر اپٹی گرفت کم کر دی اور کہاجب وہ بیار ہو گاتو میں تیرے پاس لے آئیں گی۔

کرفت کم کردی اور کہاجب وہ بھار ہو گا تو میں تیرے پاس کے آؤں گی۔ لیکن اس وقت تمہارے بیٹے کو یہ و کیسین کوئی فائدہ نہیں دے گی (مگر یہ کہ اللہ چاہے تو)۔۔۔ویسے بھی آج کل تو آئے روز نئی بھاری جنم لے رہی ہے۔۔۔یہ و کیسین نہایت ضروری ہے۔ڈاکٹر حمیرانے سمجھایا۔

کیوں نہیں دے گی فائدہ ڈاکٹرنی پھریہ جیتال کیوں کھولاہے؟ دواکیوں بنائی ہے اور تم ڈاکٹر مس کام کے ہو؟ نورال توایک دم ہتھے ہے اکھڑگئی۔

اب ایک سوال آپ سب والدین سے ۔۔۔

الورال سمجھد ارہے یابے و توف؟

آپ سب کہیں گے بالکل بے و توف ہے۔ بچے کی زندگی کارسک لے رہی ہے۔ اسے ایسا نہیں کرنا چاہیے ڈاکٹر کی بات مان لینی چاہیے۔۔

ملیوں ان کینی چاہیے؟

کیول کہ آپ سب جانبے ہیں کہ بیہ و پکسین بچین میں ہی انژ انداز ہوتی ہیں۔(قطع نظر و پکسین کے حوالے سے مختلف آراء کے) بڑے ہو کران و پکسین کاانژ بالکل نہیں ہوتا۔

اب ذرا سوچئے! یہ کیے ممکن ہے ہم اپنے بچوں کو بچین میں اعلیٰ اخلاق نہ سکھائیں۔۔۔
انہیں دین نہ سکھائیں۔۔۔ انہیں محبت رسول مَنَائِیْکُو کا درس نہ دیں انہیں اللہ اور اس کے رسول مَنَائِیْکُو کا درس نہ دیں انہیں اللہ اور اس کے رسول مَنَائِیْکُو کی اطاعت کا جام نہ پلائیں اور چاہیں کہ ہمارے نیچ د نیا میں بھی کامیاب ہوں اور آخرت میں بھی کامیاب ہو جائیں۔۔۔۔ان پر لبرل ازم کا وائزس افیک نہ کرے۔۔۔۔انہیں الحادکی بیاری چھوئے بھی نہیں۔۔۔اور گمر اہیت بیاری چھوئے بھی نہیں۔۔۔اور گمر اہیت کے کسی گڑھے میں گر کریہ ہلاک بھی نہ ہوں۔۔

ویکھو قرآن کیا کہدرہاہے؟

يَّايُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوا قُوَّا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلْبِكَةً غِلاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا آمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ (١)

ترجمه كنز العرفان: " اے ايمان والو! الذي جانول اور اپنے گھر والوں كواس أگ سے بحياؤجس كا اید هن آدی اور پیھر ہیں ،اس پر سختی کرنے والے، طاقتور فرشتے مقرر ہیں جو اللہ کے حکم کی نافرمانی نہیں کرتے اور وہی کرتے ہیں جو انہیں تھم دیاجا تاہے "۔

کیا گوارا کریں گے آپ اپنی جانوں اور اور اپنی اولا و کو جہنم کی آگ کے سپر و کر دیں؟

پھر آج ہی ہے کوشش کیجیے اپنے بیچے کو قر آن وحدیث کی تعلیمات دیں۔اسے اس بےراہ روی کے دور میں جب کہ فتوں کی بارش ہور ہی ہے اور ہم نوران کی طرح غفلت کا شکار ہیں فکری ماہرین لیعنی علماء سمجھارہے ہیں اپنی اولاء کو دیتی تعلیم دیجیے۔ اے اعلیٰ اخلاق کی اسلامی ویکسین د بیجے تاکہ بید فتنوں کی فکری بیاری سے فی سکے مگر ہم نوراں کی طرح فکری طبیبوں کی بات مانے کو نیار خمیں ہیں۔۔۔۔⁽²⁾

(الله عزوجل بهم سب كو فكر آخرت عطافرهائ اپنيارے محبوب سَلَالْيَتُمُ ك صدقي بماري نسلوں کو نیک صالح بنائے ، ہمیں دنیاوآ شرت کی بھلائیاں نصیب فرمائے۔ آمین!)

**

اسلام اور فلسفه جہاد

سمیر، فلسطین ، شام اور پوری دنیا کی مسلمان بہنوں، بیٹیوں اور جوانوں کے نام

جواپنے اپنے خطے میں صبر واستقلال کے ساتھ کفار کے ظلم وستم بر داشت کرنے کے باوجود بڑی جزئت و بہادری سے کلمہ حق بلند کیے ہوئے ہیں۔



اسلام اور فلسفه جهاد



اسلامی تعلیمات (قرآن واحادیث کے مطالعہ) سے سیبات والحیح ہوتی ہے کہ جہاد اسلام کا ایک اہم رکن ہے۔ یہ تحض قال جنگ یاد حمن کے ساتھ و نیادی مال ودولت کے لیے محاذ آرائی کا نام تھیں بلکہ اس کا مقصد بوری و نیا کے لوگوں تک اللہ تعالیٰ کے اس آخری پیغام (اسلام) کو پہنچانا اور دين اسلام كوتمام اويان پر فالب كرناب اور وَيَكُونَ الدِّيدُنُ يله (١) پر عمل كرناب-ارشاد بارى تعالى ب:

ُ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَكُوْلًا لَكُمْ * وَعَلَى أَنْ تَكُوهُوْا هَيْئًا وَهُوَ خَيْرُ لَكُمْ ⁽²⁾ ترجمه كنزالعرفان: تم يرجهاد قرض كياكياب حالاتكه وه تنهيس ناكوارب اور قريب ب كه كوكي بات حمیدیں تاپند ہو حالا نکہ وہ تمہارے حق میں بہتر ہو۔

اور ارشاد فرمایا:

وَ آعِدُّوا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ زِيَالِمِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللهِ وَ عَدُوَّكُمْ وَ أَخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ * كَاتَعْلَمُوْنَهُمْ * اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ * وَمَا ثُنْفِقُوْا مِنْ فَي مِ فِي سَبِيِّلِ اللَّهِ يُوَفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُطْلَبُونَ (3)

ترجمه كنزالسرفان : " اور ان كے ليے جنتى توت موسك تيار ركھو اور جننے كھوڑے باندھ سكو تاكم اس تیاری کے ذریعے تم اللہ کے دشمنول اور اپنے دشمنوں کو اور جو اُن کے علاوہ بیں انہیں ڈراؤ ، تم انہیں نہیں جانے اور اللہ انہیں جانا ہے اور تم جو کھ اللہ کی راہ یس خرچ کرو کے حمیمیں اس کا نورابدله دياجائے گااور تم پر کوئی زیادتی نہیں کی جائے گی"۔

1 صرة اطل آيت 39: وَ قَاتِلُوْ هُدُ حَقَّى لَا تَكُونَ فِقَتَةً وَ يَكُونَ الدِّيدُنُ كُلُّهُ بِلَهِ * فَإِنِ الْفَهَوَا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَهِمِدُد مُرحمه كُرُ العرفان: اور ان سے نرويهال تک كه كوئى فساد بائى شدرہ اور سارا وین الله ای کاموم اے جر اگر دمیار آجامی اوالله ال کے کام دیکھ رہا ہے۔

^{2 (}البقرة، آيت 116)

³ والفال.آيت 60

ييارے آقا مُثَالِثُهُ عُلِمُ كامجوب ترين عمل:

_ جہادے متعلق فرمانِ مصطفیٰ سُکاٹیٹیٹر کو سکجا کیا جائے

توايك مغيم كتاب تيار بوجائ، چنانچية مل مين 3 فرامين مصطفى ملاحظه سيجيد:

(1) رسول الله منكافية في أن ارشاد فرمايا: " فتم اس ذات كى جس كے قبضہ قدرت ميں ميرى

جان ہے اگر ایسانہ ہوتا کہ مسلمانوں کے دل آزردہ ہوتے کہ میں ان کو چھوڑ کر جہاد پر چلاجاتا اور مجھے اتنی سواریاں بھی میسر نہیں کہ سب کوساتھ لے جاؤں تو میں جہاد پر جانے والے کسی بھی لشکر سے چھچے نہ رہتا اس ذات کی قتم جس کے قبضتہ وقدرت میں میری جان ہے میری

من سرے یہ مربان اللہ تعالیٰ کی راہ میں جہاد کروں اور شہید ہو جاؤں پھر زندہ کیا جاؤں (پھر

جهاد کروں) پھر شہید کیاجاؤں پھر زندہ کیاجاؤں (پھر جہاد کروں) پھر شہید کیاجاؤں"۔ ⁽¹⁾ اللّٰد اللّٰد جانِ جاناں حضور خاتم النبیین مَنَّاللَّیْمُ کاجذبہ جہاد اور خواہش شہادت۔ سبحان اللّٰد!

(2) اور حضور رحمته للعالمين مكالليظم نے ارشاد فرمايا : " جو شخص اس حال ميں وفات پا گيا كه نه

تواس نے جہاد کیااور نہ اس کے دل میں جہاد کا شوق پیداہوا، توابیا هخص نفاق (منافقت) کے

ایک شعبه پر قوت جوا "_(2)

(3) اور پیارے آقا حضور خاتم النبیین سَلَالْتُکُوّا نے ارشاد فرمایا: "میری دویا تیں ہیں ، جو انہیں پیند کر تاہے وہ مجھے پیند کر تاہے جو انہیں بُر اسجھتاہے وہ جھے برا سجھتاہے۔(وہ ہا تیں)

۱۰ نین پیسر راه بهروت فقرادر جهاد (بین) ₋ ⁽³⁾

جهاد کی فرضیت کیول ہوئی :امام الوعبداللہ محمد بن احمد قرطبی دحمة الله علیه فرماتے ہیں : " صحابہ کرام دعنی الله تعالی عنهم اجمعین پر حضور تاجدار ختم نبوت مَا اَلْتُلِیَّمُ کی معیت میں جہاد کرنا فرض مین تھا ، پھر جب شریعت حقد مضبوط ہوگئ اور قرار پکڑگئ توجہاد فرض کفایہ ہوگیا " (4)

^{1 (}صحيح مسلم، كتأب الإمارة ببأب فضل الجهاد ولاروج. ج2. ص631 مديث 4836. قريد بك ستأل، الأهور) 2 (ستن ابي داؤد، كتأب الجهاد، بأب كراهية ترك الغزو، ج2. ص196 مديث 2141 فريد بك ستأل، الأهور)

ه (سان) ایداود. تعاب انجهاد، یاب تراهیه ترک انفزورج کار کام درماند از مردم کار کار درماک انداز درماک انداز درماک

 ⁽مكاشفته القلوب، ص239، مكتبة البدينه، كراجي)
 (تفسير فاموس رسالت. ج2. ص22، مكتبه طلعه البدير عليدا، الاهور/تفسير القرطبي)

اس سے پید چلا جہاد کی فرضیت ہی شریعت حقد کو مضبوط کرنے کے لیے ہوئی ہے، لینی جب جب دین اسلام کے خلاف دین دھمن کے ظلم وجبر اور سازشوں کی آئد ھیاں چلیں تب تب جہاد فرض ہو جائے گا۔ جہاد اسلامی حکومت کی جانب سے ایک منظم کوشش کا نام ہے ، آج امت کے حالات کو دیکھا جائے تو ہر طرف مسلمان تباہ حال ہو کر رہ گئے ہیں۔ ایک طرف یہود ونصاریٰ دین اسلام کے خلاف سازشوں میں مصروف بیں تو دوسری طرف ہمارے در میان موجود لبرل اور سیکولر حضرات دین اسلام کے معاشر تی وسیاس پیلو کا انکار کر کے وین اسلام کی بنیاد ڈھائے پر شلے ہیں۔اغیار کے زہر آلود نظریات کو اپناکر اور انہیں مسلمانوں کی نظر میں خوش نما بنا کرماضی میں ہم سلطنت عثانیہ کو یارہ پارہ ہوتے و کیھے بچیں ، یہ وہ سازش تھی جو یہود ونصاریٰ کی طرف سے مسلمانوں کی اجتماعیت کو توڑنے کے لیے کی گئی جس کے بعد اُمت مسلمیہ آج تک سنجل نہیں سکی۔اُمت کی اس تباہ حالی کے باوجود ہمارے حکمران جہاو کے مقدس فریضہ کو انجام دینے اور غلبہ ' دین کی بات کرنے کے بجائے ، اغیار کے سامنے خو د کو امن پیند ثابت کرنے کے لیے ہر قشم کااسلحہ واسباب ہونے کے باوجو دکٹتی اور کٹتی امت مسلمہ کا تماشہ دیکھے رہے ہیں۔اللہ ان حکمر اتوں کو مظلوم مسلماتوں کی مدد کے لیے عملی اقدامات کرنے کی توفیق عطا فرمائے۔

جارے بیارے آقا حضور رحمتہ للعالمین مُنَافِیْنَم نے پوری زندگی میں جج اور عمرے تین چارک زندگی میں جج اور عمرے تین چار کیے ، مگر جنگیں 27 لڑیں اور 56 معرکوں میں صحابہ کرام کو روانہ فرمایا اور اب امتِ مرحم جج یہ جج اور عمرے یہ عمرہ کیے جاری ہے ، لیکن جہاد کی کوئی فکر نہیں۔۔!!

ذرا تقدیر کی گہرائیوں میں ڈوب جا تو مجی!

کہ اس جَنگاہ سے میں بن کے تی ہے نیام آیا

یہ مِعرع لکھ دیا کس شوخ نے محرابِ مجد پر

یہ نادال کر گئے سجدوں میں، جب وقت قیام آیا

(علامہ اقبال)

منتشر قین کے اعتراض کاجواب:

متشرقین(غیر مسلم مفکر) اسلام پریدالزام لگاتے ہیں کہ قر آن میں تھم جہاد ظلم وبربر بیت کا تھم دیتاہے اور مسلمان جہاد کے نام پر دہشت گر وی کرتے ہیں۔ جبکہ حقیقت اس کے برعکس ہے جیسے اوپر بیان ہوئی کہ اسلام کا فلسفہ جہاد و نیا بھر ہیں امن قائم كرف، باطل اويان پردين حقد اسلام كوغالب كرف كانام ب اور جارك آقا و مولا حضور خاتم النبيين مَنَّالَيْظِم نے جمیں جہاوسے متعلق جواصول وضوابط فراہم کیے ہیں (جنہیں ہم ذیل میں بیان کرتے ہیں) اُس ہے مستشر قین کے ان باطل اعتراضات کی جڑ کٹ جاتی ہے۔

اسلامی جہاد کاضابطہ:

ينخ الحديث والتفيير علامه غلام رسول قاسمي مد ظله العالى كصع بين: اسلامی جہاد کا ضابطہ میہ ہے کہ سب سے پہلے غیر مسلموں کو اسلام کی وعوت دی جائے۔ جسے

اسلام کی دعوت ہی ند دی گئی ہو اسکے خلاف جنگ کر نامنع ہے۔اگر وہ اسکے لیے تیار ہو جائیں تو پھر مجی ان کے خلاف جنگ کرنامنع ہے، (اسی طرح اگر کفار جذبیہ دے کر رہنا قبول کرلیں تو پھر مجی ان سے جنگ کرنامنع ہے)۔ لیکن اگر دہ اس بات کے لیے مجی تیار ند ہوں تو اب ان کے

خلاف با قاعدہ جنگ کڑی جائے گ۔

ہمیں یہ بات کہنے میں کوئی باک نہیں کہ اللہ کے دین کے علاوہ تمام اویان محض فتنہ اور فساد ہیں۔ اور فنٹے کو ختم کرنا ایسے ہی ہے جیسے سائپ ، بچھو اور پاگل کتے کو مار دینا۔ تمام مسلمان ا قوام (اور غیر مسلموں)نے اپنے اپنے ممالک میں فتنہ وفساد ختم کرنے کے لیے فتل ، چھانسی اور قید کی سر اور کا قانون نافذ کرر کھاہے۔ یہی نظام الله کریم نے لبنی وسیع سلطنت میں و سیعی پیانے پر نافذ کر دیاہے، جس کانام "جہاد"ہے۔اسلامی جہاد میں عور توں پچوں، بوڑھوں کو مارناای لیے منع ہے کہ یہ فتنہ نہیں پھیلاسکتے۔لیکن اگر عورت کفار کی حکمران ہو تواب اے مارنا جائز ہے ،اس لیے کہ اب وہ فتنہ چیلا رہی ہے ،(اس طرح اسلامی جہاد میں چرچ میں محصوریا در بوں، کھینوں میں موجو د کساٹوں، کفار کے تاجروں جو براہ راست جنگ میں ملوث نہیں ان کو قتل کر نامنع ہے، در خت کا ٹیا منع ہے ، کفار کے گھر ول میں واخل ہو نامنع ہے)۔

ثانیاً اسلامی جہاد سے ملتاجلہ متھم آج بھی ہائیبل (bible) میں موجود ہے۔ (1) بائیبل (کتاب استثناء، باب20:9-15)، (کتاب سموئیل اول، باب158،17) ملاحظہ ہوں ۔ بائیبل میں بیرواضح جہاد کاذکر ہوتے ہوے عیسائی مستشر قین کا اسلام کے تھم جہاد پر اعتراض گرنام مفتحکہ خیز ہے۔

ان سے بڑھ کر وہشت گر د کون:

آج تک پوری د نیایس سب سے زیادہ دہشت گردی

عیسائیوں نے کی ہے۔ دور کی باتیں چھوڑیئے صرف پہلی جنگ عظیم میں تقریباً دو کروڑ انسان مارے گئے۔اور دو کروڑسے زائد نوجی زخمی ہوئے۔ (2)

ووسری جنگ عظیم میں تقریباً ساڑے تین کروڑ سے زائد انسان قبل ہوئے۔ جنگ عظیم کے بعد

مختلف پیمار بول اور قبط سے مرنے والول کی تعد ادالگ ہے۔ (3) شریع میں کا جات کی میں نہ میں کی میڈیٹر کی سیٹر میں کی میٹر میں کی میں کا میں کا میں کا میں کا انتہا ہے کہ ان

ہیر وشیما اور ناگاسا کی بیں لاکھوں انسانوں کو ایٹم بم کے ذریعے اڑا دیا گیا، امریکہ اور ویت نام کی جنگ بیں وس لاکھ انسان مارے گئے۔ ⁽⁴⁾

1861 سے 1865 تک جاری رہنے والی امریکی خانہ جنگی میں تقریباً ایک کروڑ انسان قتل ہوئے۔ چند سال قبل امریکہ نے عراق پر مجموعی طور پر دوسری جنگ عظیم سے بھی زیادہ بارود پچینکا۔ (اسی طرح امریکہ کی پشت پناہی میں امرائیل کی جانب سے فلسطینیوں پر ظلم کی داستان رقم کی گئی،جو اب بھی جاری ہے)۔

لبذا محض زبان سے انسان دوسی کا دم بھرنا بغل میں چھری مند میں رام رام کے سواء کھھ نہیں۔(5)

^{1 (}مقالات قاسمي، ج 2.ص 80، رحمة للعالمين پيليكيشنز، لاهور)

⁽world war 1 death centre robert schuman report) 2

⁽https://en.wikipedia.org/wiki/World_War_II_casualties) ³

⁽deaths-world-war nationalww2museum.org) (https://www.britannica.com/event/Vietnam-War) 4

^{- (}Laillewar) vietliallewar, دروید. 5 (مقالانِ قاسمی، ج2، ص33، رحة للعالمین پیلیکیشانی(هور)

الل اسلام كاجتكى ريكارة:

یه تقی کفار کی بربریت اب اسملام کاغیر خونی انقلاب دیکھیں۔

سے کی طاری برریت ہوں کا درائی کریں اور نبی کریم منافظی کی جہادی سر گرمیوں کو دیکھیں تو سے
بات روزروشن کی طرح عیاں ہو جاتی ہیں کہ آپ منافظی آنے دفاعی اور اقدامی طور پر جہاد فرمایا۔
ان مجمول میں سوائے چندا کیک کے تمام اقدامی جہاد تھے۔ ان غزوات (جن میں رسول اللہ منافظ کے بنفس نفیس شرکت فرمائی) اور سرایا (جن مجمول میں صرف صحابہ کرام کو بھیجا) کی تعداد 80 سے زائد ہے، جن میں 27 غزوات اور 56 سرایا ہیں (ا)۔ ان غزوات و سرایا کے تعداد 80 سے زائد ہے، جن میں 27 غزوات اور 56 سرایا ہیں (ا)۔ ان غزوات و سرایا کے

مقاصد ورج ذيل تق :

﴿ وَالْووَل اور الليرون كا تعاقب اوران كى تاديب ﴿ و مثمنوں كا تعاقب ﴿ تبليغ اسلام ﴿ مقامى و شخصى واقعات ﴿ و مثمن كو مرعوب كرنا ﴿ و فع خطرات ﴿ بت شكنی ﴿ و مثمنوں كى سر گرميوں ہے آگا ہى حفظ ما تقدم ﴿ گستا خوں كے قبل كے ليے ﴿ و مثمن ہے كھلى جنگ (2)

ان 80 سے زائد مچھوٹے بڑے جنگی معرکوں میں شہید ہونے والے صحابہ کی گل تعداد مرف 25 اور قل کیے جانے والے کافر جن میں چور ڈاکو و غیرہ بھی شامل ہیں ان کی تعداد صرف 900 شی۔ اور فتح ہونے والے علاقے کا رقبہ تقریباً 10 لاکھ مربعہ میل تھا (3)۔ آپ مَکَّالَیُّنِا کے فریادہ میل تھا (3)۔ آپ مَکَّالِیُنا کے فریادہ میل تھا (3)۔ آپ مَکَالِیْنا کے فریادہ میل تھا (3) کا فدیہ بچوں کو لکھنا نے زیادہ تر جنگی قیدیوں کو جنگوں کے فوراً بعدرہا کر دیا اور باقی بچھ کی رہائی کا فدیہ بچوں کو لکھنا بڑھنا سکھانا تھا۔ کسی کی لاش کامشلہ کیانہ کھو بڑیوں کے مینار تغیر کیے۔ ان تاریخی اعدادہ شار اور جنگی قوانین وضو ابط کے بعد کیا کوئی شخص اسلام پر دہشت گر دی کی تعلیم کالیمل لگا سکتا ہے؟۔ کہاں کفار کی ظلم وبر بریت کی واستا نیں اور کہاں مسلمانوں کا جنگی ریکارڈ ۔۔۔ افسوس اس سب کے باوجود ہمارے حکر ان اور بعض دینی پیشوا (علائے سوء) مغر فی آ قاون کے سامنے خود کو آ من پیند ثابت کرنے کے لیے اسلام کے فلفہ جہادی کا انگار کر دیتے ہیں۔

^{1 (}ماخوذاسلامركاتصورجهاد.ص1.دارالكلام.اداركاسلاميقكروتحقيق. گيرات)

^{2 (}اذانِ عاز، ص 565. مكتبه طلح البدر عليداً، لاهور) 3 (اذانِ عاز، ص 567. مكتبه طلح البدر عليداً، لاهور)

علامه اقبال فرمات بين:

فتویٰ ہے شیخ کا سے زمانہ تلم کا ہے ونیا میں اب رہی نہیں تکوار کار گر ليكن جناب شيخ كو معلوم كما نهيس؟ مسجد میں اب مدوعظ ہے یے شودو ہے اثر تیغ و تفنگ وست مسلمان میں ہے کہاں ہو بھی، تو دل ہیں موت کی لذت سے بے خبر کافر کی موت ہے بھی لرز تا ہوجس کاول کہتا ہے کون اُسے کہ مسلمال کی موت مر تعلیم ا^مس کو جاہیے ترک جہاد کی دنیا کو جس کے پنچۂ خونیں سے ہو خطر ماطل کے فال و فر کی حفاظت کے واسطے لپورپ زره میں ڈوپ گیا دوش تا کمر ہم پوچھتے ہیں کھنخ کلیسا نواز سے مشرق میں جنگ شر ہے تومغرب میں بھی ہے شر حق سے اگر غرض ہے توزیرا ہے کیا بیات اسلام کا محاسبہ ، اورب سے ور گزر!

موجودہ دور بیں جب سمیر میں خون کی ندیاں بہائی جارہی ہوں ، ہزاروں مسلمان بیٹیوں کی عصمت دری کی جارہی ہو۔ عراق میں لاکھوں لوگوں کو شہید کر دیا جائے۔ افغانستان میں مسلمانوں کو کمنٹیز وں میں بند کر کے آگ پر دائوں کی طرح بھون دیاجائے۔ شام وفلسطین کے درو دیوار کو کیمیائی ہتھیاروں واسلحہ سے چھانی کر دیاجائے۔ برمامیں مسلمانوں کو ذرج کر کے ان کے گوشت کے کباب بناکر کھائے گئے اور وحشی در ندوں اور پر ندوں کو کھلائے گئے اور مناظر انٹر نیٹ پر موجود ہیں)۔ان سب کے ہمارے قبلہ اول میں یہودی داخل ہوگئے۔ (یہ مناظر انٹر نیٹ پر موجود ہیں)۔ان سب کے

بعد کیا کوئی مسلمان میہ بات کہہ سکتا ہے کہ ان ظالموں کے خلاف جہاد کرنالوگوں کو مروانے والی بات ہے ؟۔ اس سب کے بعد توبیہ فکر ہوئی چاہیے بھی کہ بروزِ محشر رب تعالی نے ہم سے پوچھ لیا کہ جس وقت دنیا بھر میں میرے بندوں پر ظلم وستم کے پہاڑ ڈھائے جار ہے ہتھے اُس وقت تمہادی قوت واسلحہ کہاں تھا جو ہم نے تمہیں عطا کیا تھا ؟۔ آن و دنیا کے مظلوم مسلمان ہم پر نظریں جمائے بیٹے، ہمیں مدو کے لیے پکار رہے بیں۔ لیکن افسوس ہمارے صاحب حکمران افترین جمائے بیٹے، ہمیں مدو کے لیے پکار رہے بیں۔ لیکن افسوس ہمارے صاحب حکمران افترار کے نشخ بیں گم یورپ کے سامنے خود کو امن پہند ثابت کرنے کے لیے لیکن آخرت سے بے پرواہ ہیں۔

قرآن یاک میں ارشادے:

وَ مَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِئْ سَبِيْلِ اللهِ وَ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الزِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوٰنَ رَبَّنَا آغُرِ جُمَّامِنْ لِهٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا * وَالْجَعَلُ لَنَامِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلُ لَّنَامِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ⁽¹⁾

ترجمہ کنزالعرفان: "اور تمہیں کیا ہو گیا کہ تم اللہ کے راستے میں نہ لڑو اور کمزور مردول اور عور توں اور عور تول عور توں اور پچوں کی خاطر (نہ لڑوجو) ہے وعا کر رہے ہیں کہ اے ہمارے رب! ہمیں اس شہرے نکال دے جس کے باشندے ظالم ہیں اور ہمارے لئے اپنے پاسے کوئی ہما یتی بنادے اور ہمارے لئے اپنی بارگاہ سے کوئی مددگار بنادے "۔

اور مسلمانوں کوجنگ میں اللہ کی درونصرت کا بقین ولاتے ہوئے ارشاد فرمایا:

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا لَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ (2)

ترجمہ کنزالعرفان: " اور مسلمانوں کی مدو کرناہمارے ذمہ کرم پرہے " سند ہے میں موسود کا میں اور مسلمانوں کی مدو کرناہمارے ذمہ کرم پرہے "

اور ارشاد فرمایا : يَآيَيُهَا الَّذِينَ أَمَنُوٓ اللهِ تَنْصُرُوا اللهِ يَنْصُرُ كُمْرَوَ يُكَيِّتُ اَقْدَامَكُمْ (3) ترجمه كنزالعرفان : "اسے ايمان والو! اگرتم الله كے دين كى مدو كروگے تو الله تمهارى مدو كرے گا

ربیت را مراق می ایس ایس وارد مارد اور مهمین ثابت قدمی عطا فرمائے گا "

1 (النساء،آيت 75)

2 (الروم، آينت 47)

(عين،آيت7)

اورارشاد فرمایا:

ٱلَّذِيْنَ أُمَنُوْا يُقَاتِلُونَ فِي سَمِيْلِ اللهِ * ﴿ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيْلِ الطَّاعُوْتِ فَقَاتِلُوۡا اَوۡلِيَآءَ الشَّيۡطُنِ ۚ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطِنِ كَانَ صَعِيْفًا ۚ ⁽¹⁾

ترجمه كنزالعرفان : " ايمان والے الله كى راه ميس جهاد كرتے وي اور كفار شيطان كى راه مي اور ت ہیں تو تم شیطان کے دوستوں سے جہاد کروہیںک شیطان کا مکر و فریب کمزورہے"

اوررب تعالی نے ارشاد فرمایا:

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ اللَّهُ إِنْ يَخْذُلُكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ وَ عَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكُّلِ الْمُؤْمِنُونَ (2)

ترجمه کنزالعرفان:" اگر الله تمهاری مد د کرے تو کوئی تم پر غالب نہیں آسکٹا اور اگر وہ تمہیں چپوڑ دے تو چھر اس کے بعد کون تمہاری مدد کرسکتاہے؟ اور مسلمانوں کو اللہ بی پر بھروسہ کرنا

گروہ لوگ جو لینی بیٹی ڈاکٹر عافیہ صدیقی خو د امریکہ کے حوالے کرکے امریکی ڈالر کیں۔

أنهيل رسول الله مَثَالِيَّةُ كُلُّم كَي أمت كا كيا احساس هو سكتاہے؟۔ اور جن وانشوروں كى نظر صرف ظاہری اسباب پر ہوتی ہے انہیں میہ بات ضرور سوچنی جاہیے کہ اگر سارا مدار معیشت پر ہی ہو تا تو رسول الله مَنَا لِيُنْكِمُ ميدان بدرين تشريف لے جانے سے قبل الل مكركے مقابلے ميں معيشت کھڑی کرتے، اس طرح قیصر و کسریٰ سے جہاد بعد میں ہوتے پہلے ان کے مدمقابل معیشت لائی جاتی لیکن جن کے دماغوں پر سیکولرازم کا خیط سوار ہو اُکے لیے بیہ باتیں اور رب تعالیٰ کی طرف ے قرآن یاک میں کیے گئے وعدے معنی نہیں رکھتے علامداقبال فرماتے ہیں:

> الله کو یامردی مومن په بھروسا ا بلیس کو بورپ کی مشینوں کا سہارا د نیاکوہے پھر معرکہ رُوں وبدن پیش تہذیب نے پھر اپنے در ندوں کو اُبھارا

^{1 (}النسأر، آيت 76)

دیں ہاتھ سے دے کر اگر آزاد ہو ملت ہے الی تجارت میں مسلماں کا خسارا

خارجہ پالیسی اور واخلہ پالیسی میں ترجیحات قائم کرنے پر کسی بھی حکر ان کی کامیابی کا دارو مدارہ، (لیکن) سب سے پہلے پاکستان؟ پاسب سے پہلے اسلام؟ زیادہ محترم امریکہ اور پورپ پاان سے محترم مسلمان- ہم نے ان باتوں پر بحیثیت مسلمان غور کرناہے یا بحیثیت سیکولر حکر ان؟ کوٹسامو قع ہے جب ہم نے زندگی کو ترجیح دیناہے اور کونسامو قع ہے جب ہم نے زندگی کو ترجیح دیناہے اور کونسامو قع ہے جب ہم نے موت کو ترجیح دینا آکسفور ڈکے پڑھے ہوئے اور کر سچین کو ترجیح دینا آکسفور ڈکے پڑھے ہوئے اور کر سچین مشتری سکولوں کے تعلیم یافتہ حکمر انوں کے بس کاکام نہیں۔ (1)

الله تعالیٰ نے ہمیں ان ظالم کا فروں کی زجر و تو تھے کے لیے اور مظلوم مسلمانوں کو ان کے تسلط سے نجات ولا کر اسلام کا حجنٹہ اہلند کرنے کے لیے اپنے تمام اساب وعلل اور تدبیر وں کو سکچا کرکے ان کا فروں کے خلاف ہتھیار اٹھانے کی اجازت ہی نہیں دی ہلکہ اس کا تھکم دیا ہے۔ اور یہی جہاد کی اصل ہے۔

ای پیس مقولوں (شہیدوں) کے لیے وائی عزت و تواب کا وعدہ ہے، کون کہہ سکتا ہے اس قسم کی لڑائی زیادتی و ناانسانی پر بنی ہے، کون دعویٰ کر سکتا ہے اس قسم کی لڑائی قانون و قدرت کے منافی ہے، کون کہہ سکتا ہے اس لڑائی کا مقصد اللہ تعالیٰ کی رضاجوئی، فلاح آخروی اور مظلوم و مجبور مسلمانوں کی امداد کے علاوہ پچھ ہے۔ کیا دنیا بھر کے مسلمانوں پر بونے والے مظالم کو بغیر طاقت کے صرف امن پیندی کی تقریر سے روکا جاسکتا ہے؟، اگر ایسا ہو سکتا تو کشمیر کی آزادی کے لیے امن پیندی کی در جنوں تقریر سے روکا جاسکتا ہے اقوام متحدہ کا طواف کافی ہوتا۔ گر ہم اپنے محسن کی یہ بات بھول گئے، علامہ اقبال کہتے ہیں:

^{1 (}مقالاتِقاسمي،ج2:ص354،رحةللعالمين پيليكيشلاسر گودها)

شراناوان امیدِ غم گساری ہازِ افرنگ است دلِ شاھین نسوزد بھرِ آن مرغی که درچنگ است ترجمہ: (اے ناوال! تہمیں کافرول سے غمگساری کی امید ہے؟) (حالا تکہ شاہین (ظالم) کاول اُس پر ندے پر رحم نہیں کھاتا جو اُس کے شکنج میں ہوتا ہے)

جذبہ جہاد ناپید کرنے والے عوامل:

سوال توبہ ہے کہ وہ کو نسے عوامل ہیں جس نے امت کے قلوب واڈھان میں جذبہ جہاد کو ناپید کرکے انہیں اس قدر بزدل بنا دیا۔ اس مقدس فریضہ پر دہشت گر دی کالیبل لگا کراس سے اُمت کے نوجوانوں کوبد ظن کرکے رکھ دیا۔

بدبات تاریخی حقائق میں سے ہے کہ جب یہودونساریٰ نے بدبات جان لی کہ مسلمانوں کے جذبہ جہاد کے ہوتے ہوئے انہیں مغلوب نہیں کیا جاسکتا۔ تواس مقصد کے حصول کے لیے اُنہوں نے تمام اُن چیزوں کو مسلمانوں سے دور کرنے کی ٹھانی جس سے کوئی تحتف نظریاتی مسلمان بن سکتاہے۔امریکہ نے مختلف ممالک کے حکمر انوں ادر جدید ذہنیت کے اسلامی سکالرز یراربول ڈالر کی فنڈنگ کی۔ مختلف اسلامی ممالک کے امداد کے نام پر اُن سے اپنی مرضی کے مطالبات منوائے گئے اور بیہ سلسلہ اب بھی جاری ہے۔ان ساز شوں کے تحت پاکستان کے نصاب تعلیم میں سے سیرت رسول مَاللہ کھم ، جنگ وجہاد کی آیات، فلسفہ شہادت، صحابہ کرام کے واقعات ، مسلمان فاتحین کے حالات اور ہر ایسی بات کو نکال دیا گیا جس سے اسلامی فکر جہاد اور اقامتِ دین کے نظریہ کو تقویت ملنا تھی۔اور پھر پاکستان کے میڈیا چینلز کے ذریعے جو قوم کی ذہن سازی کی گئی اور فحاثی و عربانی کا بازار گرم کرکے قوم کے نوجوانوں پرسے شرم وحیاء کی چادر کو تار تار کر دیا گیا اُس کا انکار کون کر سکتا ہے۔ یہ اغیار کا تسلط ہی تو ہے کہ آج ناموس رسالت مَنَا لِيُنْزُمُ يركوني ميذيا جِيتِل غيرت منداندر يور ننگ كرے تو أے رواز اينڈ ريكوكيش کی خلاف ورزی کا نوٹس بھجوا دیا جاتا ہے۔ بیہ سب وہی سازشی عوامل ہیں جن کی طرف علامہ ا قيال نے توجہ دلائی تھی:

وہ فاقد کش کہ موت سے ڈرتا نہیں ذرا رُوحِ محمد اس کے بدن سے نکال دو فکر عرب کو دے کے فرنگی تخیلات اسلام کو ججاز دیمن سے نکال دو افغانیوں کی غیرتِ دیں کا ہے یہ علاج ٹلا کو اُن کے کوہ دو من سے نکال دو اہل حرم سے اُن کی روایات چھین لو آہُو کو مرغزارِ خُتن سے نکال دو آہُو کو مرغزارِ خُتن سے نکال دو

پھر بعض ملکی وغیر ملکی جدید اسلامی مفکر وہ بیں جنہوں نے اغیار کے ساتھ باہمی دوستی و تعلقات کے سبب اقدامی جہاد کا اٹکار کر دیا۔ حالا تکہ حضور رحمۃ للعالمین کی حیات طیب منافیظ میں جو جنگی معرکے ہوئے ، آن میں سوائے چندا یک کے تمام اقدامی جہاد ہی شھر۔ انہی جدید مفکروں کے اس باطل نظریہ کی وجہ سے آج لوگوں نے یہ کہنا شروع کر دیا کہ اب جہاد کا زمانہ نہیں رہا۔ حالا تکہ حضور جانِ رحمت منافیظ نے ارشاد فرمایا:

"میری امت کا ایک گروہ بمیشہ حق کی خاطر جنگ کر تارہے گا، وہ لو گوں پر غالب رہیں گے حتیٰ کہ قیامت آجائے گی"۔ ⁽¹⁾

اور رسول الله مَنَّالِيَّنِمُ نِهُ فرمايا:" مجھے قيامت كے قريب تكوار دے كر بھيجا گيا ہے تاكہ الله كى بى عبادت كى جائے جس كاكوئى شريك نہيں ، ميرا رزق ميرے نيزے كے سائے كے سائ

وہ لوگ جو کہتے ہیں کہ اب جہاد کا زمانہ ٹہیں رہاان لو گوں کے متعلق بھی حدیث پاک میں حضور خاتم النبیین منگافیز کم نے پہلے ہی ہے اطلاع دی تھی، چنانچہ فرمایا:

"جہاد ہمیشہ میٹھا (پہندیدہ)اور تروتازہ رہے گا جب تک آسان سے بارش برستی رہے گی

أصحيح مسلم ، كتاب الإمارة بأب قوله لا تزال ... ، ح. ص 659 ، حديث 4931 ، قريديك سثال ، لا هور)
 (مستداما م احد) روايت اين عر , ح , ح , 29 ، ص 294 ، مكتبه رحمانيه . لا هور)

اور لوگوں پر ایسا زمانہ بھی آئیگا جب ان میں سے پھھ قرآن پڑھنے والے لوگ کہیں گے کہ یہ جہاد کا زمانہ جہاد کا بہترین زمانہ ہوگا، جہاد کا زمانہ خیاں زمانہ ہوگا، حجاد کا زمانہ خیاں نمانہ کویائے (تویاد رکھے کہ) وہی زمانہ جہاد کا بہترین زمانہ ہوگا، صحابہ کرام نے عرض کیا: یارسول اللہ متالیقی آئیلی ایسی کوئی خض سے کہہ سکتا ہے کہ اب جہاد کا زمانہ نہیں رہا؟ تو حضور اکرم متالیقی نم نم نم اللہ تعالی کی بھی لعنت ہوگی اور قرشتوں اور تمام انسانوں کی بھی ا۔(1)

ای طرح ایک طبقه وه نکلاجس نے اتخاد بین المذاہب اور صوفی ازم کے نام پر اسلام کے بنیادی عقائد و نظریات کو مجروح کیا اور کہا کہ صوفیا کے طریقے پر چلتے ہوئے جنگ وجدال سے مکمل اجتناب کیا جائے۔ حالا تکہ ہمارے اکابر صوفیا و مشائ (حضرت حسن بھری ،عبداللہ بن مبارک ، ابراہیم بن او هم ، بایزید بسطامی ، حضرت سری سقطی وغیر ہ در حصم اللہ) کا طریقتہ بھی رہا کہ اپنے مریدین کو غیرت و حمیت کا درس دیا کرتے اور ان کے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے میں ایک میں انہا کی اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے میں ایک میں انہا کی انہام دیا کرتے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے میں انہام دیا کرتے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے ہمراہ جہاد فی سبیل اللہ کا فریصنہ انجام دیا کرتے ہمراہ بھی کا فریصنہ کے میں انجام دیا کرتے ہمراہ بھی کا در س

خود بدلنے نہیں ، قرآں کوبدل دیتے ہیں ہُوۓ سُ درجہ فقیبانِ حرم بے توفیق! ان غلاموں کابیہ سلکہہ کہنا قصہ کہ کتاب کہ سِکھاتی نہیں مومن کوغلامی کے طریق!

(علامه اقبال)

حضرت عبدالله بن مبارک رحمة الله علیه صوفیا کو تقیحت کرتے ہوئے ارشاد فرماتے ہیں: "اے ٹرم لباس پہن کرعباوت گزاروں میں شامل ہوئے والے صوفی اسر حد کولازم پکڑ، اور وہیں عبادت میں مشغول ہوجا"۔(3)

^{1 (}مشارع الاشواق، ص، حديث 40، دار البشار الاسلامية، پيروت، لبدان)

^{2 (}صوفیا کرام کے جہاد فرمانے سے متعلق مفتی ضیاء احمد قاوری حفظ اللہ کی تصنیف "صوفیانہ کرام کی مجاہد انہ زئدگی" کا مطالبہ سیحہ ک

^{3 (}ماخوذاسلام كاتصورجهاد, ص11، دار الكلام، ادارة اسلامى فكرو تحقيق، كجرات)

الله بیغام حسینیت کے علمبر وار امیر المجاہدین علامہ خادم حسین رضوی دحمة الله علیه فرماتے ہیں: "وہ مخص جس میں اتن ہمت وطاقت نہیں کہ تلوار اٹھاسکے، أسے اس بات كاحق بالكل نہیں كہ تلوار اٹھاسکے، أسے اس بات كاحق بالكل نہیں كہنچتا كہ وہ سید المجاہدین حضور رحمة للعالمین مَا الْقَیْمُ كی تلواروں كی ہی نفی كر وے "۔

مسلمانوں کی ذلت کی وجہ:

موجودہ حالات میں غور و فکر کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ حضور نبی مکرم منافیق کا بیہ ارشاد حرف بحرف کے ہے کہ آج امت مسلمہ تعداد کے لحاظ سے کثیر ہے ایک جائزے کے مطابق دنیا میں مسلمانوں کی تعداد (1.8 billion) ہے اس لحاظ کے مطابق مسلمانوں کی آبادی دنیا میں 24 ممالک ایسے جہاں مسلم آبادی دنیا میں 24 ممالک ایسے جہاں مسلم آبادی کا غلبہ ہے۔ وافر وسائل سے آزاستہ ہے، ہر قشم کے اسلحہ سے لیس ہے لیکن اس کے باوجود ذات ور سوائی ان کا مقدر بنی ہوئی ہے۔ کفر ہر محاذ پر بر سر پر پکار ہے اور مسلمانوں کی زندگی اجیر ن بنائے ہوئے ہوئے ہوئے بھی آج

^{1 (}سان) إيداؤد، كتأب، البلاحم، يأب في تداعى الامم. ج3، ص257-حديث3745، شياء القرآن يمل كيشانز، لاهور)

مسلمان دنیا میں رسوا کیوں ہیں ؟ کیاوجہ ہے کہ مسلمانوں کاخون پانی سے بھی سٹا ہے اور مسلمانوں میں کوئی پوری جرءت و ولیری کے ساتھ ان ظالموں کی آ تکھوں میں آ تکھیں ڈال کر بات کرنے کے لیے تنار نہیں تواس کا جواب وہی مسلمانوں کولاحق بیاری "وہن "ہے جس کی نبی غیب دان حضور خاتم النبیبین منگافیونم نے پہلے ہی نشاندہی فرما دی تھی (جیسے اوپر حدیث میں ذکر گزرا)۔

موت کاخوف اور معاشی نقصان کی فکر (وجن) ہی ہے جو آج جمیں دنیا بھر کے مظلوم مسلمانوں کی مدد کے لیے طاقت کے استعال سے رو کتا ہے۔ ہر کوئی اینی دنیا کو بچانے کے لیے کفار کے اشاروں پر قربان اور ترکب جہاد کیے ہوئے ہے۔

اگر آج امت مسلمہ کفرے خلاف اٹھ کھڑی ہوتو ان کے باہمی اختلافات میں شدت، فرقہ واریت وغیرہ فوراً دم توڑ جائیں۔ کیا ہم نے ماضی میں دیکھا نہیں؟ کہ جب بھی اس قوم پر كوئى مصيبت (طوفان،سيلاب، زلزله، جرت وغيره) آئى توبه قوم ان مصائب ك مقابل اور مسلمانوں کی مدو کے لیے تمام یا ہمی اختلافات مجلا کر ایک ہو گئی۔ہمنے جب کرنے والے کامول (اقامت دین کی کوشش) کوترک کردیا تو غیر ضروری کامول میں مشغول ہو گئے۔اگر امت مسلمہ اپنی عظمت ِرفتہ بحال کرنا چاہتی ہے تو ان کے پاس نظام مصطفیٰ مَاکَالْتِیْمُ نافذ کرنے اور اسلام کے "فلقہ جہاد" کو معیج معنوں میں اپنانے کے اور کوئی چارہ نہیں۔ جیسے کہ حدیث ياك مين حضور رحمة للعالمين جناب خاتم النبيين مَثَاثِينَ كاواضْح ارشاد موجو دہے، فرمایا: "جب تم تی عینه (سودی کاروبار) کرنے لگ جاؤے اور تم بیلوں کی دم کو پکڑے تھیتی بازی (لینی کاروبار میں) میں مشغول ہوجاؤے اور (تَدِ کُتُمُ الْجِهَاٰءَ) جہاد کو چھوڑ دو کے تو اللہ تم پر ذلت مسلط کر دے گا اور اسے اس وقت تک دور نہیں کرے گا،جب تک اپنے دین کی طرف لوٹ نہ آؤگے۔(لینی تم پر ذلت اس وفت تک مسلط رہے گی جب تک تم دین کی خاطر جدوجهد "جهاد" دوباره شروع نه کردد) "_⁽¹⁾

^{1 (}سآن الى داؤد، كتاب ،بأب في العبي العيدة، ج2، ص589، حديث 3003، شياء القرآن ليمل كيشنز، الاهور)

علامه اقبال امت مسلمه ك زوال كاذكر كرية موعة فرمات بين:

اگرچہ زر بھی جہاں ہیں ہے قاضی الحاجات جو نقر سے ہے میسر، تو گری سے نہیں اگر جوال ہوں مری قوم کے جسور وغیور قلندری مری کچھ کم سکندری سے نہیں سبب کچھ اور ہے، تُوجس کوخود سجھتاہے زوال بندہ مومن کا بے زری سے نہیں اگر جہال میں مر اجوہر آشکار ہُوا قلندری سے ہُوا ہے، تو گری سے نہیں

رب کریم کی بار گاہ میں وعاہے کہ وہ امت مسلمہ کوعظمت رفتہ پھرسے عطافرمائے اور دین اسلام کے نورسے ہر سواجالا فرمائے۔ آمین

جہادکے فضائل و تر غیب پر چند فرامین مصطفیٰ عَلَیْمُ الله مطلح ہوں

پیارے آتا حضور رحمۃ للعالمین مَلَا لَیْتُمُ نے اپنی امت کو جوجہاد کا شوق وتر غیب ولاتے ہوئے

۔۔ ار شاد فرمایا: ☆™ایک دن اور ایک رات سرحد پر پہرہ دینا ایک ماہ کے روزوں اور قیام سے بہتر

ہے اور اگر وہ مر گیا (یعنی پہرہ دیتے ہوئے شہید ہو گیا) تواس کادہ عمل جاری رہے گااس کارزق

جاری کیاجائے گااوراس کی قبر کوفتنوں سے محفوظ کیاجائے گا"۔(1)

اور رحت عالم مَنَّالَيُّهُمُ في تير اندازي كي فضيلت بيان كرتے موئے ارشاد فرمايا: وَآهِدُّوْا لَهُ وَاللهُ وَآهِدُّوْا لَهُمُ مِنَّا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ "كفارك خلاف زياده سے زياده قوت حاصل كرو۔ سنو قوت تير

اندازی ہے، سنو قوت تیر اندازی ہے، سنو قوت تیری اندازی ہے "_⁽²⁾

(سبحان الله! في غيب دان مد بات جانة تقد كه ايك دنت آئے گاكه قوت كامدار سيكنے والے

جھیاروں (مزائلوں) پر منحصر ہوگا،اس لیے حضور علیہ السلام نے بار بار ترغیب فرمائی) ﴾ اس طرح ایک حدیث پاک میں آقا کریم مَثَلَ فِیْتِمْ نے ارشاد فرمایا: "الله تعالی ایک تیر کے

بھا ای سرن ایک حدیث یا داخل فرمائے گا۔ ایک اے بنانے والا جو اے بناتے وقت خیر و ساتھ تین آدمیوں کو جنت میں داخل فرمائے گا۔ ایک اے بنانے والا جو اے بناتے وقت خیر و

تواب کی نیت کرتا ہے، دوسرا اسے چھینکنے والا ، تیسرا سچھینکنے والے کو (تیر) دینے والا۔ تم تیر اندازی اور شہسواری سیکھو اور تمہارا تیر اندازی سیکھنا میرے نزدیک تمہارے شہسوار بننے کی

نسبت زياده پينديده ٢٠ [(3)

اور جانِ جاناں مَثَاثِيْنِمُ نے ارشاد قرمايا: "جس مخض نے الله پر ايمان اور اس كے وعده كى الله ير ايمان اور اس كے وعده كى تصديق كى وجہ سے الله كى راه يس (جہاد كے ليے) كھوڑا بالا _ اس كھوڑ سے كاچاره، اس كاياتى اور

اس کی لیداور اس کا پیشاب قیامت کے دن میز ان میں وزن کیا جائے گا"۔ (4)

اور ارشاد فرمایا: "لوگو! و همن سے مقابلے کی آرز دنہ کر وبلکہ اللہ تعالی سے عافیت ما گلو۔ لیکن اگر دهمن سے مقابلہ ہو تو صبر کر واور خوب جان لو کہ جنت تکواروں کے سائے تلے ہے۔ (5)

1 (صحيح مسلم، كتأب الإمار 8 بأب قضل الرباط.... ج2، ص656 منيك 4915 فريد بك ستأل الأخور)

^{2 (}صحيح مسلم، كتاب الإمارة، بأب قضل الرحى ج2، ص657، حديث 4923. قريد بالت سنال الأهور) 3 (سنن ابي تأوّد، كتاب الجهاد، بأب في الرحى .ج2، ص201، حديث 2.152 منبياء القرآن بعلى كيشان الأهور)

^{4 (}معيح اليفاري، كتاب الجهاد، بابسن احتبس قرساً -2، ص94 حديث 2853، قريد بلت سئال الاهور)

^{5 (}صفيح البغاري، كتاب الجهاد باب كان التي اذا لم يقاتل، ج2. ص134 مدين 2966 قريدبك ستال الاهور)

اسلام اخلاق سے پھیلایا تکوار ہے؟

اس سوال کے جواب میں مصنف کتب کثیرہ جناب مفی ضیاء احمد قادری مد ظلہ العالی نے تفسیر ناموسِ رسالت جلد دوم میں تفصیلی کلام کیا ہے اور بے دینوں کی منافقت کو خوب عیاں کیا۔ ہم یہاں اسے احتصار کے ساتھ پیش کرتے ہیں۔

کرشتہ چنددہائیوں سے لوگوں ہیں یہ نظریہ پھیلا یاجادہاہے کہ اسلام تلوار (یعنی پاور) سے خبیں پھیلا بلکہ صرف اخلاق سے پھیلا ہے۔ آئ عام مسلمانوں کے ذہنوں میں اخلاق کی غلط تشریحات بھر کر اُنکی سوچ و فکر کو پیسر تبدیل کر دیا گیا، اور انہیں دین اسلام کے بہت سے احکابات کا منکر بنادیا گیا ہے۔ یہ اسلام کی کوہان "جہاد" کو غیر اسلامی نعل اور مجابدین اسلام کو وہشت گر دوجانے گئے ہیں۔ جتنے بھی اگریز فیکٹریوں کے پرزے تیار ہوئے انہوں نے کفارسے دہشت گر دوجانے گئے ہیں۔ جتنے بھی اگریز فیکٹریوں کے پرزے تیارہوئے انہوں نے کفارسے لینی دوستیوں، نیشنیلی اور ویگر لالحوں کے سیب "اسلام کے فلفہ جہاد"کا اٹکار کر کے اسلام کی عمارت ڈھادیے ہی کفار کی مدو کی اور آئ امت کو اس حال تک پنچا دیا کہ پوری دنیا میں مسلمانوں کی مدد کے لیے جہاد مسلمانوں کی مدد کے لیے جہاد کانام تک نہیں لیتا۔ یہاں ہم اس غلط نظر یے کے چھے چھی منافقت سے متعلق کھے ہیں۔

بِ شک اسلام اخلاق سے پھیلا ہے لیکن بید دعویٰ غلط ہے کہ تلوار اخلاق کی ضدہے۔ بید شبہ اس وقت پیدا ہواجب حضراتِ علیائے کرام سے پوچھا گیا کہ اسلام کی اشاعت کس طرح ہوئی۔ انہوں نے ایک جامع لفظ اخلاق کا استعال فرمایا اور جواب دیا کہ اسلام اخلاق سے پھیلا ہے۔ لیکن علیائے کرام کے اس قول سے بیہ ثابت کرنا کہ اسلام کی اشاعت میں تلوار کا کوئی دخل نہیں ہے بلکہ تلوار تو اخلاق کی ضدہے۔ بید دین کو بگاڑتے اور مسلمانوں کو نہتا کر کے اپنے دھمن کے لیے تر نوالہ بنانے کی ایک سوچی سازش ہے۔

اصل بات یہ بھی کہ مسلمانوں کی بہادری، جوانمر دی، تلوار بازی اور شوق شہادت کے سامنے پوری دنیا کا کفریے بس ہو چکاتھا اور حالت یہ تھی کہ کفار کے لیے اسلام، موت یا غلامی

کے علاوہ چوتھا اور کوئی راستہ باتی نہیں تھا۔ اطر اف عالم میں مسلمان فاتحین پہنچ کچکے تھے اور لا کھوں انسان جوت ورجوق اسلام میں داخل ہورہے تھے۔ اس وقت دشمنانِ اسلام نے سے سوچا کہ تیر تکوارے ان شیدائیوں کو اسلے سے منظر کیا جائے عیش وعشرت کی زندگی کو شہادت کی موت کے بھلانے کا ذریعہ بنایا جائے۔ چنانچہ انہوں نے اسلام اور مسلمانوں کے خلاف پر و پیگیٹرہ شروع کیا کہ اسلام توطافت کے بل بوتے پر دنیامیں مسلط ہوا ہے۔ اس نے تکوار کی نوک گلے پرر کھ کرلو گوں کو کلمہ پڑھایا۔اپنے اس موقف کو مزید تقویت دینے کے لیے کفارنے چھلی چند وہائیوں میں مذہبی لبادہ اوڑھے بعض وہشتگرد تنظیموں سے دہشت گردی کی کاروائیاں تھی کروائیں تاکہ اسلامی جہاد کو بدنام کیا جاسکے (اس طرح مرزا قادیانی جیسے حموثے مدعی نبوت سے جہاد کی فرضیت کا انکار کروایا اور پورپ سے درآ مد شدہ جدید مذہبی سکالرز سے اقد امی جہاد کا انکار کروایا)۔کافرول کے اس خطرناک اور زہر ملے پر وپیگیٹرے کے جواب میں وقت کے علاءنے ان قرآنی احکامات کی وضاحت فرمائی کہ اسلام کسی کوزبروستی مسلمان ہوئے کا تھم نہیں ویتا، اسلام کا نظام ، نظام جبر نہیں بلکہ نظام اخلاق ہے۔ علماء کرام کی بیہ تصریح بالکل ورست تھی کہ دین اسلام کے قبول کرنے کے سلسلہ میں ہمارے مذہب میں کوئی جبر و کراہ خہیں ہے۔ بلکہ جس کا دل چاہے مسلمان ہوجائے اور جس کا دل چاہے وہ جزیبہ دے کر مسلمانوں کی غلامی میں رہے۔مسلمان اس کی جان ومال کا وفاع کریں گے اور اسلام کا نظام نظام اخلاق ہے۔ کہ اس میں ہر معاملے میں اخلاق کو مد نظرر کھاجاتا ہے (اخلاق کی تشریح آگے آرہی ہے)۔ مگر ساز شیوں نے علمائے کرام کی اس تصریح کا غلط مفہوم دنیا کو سمجھایا اور میہ باور کروانے کی کو شش کی کہ علماءنے فیصلہ سنا دیا ہے کہ اسلام اخلاق سے پھیلا ہے۔اس میں تکوار کی نہ کوئی گھجاکش ہے اور نہ دخل۔

چنانچہ اس بات کو استے زور و شور سے بہان کیا گیا کہ مسلمان واقعی تکوار اور اخلاق کو دو متضاد چیزیں تصور کرنے گئے۔ انہوں نے سمجھا کہ ہمارے مذہب میں اسلحہ تو ایک جرم ہے۔ ہمارا فہ جب اخلاق کا درس دیتا ہے۔ اخلاق کا تقاضہ یہ ہے کہ پچھ بھی ہوجائے، وطن چھن جائے، غلامی کرنی پڑے، جان دینی پڑے، عزت کو ہر باد کرنا پڑے، دین ہاتھ سے چلا جائے مگر اسلحہ کو ہاتھ تہیں لگانا۔ چنانچہ مسلمانوں کو اس امن پہندی کا کلمہ پڑھا کر آج کفار نے خود

ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم تک بنالیے ، وہ مسلمانوں کے جس خطے کو چاہتے ہیں منٹوں میں مٹادیتے ہیں اور اگر مسلمان ممالک بڑے ایٹی بھیار تیار کرناچاہیں توان پر بین الا قوامی سطح پر پابندیاں لگواکر (isolate) کر دیاجا تاہے۔علامہ اقبال کہتے ہیں:

بہترہ کہ شیر دل کو سکھادیں رم آ ہُو یاقی نہ رہے شیر کی شیری کا فسانہ کرتے ہیں غلاموں کو غلامی پہ رضامند تاویل مسائل کو بناتے ہیں بہانہ

یہ نتیجہ ہوااس اخلاق پر عمل پیراہوئے کا،جس اخلاق کو ہم نے تکوار کی ضد سمجھااور جس اخلاق کو ہم نے بزولی، سستی، کا ہلی اور اپانچ سمجھا، حالا نکہ ایسے اخلاق کی تعلیم نہ قر آن کریم نے دی، نہ حدیث شریف نے اور نہ ہی فقہاء کرام دھیۃ الله علیهم نے ہیہ سمجھایا اور نہ ہی مشائخ و اسلاف نے۔اب اخلاق کی درست تشر تک پڑھیں۔

اخلاق کی درست تشریح:

۔ اخلاق مسکرائے، ہننے، ظلم سبنے کانام نہیں بلکہ ہرونت ہر حال کے مطابق ایسا کام کرناجواس حال اورونت کے متاسب ہواوراس کے بگاڑ کاذریعہ نہ ہویہ حسن خلق ہے۔

🖈 پیار کے وقت نرمی اور سختی کی جگه پر سختی حسن خلق کہلاتی ہے 🖈

حسن خلق کے اس معنی کو ایک عام فہم مثال کے ذریعے سے سمجھا جاسکتاہے۔ ایک آدمی نے کسی کتے کو پیاسا مرتے دیکھا اور اس نے اسے پانی پلا دیا۔ اس کا بیہ فعل یقیناً حسن خلق ہے۔ لیکن اس نے جیسے ہی اس کتے کو پانی پلا یا کتا کسی مسلمان عورت کو کا شخے کے لیے لیکا۔ اب اس نے لا مٹمی کے ذریعے سے کتے کاعلاج کیا تو اس کا بیہ مارنا بھی حسن خلق ہے۔ اسی طرح والدین کا اپنے نیچے کی تربیت کے لیے اُس پر سختی کرنا بھی حسن اخلاق ہی کہلا تا ہے۔ الله تعالی نے قرآن مجید میں اپنے محبوب مَنَّالَیُّنِیُّمُ کے اخلاق مبارکہ کے متعلق ارشاد فرمایا: وَ إِنَّكَ لَعَلْ خُلُقٍ عَظِیْمِهِ (1) ترجہ كنزالعرفان: (اور بینک تم یقیناً عظیم اخلاق پر ہو۔)

اس گواہی کا مطلب بیہ ہے کہ حضور تاجدارِ ختم نبوت سُلُالْیَا عجسم اخلاق میں۔ لیکن ہم سیرت رسول سُلُلْیَا کی اس کا مطالعہ کریں توجہاں آپ سُلُلْیَا کی رحم دلی، غرباپروری، بیکسوں کی یادری جیسی عظیم صفات کو دیکھتے ہیں وہاں ہمیں بیہ بھی نظر آتا ہے کہ حضور رحمۃ للعالمین مُنَالِّیٰ کُلُم کُوروانا مِن مُنالِیْ کُلُم کُلُم کُلُم مُہوں میں ایٹے صحابہ کرام کوروانا فرمایا۔ بیہ بھی حضور رحمۃ للعالمین مُنَالِّیٰ کِم خلق عظیم ہی کاحصہ ہے۔

کیونکہ اگر اخلاق اور تلوار آپس میں متضاد چیزیں ہیں تو پھریقیناً تلوار اٹھانا بھی بداخلاقی ہی کہلائے گا۔ لیکن تاریخ گواہ ہے ہمارے حضور تاجدار ختم نبوت منگافینے کم نے تلوار اٹھائی اور اٹھوائی اور سرزمین مجازسے کفر کے کینسر کو کاٹ پھینکا اور پورامعاشرہ صحت مند ہوگیا اور اسلام اور ایمان کی ہوائیں قیصر دکسریٰ کے کفر کو ہجکولے دینے لکیں۔

اس طرح قرآن مجيد كوديكيف سے معلوم موتاب كه قرآن مجيد تو مسلمانوں كونماز، روزه،

زکوۃ اور جے کے ساتھ جہاد اور قال کا بھی تھم دے رہاہے۔ بلکہ قرآن مجید کی محکم آیات سے جس طرح جہاد کی فرضت، فضیلت، اس کے جزئیات کی تشرح فرمقاصد اور حدود معلوم ہوتی بین کسی اور تھم سے متعلق الی تشریخ قرآن مجید میں موجود نہیں۔ چالیس سے زائد مقامات پر تو قال کا لفظ استعال ہواہے۔ شہدا کی الی فضیلتیں بیان فرمائی ہیں کہ اگر ان کا تذکرہ کیا جائے تو شوقِ شہادت سے دل چھٹے گئے۔

توسوال یہ ہے کہ کیا قر آنِ مجید نعوذ بااللہ بداخلاتی کی دعوت دے رہاہے؟ یاصرف قال جیسی مجوری کے وقت کی چیز (جیسا کہ بعض لوگوں کا خیال ہے) پر اس قدر زور لگار ہاہے اور قال جیسی مجوری کے وقت کی چیز (جیسا کہ بعض لوگوں کا خیال ہے)۔ جیموڑنے پر طرح طرح کی وعیدیں سنار ہاہے؟۔

بہر حال بیربات جارے ایمان کا حصہ ہے کہ جارے حضور تاجدارِ ختم نبوت مُنَّا اَلَّهُمْ جیسے اخلاق سے اور جمیں ان دونوں میں تکوار، اخلاق سے اور جمیں ان دونوں میں تکوار، جہاد و قبال جیسی چیزیں وافر مقدار میں نظر آرہی ہیں۔ چنانچہ ہم دعوے کے ساتھ یہ کہنے میں حق بجاد و قبال جیسی کیزیں وافر مقدار میں نظر آرہی ہیں۔ چنانچہ ہم دعوے کے ساتھ یہ کہنے میں حق بجانب ہیں کہ اسلام اخلاق سے بھیلا ہے اور اخلاق اس وقت تک مکمل نہیں ہوتا جب تک اس میں تکوار نہ ہو۔

اس کی عقلی حیثیت بھی مخفی نہیں کہ ایک ڈاکٹر جب مریض کے کینسر دالے حصے کو تیز دھار چیزے کاٹے تو اُس کو یہ نہیں کہاجاتا کہ ڈاکٹر صاحب! آپ تو پڑھے لکھے ہیں اور یوں کاٹے کی ہاتیں کررہے ہیں بلکہ اس کاشکر یہ اوا کیاجاتا اور فیس بھی دی جاتی ہے۔لیکن اگر معاشرے سے کفرکے کینسر کوکاشے کی بات کی جائے تو کچھ کو گوں کو یہ بداخلاقی نظر آتی ہے۔

تو بدل گیا تو بہتر کہ بدل گی شریعت کہ موافق تدروال نہیں دین شاہبازی ترے دشت ودریش مجھ کووہ جُنوں نظرنہ آیا کہ سکھا سکے خرد کو رہ و رسم کارسازی (طلماتیال)

آئے کے بعض لوگوں کا یہ کہنا ہے کہ کافر ہمارے اخلاق دیکھ کر خود مسلمان ہوجائیں گے۔ اس دور میں یہ دعویٰ انتہائی مفتحہ فیز ہے۔ کیونکہ اخلاق اس قوم کے دیکھے جاتے ہیں جس کی اپنی کوئی حیثیت ہو، جس کا اپنا کوئی نظام چل رہا ہو۔ آئے تک ایسا نہیں ہوا کہ کوئی آزاد قوم کی اینا کوئی حیثات ہوں کہ اپنی کوئی حیث کی ایسا نہیں ہوا کہ کوئی آزاد قوم کی خیام ہو تے تھے تو لوگ ان کو دیکھتے تھے اور مسلمان ہوتے تھے۔ مگر اس وقت تو ہم ملکوں میں داخل ہوتے تھے تو لوگ ان کو دیکھتے تھے اور مسلمان ہوتے تھے۔ مگر اس وقت تو ہم ایک قوم کی حیثیت ہے کوئی وقعت ہی نہیں رکھتے ، ہماراسلامی نظام کہیں بھی نافذ نہیں، صرف ایک تو میں موجود ہے اور ہمیں اس کے نافذ کرنے میں دلچھی بھی نہیں بلکہ جو ہفض بھی وین اسلام کے نفاذ کی بات کرے ہم اسے امریکہ کے دشمن سے زیادہ اپناد شمن جانے ہیں۔ ہم نے دیند عبادات کو اسلام سمجھ رکھا ہے اور ایک عالمگیر نظام کو رہبانیت بنا دیا ہے۔ اگرچند افراد کہیں اسلام میں واغل ہو بھی گئے ہوں یا ہور ہے ہوں تو اس سے اسلام کو وہ غلبہ و عظمت تو نہیں ملک تی جس کا ہمارے دب نے ہمیں ملکف بنایا ہے۔

ایک اہم کت : اس وقت تواسلام کے پھیلنے کا نہیں بلکہ دفاع کامسکہ در پیش ہے۔اخلاق کی خلط تشریح کرنے والے اگر تشمیر، شام ، فلسطین ، برما، عراق وغیرہ مسلم ممالک کی تباہی اور امت کی اس زبوحالی کے باوجو د مسلمانوں کو اسلحہ وطاقت کے ذریعے اپنے جان، عرت وعصمت اور وطن کی حفاظت کرنے کی اجازت وینے کے لیے تیار نہیں ہیں اور اس وقت بھی تلوار اٹھانے کو حسن خلق کے خلاف سمجھتے ہیں۔ تو پھر ہمیں یہ کہنے میں ورہ برابر عار نہیں ہے کہ یہ لوگ اسلام اور مسلمانوں کے بدترین وشمن ہیں۔ یہ قرآن وسنت عار نہیں ہے کہ یہ لوگ اسلام اور مسلمانوں کے بدترین وشمن ہیں۔ یہ قرآن وسنت میں تحریف کرنے والے طحدین ہیں۔ یہ مستشرقین کاوہ ٹولہ ہے جو مسلمانوں کو مٹانے کے لیے ان کی صفوں میں گھسا ہوا ہے۔

اخلاق و تلوار کے مسئلہ کو خلط ملط کرنے کے بجائے اسے انصاف کی نظر سے سمجھنا چاہیے۔ جہاں تک اسلام قبول کرنے کامسئلہ ہے تو اس پر اہل اسلام کا اجماع ہے کہ کسی سے بھی جبر آگلمہ پڑھنے کا نہیں کہا جائے گا۔ مگر جہاں تک اسلام کے نافذ کرنے اور اس کی تروج کی واشاعت کامسئلہ ہے ،اس سلسلہ میں جو بھی رکاوٹ ڈالے گاتو سختی کے ساتھ اس رکاوٹ کو دور کیا جائے گا۔ ہمارے آقاو مولا مُنَّالِيَّنِمُ نے محابہ کرام کو جب بھی کفار کی طرف بھیجا تو انہیں اسلام قبول کرنے، جزیہ دے کر رہنے یا قال کرنے کا اختیار دیا۔ ذیل میں اس کی ایک جھلک حضرت خالد بن ولید کے خط میں ملاحظہ کیجیے جو آپ نے لفکرِ فارس کے سر داروں کی طرف لکھا۔

مَن خَلِدِا بِيَالْوَلِيدِ إِلَىٰ رُستَمَ وَمِهْوَانَ فِي مَلَاءِ فَارِسٍ سَلَامُرُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الهُدَىٰ آمَّا بَعَدُ !

ہم حمہیں اسلام کی دعوت ویتے ہیں اگرتم انکار کروگے تو پھر جزید ادا کر واور ہمارے ماتحت ہو کررہنا قبول کر لو۔اور اگر اس سے بھی انکار کردگے تو پھر سن لو کہ میرے ہمراہ الی قوم ہے جنہیں اللہ کی راہ میں مرتااتنا محبوب ہے، جنٹی اہلِ فارس کو شر اب محبوب ہے۔ (1)

تاری کے مطالعے سے یہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ وہ وائی زیادہ کامیاب رہے جن کی وعوت کے پیچے تلوار (پاور) ہواکرتی تھی۔ مسلمان مجاہدین جب تلوار کی نوک پر کفر کے گندے مواد کوصاف کر کے باعزت حیثیت کے ساتھ کسی ملک بیں واغل ہوتے تواب لوگوں کو ان کے اخلاق دیکھنے کاموقع ملتا اور وہ گروہ در گروہ دین بیں واغل ہوتے۔ اس کی سب سے بڑھ کر مثال پیارے آقا حضور خاتم النیسین منافیڈ کی حیات طیبہ بیں ہی دیکھ لیجے ، کہ اعلانِ نبوت کے بعد ابتدائی سال جو مکہ معظمر بیں گزرے، جہاں کفار طاقت کے اعتبارے طاہر اُزیادہ قوی سے وہاں 13 سالوں بیں جولوگ ایمان لائے آئی تعداد صرف چند سو تھی لیکن مالوں بی جعرت مدید کے بعد جب تھم جہاد نازل ہوا اور مسلمانوں کے پاس پاور آئی ، تو صرف 10 سالوں بیں جو لوگ ایمان کی تعداد کو تقد کے اعتبار کے سالوں بیں جو لوگ ایمان کی تعداد کر قری مقل کے بعد جب تھم جہاد نازل ہوا اور مسلمانوں کے پاس پاور آئی ، تو صرف 10 سالوں بیں جو لوگ مسلمان ہوے ان کی تعداد تقریباً ڈیڑھ لاکھ تھی۔

^{1 (}معجم الكبير،باب من اسمه خالد، ج 3. ص 42، حديث 3716، پروگريسوبكس، لاهور)

ر سول الله مَالِينِيمُ كي مير اث تفامين:

حضور تاجدارِ فتم نبوت مَثَالِيَّةُ مِنْ مَد مِين الله تعالى

سورت میں علم کو پھیلایا۔ اور جب آپ مظافی اور اور اور امت ایست کی دعوت دی اور اپنے مشن کینی دنیا میں اللہ الا الله الا الله کو عالب کرنا اور تمام ادیان کو مغلوب کرنا بتایا تو آپ مَنَّ اللَّمَا ہُمُ کی اس دعوت کے مقابلے میں جو دو چیزیں سینہ تان کر کھڑی ہوئیں ان میں ایک جہالت اور دوسری کافرول کی طاقت تھی۔ آپ مَنَّ اللَّمَا عُمَّ کی ہوئیں ان میں قرآن مجید اور حضور مَنَّ اللَّمَا کی سنت کی صورت میں علم کو پھیلایا۔ اور جب آپ مَنَّ اللَّمَا کی دیاست تشریف لے گئے تو آپ مَنَّ اللَّمَا کی اللَّمَا کی میں ایک میر اث میں یہ علم امت کے لیے چھوڑااور امت نے اس علم کو اپنے سینے سے لگایا۔

اپتی میراث میں یہ ملم امت کے لیے چھوڑااور امت نے اس ملم کو اپنے سینے سے لگایا۔
دوسری چیز جو اسلام کے مقابلے میں اتری وہ تھی کا فروں کی طاقت چنا نچہ اس سے مقابلے
کے لیے آپ مُلَّ اللّٰ کِم پر جہاد فرض کیا گیا اور مسلمانوں کو تھم دیا گیا کہ اُس وقت تک لڑتے رہو
جب تک دنیا میں کا فروں کے پاس کچھ طاقت بھی موجودہ کیونکہ کا فرہمیشہ لیٹی طاقت اسلام
کے خلاف استعال کرتے رہیں گے۔

حضور تاجدار ختم نبوت مکافینی نبی میراث میں نہ درہم مجھوڑے نہ دینار اور نہ کوئی اور انہ کوئی اور انہ کوئی میراث میں نہ درہم مجھوڑے نہ دینار اور نہ کوئی اور ان و نیا سے تشریف لے گئے۔ مسلمانوں نے جب تک میراث نبوی مکافینی کو تھا ہے رکھائی وقت تک و نیا کی کوئی طاقت ان پر غالب نہ آسکی اور نہ کہیں اسلامی نظام کو چینے کیا جاسکا لیکن جب مسلمانوں نے علم دین کو چھوڑ دیا اور اسلح کو بھی پیٹھ کے چیچے چھینک دیا تو پھر نہ وہ اپنی اسلام کو محفوظ رکھ سکے اور نہ وہ دنیا میں اسلامی نظام کی حفاظت کر سکے۔ بلکہ اب تو وہ زمانہ بھی آچکا ہے کہ جب خو د بہت سارے باافتیار مسلمان اسلامی نظام حکومت اور اسلامی نظام معیشت کا تھلم کھلا اٹکار کرتے ہیں اور اسلامی سرائی سرائوں کو (نعوذ باللہ) انسانی حقوق کی خلاف ورزی قرار دیتے ہیں حالا نکہ کرتے ہیں اور اسلامی سرائی سرائوں کو (نعوذ باللہ) انسانی حقوق کی خلاف ورزی قرار دیتے ہیں حالا نکہ آئے بھی جن ممالک میں مجر موں پر حدود شرع نافذکی جاتی ہیں وہاں جرائم کی تعداد نہ ہونے کے برابر ہے۔

اسلام ایک کامل دین ہے جو دنیا کے تمام باطل ادبیان اور ظالمانہ نظاموں پر غالب ہونے کے لیے آیا ہے اور لوگوں کو سیدھاراستہ، امن،روزی اور وسعت والی زندگی عطا کرنا اسلام کی ذمدداری ہے ، جبکہ اسلام کونافذ کرنے کی ذمدداری مسلمانوں پرعائد ہوتی ہے۔

حضور تاجدارِ ختم نبوت جناب رحمة للعالمين مُؤَلِّيْتُهُم كے بيه فرامين جميں ياور كھنے ڇا تيميں مدیر بر برالدینا بروالدینا

آقاريم مَثَلَقَيْمٌ مَثَلَقَيْمٌ فَالْقَيْمُ فَارَتُاد فرمايا: انانبي الرحمة ونبي الملاحم " في المالاحم " " في رحمت والانبي بول اور حِثُول والانبي بول" (1)

غروہ احد والے دن جانِ جانال حضور تاجدارِ ختم نبوت مَثَّاتِیْتُمْ کے وست مبارک ہیں جو تکوار تقی اُس پر بیداشعار لکھے ہوئے تھے:

> فى الجبن عار وفى الاقبال مكرمته و المرء بالجبن لا ينجو من القدر ⁽²⁾

(ترجمیہ: بزدلی میں شر مندگی ہے اور وقعمن کاسامنا کرنے میں عزت ہے اور آومی بزدلی کر کے تقدیرے نہیں نیج سکتا)

یا الهی ہم سب مسلمانوں کو اپنے محبوب حضور تاجدارِ ختم نبوت مُنَافِیْتُم کی میراث سنجالئے اور تھامنے کی توفیق عطاء فرمااور ماضی کی طرح اب بھی اسلام کو دنیا بیس نافذ فرما کر انسانیت پر رحم فرمادے۔ آبین ثم آمین۔

ا (مستر) اما مراحد، مستر) الانصار مديد ف ما يقه بن به آن به الدين 823 مكتبه رحمانيه الاهور)
 (مدارج الديوت ، پاپ معركه احد، ج2 ، ص 180 ، ضيا القرآن به لي كيشاز الاهور)

مصور بإكتاك ذاكثر محمدا قبال:

ا قامت وین سے متعلق ان موضوعات پر ہمارا محسن ملت مصور

پاکستان جناب ڈاکٹر اقبال رحمۃ الله علیه کے اشعار جابجا نقل کرنے کا مقصدیہ تھا کہ لبرل و سیکولر طبقہ کی منافقت عیاں ہو اور قوم کے نوجوان بیر بات جان لیں کہ جس ملت خداداو اسلامی جمہور یہ پاکستان میں ہم رہتے ہیں اس کی آزادی کی جدوجہد کے پیچھے کیاسوچ کار فرما تھی۔اس ملک کو اسلامی فلاحی ریاست بنانے اور اس میں نظام مصطفیٰ مَنَّالَیْمُ مَا فَذَکرنے کے جذبے کے تحت ہی 1947 میں پیدرہ لا کھ مسلمانوں نے اپناخون اس ملک کی بنیادوں میں شامل کیا۔ ایک لا كه مسلمان عور تول كو چبر أاغواكيا كيااور عام شاہر اموں پر بهبانه عصمت درى كانشانه بنايا كيا، اس لا کھ مسلمانوں کو اربوں روپے کے جائیداو وہال سے محروم کر دیا گیا۔اور جو دیگر مظالم ڈھائے گئے اُن کو بیان کرنے سے ول پھٹتا ہے۔ تواہے عزیز! تمہیں چاہیے کہ اپنے مسلمان بہن بھائیوں کی قربانیوں کو رائیگاں نہ جانے دو ا در خون کی بہتی ندیوں پر بننے والے اس ملک پاکستان کی حفاظت اور اس میں عملی طور نظام مصطفیٰ مَالقَیْمُ نافذ کرنے کے لیے لینی حیثیت کے مطابق (ا پنے منصب کی طاقت، مال و دولت سے ،اولا وکی تربیت ، زبان و تلم وغیرہ سے) ہمہ ونت جدوجہد کرتے رہو تاکہ بروزِ محشر اللہ تعالی اور اُس کے حبیب منافیق کے سامنے تہیں شر مندگی نہ اٹھانی پڑے ، تمہارا حساب تمہارے مقام و منصب اور اختیارات کے مطابق ہی

میرے دین کے لیے کیا کہا؟

قائد ملت اسلاميه محافظ ناموس رسالت للكارز فكي وايوبي شيخ

الحديث والتقيير علامہ خادم حسين رضوي رحية الله عليه نے اپني ساري زندگي رسول الله مَنْ عَلَيْكُمْ كَى بِلوث محبت وا قامتِ دين كاجو درس ديا اور نوجو انوں كے دلوں ميں امت مسلمہ کے لیے فکر و درد کی جو محمع جلائی ، اس عاجز کی بیر کاوش آپ ہی کا فیض ہے۔ آپ رحمة الله علیہ کے بیہ جلے زندگ کے رخ بدلنے اور دین متین کے لیے عملی جدوجہد کی سوچ و فکر پیدا

امير المجابدين علامه خادم حسين رضوى دحمة الله عليه توجوانول كو مخاطب كرت موسة

قرماتے ہیں :

اے عزیزد! اگر اللہ کے محبوب امام الانبیاء متالیقیم نے بروزِ محشرتم سے اپوچھ لیا، کہ " جس دین کے لیے لوگوں نے مجھے پر پتھر سے پیکے، جس دین کے لیے میں نے مٹی کے ٹو کر ہے اٹھائے، جس دین کے لیے میں نے پیٹ پر پھر باندھے ،اور جس دین کے لیے میرے چھاکے جگروکلیجہ نکال کر چبادیے گیے، جس دین کے لیے میرے صحابہ کے جنگوں میں تھے ہوگئے، جس وین کے لیے میرے اہل بیت کومیدان کربلامیں شہید کر دیا گیا ، جس دین کے لیے میرے نواسے کاسر کاٹ کرلوگوں نے نیزے کی نوک پرچڑھادیا۔۔ بتاؤ! تم نے اُس دین کے لیے کیا كِيا ؟ _ تمازيرهي! روزے ركھ! حج اور عمرے كيے! بيرسب تو تم فے اپنے ليے كيا، مجھے بير بتاؤ! ميرے دين كے ليے كيا كيا ___ ؟"

اگر تمہارے یا س اس کا جواب ہے تو شیک! اگر نہیں ہے تو آج اللہ کے محبوب مُثَالِّيْتُمُ سے رسی طور پر نہیں بلکہ عملاً محبت کرو اور سب کیجھ رسول الله مَلَیٰ لِیُمِّا کی خاطر آج قربان کرو تا کہ کل قبر وحشر میں جب تم پریشانی کے عالم میں ہو تو حضور علیہ السلام خود فرشتوں سے فرمادیں اسے چھوڑ دواسے جانے دوریہ غلام اپناہی ہے۔

اگر أمت مسلمه قیامت تک عزت كاساته ربهٔ اچابتی ہے توان كو كوئى دوسرى چيز فائده نہيں وے گی سوائے اس کے کہ وہ حضور علیہ السلام کے لائے گئے دین کو مضبوطی سے تھام لیں۔

> مست دين مصطفى دين حيات شرع او تفسير آئين حيات (علامداقبال)



الل اسلام كي خدمت بيس كزارش:

حدیث مبارکہ میں ہے: حضور خاتم النبیین منافظ نے ارشاد فرمایا: "ہر چیز میں کی ہوگی لیکن شر (فتوں) میں اضافہ ہو تارہ گا"(1)

الل اسلام کی خدمت بی گزارش ہے کہ وہ امت کی اس زبوں حالی کا احمال کرتے ہوئے باہمی جھڑول کو ترک کر کے دین متنین کے غلبہ کے لیے کوشش وسعی کریں، اور اپنی توجہات ای جائب مبذول رکھیں۔ یہ جدید فتنے قرب قیامت کے ساتھ بحریتے ہی چلے جائیں گے لہٰذا اُنے اور اپنی نسلوں کے ایمان کے تحفظ کے لیے، فروعی انتظافات میں مشغول ہونے کے بہندا ہوئے کریتہ ہو کے بچائے لبرل ازم اور سیکولر ازم کی ان فکری پالخاروں کے سامنے بند با تدھنے کے لیے کم استہ ہو جائیں اور دین اسلام کے لیے کوئی تعمیری کام تیجے۔

ہارا اقامت دین وناموس رسالت مگافیز کے موضوعات پر ان ابحاث کو عقائد ورسوم
کے ایواب ہے آگے ، ای کتاب میں شائع کرنے کا مقصد یہ ہے کہ ہمارے کائی ویو نیورسٹی کے
لوجوان ، ڈاکٹر و پر وفیسر حضرات اور گھرول میں خوا تین و فیر ہ جو بھی اس کتاب کا مطالعہ کریں وہ
عقائد ورسوم ہے متعلق اصلاح کے ساتھ ساتھ اقامت دین کے ان پہلوؤں کو بھی ذہن نشین
کرکے ، اس حوالے ہے لیٹی اولا دوں کی تربیت فرمائیں تاکہ ہماری تسلیل ان جدید الحادی فتوں
سے متنبہ رہیں اور غلبہ دین ہے متعلق لیٹی کوششوں کو جاری رکھیں ، اس امید کے ساتھ ایک
دن ضرور اسلام کا عالمگیر نظام پوری دنیاش رائے ہوگا، پوری دنیاش کھر منافی تا ہم ہو کے
دن ضرور اسلام کا عالمگیر نظام پوری دنیاش رائے ہوگا، پوری دنیاش کھر منافی ترب قیامت کے
دن کی حکومت قائم ہوگی اور مقصد تخلیق کا کنات کھل ہوجائے گا اور بھی گویا قرب قیامت کے
واقعات کی ابتد اء ہوگی (جیسا کہ احادیث میں واضح ہے)۔انشاہ القد عروج ال۔

^{1 (}تفسير تأموس رسالسه ج2،ص22.مكتبه طلع الميار عليناً الأهور/مسلفاه أمراجنه

سنا دیا گوشِ منتظر کو جاز کی خامش نے آخر جوعہد صحرائیوں سے باندھا گیا تھا ، پھر اُستوار ہو گا نگل کے صحر اسے جس نے روما کی سلطنت کو اُلٹ دیا تھا سناہے یہ قد سیوں سے میں نے ، وہ شیر پھر ہو شیار ہو گا (علامہ اقبال)

الحمدُ لِلله عروجل! آج 15 شعبان 1442 هـ (2021-03-30) بروز منگل شب براءت كى بابركت رات اس كتاب كاتحريرى كام كمل موا

اللہ عزوجل کی بارگاہ میں دعاہے کہ آج کی اس رحمتوں بھری رات کے صدیقے مسلمانوں کے حال پر اپنا خصوصی رحم و کرم فرمائے ، انہیں قرآن د سنت کے مطابق زندگی گزارنے کی توفیق عطافرمائے اور مسلمانوں کی عظمت ِرفتہ کو بحال فرماوے۔

گزارنے کی تو یق عطافرہائے اور مسلمانوں کی عظمت رفتہ کو بھال فرمادے۔
الہ العالمین ! اپنے پیارے حبیب منگا تیکی کے صدقے میری اس ادنی کاوش کو لهنی بارگاہ
میں شرف قبولیت عطافرہا بھے اور میرے عزیزوں کو محض اپنے فضل و کرم سے دنیا و آخر
ت میں ہر مصیبت و پریشائی سے محفوظ رکھ اور دارین کی خوشیاں عطافرہا اور میری میرے
والدین، دوست احباب، قارئین ومعاونین کی بے حساب بخشش ومغفرت فرمادے۔

آمين يأرب العالمين

الله ماخذ و مراجع المالية

| مطبوعات | مصنفين | كتأب |
|------------------------------|--|------------------------|
| كتبته المدينه كرابثى | كلام اليي | قر آنِ جميد |
| كتبنة المديد كرايثي | مفتی حجہ کاسم القادري | تغيير صراة اليمثان |
| فريد بك سثال لاجور | علامه غلام رسول سعيدى | تغيير نبيان القران |
| مكتتبه طلع البدرعليبتالا مور | مفتى ضياء احمد قادرى رضوى | تغيير فاموس رسالت |
| فريد بك سثال لا بهور | امام ابوحبد الله محدين اساعيل بتفاري | محج البخارى |
| فريد بك سثال لا بهور | لهام ابوالحسيين مسلم بن مجارج قشيرى | مجاسلم |
| فريد بك سثال لابهور | الم الدهيئ محدين عيني تزندي | تنى |
| منيا القران وبلي كيشنز لامور | المام الوواكوسليمان من اشعنت مجستاني | سنن الي واؤد |
| ضياالقران وبلي كيشنز لامور | ابوعبدالرحمان احرين شعيب بن على نسائى | سنن نسائی |
| ضياالقران يبلى كيشنزلامور | امام ابوعبدالله محرين يزيداين ماجه | سنن ابن ماجه |
| پروگر بينو بکس لامور | المام الوالقاسم سليمان بن احد طبر اني | متجم الاوسط |
| پروگر بسو بکس لامور | المام ايوالقاسم سليمان بن احد طبر انى | معجم الكبير |
| مكتبدرجانيه لابود | المام احدين حشبل | مستدانام احد |
| دارالاشاعت كرايى | على متى بن حسام الدين مندى بربان يورى | كتزالعمال |
| دار الاشاحت كراچى | ليام إلي بكرااحرين الحسين البهيمتى | هعب المايان |
| حسن بهليشر زلا بور | مفتى احديارخان تعبى | مراة المناثي شرح مفكوة |
| شبير برادر زلابور | امام ابو بكر عبد الرزاق بن حمام صنعاني | مصنفءبدالرذاق |
| شبير براور زلام ور | ابوعبدالله محرين حبدالله حاكم جيثابوري | معدرك للحائم |
| ضياءالقران يبلى كيشنزلا بهور | فيع عبدالحق محثِ دبلوي | مدارج المتبوت |
| فريد بك سٹال لا جور | ايام احربن عجر قسطلاني | الموابب اللديني |
| مكتبه اعلى حضرت لاجور | امام جلال الدين سيوطى شافعي | الخسائص الكيرئ |

اصلاحِ عقائد و رسوم

| ثاويه مبكشرز | لهام محمد بن يوسف الصلاحي الشامي | سلن البدئ دا <i>ارش</i> اد |
|---|--|----------------------------|
| مكتبدحتقيدلابور | ابوالفعثل قاشى عياش بالكى | الشفار تعريف |
| نفيس اكيذى ادود بإزاد كرايى | حافظ ابوالقداعماذالدين ابن كثير ومشق | تاريخ اين كثير |
| كتيدامام إسلست فاجود | مثتى محرباشم خان العطارى المدنى | فرآن وحديث اورعقا كدابلسنت |
| مكتيداشاعت الاسلام لابور | مثتى محراتس رضا قادري | دسم ورواج کی شرعی حیثیت |
| كمثيرام احلست لاجور | مقتی مجدانس دضا قادری | پيار طريقت |
| كتب خاندام اجردشا لابور | اعلى حضرت امام احدر ضاخان | احكام شريعت |
| ر منها فاؤتث ^{ر ييث} ن لا بهور | احل حطرت المام احدوضاخان | قآوي رشوبي |
| مكتبة المديند كرايك | حولانا مصطفى رضاخان | ملقوظات امام الأسنت |
| شياه القران يبلي كيشنز لا بور | المام الإصائد عجد بن عجد غزال | ميميات سعادت |
| مكتبة المديد كرايق | المام الوحاد عرين عرفزال | أحياء العلوم |
| كمتية المديد كرايق | المام الوحائد عجد بن مجر خوالي | مثهاح العابدين |
| كمتية المدينة كرايق | امام ابوحار محرين محرخوالي | مكاشفة القلوب |
| مكنية المديندكرابق | مغتى تحدامجدعلى اعظى | يهادِ شريعت |
| مكتبة المدينة كرايي | مجلس المدينة العلمي | مخضر فنأوى اللي سنت |
| مكتبة المديندكرابي | مجلس المدينة العلب | پد تکوئی |
| مكتبة المدينة كرايي | مجلس المدينة الطبي | فيضان فاروق اعظم |
| كمتية المدينة كرايق | مجلس المديئة الطبي | محابيات اوريروه |
| مكتية الديدكرايي | مجلس المدينة العلمي | فتحييز وتكفين كاطريقه |
| مكتبة الديدكرايق | مجنس المتدينة العلمير | اسلامی شادی |
| مكتبة المديد كرايي | مفتق احديادخان تعيي | اسائ دندگی |
| مكتبة المديد كرايى | علامه يخيدالمصطفئ اعظمى | چ ^ن ق د پور |
| مكتبة الدية كرايى | علامدعيدالمصطفحا اعظمى | سيرت مصطفي |
| مكتبة المديد كرابى | شهاب الدين المام احدين حجركى | جبتم مي جاتے والے اعمال |
| مكتبة المديد كراجى | المام الوالثرن عبد الرحن بن على الجوزي | آنسوكال كادريا |
| مكتبة المدينة كرايق | امير الل سنت مولانا الياس عطار قادري | باحياء توجوان |

| كتبة الديد كراتي | امير الل سنت مولانا الياس عطار قاوري | کفریہ کلمات کے یادے ٹیں موال وجواب |
|----------------------------------|--------------------------------------|---|
| مكتبة الديندكراتي | امير الل سنت مولانا الياس عطار قادري | پردے کی فرق حیثیت |
| كمتية المدينة كرايى | مفق محر قاسم القادري | طلاق کے آسان سسائل |
| مسلم كتابوي لابور | مفتى خيراحدم الشنائى | موبائل قون اورشرى مسائل |
| يونيك يرعزز لامور | علامه حافظ حنيظ الرحمان | خوشنال محرانه كيم مو |
| والضحي يبليكيشنز لامور | محر كاشف اقبال مدفى دخوى | وريائيت كربطلان كااكشاف |
| قريديك مثال لاجور | علامه غلام د سول سعيدى | مقالات سعيدى |
| رحمة للعالمين ببليكيشة مر كودها | علامه غلام دسول قاسى | مقالاتِ قاحي |
| وحمة للعالمين وبليكيشوم كودها | علامه قلام دسول قاسى | الانتجاء |
| رحمته للعالمين يبليكيشنزمر كودها | حلاحه غلام دسول قاسى | مرب حيدري |
| وارالطوم تيميد كراجئ | مغتى خيب الرحمان | اصلاح حقائدوا عمال |
| ضيا القران يبلي كيشنز لا بور | حثتى شيب الرحان | تنتيم المساكل |
| مكتيد طلح البدر عليثالا بعور | مفتى ضياه احمر قاورى رضوى | رسول الله يركو ژا يجينظنے والي برهميا كي حقيقت |
| مكتبه طلح الهدد علية الاجود | مفتى ضياء احمد قاورى رضوى | سمتاخان رسول کے خلاف رسول اللہ کے سمیارہ قیصلے |
| كتب طلح البدرعلية الابور | مفتى ضياء احمد قادرى د ضوى | موفياء كرام كى مجايدات ژندگى |
| مكنتيه طلح الردرعلينالا بود | مفتى ضياء احمد قاورى دشوى | اڈاانِ کیاڑ |
| مكتيه طلح البدر علية الاجور | مفتى ضياءاحد تقاورى د ضوى | مستله ناموس رسالمند پر جعلی مشارکتی مجریاند خاموشی |
| تادرى مبليشر زلامور | منتني احديارخان ليبي | جاوالحق |
| مکتبدر ضویه کراچی | مفتى عمراميدعلى اعتلى | فآدي امجديه |
| شيير براور زلامور | مغتى جارل الدين اميدى | فآوي فنيه لمت |
| شيير ير آور ژ لامور | علامه محراجل قادريار ضوى | قآوي اجمليه |
| قاورى رضوى كتنب خاندلا بور | فيخ عبد القاور جيلاني | برالابراد |
| اسلامک بک کارپوریش دادلینڈی | طاحه مجز فلفرعطادي | مي يركون |

| اكبريك كيلرذ لابور | مجد د الف ثاني شخ احمه فاردق سر بعندي | كتوباسة المام ربانى |
|---------------------------------------|---|---------------------------|
| واراله شارالاسلاميه، بيروت، لينان | احمد بن ابراهيم بن محمد الدمثقي ثم الدمياطي | مشارع الاشواق |
| دارالكلام تجرات | علامه كاشف اقبال قادري | اسلام كاتصور جهاو |
| مشاق بك كار خرلا مور | ڈاکٹر حمید اللہ | عبد نبوي مين نظام عكمراني |
| کرایی | علامه الوحجمة عار فين القادري | عقائدتوش |
| قادرى رضوى كتب خاندلا مور | فيروز ساجد قادري | مسائل النساء |
| كمتبة المدينه كرايى | اعلى معرست الم احدرضاخان | حدائق بخفش |
| مكتبه دانيال، عبدالله أكيثر في لا مور | علامه ذاكثر محمد اقبال | كليات اقبال |
| فيروز سنزلا مور | مجلس فيروز سنز | فيروز الغات |

اس کتاب کی ترتیب و تحریر، تخریج، کمپوزنگ و ڈیزائنگ کا تمام کام راقم الحروف نے خود انجام دیے ہیں۔ عاجز سے اس کتاب میں کوئی بات جہور اہل سنت و جماعت کے عقائد و نظریات کے خلاف نقل ہوگئ ہو تو بندہ ناچیز اس سے رجوع واعلانِ براءت کر تا ہے۔اللہ تعالیٰ ہمیں ہر قشم کی خطاء سے محفوظ فرمائے۔ (فیروز ساجد قادری عفی عنہ)
